श्रीगणेशायनमः ॥

अथरसराज ॥

सवैया ॥

ध्यावैंसुरासुरसिद्धसमाज महेशहिंआदिमहामुनिज्ञा
नी। योगसेंयंत्रमेंमंत्रसेंतंत्रसेंगावैंसदाकृतिशेषभवानी।
संकटभाजनआननकीद्युति सुन्दरदण्डउदण्डसोजानी।
ध्यायसदापदपङ्कजकोमतिरामतबैरसराजबखानी १॥
दोहा॥ श्रीगुरुचरणमनाइकैगणपतिकोउरध्याइ। रसिक
हेतुरसराजकियसुकबिनकोसुखदाइ २॥ प्रार्थना। दोहा॥ क
वित्तार्थजानौंनहींकछुकभयोसंबोध। भूल्योभ्रमतेजोकछु
क सुकबिपढ़ेंगेशोध ३ बरणिनायकानायकनि रच्योग्रं
थमतिराम। लीलाराधारमणकीसुंदरयशअभिराम ४ हो
तनायकानायकहिं आलम्बितशृङ्गार। तातेबरणौंनाय
कानायकमतिअनुसार ५ उपजतजाहिबिलोकिकैचित्त
बीचरसभाव। ताहिबखानतनायकाजेप्रबीणकबिराव ६
उदाहरण। सवैया ॥ कुन्दनकोरंगफीकोलगैभलकैअतिअं
गनचारुगुराई।आंखिनमेंअलसानिचितौनिमेंमंजुबिला
सनकीसरसाई। कोबिनमोलबिकातनहींमतिरामलहेमु
सकानमिठाई। ज्योंज्योंनिहारियेनेरेह्वैनयननित्योंत्योंख
रीनिकरैसीनिकाई ७॥दोहा॥ जालरंध्रमगह्वैकढ़ेतियतन
दीपतिपुंज। भिंभियाकेसोघटभयोदिनहींमेंबनकुंज ८

कहीनायकातीनबिधिप्रथमस्वकीयामान। परकीयापुनि दूसरीगणिकातीजीजान ९॥ स्वकीयालक्षण। दोहा॥ लाजव तीनिशिदिनपगीनिजपतिकेअनुराग। कहतस्वकीयाशी लमयताकोपतिबड़भाग १० ॥ उदाहरण। सवैया॥ सांचे बिरंचिनिकाईमनोहरलाजतिमूरतिवंलबनाई। तापरतो बड़भागबड़ेमतिरामलसैंपतिप्रीतिसुहाई। तेरेसुशीलसु भावभटूकुलनारिनकोकुलकानिसिखाई। नेहीजनेपति देवतकेगुणगौरिसवैगुणगौरिपठाई ११॥ दोहा॥ जान तिसौतिअनीतिहै जानतिसखीसुनीति। गुरुजनजानति लाजहैप्रीतमजानतप्रीति १२॥ दोहा॥ त्रिविधस्वकी याजानियोप्रथमहिमुग्धानाम। मध्यापुनिप्रौढ़ागिनोबर णतकबिमतिराम १३ अभिनवयौबनआगमनजाकेतन मेंहोय। ताकोमुग्धाकहतहैंकबिकोबिदसबकोय १४॥ उदाहरण। कवित्त॥ नेकमन्दमधुरकपोलमुसक्यानलागेलेक मंदगमनगयंदनकीचालसो। रंचकनऊंचोलगोअंचलउ रोजनकेअंकुरनिबंकडीठिनेकसोबिशालभो। मतिरामसु कबिरसीलेकलुबेनभये बदनशृंगाररसबोलिआलबाल भो। बालतनयौबनरसालउलहतलखिसौतिनकेसालभो निहालनंदलालभो १५॥ दोहा॥ अभिनवयौबनज्योति सोंजगमगहोतबिलास। तियकेतनपानिपबढ़ैपियकेनय नतिप्यास १६॥ दोहा। मुग्धाकेद्वैभेदबरभाषतसुकबि सुजान। एकअज्ञातकयौबनाज्ञातयौबनाआन १७॥ अज्ञातयौवनालक्षण। दोहा॥ निजतनयौबनआगमनजोनहिं जानतनारि। सोअज्ञातकयौबनाकबिबरणतनिरधारि १८॥ उदाहरण। कवित्त॥ खेलतचोरमिहीचनीआजुगईहु

तीपाछिलेद्योसकीनाईं। आलीकहाकहौंएकभईमतिरे। न
नईयहबाततहांईं। एकहिभौनदुरेइकसंगहीअंगसोंअंग
छुवायोकन्हाईं। कंपछुट्योघनस्वेदबढ्योतनरोमउठ्योअं
खियांभरिआईं १६॥ दोहा॥ लालतिहारेसंगमेंखेलैंखेल
बलाइ। मूंदतमेरेनैनयनहौ करनकपूरलगाइ २०॥ ज्ञातयौव
नालक्षण। दोहा॥ निजतनयौवनआगमनजानिपरतिहैजा
हि। कविकोविदसबकहतहैंज्ञातयौबनाताहि २१॥ उदा
हरण। कवित्त॥ कानननलौंलागेमुसकानप्रेमपागे लोनेलाल
भरेलागेलोचनअनंगते। भारुधरिभुजनिडुलावतिचल
तिमन्दओरओपउलहतउरभउतंगते। मतिरामयौबनके
पत्रनभकोरअथिबढ़केसरसरसतरलतरंगते। पानियवि
मलकीझलकभलकनलागी कांईसीगईहैलरिकांईकढि
अंगते २२॥ दोहा॥ इतेउतेसचकितचितैचलतडुलावतबां
ह। दीठिबचाईसखिनकीछनकुनिहारतिछांह २३॥ अथ
नवोढ़ालक्षण। दोहा॥ मुग्धाजेंहिभयलाजयुत रतिनचहैपति
सङ्ग। ताहिनवोढ़ाकहतहैंजप्रबीणरसरङ्ग २४॥ उदाहरण।
सवैया॥ साथसखीकेनईदुलहीकोभयोहरिकोहियोहेरहि
मंचल। आयगयेमतिरामतहांघरजानिइकंतअनन्दसों
चंचल। देखतहीनँदलालकोबालकेपूरिरहेअँसुवानिदृगं
चल। बातकहीनगईसुरहीगहिहाथदुहौंसोंसहेलीकोअं
चल २५॥ दोहा॥ ज्योंज्योंपरसेलालतनत्योंत्योंराखैगोइ।
नवलबधूडरलाजतेइन्द्रबधूसीहोइ २६॥ अथविश्रब्धनवोढा
लक्षण। दोहा॥ होयनवोढ़ाकेकछुकप्रीतमसोंपरतीति। सोवि
श्रब्धनवोढ़यों बरणतकबिरसरीति २७॥ उदाहरण। सवैया॥
केलिकीरातिअघानेनहीं दिनहीमेंललापुनिघातलगाई।

प्यासलगीकोउपानीदैजाउ यौंभीतरबैठिकैवातसुनाई। जिठानीपठायगईदुलहीहँसिहेरैहरैंमतिरामबुलाई। कान्हकेबोलमैंकाननदीन्हींसुगेहकेदेहरीमेंधरिआई २८॥
दोहा॥प्रीतमतुम्हरीसेजपरहौंआवलनँदलाल। दयागहौ वातनकहौदुखनदीजियेलाल २९॥ अथमध्यालक्षण। दोहा॥
जाकेतनमेंहोतहैलाजमनोजसमान। तासौंमध्याकहतहैं कविमतिरामसुजान ३०॥ उदाहरण। कवित्त॥ चित्तमैंविलोकतहीलालकोवदनबालजीतेजेहिकोटिचन्दशारदपुनीलके। मुसक्यानिअमलकपोलनिकेरुचिवृन्दचमकेतरचोलनिकेरुचिरचुनीनके। प्रीतमनिहारयोवांहनहतश्रवालकहींजामेंमतिराममनसकलमुनीनके। गाढेगहीलाजमैनकण्ठह्वैफिरतवैनमूलह्वैफिरतनैनवारिवरुनीनके ३१॥
दोहा॥केलिभवनकीदेहरीखडीबालछविनौल। कामकलितहियकोलहै लाजललितदृगकौल ३२॥ अथप्रौढालक्षण। दोहा॥ निजपतिसौंरतिकेलिकी सकलकलानिप्रवीन। तासौंप्रौढाकहतहैंजेकवित्तरसलीन ३३॥ उदाहरण। सवैया॥
प्राणप्रियामनभावनसंगअनंगतरंगनिरंगपसारे। सारीनिशामतिराममनोहरकेलिकेपुंजहजारउघारे। होतप्रभातचल्योचहैप्रीतमसुंदरिकेहियमेंदुखभारे। चन्दसौंआननदीपसिदीपतिश्यामसरोजसेनैननिहारे ३४॥ दोहा॥
लपटानीअतिप्रेमसौंदैउरउरजउतंग। घरीएकलौंछुटैपर रहीलगीसीअंग ३५॥ अथधीराभेदलक्षण। दोहा॥ मध्याप्रौढामानमेंतीनभांतिपुनिजानि। धीराबहुरिअधीरतियधीराधीरामानि ३६॥ अथमध्याधीरालक्षण। दोहा॥ वचननकीरचनानिसौंपियहिजनावैकोप। मध्याधीराकहतहैंताहिसुमति

रसचोप ३७ ॥ उदाहरण । कवित्त ॥ तुमकहाकरोकहूंकामते अटकिपरेतुम्हैंकोनदोषसोलोआपनेयोंभागहै। आयेमेरे भौनबड़ेभोरउठिप्यारहींमेंअतिहरबरनबनायबांधीपाग है । मेरेहीबियोगरहेजागतिसकलराति गातअलसातमे रोपरमसुहागहै । मनहूंकीजानीप्राणप्यारेमतिरामइह नैननहींमाहिंपाइयतुअनुरागहै ३८ ॥ दोहा ॥ अजौंउड़ा वतहौनहींपीरनहोतसभाग । ठौरठौरयाभौंरकेडसेअधर दलदाग ३९ ॥ अथमध्याअधीरालक्षण । दोहा ॥ मध्याकहिय अधीरतियबोलैबोलकठोर । पियहिजनावैकोपयोंबरणत कविशिरमोर ४० ॥ उदाहरण । सवैया ॥ कोऊनहींबरजेम तिरामरहौतितहींजितहीमनभायो । काहेकोसौंहैंहजार करोतुमतौकबहूंअपराधनठायो।सोचनदीजैनदीजैहमैंदु खयोंहींकहारसबादबढ़ायो । मानरह्योइनहींमनमोहन माननीहोइसोमानमनायो ४१ ॥ दोहा ॥ बलयपीठितरवन भुजनउरकुचकुंकुमछाप । तितेजावमनभावतेजितेबि कानेआप ४२ ॥ अथमध्याधीराधीरालक्षण । दोहा ॥ मध्याधीरा धीरतियताहिकहतसबकोय । पियसोंकहिकैबचनकछुरो षजनावैरोय ४३ ॥ उदाहरण । सवैया ॥ आजुकहातजिबैठीहौ भूषणऐसेहीअंगकछूअरसीलो । बोलतबोलरुखाइलिये मतिरामसुनेतेसनेहरसीलो । क्योंनकहौदुखप्राणप्रिया अंशुवानिरहेभरिनैनलजीलो । कौनतुम्हैंदुखहैजिनके तुमसेमनभावनछैलछबीलो ४४ ॥ दोहा ॥ तुमसोंकीजै मानक्योंबहुनायकमनरंज । बातकहतयोंबोलिकैभरि आयेदगकंज ४५ ॥ अथप्रौढ़ाधीरालक्षण । दोहा ॥ पियसोंप्रक टनारिसकरैरतितैरहैउदास । प्रौढ़ाधीराजानियेसोंनिज

सुमतिविलास ४६ ॥ उदाहरण ॥ कवित्त ॥ वैसेहीछितैकैमरे चित्तकोचुरावतीहौ बोलतीहौवैसेहीमधुरमृदुवानिसों। कविमतिरामअङ्कभरतमयङ्कमुखीवैसेहीरहतिगहिभुज लतिकानिसों। चूमतिकपोलपानकरतअधररस वैसेही निहारीरीतिसकलकलानिसों। कहाचतुराईठानियत प्राणप्यारी तेरो मानजानियत रूखीमुखमुसक्यानिसों ४७॥ दोहा ॥ ढीलीबांहनसोंमिली बोलीकछूनबोल। सु न्दरिमानजनाइहै लियोप्राणमतिमोल ४८॥ अथप्रौढ़ाअधी रालक्षण। दोहा॥ डरदेकेप्रियकोप्रिया देयसुमनकीमारु। प्रौढ़ाऽधीराकहतहैं ताहिसुकविमतिचारु ४९॥ उदाहरण। कवित्त ॥जाकेअंगअंगकीनिकाईनिरखतआलीवारनेअनं गकीनिकाईकीजियतुहै। कविमतिरामजाकीचाहब्रजना रिनकोदेहअंशुवानकेप्रवाहभीजियतुहै। जाकेबिनुदेखेन परतकलतुमहूंकोजाकेबैनसुनतसुधासोपीजियतुहै। ऐसे सुकुमारपियनन्दकेकुमारकी योंफूलनकीमालनकीमारु दीजियतुहै ५०॥ दोहा॥ जहांजहांसखिदेलतू फूलमाल कीमारु। तहां तहां नँदलालके उठेरोमतनुचारु ५१॥ अथप्रौढ़ाधीराधीरलक्षण। दोहा ॥ रतिउदासकैनाहको डर दिखलावैबाम। प्रौढ़ाधीराधीरतिय बरणतकबिमति राम ५२॥ उदाहरण। सवैया॥ पीतमआयेप्रभातप्रियाकहो रातिरमेरतिचिह्नलियेहीं। बैठिरही पलँगापर सुन्दरि नैननवाइकेधीरधरेहीं। बांहगहे मतिरामकहै नरहीरि समानिनिकेहठकेहीं। बोली न बोल कछूसतरायपै भौहें चढ़ायतकीतिरछोहीं ५३॥ दोहा ॥ आवतउठिआदरकियो बोलेबोलरसाल। बांहगहतनँदलालके भयेबालदृगलाल

ल ५४ ॥ अथज्येष्ठाकनिष्ठालक्षण। दोहा ॥ बरणतज्येष्ठकनिष्ठिका यहद्वैब्याहीनारि। प्रथम पियारी दूसरी घटिप्यारीनिरधारि ५५ ॥ उदाहरण। कवित्त ॥ बैठीएकसेजपैसलोनीमृगनयनीद्वोऊआनितहांप्रीतमसुधासमूहबरसे। कविमतिरामढिगबैठ्योमनभावनकेदुहूंकेहियेमेंअरविंदमोदसरसे। आरसीदैएकसोंकह्योयोंनिजमुखलख्यो अरबिन्दवारिजबिलासबरदरसे। दरपसोंभरीजौलौंदरपनदेखेतौलौंप्यारेप्राणप्यारीकेउरोजहरिपरसे ५६ ॥ दोहा ॥ बेनीगूंथतएककी नन्दलालचितलोल। चूमतप्यारीकेअधरबिहँसत गोलकपोल ५७ ॥ अथपरकीयावर्णन। दोहा ॥ प्रेमकरैपरपुरुषसोंपरकीयासोजानि। दोयभेदऊढाप्रथमबहुरिअनूढामानि ५८ ब्याहीऔरेपुरुषसोंऔरेसोंरसलीन। ऊढातासोंकहतहैं कविपण्डितपरबीन ५९ ॥ उदाहरण। सवैया ॥ क्योंइनआंखिनसोंनिरशङ्कह्वै मोहनकोतनपानिपपीजे। नेकुनिहारेकलंकलगै इहिगांवबसेकहुकैसेकजीजै। होतरहेमनयोंमतिराम कहूंबनजायबड़ोतपकीजे। ह्वैबनमालहियेलगियेअरुह्वैमुरलीअधरारसलीजै६०॥ दोहा ॥ कन्तचौकसीमन्तकी बैठीगांठिजुराइ। पेखिपरोसीकोपियाघूंघटमेंमुसकाइ ६१ ॥ अनूढालक्षण। दोहा ॥ अनब्याहीकहुपुरुषसोंअनुरागीजोहोइ। ताहिअनूढाकहतहैं कविकोविदसबकोइ ६२ ॥ उदाहरण। सवैया ॥ गोपसुताकहैंगौरिगोसाइँनिपायँपरौंबिनतीसुनिलीजै। दीनदयानिधिदासीकेऊपरनेकुसुचित्तदयारसभीजे। देहिजोब्याहिउछाहसोमोहनमातपिताहुकेसोमनकीजै। सुन्दरसांवरोनन्दकुमारबसेउरसेंअरुसोबरुदीजै ६३॥ दोहा ॥ मैंसुनिआई

नन्दघरअन्तहोहुनिशंक। राधेमोहनब्याहतेजैहैंधोयक-लंक ६४॥ परकीयाऔरभेद। दोहा॥ परकीयाकेभेदइहगुप्तजो प्रथमबखानि। बहुरिबिदग्धालक्षिताकुलटामुदितामानि ६५॥ दोहा॥ औरअनूसयनाकहीतिनकेत्रिबिधबिबेक। बरणतकबिमतिरामयहरसशृंगारकोसेक ६६॥ सुरतगुप्तालक्षणम्। दोहा॥ सुरतछिपावैजोतियासोगुप्ताउरआनि। बरणतकबिमतिरामहैचतुराईकीखानि ६७॥ उदाहरण। सवैया॥ लेनगईहतीबागहीफूलअँध्यारीलखेडरबाढ्योतहाई।रोम उठ्योतनकम्पछुट्योमतिरामभईश्रमकीसरसाई। बेलिन मेंउरभीअँगियाछतियाअतिकंटककेक्षतछाई। देहमेंनेकु सँभाररह्योनहिंह्यांलगिभाजिमरूकरिआई ६८॥ दोहा॥ भलोनहींयहकेवरोसजनीगेहअराम। बसनफटैकंटकलगैनिशिदिनआठौयाम ६९॥ अथविदग्धाभेद। दोहा॥ द्विविध बिदग्धाकहतहैंकबिकरिबिमलविवेक। वचनविदग्धाए कहैंक्रियाबिदग्धाएक ७०॥ अथदुहुनकेभेदलक्षण। दोहा॥ करैवचनसोंचातुरीवचनविदग्धामानि। करैक्रियासोंचा तुरीक्रियाबिदग्धाजानि ७१॥ अथवचनविदग्धाकोउदाहरण॥ कवित्त॥ आईहौंनिपटसांझगैयागईबनमांझह्यांतेदौरिआई मेरोकह्योकान्हकीजिये।मैंतौहौंअकेलीऔरदूसरोनदेखि यतबनकीअँध्यारीसोंअधिकभयभीजिये। कबिमतिराम मनमोहनसोंपुनि २ राधिकाकहतबातसांचीयेपतीजिये। कबकीहौंहेरतिनहेरेहरिपावतिहौं बछराहिरानोसोहिराय नेकुदीजिये ७२॥ दोहा॥ खेतनिहारैधानकायोंबूझतमुसकाय। इहौंहमारोहैकह्योसघनउबरदरशाय ७३॥ अथक्रियाविदग्धाउदाहरण। सवैया॥ बैठीतियागुरुलोगनिमेंरतिसों

अतिसुन्दररूपविशेखी। आयोतहांमतिरामसुजानमनो भवतेअतिकंतउरेखी ।लोचनरूपपियोईचहैअरुलाजनि जातिनहींछबिपेखी । नैननवाइरहीहियेमालमेंलालकीमूरतिलालमेंदेखी ७४ ॥ दोहा ॥ चढ़ीअटारीबामवहकियोप्रणामनिखोटातरनिकिरनतेद्दगनकीकरसरोजकरिओट ७५ ॥ अथलक्षितालक्षण । दोहा ॥ होतलखाईसखिनकोजाकोपियसोंप्रेम । ताहिलक्षिताकहतहैं कबिकोबिदकरिनेम ७६ ॥ उदाहरण । कवित्त ॥ आईहौंपायँदिवायमहावरकुञ्जनते करिकैसुखसेनी । सांवरोआजुसवाँरोहैअंजननैननिकोलखिलाजतरेनी। बातकेबूझतहीमतिरामकहाकरियेवहभौंहतनेनी । मूँदीनराखतप्रीतिअलीयहगूंदीगोपालकेहाथकीबेनी ७७ ॥ दोहा ॥ सतरोहीभौंहननहींदुरेदुरायेनेह । होतनामनँदलालकेदीपमालसीदेह ७८ ॥ अथकुलटालक्षणम् । दोहा ॥ जोचाहतिबहुनायकनिसरससुरतिपरप्रीति । तासोंकुलटाकहतहैंलखिग्रन्थनकीरीति ७९ ॥ उदाहरण । सवैया ॥ अंजनदैनिकसीमतिनयननिमंजनकै अतिअंग सवाँरै । रूपगुमानभरीमगमेंपगहीके अँगूठाअनोटसुधारे । यौवनकेमदसोंमतिरामभईमतवारिनलोगनिहारै। जातचलीयहिभांतिगली बिथुरीअलकैंअचरानसँभारे । ८० ॥ दोहा ॥ मोहिंमधुरमुसकानिसोंसबैगावँकेछैल । सकलशैलबनकुंजमेंतरुणिसुरतिकीसैल ८१ ॥ अथनष्टसंकेतअनुसयनालक्षण । दोहा ॥ केलिकरैजहँकंतसोंसोथलमढ़्योनिहारि । कहिअनुसयनातासुसोंशोचकरैबरनारि ८२॥ उदाहरण । कवित्त ॥ आईऋतुपावसअकाशआठौदिशनिमेंसोहतस्वरूपजलधरनकीभीरको । मतिरामसुकबिकद

म्बनकीबासयुतसरसबढ़ावैरसपरमसमीरको। भौनतेनिकसिबृषभानकीकुमारिदेख्योतासुमें सहेठकोनिकुंज गिरोतीरको। नागरिकेनयननिमेंनीरकोप्रबाहबढ्योदेखतप्रबाहबढ्योयमुनाकेनीरको ८३॥ दोहा॥ ग्रीषमऋतुमेंदेखिकैबनमेंलगीदवाँरि। एकअपरबशबालयहमनमेंजरतिगवाँरि ८४॥ अथभाविस्थानसंदेहअनुसयनाकालक्षण। दोहा॥ होनहारसंकेतकोशोचकरैजोनारि। एहौअनुसयनाकही होइहियेदुखभारि॥ ८५॥ उदाहरण। कवित्त॥ बेलिनसोंलपटायरहीहैतमालनकीअवलीअतिकारी। कोकिलकूककपोतनकेकुलकेलिकरैंअतिआनँदबारी। शोचकरैजनिहोहुसुखीमतिरामप्रवीणसबैनरनारी। मंजुलबंजुलकुंजनकेघनपुंजसखीससुरारितिहारी ८६॥ दोहा॥ केलिकरैंमधुमत्तजहँघनमधुपनकेपुञ्ज। शोचनकरतुअसासुरेसखीसघनबनकुञ्ज ८७॥ अथतृतीयास्वानधिष्ठितस्थलेरमणगमनानुसयनालक्षणदोहा॥ प्रीतमगयेसहेठकोजानेहेतुहिपाइ। एहौअनुसयनाकहीहौंनगईपछिताइ ८८॥ उदाहरण। कवित्त॥ सांझकेसमयमेंमतिरामकामबश बँधीबंशीबटतटमेंबजाईजाइबांसुरी। सुमिरिसहेठबृषभानकीकुमारिउरदुखअधिकानोभयोसुखकोबिनासुरी। शरसोंसमीरलाग्योशूलसीसहेलीसबबिषसोंबिनोदलाग्योबनसोंनिवासुरी। तापचढ़िआईतनपरिचाढ़िआईमुखआंखिनकेऊपरउमागिआईआंसुरी ८९॥ दोहा॥ छरीसपल्लवलालकरलखितमालकीडालकुंभिलानीउरमालधरिफूलमालज्योंबाल ९०
अथमुदितालक्षण। दोहा॥ चितहीसुनिजोबातको मुदित होय जोबाल। मुदितातासोंकहतहैंकबिमतिरामरसाल ९१॥

उदाहरण । सवैया ॥ मोहनसोंकुछधोसनितेमतिरामबढ्यो अनुरागसुहायो । बैठीहुतीतियमायकेमेंससुरारिककाहू सँदेशसुनायो । नाहकेव्याहकीचारसुनीहियमाहिंउछाह छवीलीकेछायो । पौढ़िरहीपटओढ़िअटादुखकोमिसुकेसु खबालछिपायो ९२ ॥ दोहा ॥ बिछुरतरोवतदुहुनकेसखि यहरूपलखैन । दुखअँशुवापियनयनहैंसुखअँशुवातिय नैन ९३ ॥ इतिपरकीया । अथगणिकालक्षण । दोहा ॥ धन दे जा केसंगमेंरमयपुरुषसबकोइ । ग्रन्थनको मतदेखिकेगणि काजानौसोइ ९४ ॥ उदाहरण । कवित्त ॥ लालकरचरणर दनछदनखलालमोतिनकीरदनरहीहैछबिछाइकै । कवि मतिरामसुखसुबरनरूपरही रूपखानिमुसकानिशोभास रसाइकै । आननकोइन्दुजानिआंखेंअरविन्दमानिइन्दि रारजानिदिनरहतिसुहाइकै । नायकनवलक्योंनदेइतन धनऐसोसुतनकोसुतनअनतधनपाइकै ९५ ॥ दोहा ॥ ल सतगूजरीऊजरीबिलसतलालविजार । हियेहजारनके हरैबैठीबालबजार ९६ ॥ अथअन्यनायकाभेदलक्षण । दोहा ॥ अ न्यसुरतिदुखिताकहीप्रेमगर्बिताजानि । रूपगर्बिताऔ रपुनिमानवतीउरआनि ९७ ॥ अथअन्यसंभोगदुःखितालक्षणम् । दोहा॥ निजपतिरतिकेचिह्नज्योंलखैऔरतियदेह । अन्य सुरतदुखिताकहैंकरैपेचसोंनेह ९८ ॥ उदाहरण । कबित्त ॥ याहीकोपठाइबड़ोकामकरिआईबड़ी तेरीहै बड़ाईलखैं लोचनलजीलेसों । सांचीक्योंनकहैंकछुमोकोकिधौंआप हीकोपाइबकशीशलाईबसनछबीलेसों । मतिरामसुकबि सँदेशोउनमानियतुतेरेनखशिखअंगहरषकटीलेसों । तूतो हैरसीलीरसबातनबनायजानै मेरेजानआईरसरासिकेर

सीलेसों ९९ ॥ दोहा ॥ कहतनिहारौरूपयहसखीपैढ़कोखे
द । ऊंचोलेतिउसाससहोकलितसकलतनस्वेद १०० ॥
अथप्रेमगर्विताल्क्षणम् । दोहा ॥ निजनायककेप्रेमसोंगर्बजना
वैबाल । प्रेमगर्ब्बिताकहतहैं सो तौसुमतिरसाल १ ॥
उदाहरणं । कवित्त ॥ मेरेहँसेहँसतहैंमेरबोलेबोलतहैं मोहिं
कोजानततनमनधनप्राणरी। कविमतिरामभौंहैंटेढ़ीकिये
हांसीहूमेंछोड़िदेतभूषणबसनपानीपानुरी। मोतेप्राणप्या
रीकेनऔरकोऊकहातोसोंरिसकरिकीजैकहिकहाकोसया
नुरी। मैनकामनीकेमैंनकाहूकेनरूपरीभे मैंनकाहूकेसिखा
येआनोंसैनमानुरी २ ॥ दोहा ॥ औरनकेपायनदयो
नायनिजावकलाल । प्राणपियारीरावरीपरखतितुम्हैंर
साल ३ ॥ अथरूपगर्विताल्क्षणम् ॥ दोहा ॥ जाकेअपनेरूप
कोअतिहीहोयगुमान । रूपगर्ब्बिताकहतहैंतासोंपरमसु
जान ४ ॥ उदाहरण । सवैया ॥ सोयरहीरतिअन्तरसी
लीअनन्दबढ़ायअनंगतरंगनि । केशरिखौरिकरीतियके
लनप्रीतमऔरसुवासकेसंगनि । जागिपरीमतिरामसरू
पगुमानजनावतिभौंहकेभंगनि । लालसोंबोलतिनाहिन
बालसुपोंछतिआंखिअँगौछतिअंगनि ५ ॥ दोहा ॥ कै
सेआऊंहौंउहां हैंजहँनन्दकिशोर । दिनहूमेंमुखचन्दको
लखिललचातिचकोर ६ ॥ अथमानवतीलक्षण । दोहा ॥ करै
ईर्षातेजुतियमनभावनसोंमान। मानवतीतासोंकहतकवि
मतिरामसुजान ७ ॥ उदाहरण । कवित्त ॥ सोमनमोहन
होतलईमुखजाकेभईबिधिकीछबिछाजै । खोलिकेनयन
निदेखैजोनेकतोश्यामसरोजपरोजयसाजै । जोविहँसेमु
खसुन्दरतोमतिरामबिहानकोबारिजलाजै। बोलैअलीम्ह

दुमंजुलबोलतौकोकिलबोलनिकोमद्‌भाजै ८॥ दोहा॥सुनि यतदैंमनमानिनीबिनअपराधरिसानि। नेहजरावनकोम हादीपज्योतिजियजानि ९॥ अथदशनायकावर्णन। दोहा॥ प्रोषितपतिकाखंडिताकलहांतरिताजानि। विप्रलब्धउत्कंठिताबासकसज्जामानि १०॥ दोहा॥ स्वाधिनपतिकाकहतहैंअभिसारिकासुनाम। कहोप्रवत्स्यतप्रेयसीआगतपतिकाबाम ११॥ दोहा॥ दशौंअवस्थाभेदसोंदशौंनायका जानि। तिनकेलक्षणलक्षयहनीकेकहौंबखानि १२॥ अथ प्रोषितपतिकालक्षण। दोहा॥ जाकेपीउविदेशमेंबिरहबिकल तियहोय।प्रोषितपतिकानायकाताहिकहतसबकोय १३॥ अथमुग्धाप्रोषितपतिकाउदाहरण। कवित्त॥ बारकितेकसहेलिनके कहेकैसेहूंलेतनबीरीसँवारी। राखतिरोंकिकहैंमतिराम चलेअंशुवाअँखियानतेभारी। प्राणपियारोचल्योजबतेत बतेकछुऔरहीरीतिनिहारी। पीरजनावतिअंगनिमेंकहि पीरजनावतिकाहेनप्यारी १४॥ दोहा॥ पियबियोगतियदृगजलधिजलतरंगअधिकाय। बरुनिमूलबेलापरसि बहुरयोजातबिलाय॥ अथमध्याप्रोषितपतिकाउदाहरण। कवित्त॥ चन्दकोउद्योतहोतनैनचन्दकान्तकन्त छायोपरदेशदेह दाहनिदहतुहै। उसरिगुलाबनीरकरपूरपरसतबिरहा अनलज्वालजालनिजगतुहै। लाजनितकछुनजनावेकाहू सखिनसोंउरकोउदारिअनुरागिउमँगतुहै। कहाकहौंमेरीबीर उठिहैअधिकपीर सुरभिसमीरसीरोतीरसोंलगतु है १५॥ दोहा॥ बहुतदूबरीहोतक्यों योंबूझीजबसासु। उत्तरकढ्योनबालमुखऊंचीलईउसासु १६॥ अथप्रौढ़ाप्रोषित पतिकाउदाहरण। कवित्त॥ बिरहतिहारेलाल बिकलभईहै

बालनींदभूखप्यासासिगरीबिसारियतुहैं । छूरीकीसीबा तचन्द्रमाहूतेछिपाईतूबसननितानीकेबयारिबारियतुहैं। कहैमतिरामकलाधरकीसीकलाछिन जीवन बिहीनमीन सीनिहारियतुहैं । बारबारसुकुमारफूलनकीमालऐसीमा रकेमरोरनि मरोरिमारियतुहैं १७ दोहा ॥ चन्द्रकि रणिलगिबालतनुउठैआगियोंजागि । दुपहरदिनकरप रसिज्यों करदरपनमेंआगि १८ ॥ अथपरकीयाप्रोषितपति कांउदाहरण। सवैया ॥ ह्वांमिलिमोहनसोंमतिरामसुकेलिक रीअतिआनँदभारी। तेईलताद्रुमदेखतदुःखचलेअँशुवा अँखियानतेभारी। आवतिहोयमुनातटकोनहिंजानिपरै बिछुरेगिरिधारी।जानतिहौंसखिआवनचाहतकुंजनतेक हिंकुंजबिहारी १९ ॥ दोहा ॥ लाजछुटीगेहोछुट्योमुख सोंछुट्योसनेह । सखिकहियोवानिठुरसोंरहीछूटिबेदेह २०॥अथगणिकाप्रोषितपतिकाकोउदाहरण । सवैया ॥ आलीशृँगार तिहैहठसोंपरलागतअंगअगारशृँगारो । पीरीपरीतन मेंमतिरामचलेअँखियानतेनीरपनारो। सोऊनहींमनभा वननायक आवतजोबहुतेधनवारो । बीरबिलासिनिको बिसरैनबिदेशगयोपियप्राणपियारो २१ ॥ दोहा॥ धनकेहे तुबिलासिनिरहैसँभारेकेश। जोतियकेहियमेंबसैसोपिय बसैबिदेश २२॥ अथखंडितालक्षण । दोहा ॥ पियतनऔरहि नारिकेरतिकेचिह्ननिहारि । दुःखितहोयसोखंडिताबर णतसुकबिसुधारि २३॥ अथमुग्धाखंडिताकोउदाहरण। सवैया॥ ला लतुम्हैंकहुंऔरतियाकी लख्योअँगियामें लगावतिचो वै।ताछबितेमतिरामनखेलतिबूझैसखीनहूंसोंदुखिगोवै। लिखैकरकेनखसों पगकेनखशीशनवायकेनीचेहीजोवै।

बालनबेलिनरूसनोजानतिभीतरभौनसोसूनहीरोवै २४
दोहा ॥ बालसखिनकीसीखतेमाननजानतिठानि । पिय
बिनआगमभौनमेंबैठीभौंहैंतानि २५ ॥ अथमध्याखंडिताको
उदाहरण । कवित्त ॥ जावकलिलारओठअंगनकीलीकसोहै
पैयनअलीकलोकलीकनबिसारिये । कबिमतिरामछाती
नखक्षतजगमगेडगमगेपगसूधेमगमेंनधारिये । कसकेउ
घारतहौंपलकपलकयातेपलकामेंपौढ़िश्रमरातिकोनिवा
रिये । लटपटेपेचशिरबातनकहतबनेलटपटेपेचशिरपाग
केसुधारिये २६ ॥ दोहा ॥ कोउकरैकितेकहतजौनटेक
गोपाल । निशिऔरनकेपगपरौंदिनऔरनिकेलाल २७॥
अथप्रौढ़ाखंडिताकोउदाहरण । सवैया ॥ प्रीतमआयेप्रभातप्रियामु
सक्यानउठीदृगसोंदृगजोरै । आगेह्वैआदरकैमतिरामक
हैमृदुबैनसुधारसबोरै । ऐसेसयानसुभायनहींसोंमिलीसु
नभावनसोंमनभोरै । मानगोजानतबैछतियाअँगियाकीत
नीनछुटीजबछोरै २८ ॥ दोहा ॥ आदरदैपियसोंमिलीतिय
हियराखिसयान । दृगगहिबांधीकंचुकीसमुभ्कायोमनमा
न २९ ॥ अथपरकीयाखंडिताकोउदाहरण । सवैया ॥ सांवरेनेहको
लाजतजीअरुगेहकेकाजसबैबिसरायो । डारदयोगुरुलो
गनकोडरगांवचवाईमेंनामधरायो । हेतुकियोहमजेतोक
हातुमतोमतिरामसबैबिसरायो । कोउकितेकउपायकरोक
हुँहोतहैआपनपीउपरायो ३० ॥ दोहा ॥ हमसोंतुमसोंला
लइतनयननहीकोनेह । उतप्यारीकेदृगनके सलिलसीं
चियतदेह ३१ ॥ अथगणिकाखंडिताकोउदाहरण । सवैया ॥ ह्यां
हमसोंमिलिबोठहरायकैनैनकहूंअनतेहीकरीजै । भोरही
आयबनायकैबातनचातुरह्वैबिनतीबहुकीजै । ऐसियेरी

तिसदामतिरामसोंकैसेपियारेजूप्रेमपतीजै। सौंहनखाइ
येजाइयेह्यांतेलमानिहौंतौहूंजोलाखनदीजै ३२॥ दोहा॥
कन्तकहासौंहनकरोजानिपस्योअबनेह। देनकह्योसोबि
नदियेजान न पैहौगेह ३३॥ अथकलहंतरिताकोलक्षण। दोहा॥
कह्योनमानैकन्तकोपुनिपाछेपछिताइ। कलहन्तरितानाइ
यकातासिकहतकबिराइ ३४॥ अथमुग्धाकलहंतरिताकोउदाह
रण। सवैया॥ गौनेकिचूनरीऐसिऐहैदुलहीअबहोतेढिठाई
बगारी। आउबनावनआयेहैंआपनेहाथसोंजानतपागसँ
वारी। पांयपरेमतिरामललामनुहारिकरीकरजोरिहहा
री। आपहीमान्योमनायोनकाहूकोआपहीखातनपानपि
यारी ३५॥ दोहा॥ आईगौनेकाल्हिहीसीखेकहासयान।
अबहींतेरूसनलगीअबहींतेपछितान ३६॥ अथमध्याकलहं
तरिताको उदाहरण। सवैया॥ पांयनआयपरेतोपरेरहेकेतीक
रीमनुहारिसहेली। काहकहौंसखिबानिजमानगुमानमें
सीखीनपीयपहेली। मान्योमनायोनमैंमतिरामगुमानमेंऐ
सीभईअलबेली। आजुतोल्याउमनाइकन्हाईकोमेरोनली
जियेनामसहेली ३७॥ दोहा॥ जोतूकहैतोराधिकापिय
हिमनावनजाउं। उहांकहौंगीजायकैसखीतिहारोनाउं॥
३८॥ अथ प्रौढ़ाकलहंतरिताकोउदाहरण। सवैया॥ ठाढ़ेभयेकर
जोरिकैआगेअधीनह्वैपांयनशीशनवायो। केतीकरीबिनती
मतिरामपैमैंनकियोहठतेमनभायो। देखतहीसिगरीसज
नीतुममेरेतोमानमहामदछायो। रूठिगयोउठिप्राणपिया
रोकहाकहियेतुमहूंनमनायो ३९॥ दोहा॥ प्रीतमजबपां
यनपरयोतबअतिभईसरोष। कह्योनमान्यहुँआपहीहमैं
दीजियतुदोष ४०॥ अथपरकीयाकलहंतरिताकोउदाहरण। सवैया॥

जाकेलियेगृहकाजतज्योनसिखीसखियानकीसीखसिखा
ई। बैरकियोसिगरेब्रजगांवमेंजाकेलियेकुलकानिगँवाई।
जाकेलियेघरबाहरहूमतिरामरह्योहँसिलोगचवाई। ता
हरिसोंहितएकहिबार गँवारिमैंतोरतबारनलाई ४१॥
दोहा॥ जोरतहूंसजनीबिपतितोरततपतसमाज। नेहकि
योबिनकाजहीं तेहकियोबिनकाज ४२॥ अथगर्विताकलहं
तरिताकोउदाहरण। सवैया॥ जातेलहीजगनीचवड़ाई जोमेरो
बियोगजेहोतहेक्षीनो। मोहिंगनेमतिरामजोप्राणकेमेरे
मठाहिरह्योजोअधीनो। मेरेलियेनितहीउठिकैंगहनोजु
गढ़ायकैल्यावैनवीनो। प्राणपियारोसोपांयनलाग्योरीमैं
हँसिकंठलगायनलीनो ४३॥ दोहा॥ यासोंकियोसनेह
मनरहैनएकोसाध। तासोंभईसरोषहौंसजनीबिनअपरा
ध ४४॥ अथ विप्रलब्धाकोलक्षण। दोहा॥ आपजायसंकेतमेंमि
लेनजाकोपीय। ताहिबिप्रलब्धाकहतशोचकरतअतिजी
य ४५॥ अथ मुग्धाविप्रलब्धाकोउदाहरण। सवैया॥ आलिनके
सुखमानिबेकोपियप्यारेकिप्रीतिगईचलिबागे। छायरह्यो
हियरोदुखसोंजबदेख्योनहूंनंदलालसभागे। काहूसोंबो
लकछूनकहैमतिरामनचित्तकहूंअनुरागे। खेलसहेलिन
मेंपरखेलनवेलीकोखेलनजेलसोलागै ४६॥ दोहा॥ ल
ख्योनकन्तसहेठमेंलख्योनखतकोराय। नवलबालकोकम
लसोगयोबदनकुंभिलाय ४७॥ अथ मध्याविप्रलब्धाकोउदाहरण।
सवैया॥ केलिकेमन्दिरदेख्योनलालकोवालकेदाहनअंग
देहेहैं। भौंहचढ़ायसखीमोलख्योमतिरामकछूनकुबोलक
हैहैं। भूलिहुलासविलासगयेदुखतेभरिकेअंशुवाउमहैहैं।
ईछनछोरनितेनगिरे मनोतीछन कोरनिछेदिरहे हैं ४८

दोहा ॥ तियकोमिल्यें प्राणपतिसजलजलदतनमैनासज लजलदलखिकैभरे जलजलदसेनैन ४९ ॥ अथप्रौढ़ाविप्रलब्धाकोउदाहरण। कवित्त ॥ सकलशिंगारसाजिसंगलैसहेलिनकोसुन्दरिमिलन चलीआनंदकेकंदको। कविमतिरामबालकरतिमनोरथनि पेख्योपरयंकमैंनप्यारेनँदनन्दको। नेहतेलगीहैदेहदारु मोहनगेहबानकेबिलोकद्रुमबेलिनकेब्रन्दको। नंदकोहँसत भयोमुखचन्दअबचन्दलाग्योहंसहंसनितियाकेमुखचन्दको ५० ॥ दोहा ॥ लख्योनमंदिरकेलिकेपियरुचिविजितअनंग। नयनकरनतेजलबलयगिरेएकहीसंग ५१ ॥ अथ परकीयाविप्रलब्धाको उदाहरण। कवित्त ॥ चलीमतिरामप्राणप्यारेकोमिलनघातनेसुकनिहारिकेबिगारिकाजघरको । पियरेबदनदुखहियेरेसमाइरह्योकुंजन में भयोनमिलापगिरिधरको। बिसरेबिलाससबिलाइगयोहांसछायो सुंदरिकेतनमेंप्रतापपञ्चशरको। तीक्षनजुन्हाईअरुग्रीषमकीघामभई भीषनपियूषभानुभानुदुखहरको ५२ ॥ दोहा ॥ तजीजोन्हिसोंभूमिअतिभरैंकुञ्जकेफूल। तुमबिनवाकोबनभयोखड्गपत्रकेतूल ५३ ॥ साहसकरि कुंजनगई लख्यो न नन्दकिशोर। दीपशिखासीथरहरीलगेबयारझकोर ५४ ॥ अथ गणिका विप्रलब्धाकोउदाहरणं। सवैया ॥ बीरविलासनिकोटिहुलासबढ़ाइकेअंगशिंगारबनायो। प्रीतमगेहगईचलिकैमतिरामतहांनमिल्योमनभायो। संगसहेलीसोंरोषकियोनहिंआपुनकोयहदोषलगायो। हायकियोमैंमतोयहकौनजोआपनेभौननबोलिपठायो ५५ ॥ दोहा ॥ मोहिंपठायोकुञ्जमेंउतआयोनहिंआप। आलीऔरहुमीतकोमेरोमिट्योमिलाप ५६ ॥ अथ

उत्काकालक्षण।दोहा॥ आपुजायसंकेतमेंपीउनआयोहोय।ताकोमनचिन्ताकरैउत्काकहियेसोय ५७॥ अथमुग्धाउत्काकोउदाहरण।सवैया॥ वीतिगईयुगयामनिशामतिराममिटीतमकीसरसाई। जानतिहौंकहुंऔरतियासौंरह्योरसमेंरसिकेरसकाई॥शोचतिसेजपरीयौंनवेलीसहेलीसोंजातिनबातसुनाई। चन्दचढ्योउदयाचलमेंमुखचन्दमेंआनिचढीपियराई ५८॥दोहा॥ कितनकन्तआयोअलीलाजनबूझिसकैन। नवलबालपलकापरीपलकनलागैनैन ५९॥ अथमध्याउत्काकोउदाहरण।सवैया॥ वारहिंबारविलोकतिद्वारहिंचौंकिपरैतिनकेखरकेहूं।सेजपरीमतिरामबिसूरतिआइअहौंअबहींलखिमेंहूं। संगसखीनकेखेलतहींअजहूंरजनीपतिकेअथयेहूं। लालनबेगिनजाहुघरौफिरबालनमानिहैंपांयपरेहूं ६०॥ दोहा॥ कहांरह्योआयोसखीपीउपहरयुगमैन।अधनिकरेअधरानिसोंबालवदनतेबैन ६१॥ अथउत्काप्रौढ़ाकोउदाहरण।सवैया॥ कैयुघरीनिशिबीतिगईअरुमेहचहूंदिशिआयोउनैहै। अंगशिंगारकैबैठीहैसांवरेतेरीयेबाटबिलोकतिकैहै।बैठकहामतिरामरसालहौरातिमनावतिहींपुनिजैहै। जाहुनबेगिनिहारीपियारीसोंदोषबिचारिहमैंबहुदैहै ६२॥दोहा॥ पीउनआयोध्यानमेंमूंदेलोचनबाल।पलकउघारीपलकमेंआयोहोयनलाल ६३॥ अथपरकीयाउत्काकोउदाहरण।कवित्त॥ यमुनाकेतीरवहशीतलसमीरजहांमधुकरमधुरकरतमन्दशोरहैं। कविमतिरामतहांछविसोंछबीलीबैठी अंगनितेफैलरीसुगन्धकीझकोरहैं।प्रीतमबिहारीकेनिहारिवेकोबाटऐसीचहूंओरदीरघदृगनिकरीदौरहैं।एकओरमीनमनोएकओरकंजपुंजएक

श्रोरखंजनचकोरएकओरहैं ६४॥ दो० ॥ कंतबाटलखि गेहकीकुंजदेहरीश्राय।ऐहैंपीउबिचारियोनागरिफिरिफि रिजाय ६५॥ अथगणिकाउत्काकोउदाहरण।सवैया॥ प्रीतमकोधर ध्यानघरीककरैमनहींमनकामकलोलैं। प्रीतमकेखरकेम तिरामश्रचानकहीश्रंखियापुनिखोलैं।प्रीतमऐहैंअजौंस जनीअंगिराइजम्हाइघरीकुयोंबोलैंगावैंघरीकुगरेहीहरे हरिगेहकेबागहरेहरेडोलैं ६६॥दोहा॥ बारबधूपियपन्थ लखिअँगिरानीश्रंगमोरि।पौढ़िरहीपरयंकमनुडारीसदन मरोरि ६७॥ अथवासकशय्याकालक्षण। दोहा॥ ऐहैंप्रीतम श्राजुयोंनिश्चयजान्योबाम।साजेसेजशिंगारसखिबास कशय्यानाम ६८॥ अथमुग्धावासकशय्याकोउदाहरण। कवित्त॥ भईहौंसयानीतरुनाईसरसानीअरुप्रीतिमेंपत्यानीउठि लाजडरनाकियो।कबिमतिरामकामकेलिकीकलानिकरि मोहनललाकोबशकीजोअभिलाषयो। मृदुमुसक्याइपर यंकमेंनिशंकजाइअंकभरिआनँदअधररसचाखियो।नेव रीकितनकझनकराखिप्यारीआजुरसबकीतनकझनकर सराखियो ६९॥ दोहा॥ दीठिबचाईसखिनकीकेलिभवनमें जाइ। पौढ़िरह्योक्षणसेजतियश्रतिआनँदश्रधिकाइ ७०॥ अथमध्यानवासकशय्याकोउदाहरण।कवित्त॥ केसरिकनकजहांचंपक बरणकहांदामिनियोंदूरिजातदेहकीदमकते।कबिमतिरा मलोनेलोचनलपटलाजअरुणकपोलकामतेजकीतमक ते। पगकेपरलकलाकिंकिणिनेवरबजैंबिछियाझमकउठैंए कहीझमकते। नाहसुखचाहिचित्तऔचकहंसतिचौंकिप रीचंदमुखीनिजचौकाकीचमकते ७१॥दोहा॥निशिनिय रातिनिहारियतसौतिबदनश्ररबिंदु। सखीएकयहदेखि

येतेरोआननइंदु ७२ ॥ अथप्रौढ़ावासकशय्याकोउदाहरण । सवैया ॥
बारनधूपअँगारनधूपकेधूपअँध्यारीपसारीमहाहै। आन
नचन्दसमानउग्योमृदुमन्दहँसीजनुजोन्हछटाहै। फैलि
रहीमतिरामजहाँतहँदीपतिदीपनकीपरभाहै। लालतिहा
रेमिलापकोबालसुआजुकरीदिनहींमेंनिशाहै ७३ ॥ दोहा ॥
सबशिंगारसुन्दरिसजे बैठीसेजबिछाय। भयोद्रौपदीको
बसनबासरनहींबिलाय ७४॥ अथपरकीयावासकशय्याको उदाहरण
सवैया ॥ सांझहितेकरिराखैसबैकरिबेकोंजुकाजहुतेरजनी
के। पौढ़िरहीउमगैअतिहीमतिरामअनंदअमातनहीके।
सोवतजानिकैलोगसबैअधिकानेमिलापमनोरथपीके।से
जतेबालउठीहरषैंपटखोलिदियेतबहींखिरकीके७५॥दोहा
मनमोहनकेमिलनकोकरैमनोरथनारि। धरैपवनकेसाम
नेदियाभवनकोबारि ७६ ॥ अथगणिकावासकशय्याको उदाहरण ।
कवित्त ॥ सेतसारीसोहतउज्यारीमुखचन्दकीसीमहलनि
मन्दमुसक्यानकीमहामही । अँगियाकेऊपरहैउलहीउ
रोजओपउरमतिराममालमालतीकीडहाडही। मांजेमंजु
मुकुरसेमंजुलकपोलगोलगोरीकोगोराईगोरेगातनगहा
गही। फूलनकीसेजबैठीदीपकफैलायलायबेलीकीफुलेल
फूलीफूलसीलहालही ७७ ॥ दोहा ॥ सुन्दरिसेजसंवारि
कैसाजेसबैशिंगार । दृगकमलनकेद्वारमेंबांधेबन्दनवार
७८ ॥ अथस्वाधीनपतिकाकोउदाहरण । दोहा ॥ सदारूपगुणरी
झिपियजाकेरहैअधीन। स्वाधिनपतिकानायकावरणैंक
बिपरबीन ७९ ॥ अथमुग्धास्वाधीनपतिकाकोउदाहरण । सवैया ॥
आपनेहाथसोंदेतमहावरआपहिबारशिंगारतनीके। आ
पनहींपहिरावतआनिकैहारसंवारिकैमौलसरीके । हौंस

खिलाजनजातमरीमतिरामस्वभावकहाकहौंपीके। लोग मिलेघरघेरकरैंअबहींतेयेचेरेभयेदुलहीके ८० ॥ दोहा ॥ अंगअंगअवलोकिकैतिययौवनकीज्योति।सुधासिन्धुअवगाहश्रुतदीठिनाहकीहोति ८१ ॥ अथमध्यास्वाधीनपतिकाकोउदाहरण। कवित्त ॥ जगमगयौवनअनूपरूपचाहियतदेखियतिरतिऐसीरम्भासीबिसाइये। देखिवेकप्राणप्यारेप्राणप्यारीपासखरोघूंघुटउघारिनेकुबदनदिखाइये। तेरेअंगअंगमेंमिठाईलेउनाहींभरि मतिरामकहैयेप्रगटहीनपाइये। नायककेनैननमेंनाइयेसोधारसब सौतिनकेलोचननलोनसोलगाइये ८२ ॥ दोहा ॥ बड़ेआपनेदृगनकोयमकाहिसकौसुमैन। पियनयननभीतरसदाबसतातिहारेनैन ८३ ॥ अथप्रौढ़ास्वाधीनपतिकाकोउदाहरण। सवैया ॥ लालनमेंरतिनायकतेसुखसुन्दरतारुचिपुंजनिपेखी। बालनतौमतिरामकहैंरतितेअतिरूपकलाअवरेखी।सामुहबैठेलखैइकसेजमेंबोलीअलीइकरूपबिशेखी। भालमेंतेरेलिखीबिधिसोयहलालकीमूरतिलालमेंदेखी ८४ ॥ दोहा ॥ सुधामधुरतेरोअधरसुंदरसुमनसुगंध। पीवजीवकोबंधुहैबंधुजीवकोबंध ८५ ॥ अथपरकीयास्वाधीनपतिकाकोउदाहरण। सवैया ॥ मोयुगनैनचकोरनकोयहरावरेरूपसुधाहीकोनैबो। कीजैकहाकुलकानितेआनिपरयो अब आपनोप्रेमछिपैबो। कुंजनमें मतिरामकहूं निशिद्योसहूं घातपरेमिलिजैबो। लालसयानी अलीनकेबीच निवारियेह्यांकीगलीनकोऐबो ८६ ॥ दोहा ॥बिषमलोगब्रजगांवकोलालबिलोकोवास। बढ़िजैहैइनदृगनकेहांसनितेउपहास ८७ ॥ अथगणिकास्वाधीनपतिकाकोउदाहरण। सवैया ॥ भूषणअम्बरल्यावतआ

पुरहैपहरावनकोमुखहेरे।आपहिपानखवावतिआनिसहे लीनआवनपावतनेरे। तापियसोंरिसकैसेकरोंमतिरामक हैसिखयेसखितेरे।पूररहेसनभावनकेगुणमानकोठौरनहीं मनमेरे ८८॥ दोहा॥ मोहिंलखेसजनीसदाजाकोधनमस प्रान।सपनेहूंतोपीवसोंमाननभलोसयान ८९॥ अथअभि सारिकाकोलक्षण। दोहा॥पियहिबुलावैआपकोपियपैआपहि जाय।ताहिकहतअभिसारिकाजेप्रवीणकविराय ९०॥अथ मुग्धाअभिसारिकाकोउदाहरण। सवैया॥ बातनजायलगायलईर सहीरसमैंमनहाथकैलीनो।लालतिहारेबुलावनकोमति राममैंबालकह्योपरवीनो।बेगिचलोनबिलम्बकरोलख्यो बालनवेलीकोनेहनवीनो।लाजभरीअँखियांबिहँसीबसि बोलकहोंबिनउत्तरदीनो ९१॥ दोहा॥ अलीचलीनवला हिलैपियपैसाजशिंगार।ज्योंमतंगअँडदारकोलियेजात गँडदार९२॥ अथमध्याअभिसारिकाकोउदाहरण। सवैया॥ बैठिरहे मतिरामललाघरभीतरसांझहितेअनुरागी। बानकसों बनिचारुशिंगारनिआईसुहागिनिप्रेमसोंपागी। प्यारेक ह्योहंसिआइयेसेजहिप्यारीकीजानिविलासिनिजागी।न यननवाइरहीमुसक्यायकेहारहियेकोसवाँरनलागी ९३॥ दोहा॥ यौवनमदगजमन्दगतिचलीबालपियगेह। पग निलाजआईपरींचह्योमहासदनेह ९४॥ अथप्रौढाअभिसारिका कोउदाहरण। कवित्त॥ सहजसुवासयुतदेहकीदुगुनिद्युति दामिनीदमकिदीपकेसरकनकतें। मतिरामसुकविसुमुख सुकुमारअंग सोहतशिंगारचारु यौवनबनकतें।सोइबेको सेजचलीप्राणपति प्यारेपास जगतजुदारज्योतिहंसनि कनकतें। चढ़तअटारीगुरुलोगनकीलाजप्यारीरसनाद

शनदाबेरसभ्ननकनतें ९५ ॥ दोहा ॥ सजिशिंगारसेजाहि चलीबालजहांपतिप्रान। चंदतअटारीकीसिढ़ीभईकोश परमान ९६ ॥ अथपरकीयाकृष्णअभिसारिकाकोउदाहरण। कवित्त ॥ उमड़िघुमड़िदिगमंडलनिमंडिरहे भूमिभूमिबादरकुहु किनिशिकारीसें।अञ्जनमेंकीन्होमृगमदअङ्गरागतैसोआ ननउढ़ायलीन्होश्यामरंगसारीसें।मतिरामसुकबिमयंक रुचिराजरहीआभरनराजीमरकतमनवारीमें। मोहनछ बीलेकोमिलनचलीरोमाछबि छाहलोंछबीलोछबिछाजत अँध्यारीमें ९७ ॥ दोहा ॥ श्यामबसनमेंश्यामनिशिदुरग तियाकीदेहापहुँचाईचहुँओरघिरभोरभीरपियगेह ९८॥ अथशुक्लाअभिसारिकाकोउदाहरण। कवित्त॥अंगनमेंचन्दनचढ़ायघ नसारसेतसारीक्षीरफेनऐसीआभाउफनातिहै।राजतरु चिरसच्छिमोतिनकेआभरण कुसुमकलितकेशशोभासर सातिहै।कबिमतिरामप्राणप्यारेकोमिलनचलीकरिकैम नोरथनिमृदुमुसकातिहै। होतिनलखाईनिशिचंदकीउ ज्यारीमुखचंदकीउज्यारीतनछाहौंछिपिजातिहै ९९ दोहा॥ मलिनकरीछबिजोह्नकीतनछबिसोंबलिजाउँ। क्योंजैहौं पियपैसखीलखिजैहैसबगाउँ २००॥ अथदिवाअभिसारिका कोउदाहरण। कवित्त ॥ सारीजरतारीकीझलकझलकनितैसो केसरिकोअंगरागकीन्होसबतनमें। तीक्षणतरणिकीकिर णितेदुगुनज्योतिसोहतजवाहिरजड़ितआभरनमें। कबि मतिरामआभाअंगनअंगारिनकी धूमकैसीधारछबिछा जतिकचनमें। ग्रीषमदुपहरीमेंहरिकोमिलनचलीजानी जातनारिनंदवारियुतबनमें १॥दोहा॥ ग्रीषमऋतुकीदुप हरी चलीबालबनकुंज। मेंअंगलपटितीक्षणलुवैमलयप

वनकेपुंज २॥ अथगर्विताअभिसारिकाकोउदाहरण । कवित्त ॥ सांझहिसिंगारसाजिप्राणप्यारेपासजातिबनितावनकवनीवेलसीअनंदकी।कविमतिरामकलकिङ्किणिकीधुनिबाजैमन्दमन्दचालज्योंबिराजतगयन्दकी।केसरिमेंरंगियेदुकूलहांसीमेंझरतकेशनमेंछाईछबिफूलनकेवृन्दकी । पीछेपीछेआवतअँध्यारीसीभँवरभीर आगेफैलरहीउजियारीमुखचन्दकी३ ॥दोहा॥ नागरिसकलश्रृंगारकरिचलीप्राणपतिपास।प्रियाअलीबिहँसतमनोशोभासहजविलास४॥

अथप्रवत्स्यत्प्रेयसीकोलक्षण। दोहा ॥ होनहारपियकेविकलविरहहोयजोबाल।ताहिप्रवत्स्यतप्रेयसीबरणतबुद्धिविशाल५

अथमुग्धाप्रवत्स्यत्प्रेयसीकोउदाहरण । कवित्त ॥ जादिनतेचलिबेकीचरचाचलाईतुमतादिनतेवाकेपियराईतनछाईहै। कहैमतिरामछोड़ेभूषणबसनपानसखिनसोंखेलनिहँसनिबिसराईहै। आईऋतुसुखकीसुहाईप्रीतिवाकेचितऐसेमेंचलोतोलालरावरीवड़ाईहै। सोवतनरैनिदिनरोवतरहतबालबूझतकहतिसुधिमायकेकीआईहै ६ ॥ दोहा ॥ क्योंसहियेसुकुमारयहपहलोविरहगोपाल।जबवाकेचितहितभयोचलनलगेतबलाल ७ ॥ अथमध्याप्रवत्स्यत्प्रेयसीकोउदाहरण । सवैया ॥ गौनेकेद्योसछसातकबीतेनचौथीकहांअबहींइतआई।लालनबालकेताक्षणतेमतिरामपरीमुखमेंपियराई। तूनदहूकोपठायसखीयहदेखिदुहूनकीप्रीतिसुहाई। रोयेसेरोचनमोयेसेलोचनसोयनशोचतरैनिबिताई८॥दोहा॥ अबहींलैमिलिमोहिंसखिचलतआजुब्रजराज। अँसुवनिराखतिरोंकिकैजियहिनिकासतिलाज ९ ॥ अथप्रौढ़ाप्रवत्स्यत्प्रेयसीकोउदाहरण । कवित्त ॥ मलयसमीरलागेचलनसुगंध

सीरपथिकनकीन्हेपरदेशनितेआवने।मतिरामसुकविस मूहनकुसुमफूले कोकिलमधुपलागेबोलनसुहावने। आयोहैवसंतभयेपल्लवितजलजात तुमलागेचलिवेकीचरचाचलावने। शवरीतियाकोतरुवरसरवरनकेकिशलयकमलह्वैहैंवारकविछावने१०॥ दोहा॥ कोपनितेकिशलयजवैहोहिंकलिनतेकौल।तबचलाइयेचलनकीचरचानायकतौल ११॥ अथपरकीयाप्रवत्स्यत्प्रेयसीकोउदाहरण। कवित्त॥ मोहनललाकोसुन्योचलनविदेशभयोबालमोहनीकोचित्तनिपटउचाटमें।खरीतलबेलीतनमनमेंछबीलीराखैछतिपरछिनकुछिनकुपांववाटमें। प्रीतमनयनकुवलयनकोचंदभयोघरीमेंचलेगामतिरामजेहिघाटमें। नागरीनबेलिरूपआगरीअकेलीरीतिगागरीलैठाढ़ीभईघाटहीकेबाटमें १२॥ दोहा॥ चलतसुन्योपरदेशकोहियरारह्योनठौर। लैसखिनीमीतहिंदयोनौरसालकामौर १३॥ अथगणिकाप्रवत्स्यत्प्रेयसीकोउदाहरण। कवित्त॥ मंजनकियोनतनअंजनदियोननयनजावकदियोनपांयरहीमनमारिकै। मतिरामसुकबितमोलछोड़िबैठीवौरपहिरेबसनडारेभूषणउतारिकै। आइहैआजुपीवबिदामांगनबिदेशको योंनेहकेजमायबेकीचातुरीविचारिकै।गारिराख्योचंदनबगारिराख्योघनसारआंगनमेंसेजसरसिजनसवांरिकै१४॥ दोहा॥ चलतपीयपरदेशकोवरजसकौनहिंतोहिं।लैआइहौआभरनज्योंजियतपाइहौमोहिं १५॥ अथआगतपतिकाकोलक्षण। दोहा॥ यातियकोपरदेशतेआयोपियमतिराम।ताहिकहतकबिलोगयहआगतपतिकावाम १६॥ अथमुग्धाआगतपतिकाकोउदाहरण। सवैया॥ आयोबिदेशतेप्राणपियामतिरामअनंदबढ़ाइअले

खै। लोगनिसोंमिलिआंगनबैठिघरीहीघरीसिगरोघरपे
खै। भीतरभौनकेद्वारखड़ीसुकुमारतियातनकम्पविशेखै।
घूँघुटकोपटओटकियेपटओटदियेपियकोमुखदेखै १७॥
दोहा॥ पियआयोनववालतनबाढ़्योहरषबिलास। प्रथम
बारिबूंदनउठैज्योंबसुमतीसुबास १८॥ अथमध्याआगतपतिका
कोउदाहरण। सवैया॥ चंद्रमुखीसजनीनकेसंग हुतीपति
अंगनिमेंमनुफेरत। ताहिसमयपियप्यारेकीआगमप्यारी
सखीकह्योद्वारतेटेरत। आयगयेमतिरामजबैतबदेखतन
यनअनंदभयेरत। भौनकेभीतरभाजिगईहँसिकैहरुवेहरि
कोफिरहेरत १९॥ दोहा॥ पियआगमशरदागमनबिम
लबालमुखइन्दु। अंगबिमलपियपैभयोफूलेदृगअरबिन्द
२०॥ अथप्रौढ़ाआगतपतिकाकोउदाहरण। सवैया॥ प्राणनप्यारो
मिल्योसपनेमेंपरीजबतेसुखनींदनिहोरे। कंतकोआयबो
त्योंहींजगायसखीकह्योदैनपीउपैनिचोरे। योंमतिरामभ
योहियतेमुखबालकेबालमसोंदृगजोरे। जैसेमिहीपटमेंच
टकीलचढ़ैरँगतीसरीबारकेबोरे २१॥ दोहा॥ पियआयोप
रदेशतेहियहुलसीअतिबाम। टूकटूककंचुकिकियोकरकम
लनिकाम २२॥ अथपरकीयाआगतपतिकाकोउदाहरण। सवैया॥
आयोबिलम्बबिदेशतेबालमबालबियोगब्यथाबिसराई।
आईतहांतिनकेसँगहैसबगांवकीजेयुवतीजुरिआई। देख
तहीमतिरामकहैंअँखियानिमेंआनँदकीछबिछाई। लाज
निक्योंकरिबेनकहैंसुकरयोदुखदेहसबैदुबराई २३॥ अथ
दूसरोउदाहरण। सवैया॥ भावतेकोसुनिआगमआनँदअंगनि
अंगनिमेंउमह्योहै। सोहमहूँहितसोंनदुराइये आलीक
ह्योयहकौनकह्योहै। गाढ़ीभईमाहारिदरकी अँगियाकी

तनीनिततनउमग्योहै। खैंचिलियेसुखकेअंशुवायहक्यों दुरिहैहियराउमह्योहै २४॥ दोहा॥ सुन्योमायतेजबयही बामनआयोकन्त। कुशलबूझिबेकेमिसहिलीन्होंबोलि इकन्त २५॥ अथगणिकाआगतपतिकाकोउदाहरण। कवित्त॥ नागरबिदेशमेंबिताईबहुद्योसआय नागरिकेहियमेंहुल सिनिकसीखानकी। कबिमतिरामअंकभरिकैमयंक मुखी नेहैसरसाइभाहीसतिसुखदानकी। सुवरनबोलि कै बतावतकैसुबरनही रजतलावतहै छबिमुसक्यानि की। आँखिनतेंआनँदकेआंशूउमगाइप्यारीप्यारेकोदिवा वतसुरतिमुकतानकी २६॥ दोहा॥ फूलीनागरिकामि नीउड़िगयेनित्तमलिंद। आयोमित्रबिदेशतेभयोमुदित आनंद २७॥ अथउत्तमालक्षण। दोहा॥ पियहितकोअनहित करैआपकरैहितनारि। ताहिउत्तमानायकाकबिजनकरत बिचारि २८॥ अथउदाहरण। सवैया॥ रातिकहूँरसकेमन भावनआवनप्राणप्रियाघरकीनो। देखतहीमुसक्याय उठीआगेह्वैआदरकैफिरलीनो। मोहनकेतनमेंमतिराम दुकूलसुनीलीनोंहारनवीनो। केसरकेरँगसोंरँगिकैपटुपी तकेप्रीतमकेकरदीनो २९॥ दोहा॥ पियअपराधअनेक निजआंखिनहूँलखिपाइ। तियइकहूंकहुकंतसोंमानेकरत लजाइ ३०॥ अथमध्यमालक्षण। दोहा॥ पियसोंहिततेंहितक रैअनहितकीनोंमान। ताहिमध्यमाकहतहैंकबिमतिराम सुजान ३१॥ अथउदाहरण। कवित्त॥ आयोप्राणपतिरातअनतें बिताईबैठीभौंहानिचढ़ाइरंगीसुंदरिसुहागकी। बातनबना ईपरेउप्यारीकेपगनिआइछलसोंछिपाइछैलछबिरतदाग की। छूटिगयोमानलगीआपहिसबाँरनकोसिरकीसुकबि

मतिरामपियपागकी। रिसहीकेआंशूभरेआनँदकेआंखि
नमेंरोषकीललाईसोंललाईअनुरागकी ३२॥ दोहा॥ मेरेतन
केरोमयहमेरोहिनहींनिदान। उठिआदरअगमनकरैंकरौं
कौनविधिवास ३३॥ अथअधमाकोलक्षण। दोहा॥ पियसोंहितं
हूंक्योंकियेकरमानेयोंबाल। तासोंअधमाकहतहैंकबिम
तिरामरसाल ३४॥ उदाहरण। कवित्त॥ आयोहैसयानपन
गयोहैअजानमननितउठिमानकरिबैठेवबावरी। घरघर
मानिनीहैमाननामनायोतबै तेरीऐसीरीतिअनकाहहूपै
नाकरी। कविमतिरामकामरूपघनश्यामलाल तेरीनैन
कोरऔरचाहैइकटकरी। हाहाकहैंनिहोरेहूनहेरतिहरिन
नैनी काहेकोकरतिहठुहरिलकोलकरी ३५॥ दोहा॥ कहा
लियेगुरुमानकोअतितांहीकेंनेम। पारदसोंउड़िजायगी
अलिअंचलयहप्रेम ३६॥ इतिनायकालक्षणसमाप्तम्॥ अथनायक
लक्षण। दोहा॥ तरुणसुघरसुन्दरसकलकामकलानिप्रवीन।
नायकसोंमतिरामकहिकवितरीतिरसलीन ३७॥ अथउदा
हरण। सवैया॥ गुच्छनकोअवतंसलसैशिखिपक्षनअच्छकि
रीटबनायो। पल्लवलालसमेतछरीकरपल्लवसोमतिरामसु
हायो। गुंजनिकेउरमंजुलहारनि कुंजनतेकढ़िबाहरआ
यो। आजुकोरूपलखैब्रजराजकोआजुहीआंखिनकोफल
पायो ३८॥ दोहा॥ परीभांवरेंसांवरेरासरसिकरसजान।
उनहींमेंमनभ्रमतहैहेवोडरकोपान ३९॥ अथनायकभेद।
दोहा॥ पतिउपपतिवासिकत्रिविधनायकभेदबखान। वि
धिसोंब्याहोपतिकहतकविकोविदमनजान४०॥ अथउदाहर
ण। सवैया॥ पांवधरैंदुलहीजेहिठौररहैमतिरामतहांदगदीने।
छोड़िउसखानकेसाथकोखेलबोबैठरहैघरहीरसभीने। सां

झहीतेललकेमनहींमन लालनयोंरससोंबशलीने। लोनी सलोनीकेअंगनिनाहसुगौनेकीचूनरीटौनेसेकीने४१ दोहा। जादिनतेगौनोभयोआईलालरसाल। तादिनतेबिरहिनि भईहरिउठतेबनमाल ४२॥ अथनायककावर्णन। दोहा॥ नारि भांतिसोंसबनयेप्रथमकहतअनुकूल। दक्षिणगनिपुनिधृ ष्टशठरसशृंगारकेमूल ४३॥ अथअनुकूलनायकलक्षण। दोहा॥ सदाआपनीनारिसोंजाकेअतिहीप्रीति। परनारीतेविमुख जोसोअनुकूलसुरीति ४४॥ अथउदाहरण। सवैया॥ क्योंहूं नहींबिसरैनिशिबासर मंदहँसीमुखचंदउज्यारी। त्योंहीं दियोअतिनेहसोंदेहकीदीपकलासमदीपतिन्यारी। तेरि येज्योतिजगेहियभीतरआवतनारिनऔरअँध्यारी। नैनन हूंअरुबैनहूंकेतनहूंमनहूंकेतुहींअतिप्यारी ४५॥ दोहा॥ सपनेहूंमनभावनोकरतनहींअपराध। मेरेमनहींमेंरहीस खीमानकीसाध ४६॥ अथदक्षिणलक्षण। दोहा॥ एकभांतिस बतियनिसोंजाकोहोयसनेह। सोदक्षिणमतिरामकहबर णतहैमतिगेह ४७॥ अथउदाहरण। सवैया॥ सांझसमयल लनामिलिआईबड़ोजहँनंदललाअलबेलो। आपनिपौरि वताइकह्योअबआजुहमारिहीपौरिमेंखेलो। खेलनकोनि शिचांदनीमोहननयनमतोमातिरामसुहेलो। त्योंहँसिकै ब्रजराजकह्योयेआजुहमारेहीपौरिमेंखेलो ४८॥ दोहा॥ दक्षिणनायकएकतुम मनमोहनब्रजचन्द। फुलयेब्रजब नितानिकेदृगइन्दीबरवृन्द ४९॥ अथधृष्टलक्षण। दोहा॥ करैदोषनिरशंकक्वैडरैनापियकेमान। लाजधरैमनमेंनहीं नायकधृष्टनिदान ५०॥ अथउदाहरण। कवित्त॥ बरजोनमा नतहौबारबारबरजोमैं कौनकाममेरेइतभौनमेंनआइये।

लाजकोनलेशजगहांसीकोनडर मनहँसतहँसतआनबा
तनबनाइये।कबिमतिरामनितउठिकैकलंककरोनितनित
सौंहैंकरोअंगबिसराइये। ताकेपगलागोनिशिजागिजाके
उरलागेमेरेपगलागिलागिआगिनलगाइये ५१॥ दोहा॥
आजनयनकुलटानिकेआनिबसेब्रजराज। हियेतिहारेते
सकलमानिनिकारीलाज ५२॥ अथशठकोलक्षण। दोहा॥ ड
रेकरैअपराधहीकरेकपटकीप्रीति। बचनक्रियामेंअतिच
तुरशठनायककीरीति ५३॥ अथउदाहरण। कबित्त॥ मोते
तोकछूनअपराधपरेंउप्राणप्यारी मानकरिरहीयोंहीका
हिकैअरसते। लोचनचकोरमेरेशीतलहीहोततेरेअरुण
कपोलमुखचन्दकेदरसते। कहैमतिरामउठलागिउरमेरे
कित करतिकठोरमनअँसुवाबरसते। कोपतेकटूकबोल
बोलतिहैतऊमोकोमीठेहोतअधरसुधारसपरसते ५४॥
दोहा॥ पियतरहौंअधरानको रसअतिअधिकअमोल।
तातेंमीठेकढ़तहैं बालबदनतेबोल ५५॥ अथउपपति।
दोहा॥ जोपरनारीकेरसिक उपपतिताहिबखान। प्रीतम
जोगणिकानिको बैसिकताहिसुजान ५६॥ अथउपपतिकोउ
दाहरण। कबित्त॥ सुन्दरसरससबअंगनिशिंगारसाजिस
हजसुभावनिशिनेहकछुकैगई।कीन्हेमतिरामबिहँसोहैंसे
कपोलगोल बोलिनअमोलबोलइतनाहींदुखदैगई। मेरो
ललचौंहैमुखफिरकेलजैहै ललचाहैचारुचषनिचितैके
सोचलीगई।निपटनिकटह्वैकेकपटसोंछुवाइअङ्गलायकी
सीलपटलपेटमनलैगई ५७॥ दोहा॥ नैनजोरिमुखमोरि
हँसिनेसुकनेहजनाय। आगलेनआईहियेमेरेगईलगाय
५८॥ अथवैसिककोउदाहरण। कबित्त॥ आगमनवाहिचकचौ

ररह्योतवज्योतिजगरमगरआभरनकेनगनभो।यौवनके मदरूपमदवाकेमैनमदछबिमतवारोहैकेथकितपगनभो। कहैमतिरामलोललोचनविशालवाके तीक्षणकटाक्षणको भेदकेलगनभो। बारबारघूमिबारबधूबारभोरनिसेमांग नकीमुक्तमालगातमेंमगनभो ५९॥ दोहा॥ लोचनपानि गपद्मिसजीलटबंशीपरबीन।मोमनवारविलासिनीफाँसि लियोमनुमीन ६०॥ अथअन्यनायकभेद।दोहा॥ मानिवचनचा तुरकह्योक्रियाचतुरपुनिजान। तीनभांतिऐसेकहतनाय कसुकविबखान ६१॥ अथमानीलक्षण।दोहा॥ करतनायका सोकहूंजोनायकअभिमान।तासोंमानीकहतहैंकविमति रामसुजान ६२॥ अथउदाहरण।कवित्त॥ बहुसुधिकरो क्योंननयननलनीकेदलसेजसारेसारेसरसिजनिबिछाइ ये। अमलउशीरइंदुचंदनगुलाबनीरकहांलगिऔरउप चारनिजनाइये। छलबलछलवाकोंमेमिलायकेजिवायत बकविमतिरामअम्बसाहिबीजनाइये। ऐसोमनभावनगु मानहैजुप्यारीकेमनाइबेमनाइबेकोतुमकोमनाइये ६३॥ दोहा॥ यामेंकौनसयानहैमोहनलालसुजान। आपकरत अपराधहीआपहिकरतगुमान ६४॥ अथवचनचतुरताकालक्षण। दोहा॥ वचननिमेंजोकरतहैचतुराईमतिराम। वचनचतु रनायकसरसलीजैजानिसकाम ६५॥अथउदाहरण।कवित्त॥ दूसरेकीबातसुनिपरतनऐसीजहां कोकिलकपोतनकीधु निसरसातिहै। छाईरहैजहांद्रुमबेलिनसोंमिलिमतिराम अलीकूलनिमेंअँध्यारोअधिकातिहै। तरवतसेफूलिरहैफूल नकीकुंजघनकुंजनमेंहोतजहांदिनहूमेंरातिहै। तावनकी बाटकोऊसंगनासहेलीकाहिकैसे तूअकेलीदधिबेचनको

जातिहै ६६॥दोहा॥तोकोदेउबताइकै तूकितहोतउचाट। ग्वालिनिदधिवेचनगईबंशीबटकीबाट ६७॥अथक्रियाचतुरकालक्षण।दोहा॥करैक्रियासोंचातुरीजोनायकरसलीन। क्रियाचतुरताकोकहतकविमतिरामप्रवीन ६८॥अथउदाहरण। सवैया॥नँदलालगयोतिलहीवलिकैजितखेलतिबालसखीगनमें।तहँआपहीमूंदिसलोनीकेलोचनचारेमिहीचनिखेलनमें। दुरिबेकोगईसिगरीसखियांमतिरामकहैइतनेक्षनमें। मुसक्याइकेराधिकाकंठलगायछिप्योकहुँजायनिकुंजनमें ६९॥दोहा॥ सांझसमयवहुछैलकीछलनिकहीनहिंजाय।बिनडरखलडरवाइकैलियोंसोहिंउरलाय ७०॥ अथप्रोषितनायकलक्षण।दोहा॥नायकहोयविदेशमें जोवियोगअकुलाय। तासोंप्रोषितकहतहैंजेप्रवीनकविराय ७१॥ अथउदाहरण।कवित्त॥प्यारेपगेवचनपियूषपानकरिकरिउमँगिउमँगितियआनँदविशेषिहैं। कविमतिरामतनतपनिबुझायजैहैतबनिजजनमसुफलकरिलेखिहैं। हीतलकोशीतलकरनचारुचांदनीसी मंदमृदुमुसक्यानिआनमिषपेखिहैं। ह्वैहैतोनिराशभरेलोचनचकोरनकीजबवाकोआननअमलइन्दुपेखिहैं ७२॥दोहा॥ प्रफुलितसुमनसुबासमेंकरबोआनँदकेलि। सोनीकोउसलागिहैउरसोनेकीबेलि ७३॥अथदर्शनलक्षण।दोहा॥ दरशनआलम्बनहिमेंकविमतिरामबखानि। श्रवणस्वप्नअरुचित्रपुनित्योंप्रत्यक्षहिजानि ७४॥अथश्रवणदर्शनकोउदाहरण।सवैया॥ आननपूरणचन्द्रलसेअरुबिन्दुविलासविलोचनपेखे। अंबरपीतलसेचपलाछविअम्बुदमेचकअङ्गउरेखे। कामहुतेअभिरामहामतिरामहियेनिहचैकरिलेखे। तेबरणैनिजवैननि

सोंसखिमैंनिजनैननिसोंमनदेखे ७५ ॥ दोहा ॥ जैसोतु मवरण्योसखीरूपकान्हकोआय। तैसोईमेरेचषनरह्योआ यठहराय ७६ ॥ अथस्वप्नदर्शनकोउदाहरण ॥ सवैया ॥ आवत मैंहरिकोसपनेलखिनेसुकबाटसकोंचनछोड़ी। आगेह्वैठा ढेभयेमतिरामचलेसुचितेचषलालचयेड़ी। होठनकोरस लेनकोमोहनमेरीगहीकरकांपतिठोड़ी। औरभटूनभईकछु बातगईइतनेहीमेंनींदनिगोड़ी ७७॥ दोहा ॥ पियमिला पकोसुखसखीकह्योनजातअनूप। सोतुमसोंसपनोभयो सपनोसोसुखरूप ७८॥ अथ चित्रदर्शनका उदाहरण। कवित्त॥ आलसभरीतिपरसनजान्योजात कहीकहीहीनसुनतबा तनाकहीं। सूंघैनासुबासमुमननिकीसमुभिपरीटकटकीब ढ़ेबड़ेदृगनमेंऊलही। कविमतिरामताहिनेकुपरवाहिना हिऐसीभांतिभईचहत्तेरेनेहसोंनहीं। येरेचितचोरचालिच न्दमुखीताहिचित्रहीमेंचाहिचाहिचित्रहीमेंह्वैरही ७९ ॥ दोहा ॥ चित्रहुमेंजाकेलखेहोयअनन्तअनन्द। सपनेहूंकब हूंसखीसोमिलिहैंब्रजचन्द ८०॥ अथप्रत्यक्षदर्शनकोउदाहरण। कवित्त॥ मोहनलालकोमनमोहिनीविलोकिबालकसीकरि राखतहैउमंगउमाहको। सखिनकीदीठकोबचायकैनि हारतहैआनंदउमाहबीचपावतिनथाहको। कविमतिराम औरसबहीकेदेखतही ऐसीभांतिदेखतछिपावतउछाह को। वेईनैनरूखेसेलगतऔरलोगनकोवोहीनैनलागत सनेहभरेनाहको ८१॥ दोहा॥ नन्दनँदनकेरूपपर रीझि रहीरिझवारि। अधमूँदीअँखियनदई मूंदीप्रीतिउघारि ८२॥ अथउद्दीपनभावलक्षण। दोहा॥ चन्दकमलचंदनअगरऋ तुवनबागविहार। उद्दीपनशिंगारकेजेउज्ज्वलयशिगार

८३ ॥ अथउदाहरण ॥ सवैया ॥ पूरणचन्दउद्योतकियोघनफूलिरहीबनजातसुहाई। भौंरनकीअवलीकलकेरविकुंजनिमेंमृदुमायबजाई। ताननिकामकेबाननसोंमतिरामसबैसखियांअकुलाई। गोपिनगोपकछूनगनेअपनेअपनेघरतेंउठिधाई ८४ ॥ दोहा ॥ सखीदूतिकाजानियोउद्दीपनकोभेद। नायकअरुनायकनिकोहरैविरहकोखेद ८५ ॥

अथसखीलक्षण। दोहा ॥ जातियसोंनहिंनायका कछूछिपावैबात। तासोंवरणतसहसखीकविमतिसबअवदात ८६॥

अथसखीकर्म्मलक्षण। दोहा ॥ मण्डनऔशिक्षाकरनउपालम्भपरिहास। काजसखिनकोजानियोऔयेबुद्धिविलास ८७॥

अथमण्डनयथाउदाहरण। सवैया ॥ जावकरंगरँगेपदपंकजनाहकोचित्तरँग्योरँगयातें। अंजनदेकरनैननिमेंसुखमाबढीश्यामसरोजप्रभातें। सोनेकेभूषणअंगरच्योमतिरामसबैबशकारिबेकीघातें। योंहिंचलैनसुभावशिंगारहिमेंसखिभूलिकहीसबबातें ८८॥ दोहा ॥ सखीपियाकीदेहमेंसजेशिंगारअनेक। कजरारीअँखियानमेंभूल्योकाजरएक ८९ ॥

अथशिक्षाउदाहरण। कवित्त ॥ मलयकोपवनमन्दमन्दकैगवनलग्योफूलनकेवृन्दनमेंमकरन्दढारने। कविमतिरामचित्तचौरचारोंओरचाहिलाग्योचेतचन्दचारुचांदनीपसारने। आलिनकीआलीआलीमैनकेसेमंत्रपाढि लागीमाननीनकेमननमानझारने। सुमनशिंगारसाजेसेजसुखसाजिकैलाजकरौआजब्रजराजपरवारने ९०॥ दोहा॥ कितसजनीहैअनमनीअसुआरतीनिशंक। बड़ेभागनँदलालसोंभूठहुलगतकलंक ९१ ॥ अथउपालम्भउदाहरण। कवित्त ॥ पानकीकहानीकहापानीकोनप्रानकरैआहिकरउठतअधिकउरआधि

कै। कधिमतिराममईविकलविहालबालराधिकैजिवावरे अनंगअवराधिकै। याहीकोकहायोब्रजराजदिनचारिही मेंकरीहैउजारिब्रजऐसीरीतिनाधिकै। जैसेतूनेमोहनवि लोक्योवाकीओरतें सबैरहूंसोबैरिनबिलोकेबैरुसाधिकै ९२॥दोहा॥ वाकोमनलीन्होंललाबोल्योबोलरसाल। भुक तितनकहीबातमेंललितबेलिबरबाल ९३॥ अथपरिहास यथाउदाहरण। सवैया॥ गौनेकेद्यौसकहैमतिरामसहेलिनि कोमिलकेगनआयो। कंचनकेबिछियापहिरावतिप्यारी सखीपरिहासबढ़ायो। प्रीतमओणसमीपसदाबजैंयोंक हिकेपहिलेपहिरायो। कामिनिकुंजचलावनकोकरऊंचो कियोपैचल्योनचलायो ९४॥दोहा॥ प्रभातरोनाललकी परीकपोलनआनि। कहाछिपावतचतुरतियकन्तदन्तछ तजानि ९५॥दोहा॥ भुजफुलेबतावतसखीकरचलायमु सकाय। गाढ़ेगह्योउरोजपियबिहँसीभौंहचढ़ाय ९६॥ अथदूतीलक्षण। दोहा॥ निपुणदूतितामेंसदादूतीताहिबखा न। उत्तममध्यमअधमयोंतीनभांतिसोजान ९७॥ अथउ त्तमदूतीलक्षण। दोहा॥ मोहैजोमनबोलिकैनकरवचनअभिरा म। ताहिकहतकविराजयहउत्तमदूतीनाम ९८॥ अथ उदाहरण। कवित्त॥ जादिनमतिराममुसक्यानिवाकीदेखी तुमतादिनतेचढ़ीरहीपियपियराईपर। नेकउठिदेखोबड़े भागहैंतिहारेललामेलिराखोराधिकेकन्हाईहियराईपर। दूनीद्युतिछाईदेहआईदुबरीपियराईलौनवारियेतियाकी पियराईपर। भावतनभौनबनावतिनआभरन हैतनकर तिसुधानिधिशिथराईपर ९९॥दोहा॥ तियकेहियके हननको भयोपंचशरबीर। लालतुम्हैंबशकरनको रहेन

तरकसतीर ३०० ॥ अथमध्यमदूतीलक्षण। दोहा ॥ कछुवचन हितकरकहैबोलैअहितकछूक। मध्यमदूतीकहतहैंतासों सुकविअचूक १ ॥ अथउदाहरण। कवित्त ॥ चरणधरेनभूमि विहरेजहांतहां फूलेहैंफूलनिबिछायोपरयंकहै। मारके डरनसुकुमारिचारुअंगनमें करतिनअंगरागकुमकुमको बंकहै। कविमतिरामदेखिबातापनबीचआयो आतपम लिनहोतबदनमयंकहै। कैसेवहबालललालबाहरविजन आवैबिजनबयारिलागेचलतिकलंकहै २ ॥ दोहा ॥ रीझि रहीरिझवारवहतुमऊपरब्रजनाथ। ज्योंसिन्धुरकीइंदि राक्योंकरआवैहाथ ३ ॥ अथअधमदूतीलक्षण। दोहा ॥ अध मदूतिकाजानियो वचनकहैसतराय। ग्रन्थनकोमतदे खिकैवरणतहैंकविराय ४ ॥ अथउदाहरण। कवित्त ॥ जानतन कछूयेकहावतरसिकराय लावल्यायतवहींतिहारेयहटेक है। कूरनकीरीतिहैजोडेलएसोडारदेत मतिरामचतुराई चतुरलियेएकहै। बोलीनबोलीकहैकछूबोलीसतरायवह मनसिजओजकोसुहानोकछुसेकहै। बातनसुनतअंगरात अलसातगातसोहैकरिनयनबिहँस्योहैभईनेकहै ५ ॥ दोहा ॥ यौवनमाण्डितआपनोअजोनजानतगात। सोतितमोंअ तिचटपटीनिपटअटपटीबात ६ ॥ अथभावलक्षण। दोहा ॥ लो चनवचनप्रसादमृदुहासबासधृतमोद। इनतेपरघटजा नियेवरणतसुमतिविनोद ७ जिनतेचित्तरुचिभावको आछोअनुभवहोय। रसशिंगारअनुभावतेवरणतकविस बकोय ८ ॥ अथभावकोउदाहरण। सवैया ॥ गहिहाथसोंहाथस हेलीकेसाथमेंआवतिहीवृषभानुलली। मतिरामसुवाते आवतनीरेनिवारतिभौंरनकीअवली। लखिकेमनमोहन

सोंसकुचीकह्योचाहतिआपनीओटलली। चितचोरिलि
याटगजोरितियासुखमोरिकछूमुसक्यायचली ९ ॥ दोहा ॥
सहजबातबूझतकछू बिहँसिनवाईग्रीव । तरुणहियेत
रुणीदईनयेनेहकीसीव १० ॥ अथअनुभावलक्षण । दोहा ॥ तें
अनुभावहिजानियो जोहैसात्त्विकभाव । रसग्रन्थनअव
लोकिकै वरणतसबकविराव ११ स्तम्भस्वेदरोमां
चस्वरभंगकम्पवैवर्ण्य । आंसूऔरप्रलापकहि आठों
ग्रंथनिनिर्णय १२ ॥ अथस्तम्भलक्षण । दोहा ॥ लज्जाहर्षा
दिकनतेअचलहोतजहँअंग । स्तम्भकहतकवितांहिको
जेप्रवीणरसरंग १३ ॥ अथउदाहरण । सवैया ॥ देखतहीमति
रामरसालगहीप्रतिप्यारीकीप्रेमनिगाढ़ी। चाहिबेकीचित
चाहभईहियमेंकुलकानिकीकाननिकाढ़ी । पाईपरेमगमें
नसरूकेभईमिसलाजनिकरिफिरठाढ़ी। संगसखीनकेजा
निदुरावतआननआनँदकीरुचिबाढ़ी १४ ॥ दोहा ॥ पाय
कुंजएकान्तमेंअंकभरीब्रजनाथ। एकनकोतियकरतिहैके
ह्योकरतनाहिंहाथ १५ ॥ अथस्वेदलक्षण । दोहा ॥ हरष
लाजभयकोपश्रम इत्यादिकतेहोय । पानीप्रकटतदेहते
स्वेदकहावतसोय १६ ॥ अथउदाहरण सवैया ॥ किंकिणिनेवर
कीझनकारनिचारुपसारिमहारसजालहि। कामकलोल
निमेंमतिरामकलामिनिहालकियोनँदलालहि । स्वेदके
वृन्दलसेतनमेंरतिअन्तरहीलपटायगोपालहिं। मानोच
लोमुक्ताफलपूजनहेमलतालपटाईतमालहि १७ ॥ दोहा॥
कुचतेश्रमजलधारचलिमिलरोमावलिरंग। मनोमेरुगि
रितरहटीभयोसितासितसंग १८॥ अथरोमांचलक्षण । दोहा ॥
हरषभयादिकतेप्रकटरोमउमगजोअंग।ताहिकहतरोमां

चहैंकविजनसुमतिउतंग १९ ॥ अथउदाहरण ।कवित्त॥ चन्दमुखीहांसीमैंचमेलीकीलतासीहोति चंपकलतासीज्योति अंगनधरतिहै।कविमतिरामतेरीअंगकीसुबासलहैकोन बेलीऐसीबातजानीनपरतिहै।नेसुकनिहारेतेनबेलीनयनकोरनिसोंऐसीअद्भुतकीकलानिउच्चरतिहै। सुंदरललितमालश्यामरसिकरसालसोंकदम्बतेपुलकिसुकूलनिसोंकरतिहै २०॥दोहा॥जौनअंगढिगकैकढ़ीछुईछैलकीचाह। अबहूंलौंअवलोकियेपुलकपटलताताहि २१॥ अथस्वरभंगलक्षण।दोहा॥ क्रोधहर्षमदभीततेवचनऔरविधिहोय। ताहिकहतस्वरभंगहैंकविकोविदसबकोय२२॥ अथउदाहरण। सवैया॥ लाहिलैआईअलीरतिमन्दिरजाकीलगैरतिहूपरछाहीं। आयगयोमतिरामतहींजिनकोटिनकामकलाअवगाहीं। देखतहीसिगरीबपुरी पकरीहँसिपैतियकीपियबाहीं। लाजनतेस्वरभंगभईसोकटीमुखचन्दमरूकरिनाहीं २३॥ दोहा॥कहाजनावतचातुरीकहाचढ़ावतिभौंह। अधनिकरैअँखियानसोंसोहैंकीजतिसौंह २४॥ अथकम्पलक्षण। दोहा॥ क्रोधहर्षभयआदितेथरथरातज्योंदेह। ताहिकम्पयोंकहतहैंकविकोविदमतिगेह २५॥अथउदाहरण। सवैया॥ चन्दमुखीअरबिन्दकीमालनिगूंथतिरूपअनूपबनारेउ। कामस्वरूपतहांमतिरामअनन्दसोंनन्दकुमारसिधारेउ।देखतकम्पछुट्योतिनकेमनयोंचतुराईकोबोलउचारेउ। सीरेसरोजलगीसजनीकरकंपतजातनहारसँवारेउ २६॥ दोहा॥ लालबदनलखिलालकेकुचनकंपरुचिहोति।चपलहोतचकवामनोचाहिचन्दकीज्योति २७ अथवैवर्ण्यलक्षण। दोहा॥ मोहक्रोधभयआदितेबरनऔरविधि

होय । ताहिकहतवैवर्पयहैं सकलसयानेलोय २८ ॥ अथ उदाहरण । कवित्त ॥ छलसोंछबीलीकोसहेलिनिलिवायकरि ऊपरअटारीरूपरच्योजायख्यालको । कविमतिरामभूषनिकीभनकसुनिचाहिभौंचपलचितुरसिकरसालको । अलीचलीसकलअलोकमिसकरिकरिआवतनिहारकरिमदनगोपालको। लालनकोइन्दुसोंवदनअवलोकिअरबिन्दुसोंवदनकुम्हिलाइगयोबालको २९ ॥ दोहा ॥ बालरहिइकटकनिरखि लालवदनअरबिन्द । सियराईनयननिपरीपियराईसुखचन्द ३० ॥ अथअश्रुकालक्षण । दोहा ॥ हर्षदुःखभयआदितेजलआवैअँखियानि । ताहिबखानतअश्रुकहिग्रंथनकोमतजानि ३१ ॥ अथउदाहरण।कवित्त ॥ बैठेहुतेलालमनमोहनमोहनीबाल छिनकुसकुचराखैगुरुजनभीरको। कविमतिरामदीठऔरकीबचायदेखेदेखतहीऔरभयराखैअवधीरको। तनकोनमोहधरैमनकीखबरभूलीआंखिनसोंछायोपुरआनँदकेनीरको।उमँगिहियेतेआयोप्रेमकोप्रवाहताते लाजगिरीपरीजैसेतरुवरतीरको३२॥ दोहा ॥ बिनदेखेकोचलैदुखसुखकोदेखैजाहि। कहोलालइनदृगनिकेअँसुवाक्योंठहराहि३३॥अथप्रलयकालक्षण।दोहा॥ जीवइतनमेंहोतहैयेहीसकलनिरोध ।हर्षदुःखभयआदितेप्रथमकहतिमतिशोध ३४॥ अथउदाहरण । सवैया ॥ जादिनतेछबिसोंमुसक्यातकहानिरखैनँदलालविलासी । ताक्षणतेमनहींमनमेंमतिरामपियेमुसक्यानसुधासी । नेकुनिमेषनलागतनयननिचौंकिचितौतियदेवतियासी। चंदमुखीनहलैनचलै बिरवातनिवासमैदीपशिखासी ३५ ॥ दोहा॥ तोमेंअनसिखमेनतामोहनमूरतिमैन। अनसिखन

थनसुनैनयेनिरखतअनमिषनैन ३६ ॥ अथजंभालक्षण ।
दोहा ॥ जम्भाकोकविकहतहैंनवमोसात्विकभाव । उपजै
आलसआदितेबरणतसबकविराव ३७ ॥ अथउदाहरण ।
कवित्त ॥ केलिकेरसिककरीरतिप्रातउठीअलसातनींदभरे
लोचनयुगलविलसतुहैं । लाजनितेअंगनिदुरावतिहैंबार
बारखैंचिकरिवसनविहारीविहँसतुहैं । कविमतिरामआई
आलसजम्हाईमुखऐसोमनभावतीकीछविसरसतुहैं । अ
रुणउद्योतमानोशोभाकेसरोवरमें शोभामानिशोभाकोस
रोजविकसतुहैं ३८ ॥ दोहा ॥ आयोपीववविदेशतेंबहुतकदि
वसबिताय । सखीउठाईपासतेसांझहितेजमुहाय ३९ ॥
अथशृंगाररलक्षण । दोहा ॥ जोवरणततियपुरुषकोकविकोविद
रतिभाव । तासोंरीझतसुकविहैंसोशृँगाररसराव ४० ॥
कहिशृँगाररसभावद्वै प्रथमकहतसंयोग । ग्रन्थनिको
मतदेखिकैदूजोकहतवियोग ४१ ॥ अथसंयोगलक्षण । दोहा ॥
प्रमुदितनायकनायकाजहँशृँगारमेंहोय । सोहसंयोगशृँ
गाररसवरणतसुप्रतिउदोय ४२ ॥ अथउदाहरण । सवैया ॥
प्राणपियापियआनँदसोंविपरीतरचीरतिरङ्गरह्योहै । का
मकलोलनिमेंमतिरामरहौधनियोंकलकिंकिणिकोहै । आ
ननकीउजियारीपरीश्रमबिन्दसरोजउरोजलसोहै । चंद
कीचांदनिकेपरसेमनोचंदपखावपहारचल्योहै ४३ ॥ दोहा ॥
छुवतिपरस्परहोरिकैराधानन्दकिशोर । सबमेंदोहीहोति
हैंचोरसिहचनीचोर ४४ ॥ अथहावलक्षण । दोहा ॥ नारिन
कोशृंगारमेंयहांकहैंअबहाव । तेसंयोगशृँगारमेंवरणतहैं
कविराव ४५ ॥ अथविक्षिप्तलक्षण । दोहा ॥ लीलाप्रथमविलास
पुनित्योंविक्षिप्तबखानि । विभ्रमकिलकिञ्चितबहुरिमोट्टा

यितउरआनि ४६॥अथकुट्टमितलक्षण। दोहा॥ बहुरिकुट्टमित कहतहैंपुनिबिब्बोकबखानि। ललितबरणपुनिबिहँसिक हिसकलहावदशनानि ४७॥अथलीलाहावलक्षण। दोहा॥ पिय भूषणवचनादिकीलीलाकरैजोबाल।तासोंलीलाहावकहि वरणतसुमतिरसाल४८॥अथउदाहरण। सवैया॥ प्यारपगीप गरीपियकीघरभीतरआपनशीशसँवारी।एतेमेंआंगनते उठिकैतहँआयगयोमतिरामबिहारी।देखिउतारनलागी प्रियापियसोंहानिसोंबहुरेउनउतारी। नयननिबाललजा यरहीमुसक्यायलईउरलायपियारी४६॥दोहा॥ मेरेशिर केसीलगैयोंकहिबांधीपाग। सुन्दरिरतिविपरीतमेंकियो प्रकटअनुराग५०॥अथविलासलक्षण। दोहा॥ गमननयनवच नानिमेंहोतजुकछुकविशेख।वरणततांहिविलासकहिरस मयसुकविअलेख५१॥ अथउदाहरण। कवित्त॥ किंकिणिकलि तकलनूपुरललितरवगौनतेरोदेखिकैसकतिकरिगौनको। मृदुमुसक्यानिमुखचंदचांदनीसोंराखिकैउज्यारोधामना मरामह्वाराभौनको।सहजसुभावनसोंमोहनकेभावनसोंह रतिहैंकविमतिरामसनरौनको। रूपमदछकीअनिछबि सोछबीलीदेतितिरछीचितौनिमैनबरछीसीकैनको५२॥ दोहा॥ तेरीचलनिचितौनिमृदुमधुरमन्दमुसक्यानि। छा यरहीलखिलालकी सखियनमिसआँखियानि ५३॥ अथ विक्षिप्तलक्षण। दोहा॥ थोड़ेहीभूषणबसनजहँशोभासरसाय। ताहिकहतविक्षिप्तहैंजेप्रवीणकविराय ५४॥ अथउदाहरण। कवित्त॥ वारनेसकलएकरोरीआोकीआड़परहाहानपहिरि आभरनऔरअंगमें।कविमतिरामजैसेतीक्षणकटाक्षतेरे ऐसेकहासरसहैंअनंगकेनिषंगमें।सहजसुरूपसुघराईरी

श्रोमनुसेरीलुभिरह्योदेखिरूपअद्भुतकीतरंगसें। सेतसारीहीसोंसबसोंतोरँग्योश्यामरंग सेतसारीहीमेंश्यामरंग लालरंगमें ५५ ॥ दोहा ॥ नथुनीगजमुक्तानकीलसतिचारु शृंगार। जिनयेहीसुकुमारतनऔरआभरनभार ५६ ॥ अथ विभ्रमलक्षण। दोहा ॥ उलटेभूषणवसनकोहोतजहांपहिराव। तासोंविभ्रमहावकहिवरणतहैंकविराव ५७ ॥ अथउदाहरण। सवैया ॥ सांझहितेचलिआवतजातजहांतहांलोगनिहूंनडरेंगी। प्रीतमसोंरतिहीयहरूपधोयेहैंकहांजबअङ्कभरेंगी। जानतिहोंमतिरामतऊचतुराईकीबातनिहीयधरेंगी। किंकिणिकेउरहारकियेतुमकौनसोंजायविहारकरेंगी ५८ ॥ दोहा ॥ अतिआतुरह्वैचलभईअलीकौनकेभाग। उलटीकंचुकिकुचनपरकहैंदेतअनुराग ५९ ॥ अथकिलकिंचित लक्षण। दोहा ॥ हरषगरबअभिलाषअसहासरोषअरुभीति। होतएकहीबारहैकिलकिंचितकीरीति ६० ॥ अथउदाहरण। सवैया ॥ लालनबालकेह्वैहीदिनावेंपरीमनआइसनेहकीफांसी। कामकलोलनिमेंमतिरामलगीमनोबांटनमोदकीआंसी। प्रीतमकेउरबीजभयोदुलहीकेविलासमनोजकीगांसी। स्वेदबढ़योतनकंपउरोजनिआंखिनआंसुकपोलनहांसी ६१ ॥ दोहा ॥ सकुचिनरहियेसांवरेसुनिगरबीलेबोल। चढ़तिभौंहविकसतनयनविहँसतगोलकपोल ६२ ॥ अथमोट्टायितलक्षण। दोहा ॥ बातनकोप्रकटनभयेपुनिमिलापकीचाह। सोमोट्टायितजानियेवरणतसवकविनाह ६३ ॥ अथउदाहरण। सवैया ॥ फूलिरहेद्रुमबेलिनसोंमिलिपूरिरहींअँखियाँरतनारी। मोहिंअकेलीबिलोकियहांकछुऔरइसीभईदीठिनिहारी। जैसेहुतीहमसों

तुमसोंअबहोयगीऐसीयेप्रीतिनिहारी। चाहतजोचित मेंहिततो जनिबोलियेकुंजनबीचविहारी ६४॥ दोहा॥ झूठेहूंजगमेंलग्यो मोहिंकलंकगोपाल। सपनेहूंकबहूं हिये लगेनतुमनँदलाल ६५॥ अथकुट्टमितहावलक्षण। दोहा॥ जहांदुःखअरुसुक्खकोप्रकटकरैहियबाम। परमललित यहहावतहँकुट्टमित्तयहनाम ६६॥ अथउदाहरण। कवित्त॥ सोनेकीसीबेलिअतिसुन्दरिनबेलीबालहोतठाढ़ीहीअके लीअलबेलीद्वारमहियां। मतिरामआंखिनसुधाकीबरषा सीभईगईतबदीठवाकेमुखचन्दपहियां। नेकुनीरेजायक रिबातनिलगाइकरि कछुमनपायकरिआयगहीबहियां। सैननमेंचरचिलईगाननमेंथकितभई नैननिमेंचाहकरैबै ननिमेंनहियां ६७॥ दोहा॥ प्रीतमकोमनभावतीमिलति बांहदेकण्ठ। बाहींछुटैनकण्ठते नाहींछुटै न कण्ठ ६८॥ अथविब्बोकलक्षण॥ दोहा॥ जोपियकेअभिमानतेकरतिअना दरबाम। ताहिकहतबिब्बोकहैंजेप्रवीणगुणधाम ६९॥ अथउदाहरण॥ सवैया॥ मानहुआयोहैराजकहूंचढ़िबैठयोहै ऐसेपलाशकेखोढ़े।गुञ्जगरेशिरमोरपखामतिरामहूंगाय चरावतछोढ़े।मोतिनकोमेरोहारगहेहाथनिसोरहीचूनरी ओढ़े। ऐसेहिडोलतछैलभयेतुम्हैं लाजनआवतकामरी ओढ़े ७०॥ दोहा॥ प्राणपियारोपगपरेउतूनलखतियहि ओर। ऐसोउरजकठोरतोन्यायहिउरजकठोर ७१॥ अथललितहावलक्षण॥ दोहा॥ बनैमाणिकनसोंसरससकलआ भरणअंग। ललितहावतासोंकहतजेकविबुद्धउतंग ७२ अथउदाहरण। सवैया॥ मंदगयंदकिचालचलैकटिकिंकिणि नेवरकीधुनिबाजै। मोतीकेहारनिमेंहियरा हियराहरिजु

हुलसावतिसाजै।सारीसुहीमतिरामलसैमुखसंगकीनारी
कियोछविछाजै।पूरणचंदपियूषमयूषमनोपरिवेषकीरेख
विराजै ७३ ॥ दोहा ॥ बिरीअधरअंजननयनमेंहँदीपग
अरुपानि।तनकंचनकेआभरननीठिपरेंपहिँचानि ७४॥
अथविहतलक्षण। दोहा ॥ जोपरिपूरणहोतनहिंसियसमीपअ
भिलेख।ताकोविहतबखानियेजिनकीकवितादेख ७५॥
अथउदाहरण। कवित्त ॥ सकलसहेलिनकेपीछेपीछेडोलतिहै
मंदमंदगौनआजुआपुहीकरतुहै।सन्मुखहोतमुखहोतम
तिरामजबैपौनलागेघूंघुटकोपटउघरतुहै । यमुनाकेतट
वंशीवटकेनिकटनंदलालपैसकुचनितैंचाखोनपरतुहै ।
तनतोतियाकोवरभांवरेभरतमन सांवरेवदनपरभांवरेभ
रतुहै ७६॥ दोहा॥ रूपसांवरेवदनपरसुधासिन्धुमेंखेल।
लखिनसकेअंखियांसखीपरीलाजकीजेल ७७॥ अथवियोग
शृंगारभेद । दोहा ॥ प्यारीपीवमिलापबिनहोतनहींआनन्द ।
सोवियोगशृंगारकोवरणतसबकविवृन्द ७८ ॥ अथवियोग
कोभेद । दोहा ॥ कहीपूर्वअनुरागअरुमानप्रवासविचार ।
रसशृंगारवियोगके तीनभेदनिरधार ७९ ॥ अथपूर्वानु
रागलक्षण। दोहा ॥ जोपहिलेदेखैसुनैबढ़ैप्रेमकीलाग।बिन
मिलापजोविकलतासोपूर्वाअनुराग ८० ॥ अथउदाहरण ॥
सवैया॥न्योतेगयेकहुंनेहबढ्योमतिरामदुहूंकेलगेदृगगाढ़े।
लालचलेसोनिकेघरकोतियअंगअनंगकीआगसोंडाढ़े ।
ऊंचेअटापरकांधेसहेलीकेठोढ़ीदियेचितवैदुखबाढ़े।मोह
नजोमनगाढ़ेकरैंपगदैकेचलैंफिरिहोतहैठाढ़े ८१॥ दोहा॥
निरख्योनेहदुहूनकीनईदईयहबात।सूखतिदेहदुहूनकी
त्योंपानीसरसात ८२॥ अथमानभेद। दोहा ॥ मानकहतहैं

तीनिविधिलघुमध्यमगुरुभाम। तिनकेभेदबनायकरवरणतकविमतिराम ८३॥ अथलघुमानिभेद। दोहा॥ औरवामकोलखतजहँलखैकन्तकोबाल। वरणतहैंलघुमानसोंछूटततनकहिख्याल ८४॥ अथउदाहरण। सवैया॥ देखतिऔरतियापियकोलखिमानछबीलीकेनैननिछायो। प्रीतमयोंचतुराईकरीमतिरामकछूपरिहासबढ़ायो। रीतिरचीविपरीतिजोप्रीतमताकोकवित्तबनायसुनायो। भूलिगईरिसलाजनितेंमुसक्यायप्रियामुखनीचेकोनायो ८५॥ दोहा॥ मानजनावतिसबनकोमनननमानकीठाट। बालमतावनकोलखेलालतिहारीबाट ८६॥ अथमध्यममानलक्षण। दोहा॥ पियमुखऔरेनारिकोसुनैनामजहँनारि। होतमानमध्यमतहांवरणतसुकविविचारि ८७॥ अथउदाहरण। सवैया॥ आनँदसोंदोउआंगनमांझविराजैंअषाढ़कीसांझसुहाई। प्यारीकेपूछतऔरतियाकोअचानकनामलियोरसिकाई। आयोवनैमुंहमेंहँसिकोउतियाशरचापसोंभौंहैंचढ़ाई। आंखिनतेगिरेआंसूकेबूंदसुहासगयोउठिहंसकीनाई ८८॥ दोहा॥ भईदेवताभावसबवहतुमकोबलिजाउँ। वाहीकोमनध्यानहैवाहीकोसुखनाउँ ८९॥ अथगुरुमानलक्षण। दोहा॥ बोलतऔरतियानसोंपियकोदेखैबाम। होततहांगुरुमानहैवरणतकविमतिराम ९०॥ अथउदाहरण। कवित्त॥ मेरेप्राणप्यारेकछूसहजसुभावप्यारी कहाभोकहीजोकछुबातकाहूवालसों। कविमतिराममेरोकह्योउरआनिआलीठानीजनमानऐसेमदनगोपालसों। ताकोऐसीरिसकरिअयाननीकीरीतितूतोदीपकीसीज्योतिजगयोवनरसालसों। भौंहैंकरिरूंधीविहँसोहैकरिकपोलगोल सोहैंकरिलोचनरसोहैं

नन्दलालसों ९१ ॥ दोहा ॥ बहुनायकसोंबातमेंमानभलो
नसयान । दुखसागरमेंबूड़िहैंबांधिगरेगुरुमान ९२ ॥
अथप्रवासलक्षण । दोहा ॥ प्रीतमबसैबिदेशमेंबिरहजहांसर
साय । बरणततहांप्रवासहैजेप्रवीणकबिराय ९३ ॥ अथ
उदाहरण । सवैया ॥ धुरवानकिधावनमानोंअनंगतुरंगधुजा
फहरानलगी ।मतिरामसमीरलगेलतिकाबिरहीबनिताथ
हरानलगी । मनमेंअलिझैक्षितिमेंअलकैंचपलाकिछटाछ
हरानलगी । परदेशमेंपीउसंदेशनपायोपयोदघटाघह
रानलगी ९४ ॥ दोहा ॥ चलतलालकेमैंकियोसजनीहि
योपषान । कहाकरौंदरकतनहींइतेवियोगकृशान ९५ ॥
अथवियोगशृंगारदशाकथन । दोहा ॥ हौंकिवियोगशृंगारमेंप्रकट
दशानवजानि । प्रथमकहैंअभिलाषपुनिचिन्तास्मृतिस
नमानि९६॥ दोहा ॥गुणवर्णनउद्वेगपुनिकहिप्रलापउन्मा
द । व्याधिबहुरिजड़ताकहतकविकोविदअविवाद९७॥
अथअभिलाषलक्षण । दोहा ॥ ताहिकहतअभिलाषहैंज्योंमिला
पकीचाह ।प्रेमकथनतेंजानियेबरणतसबकविताह९८॥
अथउदाहरण । सवैया ॥ मोरपखामतिरामकिरीटमनोहरमू
रतिसोंमनुलैगो । कुण्डललोलनिगोलकपोलनिबोलनि
नेमकेबीजनबैगो । लोलबिलोचनिकोरनिसोंमुसक्यायइ
तैअरुभायचितैगो । एकघरीघनसेतनसोंअँखियानिघ
नोघनसारसोंदैगो९९॥ दोहा॥ मोमनसकलोउड़िगयोअ
बकेहुनपतियाय।वसिमोहनवनमालसेंरह्योबनायवनाय
४००॥अथचिन्तालक्षण।दोहा । दरशनमुखकीभावनाकरैचित्त
कीचाव । चिन्तातासोंकहतहैंजेप्रवीणकबिराव १॥ उदा
हरण । सवैया ॥ जैहौंअकेलीमहावनबीचतहांमतिरामअके

लोइ आवैं। आपनेआननचन्दकी चांदनीसों पहिलेतनता पनु भावैं। कूलकलिन्दीकेकुंजनमंजुलमीठेअमोलवैबोल सुनावैं। ज्योंहँसिहेरिलियोहियराहरित्योंहँसिजोहियरेह रिलावैं २॥ दोहा ॥ कामकहाकुलकानिसोंलोकलाजकिन जाय। कुञ्जबिहारीकुञ्जमेंमिलैंमोहिंसुसक्याय ३॥ अथस्मृति लक्षण। दोहा ॥ सखीसुनीप्रियबातको जोसुमिरनमनहोय। स्मृतितासोंकविकहतहैंसबरसग्रंथत्रिलोय ४॥ अथउदाहरण। कवित्त ॥ आलसबलतकोरौंकाजरकलित मतिरामवैललि तअतिपायनधरतहैं। पंकजतेसरसहैखञ्जनजुरनकोगर बतेमृगिनितेदृगनिदर्शतहैं। पलनिसघनबंकतीक्षणकटा क्षबड़े लोचनविशालउरपीरहिकरतहैं। गाढ़ेह्वैपड़ेहैंन निसारेनिसरतसेनबानसे बिसारेनबिसारेबिसरतहैं ५॥ दोहा ॥ शोभासोंरतिसुन्दरीनवसनेहसोंबाम। तनबूड़त मनप्रीतिमेंरँगबूड़तमनश्याम ६॥ अथगुणवर्णन। दोहा ॥ विरहाबीचजोपीयकोसुन्दरताबिसराय। गुणवर्णनतासों कहतजेप्रवीणकविराय ७॥ अथउदाहरण। सवैया॥ मोरपंखी मतिरामकिरीटमें कण्ठवतीबनमालसुहाई। मोहनकीमु सक्यानमनोहरकुण्डललोलनिमेंछबिछाई। लोचनलोल बिसालबिलोचनिकोनबिलोकिभयोबशमाई। वामुखकी मधुराईकहाकहौंमीठीलगैंअंखियानिलुभाई ८॥ दोहा ॥ शरदचन्दकीचांदनीनारिडारिकिनओहिं। वामुखकीमुस क्यानिसरिकबहुंकहौंनहिंतोहिं ९॥ अथउद्वेगलक्षण। दोहा ॥ बिरहबिथाकीबिकलताजहांकछूनसोहाय। ताहिकहतउद्वे गहैंजेप्रवीणकविराय १०॥ अथउदाहरण। सवैया ॥ चाहितु म्हैंमतिरामरसालपरीतियकेतनमेंपियराई। कामकेतीक्ष-

णतीरनसोंभरिमारतनीरभयोहियराई। मेरेबिलोकिबेको उतकण्ठितकंठलौंआयरह्योजियराई। नेकुपरेनमनोज केओजनिसेजसरोजनमेंसियराई ११॥दोहा॥जेअंगनपि यसंगमेंवरषतहुतेपियूष।तेबिछुरेबिछुराकसेभयेसयंकम यूष १२॥ अथप्रलापलक्षणं। दोहा॥ उतकण्ठातेकहतहैंजहां मोहमयबैन। वरणतजहांप्रलापहैंजेप्रवीणरसऐन १३॥ अथप्रलापउदाहरण।कबित्त॥ कहियोसंदेशोप्राणप्यारीसोंगवन कीन्होंविक्रमबिलासजेवेंआपनेपरसके। चन्दकरखरछी निछेदिहारेउतीरतीक्षणमनोजकेकछुनकारिनसके। कवि मतिरामयाकुलिशकेधाइकहूं मानतुमकोकिलकाकूकनि सके। कैसेदरकतमेरोहियोसदासहिरह्योतेरेकुचनिपटक ठोरनिकमरसके १४॥ दोहा॥ बिकललालकोबालतूक्यों नबिलोकतिआन। बोलिकेकिलनीसोंकहैंबोलितिहारे तानि १५॥ अथउन्मादलक्षण। दोहा॥ उतकंठातेमोहमयबथा कहतकछुकाज । ताहिकहतउन्मादहैंकविकोबिदशिर ताज १६॥ अथउदाहरण। सवैया॥ जाक्षणतेमतिरामकहूंमुस क्यातकहूंनिरख्योनँदलालहि। ताक्षणतेक्षणहीक्षणमेंक्ष णबादिबिथाहबियोगकिबालहि। पोंछतिहैंकिशलयकर सोंगहिधूझतिश्यामशरीरगोपालहि। भोरीभईहैमयंकमु खीभरिभेंटतहैभुजअंकतमालहि १७॥दोहा॥रोयउठैक्षण उठिहँसैक्षणउठिचलैरिसाय। बैरीकरीवलाइतेलायकरू पठगाय १८॥ अथव्याधिलक्षण। दोहा॥ कामपीरतेपियरहीता पदूबरीहोय। तासोंब्याधिबखानिहैंकविकोबिदसबकोय १९॥ अथउदाहरण। कवित्त॥बरषासीलागीनिशिवासरबिलो कनिकोवारेउपरवाहभयोनावनिउतरिबो।रह्योजातकौन

पैसुकविमतिरामअब बिरहअनलज्वालजालनिसेजरि
बो॥जैयतसेमोपैकोउड़ैयतउसासनिसोंहमकोतोभयोउत
हेरतहहरिबो। कियोकहाचाहतसोकहौनकुँवरकान्हरह्यो
अबवाकोउपचारनकोकरिबो २० ॥ दोहा ॥ देखिपरैनहिं
दूबरीसुनियेश्यामसुजान। जानिपरैपरियंकमेंअंगआंच
मतमान २१ ॥ अथजड़तालक्षण । दोहा ॥ उत्कंठादिकतेजो
कैअचलचित्तअरुअंग। तासोंजड़ताकहतहैंजेप्रवीणरस
रंग २२ ॥ अथउदाहरण । कवित्त ॥ सूंघैनसुवासरहैरंगरागते
उदासभूलगईसुरतिसकलखानपानकी। कविमतिरामइ
कटकअनविषनैनबूझैनकहत बातअरुसमझैनआन
की। थोरीसीहँसनिओटगोरीऐसीडारीठगबौरीकरीगोरी
तेंकिशोरीवृषभानकी। तबतेबिहारीवहहैभईबखानकैसी
जबतेनिहारीरुचिमोरकेपखानकी २३ ॥ दोहा ॥ अनमि
षलोचनबालकेयातेनन्दकुमार। मीचगईजरिबीचहीबिर
हानलकीझार २४समुझिसमुझिसबरीझिहैंसज्जनसुक
विसमाज। रसिकनकेरसकोकियोनयोग्रंथरससराज २५॥

इतिश्रीरसराज ग्रन्थ समाप्तः ॥

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा
मार्च सन् १८९९ ई० ॥



बिहारी सतसई

जिसमें

मात्रा वर्ण और कविताई सहित श्री बिहारीलाल
जी कृत सामयिक उदाहरणों के सातसौ
दोहे वर्णित हैं
और
उन्हीं प्रति दोहों पीछे कवीन्द्रकल्पद्रुम श्री पण्डित
कृष्णदत्त कवि ने उत्तम २ कवित्त और पिंगल
शास्त्रानुसार दोहे व कवित्त की दीर्घ लघुमात्रा
तथा वर्णादि संख्या अतीव रोचकतासे
वर्णन किया है

पांचवीं बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
जनवरी सन् १६०१ ई० ॥

१२ जुज़ ४ वर्क़

इस मतबे में जितने प्रकारकी काव्यकी पुस्तकें छपी हैं उनमें से कुछ नीचे लिखी जाती हैं ॥

नवीनसंग्रह की० ।)।

जिसमें कवित्त सवैया भजन होली आदि शृंगाररसके प्रेमी पुरुषों को अतीव आनन्ददायकहैं ॥

मनमोहनी की०।)।।।

जिसमें हजारों तरहके राग ऐसे २ चुहचुहाते लिखेगये हैं कि बयान से बाहर हैं रसिकों के वास्ते तो सजीवनही हैं ॥

हफ़ीजुल्लाहखांकाहजारा की०।।।)=।।

इसमें नानाप्रकारके बहुतही उत्तम २ सब २१८४ कवित्त लिखे गये हैं स्थान २ पर तसवीरें भी बनी हैं ॥

महिपालसिंहसरोज की०)=

इसमें सब तरह के ३०१ कवित्त बहुत अच्छे २ हैं ॥

नानार्थनवसंग्रहावली की० ॥)

पण्डित मातादीनशुक्लरचित सात पोथी का संग्रहहै (१) संग्रहावली (२) रामायण माला (३) रामायणगीताष्टक (४) ज्ञानदोहावली (५) रससारिणी (६) तिथिबोध (७) मातृदत्त कृतपिंगल अक्षर बहुतपुष्ट कि वृद्ध और बालकभी पढ़सक्ते हैं ॥

छंदोर्णवपिंगल की०)=

जिसमें मात्रावृत्त, वर्णवृत्त, मेरु, मर्कटी, पताका, लघुगुरु स्थापन रीति और सब छन्दों के दृष्टान्तसहित रूपहैं ॥



अथ बिहारीसतसई सटीक ॥

उदाहरणसहित प्रारम्भ

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० मेरी भव बाधा हरो राधा नागरिसोय।
जातनकी झाईपरे श्यामहरितद्युतिहोय॥ १॥

यह मंगलाचरण है तहां ग्रन्थकर्त्ता कवि श्री राधिका जी की स्तुति करता है राधा औरं हू हैं याते जातन की झाई परे श्याम हरित द्युति होय या पद तें वृषभानुसुताकी प्रतीति भई ॥ सवैया ॥ जाकी प्रभा अवलोकतही तिहूं लोककी सुंदरता गहिवारी, । कृष्ण कहैं सरसीरुहनैनको नाम महामुदमंगलकारी ॥ जातनकी झलकै झलकै हरितद्युति श्यामकी होत निहारी । श्रीवृषभानुकुमारि कृपाकै सुराधा हरो भव बाधा हमारी ॥ १ ॥ स्वकीयावर्णनं । नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० राति द्यौस हूं मैं रहै मानन ठिक ठहराय।
जेतो औगुण ढूंढिये गुणै हाथपर जाय॥ २॥

स्वकीया नायका है नायका को वचन सखी प्रति है नायक के अवगुणहू याको गुण भासत हैं ॥ सवैया ॥ जो हूं झकौं तौ खरोही लटू है करै मनुहार अनूठी अनूठी । औगुण ढूंढे हूं हाथ न आवत सौगुण की रहै सिद्ध सी हूठी ॥ शील

सुभाव सदा निबहै हँसि बोलै अमी बरषामनु वूठी। हौं सहिये निशि द्यौसरहै मनमोहन सों कबहूं नहिं रूठी ॥ २ ॥ मुग्धा पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० नहिंपरागनहिंमधुरमधु नहिंविकासयहकाल।
अलीकलीहीसोंबँध्योआगेकौनहवाल ॥ ३ ॥

यह दोहा यह नायका के तन में यौवन अबहीं आयो नाहीं अरु नायक की आसक्ति पहलेही अधिक देखी सो सखी सखीसों भ्रम को प्रसंग करि कहत है ॥ सवैया ॥ नाहिं पराग नहीं मकरंद अजौं प्रकटी न सुवास विकासर। जाने को आगे वाहूं है कहा गति ऐसो पग्यो अबही इक आसर ॥ फूली घनी फुलवारी रसाल पै काहूको मानत नेक न तासर। रीझरली मति कुंजकली पै अली मड़रानौ रहै निशिवासर ३ ॥

दो० लालअलोलकलरकईलखिलखिसखीसिहाति।
आजकाल्हिमेंदेखियतु उरउकसौंहींभांति ॥ ४ ॥

यह नायका को यौवन अंकुरित है सो सखी नायक सों निवेदन करतु है नायका अंकुरितयौवना ॥ सवैया ॥ कैसी सुहाई लला लरकाई में यौवन ज्योति लै सौंहीं भई है। बाल विनोदन ते उचटी रुचि काम कला सुरसोंहीं भई है ॥ वाही बिलोकि सिहात सखी बतियान की खान हसोंही भई है। आजुही काल्हिमें बालबधूकी कछू छतियां उकसौंहीं भई है ॥ ४ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० हेरिहिंडोरेगगनतें परीपरीसी टूटि।
धरीधायपियबीचही करीखरीरसलूटि ॥ ५ ॥

यह नायका मुग्धा है हिंडोरे तें नायकको देखि के लाजके आधिक्यतें भाजिबे को भई सो टूटिपरी सखी को वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ बाल छबीली सखीन के संग बनी ठनी झूलति रंग हिंडोरे। नंदललै लखि ऊंचे तैं टूटपरी ज्यों परी अति लाजनिहोरे ॥ चालकी चूंदरी चारु कसुंभी सुगंधसनी दमकै तन गोरे। प्राणपियारे ने बीचही धाय कै रस लूटि भई भरि कोरे ॥ ५ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु ११ लघु २४ ॥

दो० भावकउभरोहोभयो कछुकपरयो भरुआय।

सीपहराकेमिसहियो निशिदिनहेरव जाय ॥ ६ ॥

यह नायका मुग्धा ज्ञातयौवना सखी नायक सों कहत है सखी को बचन सखी सों है ॥ कवित्त ॥ प्यारे नँदलाल वह बाल अलवेली नव यौवन की ज्योति दिन द्वैकते भरति है । दम्पति चरित्र चित्र दुरचितवन लागी काम की कहानी कछू कान न धरति है । रचक उरोजन की कोर उकसौंही भई नैसकुल ज्योंही सी चितौंनिहू दरति है । सबकी बचाय दीठि निज छाती बारबार गुञ्जहार मिस करि हेरवो करति है ॥ ६ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० तियतिथितरुणकिशोरबयपुण्यकालसमदोनु ॥
काहूपुण्यनपाइयतुबैससंधिसंक्रोनु ॥ ७ ॥

यह नायका लरकाई अरु तरुणाई बैस की संधि है सो सखी नायक सों कहति है ॥ सवैया ॥ उत सूरज राशि तजै जबलौं नहीं दूसरी राशि दबावत है । तबलौं वह अंतर को समझो अति उत्तम वेद बतावतु है ॥ इतहू जब बैस किशोर दिनेशहु हू वय अंतर आवतु है । सुकृती कोउ पूरब पुण्यनते विविसंक्रमको छनु पावतहै७॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० छुटी न शिशुताकी झलक झलक्यो यौवनअङ्ग ॥
दीपतिदेहदुहूनमिलिदिपतिताफतारङ्ग ॥ ८ ॥

यह दोऊ बैस को संगम है सखी सखी सों कहति अथवा नायक सों सखी निवेदन करतु है ॥ सवैया ॥ वानि वहै बतियान कहै पै कलूक हरै मुसकान ढरी है । सूधी चितौन बिलोकतिहै परि लोलता रञ्चक आनिपरी है ॥ छूटी नहीं शिशुता की प्रभा नवयौवनकी द्युति आनि धरी है । सङ्ग दुहून के ताफता रङ्ग दिपै तन की द्युति रंग भरी है ॥ ८ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० अपनेअङ्गकेजानि कै यौवननृपतिप्रवीन ॥
स्तनमननैननितंबको बड़ोइजाफाकीन ॥ ९ ॥

यह नायका नवयौवनभूषिता मुग्धा सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ यौवन भूप महापरवीन विचक्षणताइ हरी तदई है । राज लह्यो नवला तनको काटि शत्रुकी सम्पति लूटिलई है ॥ दूरि किये शिशुता के सहायक चातुरता चित चारु

भई है। नैन उरोज नितम्बन को अपने गनिकै वढ़वारि दईहै ॥ ९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० अरतेटरतनबरपरे दई मरकमनुमैन ॥
होड़ाहोड़ीबढ़िचलौचितचतुराईनैन ॥ १० ॥

यह नायका को यौवन आयो है ॥ सुचतुराई नेत्र बढ़न लागे ॥ सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ नैनन की बढ़वारि लखैं चित चातुरी की उमगी अधिकाई। चातुरी की अधिकाई लखी तव नैनन और गही सरसाई ॥ कृष्ण कहैं वर बांध्यो दुहून इते परधीस मनोज की पाई। होड़ी ये होड़ा चली बढ़मानो विलोचन औ चितकी चतुराई ॥ १० ॥ पयोधर अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० निरखिनवोढ़ानारितन छुटतलरकईलेश ॥
भौप्यारोप्रीतमननोचहतचलनपरदेश ॥ ११ ॥

यह नायका नवोढ़ा है याको यौवन देखि सौति निराश भई है सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ कुंदन सी दिपै देह की दीपति मैनु मनोनिज मोहनी घालतु। छूटति सी लरिकाई कछू तरुणापन रंग तरंग उछालतु ॥ वालवधू तन यौवन आवत सौतिन के उर शूलसी सालतु। प्राणन ते अति प्यारो लग्यो पति मानु कहो परदेश को चालतु ॥ ११ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० गाढ़ेठाढ़ेकुचनठिलिकोपियहियठहराय ॥
उकसौंहैंईतोहियेदईसबैउकसाय ॥ १२ ॥

यह नायका नवोढ़ा है नायक की वांही सों बहुत आसक्तिहै सो सखी नायक सों कहति है ॥ सवैया ॥ पीनपयोधर भूधर सी तिय तो उर है पर है है जबै। को बसि है पिय के हिय भामिनि सुन्दर रूप अनूप तबै ॥ नेक विलोचन लोल भये नवयौवन ज्योति जगी न अवै। तेउकसे उर जातनुही पियके हियते उकसाय सबै ॥ १२ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० बाढ़ततोउरउरजभरु भरतरुणईविकास ॥
बोझनसौतिनकेहियेआवतरुधीउसास ॥ १३ ॥

यह नायका नवयौवनभूषिता है याको देखिके सौतिन के दुःख होत है सखी नायका सों कहति है ॥ सवैया ॥ तोसी तुही रमणी कमनीय भये अति तो वश प्यारे बिहारी । वैस बिलास जग्यो जबते तबते यह अद्भुत बात निहारी ॥ बाढ़तु है नवनागरि तो उरमें उरजातनु को भरु भारी । ताभरि सौतिनसास उसासति पीरहि सों हियहोत दुधारी ॥ १३ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० मानहुमुखदिखरावनी दुलहिनिकरि अनुराग ॥
सासुसदनमनललनहूंसौतिनदयोसोहाग ॥१४॥

यह नायका नवोढ़ा याको यौवन देखि नायक वश भयो अरु सौतिन हूं को सुहाग इन लीनो सो सखी सखी सों कहति है ॥ कवित्त ॥ गौन आई दुलहनि लोने तव नवारी मानु जगर मगर होत भवन को भागु है । विधिनै सुधारी गुन चातुरी की सींव जाकेरूप आगेरूप रतिको रतीकहून लागुहै । मेरेजानु मुख दिखरावनी को नेगुजानि आपहीते सौंप दीनो कीनो अनुरागु है । सासुभवन दीनो प्यारेलाल मनदीनो अरु प्रीति मनदीनो सौतिन सुहागु है ॥ १४ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० देहदुलहियाकीबढ़ै ज्योंज्योंयौवनज्योति ॥
त्योंत्योंलखिसौतिनसबैबदनमलिनद्युतिहोति १५॥

यह नायका नवयौवना मोषितानवोढ़ा है याको यौवन बढ़त देखि सौतिन को मोह फीको होत है सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ मंथर गौनगहे पदपङ्कज मत्तगयंदन दूखन लागे । नैन के टोने से वैन भये तिनके सम ऊख महूखन लागे ॥ ज्यों वृषभानुलली तन यौवन ज्योति के लक्षण से अव लागे । त्यों त्यों बिलोकि भई मलिनद्युति सौतिन के मुख सूखन लागे ॥ १५ ॥ वारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० ज्योंज्योंयौवनजेठदिन कुचमतिअतिअधिकाति ॥
त्योंत्योंछिनछिनकटिछिपाछीनपरतनितजाति १६

यह नायका आरूढ़यौवना है याको यौवन बढ़त है तैसे कुच बढ़त हैं तैसे कटि घटति है सो सखी सखी सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ नैसक बोध भौकञ्ज हिये जड़ता अलिनी भांति रामन आगी । चंचलता तम शेष रह्यो अरुणोदय लाज कलाचित

जागी॥ तारक ज्योति घटी नवलाकटि चातुरता चकई अनुरागी। यौवन भानुकी आमदनी शिशुता रजनी तनु बीतन लागी॥१६॥त्रिकलअक्षर१९॥गुरु९लघु१०॥

दो० नवनागरितनपुलकलहि यौवनआमिलजोर॥
घटिबढ़ितेंबढ़िघटिरकम करीऔरकीऔर १७॥

यह नायका के तन में यौवन आयो अंग बढ़ि हैं सो घटिभये अंग घटि हैं सो बढ़ि भये यह आमिल को परसंग करि सखी सखी सों कहति है अरु नायक कों वचन सुन सखी सो संभव है। सवैया॥ शोर पर्यो जु शरीर विषे निकसी सिरकारगई लरकाई। ठौरहि ठौर भयो कछु और फिरी अँगअंग अनंग दुहाई॥ आयगयो अफताली दोऊ कुच छाय धरे शिर श्याम दुहाई। आलमें लाल रसाल की सों सिकदार भई तनमें तरुणाई॥१७॥ कच्छअक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० भेटतबनततनभावतोचिततरसतअतिप्यार॥
धरतलगायलगायउर भूषणबसनहथ्यार॥१८॥

यह नायका मध्यालाज कामदोऊ समान हैं सखी सखी सों कहति है॥ सवैया॥ प्यारी को नेह लग्योहरि प्यारे सों ध्यानमें प्राणरहे दिनराती। भेटवे को न उपाय बनै गुरु लोगन के उपहास सकाती॥ जानके मीतमके तनके मिलके मिलवेको हिये उकलाती। भूषणवास अवास के कोन में बारहिवार लगावतछाती॥१८॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० छुटीनलाजनलालचौप्योलखिनेहगिरेह॥
सटपटातलोचनखरे भरेसकोचसनेह॥ १९॥

यह नायका मध्या लाज कामसमान है सखी सखी सों कहतिहै॥ सवैया॥ माइके में मनभावन को लखिप्यारी निशङ्क है देखि सकैना। देखिवे को तरसे हियरा दिखसाध लगी चित चैन लहैना॥ छूटै न लाज अछूटै न लालच लोककी लीक उलंघ परैना। तातें सकोच सनेह भरे अकुलात खरे जलजात से नैना॥ १९॥ बिल अक्षर ४५ गुरु ३ लघु ४२॥

दो० समरससमरसकोचबशविवसनठिकठहराय॥
फिरिफिरिउझकतफिरिदुरतदुरिदुरिउझकतजाय२०

यह नायका मध्या है पूर्ववत् ॥ सवैया ॥ आनन मांझ वसी पिय मूरति नैनन मांझ सकोचवे कौ । झांकि झरोखा दुरै फिर झांकै दुरै बहुरौं इहरात न एकौ ॥ त्रास इते गुरु लोगन को उत लालच मोहन के लखिवे कौ । लाज औ काम के वीचहु बीच परी यों चलाचल हाल हियेकौ ॥ २० ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० नईलगनिकुलकीसकुचिबिकलभईअकुलाइ ।
दुहूंओरऐंचीफिरै फिरकीलौंदिनजाइ ॥ २१ ॥

यह नायका मध्या है परकीया हू कहिये। नई लगनि कुलकी सकुच या पद तें सखी सखीसों कहति है ॥ अरु नायकहू सों सखीको वचन है ॥ कवित्त ॥ नई लगी लगन रसिक मनमोहन सों उर अभिलाषनकी उमँग भरति है। कुल की सम्हार की सुरति आये सीरी होतअतिही विकल जिय कल न धरत है ॥ देखिवे कौं ढरति डरति मनही मन में भरत उसांस पै प्रकाशन करति है। चाह कुलकाने बीच फिर कीलों वालवधू इत उत ऐंची ऐंची फिरिवो करतिहै ॥ २१ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० छलाछबीलेलालकोनवलनेहलहिनारि ।
चाहतचूमतलायउरपहिरतिधरतिउतारि ॥ २२ ॥

यह नायका को सनेह नायक में अधिक है सुवाके छला को पतिमिलै को सो सुख मानत है लाजते मिलने को भी प्रयास नाहीं करत । नायका मध्या परकीया हू होय सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ नागर सों नव नेह लग्यो नवनागर आलिन हूं सों दुरावै । देखिवे को उकलात हिये अति लाजन सों बनपै नहीं आवै ॥ नंदलला की छला लहिकै तकि ताहि रही न निमेप लगावै । चूमति छाति आंखिनसों कबहूं पहिरै कबहूं उरलावै ॥ २२ ॥ मराल अक्षर १४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० चालेकीबातैंचलीसुनतसखिनकेटोल ॥
गोयेहूलोयनहसतिबिहसतिजातकपोल ॥ २३ ॥

यह नायका मध्या सखी को वचन सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ सो है सखीन समाज में राधिका जाहिलखे रति रूप लजायो। एकही वैस सबै गुण आगरि चौपरि खेल भलो बनिआयो ॥ चालेकी बात चली तबहीं सुनिके मुह

आंचर झीने दुरायो नैननि लाज कपोलन हांसी दुहूं मिलिकै अति रंग दिखायो ॥ २३ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० बरउरझ्योचितचारसोंगुरुगुरुजनकीलाज ॥
बढ्योहिंडोरेसेहियेकियेबनैगृहकाज ॥ २४ ॥

नायका मध्या सखी को वचन सखी सों कहतिहै कवित्त ॥ हरि मुख जोवत जरूरन सौं भय भीति नीलकंठ मैन को मरूरनि मरति है। बसनकी बासन की सुधि परिहरी पुनि हरैं हरैदीरघ उसासनि भरति है ॥ मुरछित होति पर क्षितिपै परत नाहीं सरलों सम्हारि फेरि धीरज धरति है। बैठि बहराय रीझि जिय तहराय फिर लाजहि बुलाय गृहकाजहि करति है ॥ २४ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० सटपटातसीशशिमुखीमुखघूंघटपटढांकि ॥
पावकझरसिझमकिकै गईझरोखेझांकि ॥ २५ ॥

यह नायका मध्या लाज काम दोऊ समान नायक सखी सों जैसी भांति देखी है तैसी अवस्था निवेदन करत है सखी सखी सों वचन कहति है ॥ कवित्त ॥ मोहनी सी मुरली की धुनि सुनि श्रवणनु ललकति आई शशिमुखी सट पट सों। नैस कव झांकिआनि अवलोकवे को उर दाव लीनो आनिन लेजाय पटपट सों ॥ कहैं कवि कृष्ण वाले जानि कौं निकाई देखिबेकूं दृग आकुल मदन कि झरोखा झटपट सों ॥ २५ ॥ प्रौढ़ा वर्णन। चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० बिहंसिबुलायबिलोकिअति प्रौढ़पयारसघामि ॥
पुलकिपसीजतिपूतको पियचूम्योमुंहचूमि ॥ २६ ॥

यह प्रौढ़ानायका है सुस्नेह की अधिकाईसे पियनेचूम्यो वही पूतको मुंह चूमि आनन्द मानत है ॥ सवैया ॥ पूरण प्रेम उमाहित प्यारी फिरै सब मांझ हिये हुलसाती। पूत को आनन चूम्यो पिया तिय चूमत ताहि महारसमाती ॥ चाहे उतै मुसकाय बुलाय हिये सुख पाय लगावत छाती। गात पसीज रोमांचित होति भई अनुराग के रंग में राती ॥ २६ ॥ नर अक्षर ३७ गुरु १५ लघु १८ ।

दो० कोटिजतनकीजैतऊ तनकीतपनिनजाय ॥

जौलौंभीजेचीरज्यौं रहैनपयौलपटाय ॥ २७ ॥

यह नायका प्रौढ़ा है काम को अधिक है नायका को वचन सखी सों सखी कहति है ॥ कवित्त ॥ किये कोटि जतन न तनकी तपन जाय अनत की पीर अति वर सरसाति है। दूरितें बिलोकैं चित चौगुनौ उमङ्ग चाव ढिग आये भेटवे को मति अकुलाति है। लीजिये सुजानि भर कीजिये न न्यारा कहूं जीवन सफल जौलौं योहीं बिन राति है। आले पट कीसी भांति प्राण पति आठौं याम रहै लपटानो छाती तोहीं लों सिराति है॥ २७ ॥ मराल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६॥

दो० छिनकुउघारतछिनछुवत राखतछिनकुछिपाय ॥
सबदिनुपियखंडितअधर दरपनदेखतजाय ॥ २८ ॥

यह नायका प्रौढ़ा है नायक सों सनेह अधिक है या नायकारति सुरति के चिह्न को मन लगावत है सखी को वचन सखी सों कहति है ॥ कवित्त ॥ रात रति रंग हरि संग मिल कीनो अङ्ग अङ्ग मनमथकी तरंग सरसै। भोर भये बाल सजनी गण में बैठिबे निशाकी बातें सुमिरि सुमिरि जिय हरसै॥ प्यारे को मदन को अधर पर चिह्न ताहि आरसी लै बार २ देखे रस बरसै। कबहूंक उघारै कबहूंक ढांकि राखै अनुराग मैं उमंग पान पल्लव सों परसै॥ २८ ॥ मद कल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० दुखहायनुचरचानहीं आननआननआन ॥
लगीरहतिढूकादिये कानतकाननकान ॥ २९ ॥

यह नायका प्रौढ़ा प्रौढ़ा नायका को वचन सखी सों परकीया हू होय॥कवित्त॥ लाल मिलि भावन सों मिलिकर आपरस के लेके मनोरथ विविध विधि मानहीं। कृष्ण प्राणप्यारो मेरी वोर ठरोता कुचहरु मेरेई चवाइन को ठानहीं ॥ कुंज बन वीथी मों या खिरकी किवार द्वारे लागी रहै निशि दिन ढूका दिये कान हीं। देखा माई इन दुख दाइनके उलटि जुआनन आननप्रति आन चरचा नहीं॥२९॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० पहुँचतिझटिरनसुभटलौं रोकिसकैसबनाहिं ॥
लाखनहूंकीभीरमें आंखवहीचलिजाहिं ॥ ३० ॥

यह नायका प्रौढ़ा है परकीया नायका की चितवनि देखि सखी सखी सों

कहति है ॥ सवैया ॥ मान कियो तिय मानेन कैसहू आली रही बहु भांति मनाय कै। सोइ गई रिसही जिय में धरि सोय रह्यो ढिग मोहन आयकै ॥ रोसहू में सरसायो रहै कहतै न बनै जु रही छबि छायकै। इंदु मुखी सुपने के सुभाय रही पियकै हिय सों लपटाय कै ॥ ३० ॥ करभ अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० अपनीगरजनबोलियतिकहानिहोरोतोहि ॥
तूप्यारोमोजीयकोमोजियप्यारोमोहि ॥ ३१ ॥

यह नायका मौढ़ा है सो नायक सों अपने जीव की व्यवस्था कहति है कितेरे बिना देखे मेरो जीव रहत नाहीं यातें अपनोउ राखिबे को तोसों बोलतहूं नायका को वचन नायक सों ॥ कवित्त ॥ अपने अपने प्राण सब ही को प्यारे होत जात भांति राखिबो सबहि चहियतु है। ऐसी कछू बानि आनि परी मेरे प्राणन कूं तोहि देखौं जौलों तौलौं चैन लहियतु है। करत उपाय हौं तौ तिनही के राखिबे को कृष्ण प्राणप्यारे कित न्यारे रहियतु है। तातें लाल बोलियत आपनीये गरज न ताको कछु तुम सों निहोरो कहियतु है ३१ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० जातसयान अयानकै वैठगकाहि ठगैन।
कोललचायनलालकेलखिललचौंहै नैन ॥ ३२ ॥

यह नायका मौढ़ा है ॥ सखी शिक्षा देति है ताको उत्तर कहत है ॥ कि वे नैन देखिकै को तू ललचात नाहीं स्नेह को आधिक्य नायका को वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ को न रहै ठग मूरसी खाय के भूलत को न विवेक कलै। काहि न वे बिसरावैं सबै सुधि मोहन वे कहिका अबलै ॥ होत सयान अयान सबै चतुराय अनेक न एक चलैं ॥ आलीरी मोहनलाल के लोल बिलोचन देखत को न छलैं ॥ ३२ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० इहिकांटैमोपांयनहिं लीनी मरत जिवाय।
प्रीतिजनावतभीतसे मीतजुकाढ्यौ आय ॥ ३३ ॥

सवैया ॥ जा दिन तें मिलि सैनकी मूरसी डारि गयो वह छैल सुहायो। तादिन तें अकुलात हैं लोचन देखिबे को कछू दांव न पायो। मो पग में मग में लगिकै इह कांटे ने आज अमी बरसायो। प्रेम जनावत पै भयभीत सों मोहन मीत जु काढ़न आयो ॥ ३३ ॥ नर अक्षर ॥ ३३ ॥ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० कीनेऊं कोटिक जतन अबकहिकाढ़ै कौन ॥
भौमनमोहनरूपमिलि पानीमेंकोलौन ॥ ३४ ॥

यह नायका परकीया नवोढ़ा ॥ अपने मन की आसक्ति सखी सों कहत है ॥ सवैया ॥ जा दिन सें वर बानिक सों निरख्यो बलबीर कलिंद्री के तीर मैं तादिन तें न सुहात कछू सुधि को लवलेश रह्यो न शरीर मैं ॥ नैनन मांझि बसी वह मूरति जाय परचो मन तो छवि भीर मैं । कोटि उपाय किये कहो कैसें बिलाय गयो सखी लौन ज्यों नीर मैं ॥ ३४ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ परकीया गुप्ता ॥

दो० केसरकेसरिकुसुमके रहेअंगलपटाय ॥
लगेजानिनखअनखुलीकतबोलतअनखाय ॥ ३५ ॥

यह नायका परकीया भूत सुरत गुप्ता ॥ नायका को बचन सखी सों जो नायक के मत्यक्ष सखी नायका सों कहै तो खंडिता हू संभवै है ॥ सवैया ॥ तोहिं तो बान परी अनखैबे की ऐसेई क्यों सगरो हठ ठानै । कीजिये तो निरधार कछू कियो भौंह चढ़ाय कौं बोल बखानै । केसर सों उबट्यो तनु सों कहु केसर द्वैकरदे लपटानै । बावरी तोहिं दिखाऊं नजीक है बावरी तैं वे नख छूवै जानै ॥ ३५ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कारेबरनडरावनेकितआवतइहिगेह ॥
कैवालख्यौसखिलखैलगैथरहरदेह ॥ ३६ ॥

यह नायका परकीया हेतु गुप्ता नायक को देखि सात्विक भये हैं ॥ तिन कों सखी सों दुरायबे को कहति है ॥ कवित्त ॥ आपु कारे रंग रंगे छिरसि को छरा धरें ओढ़िबे को कारी एक कामरि याही निसाति । शीश पर फैंटा एक पीरो सो अमेठि बांध्यो तापै एक बिरही की पखीआ फहराति ॥ मटक चलत डर पावनो सो स्वांगु किये जात जत यहि ओर आवत अहीर जाति । तत तत देखि सखी केऊ बेर देख्यो याहि देखैं उरलागैं देह पुलकि थरहराति ॥ ३६ ॥ परकीया वाक्विदग्धा शार्दूल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० रह्योमोहुमिलनोरह्योयोंकहिगहैमरोर ॥
उतदैअलिहिउराहनोइतचितईमोओर ॥ ३७ ॥

नायका परकीया वाक्विदग्धा जुक्रय करि गई है सु नायक को सखी सों सखी

कहति है ॥ सवैया ॥ ता दिनकी वह बालि गली में मिलीहुती कालिह गई त्रिन चोरि कै ॥ एकहि ठौरकरी इकठौरी मनो विधि रूप की राशि बटोरि कै ॥ छाड्यो मया करिबो मिलिबोउ परौसनी सों कह्यो भौंह मिरोरि कै। यों सजनी सों उराहनो दै परिगो तन हेरिगई मुंह मोरिकै ॥ ३७ ॥ मद्कल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० करिमूंदरकीआरसी प्रतिबिंब्योप्योआय ॥
पीठदियोनिधरकलखैइकटकडीठलगाय ॥ ३८ ॥

दो० पौषमाससुनिसखिनपैसाईंचलतसवार ॥
लैकरबीनप्रबीणातियगायोरागमलार ॥ ३९ ॥

नायका क्रिया विदग्धा मुख्य तौ परकीया को भेद है स्वकीयाहू होय तौ होय ॥ सखी को वचन सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ शील समय परदेश को पीय पयान सुन्यो वह रोवन लागी। या ऋतु मैं हर क्यों हू रहै घर देवता पूज मनावन लागी ॥ और उपाय तक्यो न कछू तब साजिकै बीन बजावन लागी। प्यारी प्रवीण भरे सुरमेय मलार अलापिकै गावन लागी ॥ ३९ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० मंजनकरिखंजननयन बैठीब्यौरतबार।
कचअँगुरीबिचदीठदैचितवतनन्दकुमार ॥ ४० ॥

यह नायका क्रिया विदग्धा जात वर्णन होत है सखीको वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ मंजु मुखी करि मंजन चंदन चौकी पै बैठी सनेह सँवारति। पंकज पांसी अंगुरीन सों ब्यौरत बार हिये रसि धारति ॥ कुंतल औ कर पल्लव रंध्रनि बीच तैं दीठ इतै तन टारति। सुन्दर श्रीनँदनन्दन को मुख खंजन नैन निशंक ॥ ४० ॥ बगज अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० न्हाइपहिरिपटुझटकियोबेंदीमिसिपरनाम ॥
दृगचलायघरकोचलतबिदाकियेघनश्याम ॥ ४१ ॥

यह नायका परकीया विदग्धा सखी को वचन सखी सों ॥ कवित्त ॥ न्हाय पट्ट पहरि मृग मद्दी चारु चातुरी सों झटि मन भावन को मुडि मुसकानी है कृष्ण कहें बेंदी के सुधारिबे को मिस करि कीनो प्राण पति अहि हित सुखसानी है ॥ कहा कहौं आली कछु कहत बनै न क्योंहूं जैसी वह सरस नेही रीति ठानी

है। घरको चलतु चारु लोचन चलाचलकै चातुरी सौं चाहि निदा कीनां दधिदानीहै॥ ४१॥ ललिता मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० पूछेक्योंरूखीपरतिसगिबगिरहीसनेह॥
मनमोहनछबिपरगटीकहैकट्यानीदेह॥ ४२॥

यह नायका लक्षिता है रुखाई करके सखी सों दुरावति है पै रोमांच देखि परगट करति है सखी को वचन नायका सों कहति है॥ सवैया॥ पूछत क्यों बहरावत बात कहा तें अनोखी रुखाई तैं ठानी। प्यारे के प्रेम पै पागिरही अब होत कहा मुकरे हम जानी॥ क्यों वर अंतर को दुरै प्रीति सनेह की रीति रहै नहीं छानी। तू मनमोहन की छबिपै जु कटीसु कहै यह देह कट्यानी॥ ४२॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० औरेओपकनीनिकनिगनीघनीशिरताज॥
मनीधनीकेनेहकीबनीछनीपटलाज॥ ४३॥

यह नायका लक्षिता सखी को वचन नायका सों नायक को सनेह यासों अधिक है सो नेत्रन की शोभा और भई है या भेद ते प्रेमगर्विता होय॥ सवैया॥ केल किलोलके रंग में सुन्दरि प्रीतम संग रमी रजनी है। नेह सनी दरसाति भटू अरसानि प्रभा सरसाति घनीहै। और इसों भयगांति ओप अनन्तनिकी शिरमौर गनी है॥ कान्ह के प्रेम की सौंहैं मनी पट लाज मैं चारु छनी सी वनी है॥ ४३॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० प्रेमअडोलडुलैनहिंमुहबोलेअनखाय॥
चितवनकीमूरतिबसीचितवनमांहिलखाय॥ ४४॥

यह नायका परकीया स्नेह लक्षिता है सखी को वचन नायका सो है॥ सवैया॥ बोले तू क्यों न कितो अनखाय कहौ तू कहा अब साधे रुखाई। तेरे हिये थिर प्रेमकी बानि सुजानि परीरी दुरै न दुराई॥ तू हरिके हिय मांझ रहीखुभि तेरोई नाम रटै सुखदाई। प्यारेकी मूरति तो चित्त मांझ बसी सु चितौन में देत दिखाई॥ ४४॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० रुखरूखीमिसरोखमुखकहतरुखौंहेबैन॥
रूखेकैसेहोतयेनेहचीकनेनैन॥ ४५॥

यह नायका लक्षिता है परकीया रुखाई करि सखी सों दुरावति है पै प्रीति के नेत्र देखि सखी नायका सों कहति है ॥ कवित्त ॥ भृकुटी मरोर मुंह मोर रोसामिस करि ऊपर रुखाईसाधि कहे रूखे नैन है। आलिनको यही पन प्रीतही को धरे तनु कैसेजु दुरावो कछुइनसों दुरेनहै ॥ हरिकेसनेह सानि कैसे धौं रहाते छानी कहेदेत प्रगटछबीली छबिऐनहै। रूखोरुखकरि रूखबानठानि बैठी पारिरूखे कैसे होत नेहचीकने ये नैन है ॥ ४५ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० वहकेसबजियकीकहति ठौरकुठौरलखैन ॥
छिनऔरैछिनऔरसे येछबिछाकेनैन ॥ ४६ ॥

यह नायका लक्षिता सखी नायका सों कहति है। जो नायक सों कहै तो थिरताहूहोय ॥ सवैया ॥ देखत नाहिं नै ठौर कुठौर, रहैं जितही तित चाह चकेहैं। और घरी पल औरही दीसत भूमत आरस मैं विथके हैं ॥ लाज तजैं शिथिलाई गहैं अपने वश नाहिं न यों वहके हैं। देन कहें जियकी सब बात विलोचन ये छविछाकछके हैं ॥ ४६ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० नांवसुनतहीह्वैगयोतनऔरैमनऔर ॥
दबैनहींचितचढ़िरह्योअबैचढ़ाहैत्यौर ॥ ४७ ॥

यह नायका सखीसों रिसके मिस करिके स्नेह दुरावति है। येनांव सुनते चित्तकी रीति अरु क्रिया औरही भांति भई यातें सखीनें नीके करिजानी। नायका लक्षिता सखीको वचन नायक सों ॥ सवैया ॥ नांव सुनेही भयोमन औरही औरै भयोतनु चेतन नेरैं। नेहकी रीत यहै नवनागरि नेकलगैं निवरैन निवेरैं ॥ क्यों इमते सगराय बिलोकति होत कहा अब त्योरीफेरैं ॥ ऐसे किये कहि कैसे दुरेहरि प्यारेको प्रेम चढ्यो चित तेरैं ॥ ४७ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० रहिमुंहफेरकिहेरइतहितसमुहौंचितनारि ॥
डीठिपरसउठिपीठिकेपुलकेकहैपुकारि ॥ ४८ ॥

यह नायका परकीया है सखी देखत पीठिदै बैठी दुरायवे कौं रोमांच पीठपै भये ते देखि सखी कहति नायका लक्षिता ॥ कवित्त ॥ हितको निरखियतु हरषै हितूको मनु हंसतो धरचोई तनु प्रेमकी प्रतीति को। तिन्हैं तू भुराव्रति है बात बहरावति है काहे को दुरावत नवेली नेह नीति को ॥ भावै इत हेर भावै रहि मुंह फेरि तेरे चित सनमुख बीसबिसे रस रीति को। डीठिके परसते उठी

यह पीठि पै पुलकि पति प्रकटै कहत तेरी प्रीतिको ॥ ४८ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० लखिलोनेलोइननुके कोपनुहोयनआजु ।
कौनगरीबनिवाजबोकितुतूठ्योरितुराजु ॥ ४९ ॥

यह नायका कुलटा कौन गरीबनिवाजिबो या पदतें बहुत नायकनुकी प्रतीति भई । सखी को वचन नायका सों जो नायका की सखी नायक सों कहत हू बनै ॥ सवैया ॥ सरसीरुह खंजन मीन कुरंग प्रभा इनकी सहजैं हरिबो । इतने परवाहके चापनुसों चहुँवोर चलाचलको करिबो ॥ चित चोरति नाथ सनाथभयो वहको सुकृती जिह पै ढरिबो ॥ इन सुन्दर लोचन कोरनिसों लखि कौन पै आजु मया करिबो ॥ ४९ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० फिरफिरदौरतिदेखियै निचलेनैकरहैन ।
येकजरारेहौनपरिकरतकजाकीनैन ॥ ५० ॥

यह नायका परकीया कुलटा कौनपै करत कजाकी इतैं बहु नायकन सों प्रीति जानी सखी को वचन नायका सों ॥ कवित्त ॥ कानन के निकट निशंक ह्वै विहार करैं काहू ते न डरैं चितवतु हरि लैनये । नृपति मनोज के प्रबल असिवाहक हैं घायल करत वर धरमधुरेनये ॥ घूंघट की ओट गहैं घाट हेरि फेरि फेरि दौरतही देखियत निचले रहैं नये । चंचल ढरारे अनियारे रतनारे कारे कौन पर करत कजाकी तेरे नैनये १ ॥ कवित्त ॥ यथा ॥ कजरा कव चाहिये वरुनी केसरालिये भौहैं धनु किये जैतवार जग ऐन हैं । इनकी कजाकी आगे कजाकी कछू न चलै वहू भलैं हाथ येतौ काहू दुख देन हैं । वाकी सूधी चितवनि दोऊ तरवारि बाँधे करें आधे आधे कहू मारते डरें न हैं । कहै ऊधो राम सजे व्रजें रहैं आठो याम मैन बादशाही के सिपाही दोऊ नैन हैं ॥ ५० ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० खेलनसिखयेअलिभलेचतुरअहेरीमार ।
काननचारीनैनमृगनागरनरनुशिकार ॥ ५१ ॥

यह नायका परकीया कुलटा सखी को वचन नायका सों है । नागर नरनु शिकार या पदतें बहुत नायकन की प्रतीति भई ॥ सवैया ॥ कानन चारी कहावैं इते पर दौर करैं पुरमें मृगया ये । ओट अभेड़ी अचूक हनैं मुनि आगरे नागर मारि

गिराये ॥ घायल कौं फिरि लेत सुध्यौन पलो न थकै अति कौतुक छाये । नीकें मनोज मवीन करो लये खेलनि नैन कुरंग सिखाये ॥ ५१ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २२ ॥

दो० चलतुदेतआभारसुनि वहीपरोसहिनाहिं ॥
लसीतमाशेकीदृगनिहांसीआसुनमाहिं ॥ ५२ ॥

यह नायका परकीया मुदिता है चाहयती बात भई जानि मसमता की हांसी भई सखीको वचन सखीसों । सवैया । देखि परोसी की चीकनी चाहिनि प्यारीहिये परप्रेमकी फांसी । त्यौंपिय जातविदेश लख्यो बिलखी बिरहातुर सांसबुसांसी ॥ वाही परोसीसों बोलिकही पति हैं इत तोसों हमारी निसांसी । त्यों लसी अंबुज नैनीके नैनन आंसुन मांझ तमाशे कीहांसी ॥ ५२ ॥ अनुशयना मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० सनसूख्योबीत्योबनो ईखौलईउखारि ॥
अरीहरीअरहरअजौंधरिधरहरिजियनारि ॥ ५३ ॥

यह नायका अनुशयना संकेत की ठौरजाति जानि शोच करति है सो सखी समाधान करत है मत्युत्तर । सवैया । बीननफूल सहेली के संग चली मृग लोचनि मोद भरी हैं । कीथल जीवजरी अवलोकि बसासमरी अलि सौंचरी हैं । बीत गये वन सूख्यो सनौं अरु ऊखौं उखारी लई सगरी हैं । यों हहरो मतिधीर धरो अब हीतो अराहर प्यारी हरी है ॥ ५३ ॥ चल अक्षर ॥ ३७ ॥ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० फिरिफिरबिलखीहैलखतिफिरफिरलेतउसास ॥
साईंशिरकचश्वेलज्योंबीत्योंचुनतिकपास ॥ ५४ ॥

यह नायका अनुशयना सहेट की ठौर बीती जानि बिलखति है सो सखी सखी सों कहति है ॥ कवित्त ॥ बालम के शिरके सरोरुह ज्यों सेत ऐसे लेत चुनि चुनि शिर धुनि मुरझाति है । बीरनिहैं तूल ऐसे पै शूल में सजत हिये मानि दुख मूलफूल जिमि कुम्हिलाति है ॥ बारबार कहत अली सों कैसी भली रति केलके बिलासथल लोयों चलि जाति है । बिलखि बिलखि के उसासैं लेत बालवधू लखिवन बीत्यो मन अति अकुलाति है ॥ ५४ ॥ नायका अनुकूला ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० नहिंहरिलौंहियराधरौनहिंहरलौंअरधंग ॥ एकतहीकरराखियेअंगअंगप्रतिअंग ५५

यह नायका अनुकूलाहै सुनायक के मनको विचार जानिये ॥ सवैया ॥ जो अबके मिलिपैतो रहो मलिको भरै वादि वियोग वृथाहीं । न्यारी न कीजिये ताहि कहूं पलु लीजै छिपाय मिलै छतियांहीं ॥ वारही वार विचारतहूं चित और कछू जिय आवत नाहीं । राखियेकै हरलौं अरधंग कि राखिये लै हरिलौं हियमाहीं ५५ ॥ कच्छअक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० गोपिनसँगनिशिशरदकीरमतरसिकरसरास ॥ लहाछेहअतिगतिनुकीसबनुलखेसबपास ५६

यह नायका कुदक्षिणा है सुरास मंडल में अपनी चतुराई करिकै सबको प्रसन्न राखि एकके आधीन काहू नैन जान्यो सखी को वचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ यमुनाकी पुलनि सुहाई छविछाई तैसी शरद रैनि जोन्ह विशद विलास हैं। गोपिका निसंग रसरंग की उमंग रमैं रसिकमनमोहनु रमतरस रास हैं ॥ अवला अनेकन में कीन्ही नंदलाल कछू अद्भुत चातुरी की कलायों प्रकास हैं। सबही की बांह गहि सबही के संग नाच्यौ सबनु विलोक्यौ कान्ह सबही के पास हैं ॥ ५६ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० बेईगड़िगाड़ैंपरी उबट्योहारहियेन ॥ आन्योमोरिमतंगमनु मारगुररेनमैन ५७

यह नायक शठ है । विनु गुनहार के चिह्न मीठी बात कहि दुरावत है नायक को वचन नायका सों कहै तो खंडिताहू होय ॥ कवित्त ॥ आज मनमोहन प्रभा कैसेरे आये लालन सोहतु सिंगारुचारु मेरेमन मान्यो है। आलिस वलित दृगघूमत ललित गति शिथिल कलितरूप मोहनी सो मान्यो है ॥ कृष्ण प्राणप्यारे उरमें उबट रह्यो यहै बिन गुनहार प्रगट जात जान्यो है। वेई गड़िगाड़ैं परी सुमन मतंग मानो मदन गुरेरन तैं मारिमोर आन्यो है ॥ ५७ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० बालकाहिलालीभई लोयनकोयनुमांह ॥ लालतिहारेदृगनकी परीदृगनमैंछांह ५८

यह प्रत्युत्तर नायक शठ नायका खंडिता ॥ सवैया ॥ चारु लिकाई लखें जिन

की रद लागत औ परती पलकी है। प्राणपियारी कहा इन नैननु आजु ललाई इती ललकी है। लोचनलाल तिहारे लखैं तिनकी इनआनि प्रभा झलकी है ५८ यथा सवैया ॥ रुचि पंकज चंदन बंदन कंचन रंचन रोचनहू को बची। कहिये केहि कारण कोपते लायक कायर भामिनि भौंह नची ॥ वन मानतहीं अँखिया छबिलाल ये नाहितै रातिके रोखरची। तन तेरे वियोग तच्यौ तरुणी विन मानहु मोहिय माहितची ५८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० सकतनतुवतातेबचन मोरसकोरसखोय ॥
खिनखिनऔटैखीरस्यों खरोसवादिलहोय ५९

यह नायक शठ सापराध आयो है ॥ नायका क्रोध तैं कटु वचन कहति है। ताको मीठी बातकहि कोप निवारण करत है नायका अधीरा जानिये। नायक को वचन नायकासों ॥ कवित्त ॥ मोते तो कछुन अपराध परचो प्राणप्यारी मानकर रही यौंहीं काहे को अरसैं। लोचन चकोर मेरे होत हैं शीतल तेरे तरुण उदित मुख चंदके दरसतें ॥ कहैं मतिराम उठ लागि कंठ मेरे कन कारति कठोर मनु आनंद वरस तैं। कोपे तैं कटुक बोल बोलति है तऊ मोकों मीठे होत अधर सुधारस सरसैं ५९ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मारोमनुहारनभरी गारयोखरीमिठाहि ॥
वाकोअतिअनुखाहटौ मुसकाहटबिनुनाहि ६०

यह नायका धृष्ट है नायक का वचन सखी सों है यातें गुण कथन में नीके संभवतु है। वाको यापदतें परोक्ष की प्रतीतिभई ॥ सवैया ॥ मारे तौ फूलन की छटिका सों तऊ मनुहार अनेक जताव। गारिजोदेय कहा कहिये मधुराई इतेक सुधाकित पावै ॥ वारति मूरति को सतराहटु मैं रहिये अतिमोद बढ़ावै। सील सुभाय सुहागल को रसहू रिसहू हसिहीं हसिआवै ६० ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० लरिकालेबेकेमिसनु लंगरमोढिगआय ॥
गयोअचानकआंगुरी छातीछैलछुवाय ६१

यह नायक धृष्ट नायक की कर्तव्यता नायका सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ गोरस के मिस रोकत हैं वन गैल न छांड़त छैल चवाई। भौनभरे मैं कहाकहौं

जैसीकरी यशुदाके लला लंगराई ॥ मोढिग आय हरैहरै कछूकीनी सनेह सनी चतुराई । छोहरोलेवे कै उठिलागि अचानक आँगुरी छाती छुवाई ६१ यथा ॥ सवैया ॥ खेलत में वृषभानु सुता कहूं धायधसी वन कुंजन में है। डारसों हारतहां उरभयो सुरझाय रही कविदेव सखी है ॥ तौलगि आय कहूं उततें सुन जीक परयो चितवीच परयो है। छोहर वाहर वाहरवायदै छैरिदये छलसों छतियां छ्वै ॥ ६१ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६। यत वय यति ॥

दो० कुञ्जभवनतजिभवनकोंचलियेनंदकिशोर ॥
फूलतकलीगुलाबकीचटकाहटचहुँओर ६२

यह नायका स्वकीयाहू होयनायका को वचन नायक सों ॥ कवित्त ॥ मुकलित कली जलजात की कछूक भई भौंरनकी गुञ्ज मंजु श्रवणन धारिये। पुलित गुलाब कलिकान की सुगंध पौन चिटका शब्द मृदु मोदवर धारिये ॥ कलि धुनि करत अनिद खग वृंदनि अनंनछवि लसत विहारीयो विहारिये । आगम विभास को विलोकिये छबीलेलाल सुंदर निकुञ्जतजि सदनु सिधारिये॥६२॥नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ अथ रूपनिवेदन नायका को नायका सों ॥

दो० रहीलटूकैलालहौं लखिवहबालअनूप ॥
कितौमिठासदयोदई इतेसलोनेरूप ६३

यह नायका को रूप सखी नायका सों निवेदन करत है सलोने रूपमें मिठास यह अद्भुत है ॥ कवित्त ॥ जैसी जहां चाहियत तैसी तहां वनी विधिहू पै धुनि आखरके न्याय वनिआई है। सुखद सुहाई कापै वरनि वताई जाति रतिहू ने जाकी तिलु समता न पाई है ॥ वालछवि छाय तामें और अधिकाई दई दई यालुनाई मांभ कितनी मिठाई है। सुंदर कन्हाई हो तौ निरखि विकाई वह रूपकी निकाई मानो देहधरिआई है ६३ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥ यह नायका को रूप निवेदन नायक सों ॥

दो० मोहिंभरोसोरीझिहैं उझकिझांकिइकवार ॥
रूपरिझावनहारवह यहनैनारिझवार ६४

यह नायक को रूप सखी नायका सों निवेदन करतुहै सखी को मयाजेन प्रीति करावो ॥ सवैया ॥ सुंदर जो कहिये तो हिहूं पुर में इक नंद दुलारोइ है।

यामें कहा कहनावति है कछू प्रेमको पंथ निरारोइ है ॥ नेक झरोखा है झांकी बुलायलेयौं मोहिंभरोसो तिहारोइ है । रिझवार हैं तो दृग रीझेंइंगे वह रूपरिझावन हारोइहै ॥ ६४ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु २० ॥ गात वर्णनम् ॥

दो० ह्वोरीझीलखिरीझिहो छबिहिछबीलेलाल ॥
सौंनजुहीसीहोतद्युति मिलतिमालतीमाल६५

यह गात वर्णन नायकाके अंगकी छवि नायक सों निवेदन करति है ॥ सवैया ॥ नीकी लसैं वृषभानुलली नवयौवन ज्योति जगी अँगअंगहि । ताहि विलोकिललामन मेरो भोइ रह्यो अति रीझ तरङ्गहि ॥ छैलछबीले लखैं छवि रीझिहौं क्यों न हिये रसभाव उमंगहि । मालतीमाल तनूद्युति सों मिलि सौंन जुही के प्रकाश तरंगहि ६५ ॥ यथा सवैया ॥ चौसर चारु चमेली के फूलनि को सखियानि संवारिकै आन्यो । सो पहिरयो गुन गौरि धुरंधर कंचन से तन में मन मान्यो ॥ ह्वैगई सौंनजुही कीसी माल सुअंगके रंगमें भेद न जान्यो । दंतनकी द्युतिसों मुसिकाय कै फेर चंबेलिही को ठहरान्यो ॥ ६५ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० अंगअनंगनजगमगति दीपशिखासीदेह ॥
दियाबढ़ायेहूं रहै बड़ोउजारो गेह ६६

यह नायका की छवि देह की दीपति सखी नायक सों निवेदन करति है ॥ कवित्त ॥ दीपकीसी लोय ऐसी दूसरी न कोई रही दृगनि समोय मानो मोहनी लसतिहै । जटित जवाहर के भूषण ललित अंग अंगनि मिलतजगा ज्योतिसी जगति है ॥ दीपक बढ़ोहूभये देहके उजास होत बड़ोई प्रकाशक चौंधिसी लगतिहै । दीपतिकी द्युति भरि भवन अखिल जाल रंध्रनि ह्वै बाहिर की ओर बहलति है॥६६॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० बाहिलखैलोयनुलगै कौनयुवतिकी जोति ॥
जाकेतनकी छांहढिग जोन्हछांहसीहोति ६७

यह नायका की दीप्ति सखी नायक सों करति है जो नायक सखी सों कहै तौ गुणकथन हूं संभवतु है ॥ कवित्त ॥ यौवनकी जोति जगैं तनकी बनक की नौ हीरनकनक छवि महल विलम्ब की । ललित विलास कोटि मंद मृदुहास मतिराम अंग वासु मृगमद वासु मंदकी ॥ मदके मदनबन मद नैन मन्दिर से

गति गरबीली मद मोकल गयंदकी। अधिक अँध्यारी में उजारी होति चंद की त्यौं चंदकी उजारी में उजारी मुखचंदकी ६७॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० भईजुतनछबिबसनमिलि बरनसकैसुनिबैन॥
अंगओपआंगीदुरी आंगीअंगदुरैन ६८

यह नायकाकी शोभा सखी नायकसों निवेदन करति है॥ सवैया॥ हरि कंचन बेलीसी वालकी देहकी दीपति को बरणै कवि है। अरु ताहि मिली द्युति कंचुकी की अनूपम ओपरही फवि है॥ कछु जातकही नहिं अंगप्रभा अरु चीर मिलै जु-भई छवि है। वह आंगी गई दबि अंग की ओप में आंगी में अंग कहा दबि है ६८॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० देखीसोनजुहीफिरति सौनजुहीसेअंग॥
द्युतिलपटनुपटसेतहूं करतबनौटीरंग ६९

यह नायकाके अंगकी गुराई सखी नायकसों निवेदन करति है॥ कवित्त॥ सहज सिंगार द्युति लसति अपारलखि मुनिहूंकें मन भाव उपजै अनंगको। अति सुकुमार यातैं लचकत छांकुमार सहिनसकत विवि उरज उतंगको॥ रूपकी रसाल तुमदेखी सो न बाल लाल कहाकहौं बनक बरन वाके अंगको। चारु तन सुख पट पहिरत नख वाहि तन द्युतिमिलि होतु केसरिया रंगको ६९॥ कछ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० दीठिनपरतुसमानद्युति कनकुकनकसेगात॥
भूषणकरकरसकलगत परसपिछानेजात ७०

यह नायकाके अंगकी दीप्ति सखी नायकासों कहति है। नायकहू सखी सों कहै तो संभव है॥ सवैया॥ ओप अनूपम आननकी अरु अंबुज नैननु अंजनु-आनै। देखतही मनहींमनसों चित आजु कहा जनु भूषण ठानै॥ ऐसें में आय गयो रिझवार सुडीठपरे तब घूंघटतानै। भूषण जानि परै न सखी व्रजभूषण देखत भूषणजानै ७०॥ चल अक्षर ३७॥ गुरु ११ लघु २६॥

दो० करतुमलिनआछीछबिहि हरतजुसहजविकासु॥
अंगरागुअंगनलगो ज्योंआरसीबसासु ७१

यह नायकाके अंगमें केसरि लगीहै नायकको इतनोहू अंतराय सुहातु नाहीं यह जानि सखी नायक सों कहति है जो नायक नायकासों कहै तो रूपगर्विता होय ॥ सवैया ॥ मैनकी मोहनीसी लखि न्यायही मोहन रीझरहे रसपागैं। यौवनरूप सुहागसनी लखि सोतिनके उर दाहनि दागैं ॥ ऊजरो लागै न और कछु नवनागरि तेरी गुराईके आगैं। केसरि लागेते अंग लखात ज्यों आरसि देखैं उसासके लागैं ७१ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पहिरनभूषणकनकके कहिआवतयहिहेत ॥
दरपनकेसेमोरचे देहदिखाईदेत ७२

यह सखी नायकाके अंगकी निकाई कहत है जो भूषणहू को अंतराय जानि नायकासों कहै तो बनत है ॥ कवित्त ॥ हितकी जो बात हितहू सों कहिआवै तिहि ताते तोसों कहत छबीली प्रेमपागिकै। तेरी समताको रति रम्भा उरबशी है न तेरे अनुराग प्यारो रह्यो अनुरागिकै ॥ लौनो तेरो तन तामें सोने के गहने तूलोपहिरति इन्हैं अबहीं दे त्यागिकै। नीके नीके तनपर फीके फीके लागत हैं मोरचा रहे हैं मानो मुकर में लागिकै ७२ ॥ मदकल अक्षर ३५ ॥ गुरु१२लघु२३॥

दो० कंचनतनधनबरनबर रह्योरंगमिलिरंग ॥
जानीजातसुबासही केसरिलाईअंग ७३

यह नायकाके अंगकी गुराई सखी नायकासों कहतिहै अथवा लैचलिबे की उतावलकरि अंगरागको निवारन करतु है अंतराय जानि नायक नायका सों कहतुहै ॥ सवैया ॥ जो कछु तो तनमें तरुणी सुरतीन लहै रतिरूप निकाई। तापर यौवन जोतिजगैं कविको बरनै छबिकी सरसाई ॥ रंगमें रंग समोयगयो जब कंचनसे तनमें घसलाई। अंगसुगंधनिकी न लहै सरकेसरि बासुहीतें लखिपाई ७३ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० ह्वैकपूरमनमैरही मिलितनद्युतिमुकतालि ॥
छिनछिनखरीबिचच्छनौ लहतिछायतिनुआलि ७४

यह अंगदीप्ति की निकाई सखी नायक सों कहति है ॥ कवित्त ॥ कुंदन से गात जलजात से नयन जाकी दीपति जुन्हाई सो भवन मांझ वैरही। कंचन की चौकी पर बैठि बरबाल साजें सकल सिंगार ज्योति जगमग ह्वै रही ॥ मोतिन की माल सजनी तैं पहराई सुतो तनु द्युतिमिलित कपूरकीसी ह्वै रही।

एक अली चतुर जकीरी चकिरही एक करिवे को निहचे तिनूकी हाथलेरही ७४ ॥ गराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० केसरिकैसरिक्योंसकैं चंपककितकिअनूप ॥
गातरूपलखिजातदुरिजातरूपकोरूप ७५

यह नायकाके अंगकी दीप्ति सखी नायकसों निवेदन करति है ॥ कवित्त ॥ चंपकचमकचारु कुंदन में कहाओजु केसरी कुसुमको जु संधकरै गातकी । कोकिलाकी कूकहूते पांत्र पियूषहूते मधुरमयूषहूवे मधुराई बातकी ॥ मैनकाहूं मैनछबि मैनद्युति रही दबि मैन गिरिधर ऐसी नैन बनितातकी ॥ देखि दृग भास मृगजात पछितात मन जलजात लजिजात जलिजात जातकी ७५ मदकल अक्षर ३५ गुरु १२ लघु २२ ॥

दो० बरनबाससुकुमारता सबबिधिरहीसमाय ॥
पखुरीलगीगुलाबकी गातनजानीजाय ७६

यह नायकाकी सहज सुगन्ध यौवनकी अरुणाई सुकुमारता सखी नायकसों निवेदन करति है जो नायक के सेजकी पाखुरी जानि सखी नायका सों कहै तो लज्जिता होय ॥ सवैया ॥ बीनतिफूल भरेवर फूल प्रभातसमै सुख सेजतेजागी । आयो तहां मनमोहन प्यारो प्रभालखि रीझिरह्यो अनुरागी ॥ वैसोई रंग सुगन्ध है वैसोई वैसीहीं कोमलता रसरागी । कौनहूं भांति सों जानि परी न गुलाब की पाखुरीगातसों लागी ॥ ७६ ॥ मदकल अक्षर ३५ लघु २२ गुरु १३ ॥

दो० सोहतधोतीसेतमें कनकबरनतनबाल ॥
सारदबारिदबीजुरी भारतकीजातिलाल ७७

यह नायकाकी गुराई सखी कहति है नायक सों ॥ कवित्त ॥ कञ्चनबरन तन चनक अनूपमानों रूप की अवधि मनमथकी रसाल हैं । एकधोती सेतमें अनेक छबिदेती बाल मानों हंस मंडली में चंपक की माल हैं ॥ शरदघटानि मधिदामनी लसतिकिधौं क्षीरसिंधु मांझ बड़वानल की ज्वाल हैं ॥ सुरसरि सोत में सुधानिधिकी कला किधौं शंकरके अंग लसैं पारवती बाल हैं ७७ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० कहाकुसुमकीकौमुदी कितकआरसीजोति ॥
जाकीउजराईलखें आंखऊजरीहोति ७८

यह नायका की उजराई सखी नायकसों कहति है नायकहू कहै तो संभवहै॥ कवित्त ॥ देखी सुनी होतकहूं रेसम रसमको ऊकरा कैसी यो कमाई मृदु मूजरी। इंदुहोहु बदितन कहाहोहु बदितकहाऊ ऊजरीपैन पून्योंकीसी पूरण प्रकाशपावै दूजरी ॥ उबटि अन्हाय औ अँगोछनि अंगोछो तन रहोउ अछन अछनाई आछी गूजरी। लाखकरो कोऊ पट सरवाकी पूजतिन जाकी उजराई देखे आंख होत ऊजरी ॥ ७८ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १२ लघु २२ ॥

दो० रंचकलखिपतिपहरियों कंचनसेतनवाल ॥ कुम्हिलानीजानीपरति उरचंपेकीमाल ७९

यह नायका के अंगकी गुराई ऐसी है जु चंपेकी माला जानि नाहीं जाति सों सखी नायकसों कहति है ॥ सवैया ॥ लाईबनाय प्रवीनअली नवचम्पक माल सुगन्ध भरीहै। लै अपने करमें नवनागरि कृष्ण कहैं उरमें पहरी है ॥ कंचन से तनकी छवि मांझ गई मिलि रंच नहीं उघरी है। चाहिरही सजनी चकसी कुम्लिायगई तव जानिपरी है ॥ ७९ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु २२ लघु २६ ॥

दो० सघनकुञ्जघनघनतिमिरु अधिकअँधेरीराति ॥ तऊनदुरिहैश्यामयहदीपशिखासीजाति ८०

यह नायका के अंगको प्रकाश सखी नायकसों कहति है जो संयोग समै गुरु सखी कहै तो शिक्षाहू संभवहै परकीया ॥ सवैया ॥ याके समीपन होउ दुरै लखि लेतवै दूरहीते बपहाँसी। कीजै कहा अबतो कहि जो विधि या विधि दीपतिही परकासी ॥ काहू कि आंखिन मूंदनजानि तहाँ बलिजाउं नहूंजिवदासी। क्यांऊ सके से दुरातिअँधेरी उजेरी जुनागरि दीपशिखासी ॥ ८० ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० लिखिनबैठिजाकीसखीगहिगहिगरबगरूर ॥ भयेनकेतेजगतकेचतुरचितेरेकूर ८१

यह नायका की निकाई सखीनायक सों कहति है कि वाहि देखे शांतिकभाव होत है याते चितेरे ऊपरक्यों लिखत वनै नाहीं ॥ कवित्त ॥ रूपकी अवधि ऐसी और नवनाई विधि जाको लिखिवे को लालदेवता मनाइवो। ताकी शोभा लखिवे को बैठति गरब करि आनतही मनहोत घूमघन नायवो ॥ ऐसी भांति आप आप कूर कहवायगये चतर चितेरे तिन्हें कहाँलौं गिनायवो। कृष्ण मारे

प्यारे वहिचित्रिनी विचित्र गति काहूपै न बान्यों वाके चित्रको बनायवो ८१ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० अंगअंगछबिकीलपट उपटतिजातअछेह ॥
खरी पातरीहू तऊ लगे भरी सी देह ८२

यह नायका की नाजुकताई अरु दीप्ति सखी नायकासों कहतिहै ॥ सवैया ॥ कंचनकंज कुरंग कलानिधि कंचुकी शोभा सुभाये रहीसी । ता नवनागरिकी निशि द्यौस रहैं नितनैननि मांझधरीसी ॥ अगनि अंग उमंग अछेह मभाकी तरंग सुरंग खरीसी । पातरिवाकी अंगेट तऊ छबि पुंजन लागति देह भरीसी ८२ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० अंगअंगप्रतिबिंबपरि दरपनसेसबगात ॥
दुहरे तिहरे चौहरे भूषण जाने जात ८३

यह नायका के अंगकी उजराई सखी नायकसों कहै है सखी सों नायक कहै अरु नायका सों कहै सो सबभांति संभवति है अरु नायका सखीसों कहै तो रूपगर्विताहोय ॥ कवित्त ॥ वदन विलोकि शशि समता लहै न क्योंहूं लोचन विलोकि जलजातहू लजात है । नागर नवेली नख शिख लौं निकाई भरी वानक विचित्र लखि लोचन सिरातहै । कृष्णमाणप्यारे अति उज्ज्वल लसत वाके मुकरसेगात महाशोभा सरसातहै । अंग अंग माहि प्रतिबिम्ब परिकैऊ ठौर एक एक भूषण अनेक जाने जातहै ८३ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० बालछबीली तियनमें बैठी आपुछिपाय ॥
अरगटहीफानूससी परगटहोतलखाय ८४

यह नायक के अंगकी दीप्ति सखी नायक सों निवेदन करतिहै नायकहूकहै तो संभव है ॥ कवित्त ॥ चंदकी कलासी चपलासो तियसेनापति बालमके बरबीज आनंद के बोतिहै । जाके आगे कंचनमें रंचक न पैये द्युति मानों मन मोती लाल माल आगे पोतिहै ॥ देखी प्रीति गाढ़ी पहिले तन सुख ठाढ़ी जोर यौवन की वाढ़ी छिनछिन औरैहोतिहै । गोरीदेहभीनि वसन में झलकत मानों फानुसके अंदर दिपति दीप जोतिहै ८४॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० मानहुंबिधितनअच्छछबि स्वच्छराखिबेकाज ॥

दृग पग पोछन को किये भूषण पायंदाज ८५

यह नायका के तन की छवि सखी नायकसों कहति है। अरु सखी को वचन नायका सों होतहै॥ कवित्त॥ तूही तीनों लोककी लुनाई लूटल्याई देखैं रूपकी निकाई नंदलाल ललचाये हैं। तेरीद्युति आगें आली कंचनके गहने ये फीके२ लागैं ऐसे गात छबिछाये हैं॥ दीठिके परसहीवे मैलेहोत अंग ऐसी उज्ज्वलता सहित बिरंचिने बनाये हैं। तिनकी निकाई स्वच्छ राखिवे के हेतु येतो दृगनको मानों पग पोछना बिछायेहैं ८५॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० लीनेऊंसाहससहस कीने जतन हजार॥
लोयनलोयनुसिंधुतन पैरिनपावतपार ८६

यह नायका के अंग अंग की सुन्दरता देखिकै तहां नायकके नेत्र तहांई थकितह्वै रहत हैं शोभा एक सखीसों कहत है॥ सवैया॥ जाननकी छवि को कवि कोविद केतेकितीर प्रमाण बतावत। तातनकी छवि देखिवेको तव नैनलगे व्रत ध्यान लगावत॥ साहसकों रस पानविषे बहुभांति अनेक उपाय बनावत। शोभाके सागर मांझपरे अब पैरतकैसहू पार न पावत ८६॥ स्वमदर्शन नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु २८॥

दो० देखौं जागि तवै सखी सांकरलगी कपाट॥
कितह्वैआवतजातभजि कोजानेकिहिबाट ८७

यह स्वमदर्शन नायका सखी सों कहतिहै॥ सवैया॥ रंचक नींदपरै जबहीं तबहीं ढिग आनिटिकै खागिकै। हेरिहँसै रसको बरसै बतरात महा छितसों पागिकै॥ जागों तौ डीठपरै न कछू अरु त्योंहीं कपाटरहे लगिकै। इहजानै को आवत धौं कित ह्वै पुनि जातकवै कित ह्वै भगिकै ८७॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० सोवतसुपनेश्यामघन हिलिमिलिहरतबियोग॥
तबहीं टरि कितहूं गई नींदौ नींदनयोग ८८

यह स्वमदर्शन नायका सखी सों कहतिहै नींदकी निन्दाकरति है॥ सवैया॥ आलीबिछोहु भयो जबते छतियां बहुभांति वियोग वईरी। आजु लला मनमोहनसों सपने में अचानक भेंट भईरी॥ मनुसिंथों बहरायबे को

हिलिकै मिलिकै रसकेलिठईरी। नींदहूं नींद बिलोयके है तबहीं कहुँभाजिगई सुगईरी॥ यथा॥ श्रावनमें हरिको सपने लखि नेसकुवाट सँकोचनि छोड़ी। आगे है आड़ेभये मतिराम ग्रौ लीने चितै चख लालची चोड़ी॥ ओठनुको रस लैनको मेरी गही करकंज निकंपत ठोढ़ी। और भटू न कछू भइ बात गई इतनेही में नींद निगोड़ी ८८॥ अहिवर अक्षर ३४ गुरु ५ लघु २९॥ साक्षात् दर्शन नायकको नायकाको॥

दो० लटकिलटकिलटकतुचलत भटतमुकटकीछांह॥
चटकभस्योनटुमिलिगयो अटकभटकबटमांह ८९

यह साक्षात् दर्शन जैसी छबिसों देखों है नायक तैसे नायका सखीसों कहति है॥ कवित्त॥ लटकि लटकि चालि निरखन बार बार फेरि फेरि ग्रीव छाह मंजुल मुकटकी। केसरिकी खौरपरि कलित रुचिर भाल कुण्डल ललित सोहै बनमाला ठटकी॥ है गई बिपिन मग अटक भटकभेट तबहींते नैननमें खुभी शोभा नटकी। भूलीसुधि घटकीरी लोकलाज सटकीरी अटकीहिये में पहरानि पीरेपट की ८९॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥ साक्षात् दर्शन नायकको नायकाको॥

दो० चुनरीश्यामसतारनभ मुखशशिकीउनहारि॥
नेहदबावतनींदलौं निरखिनिशासीनारि ९०

यह साक्षात् दर्शन जैसे नायका देखी है तैसेही नायक सखीसों कहत है॥ सवैया॥ उन्नतपीन उरोजनको जुगु कोकनुकी छबि पावतुहै। मुख सोहत सोमु जुहै याहसी द्युति दीप कुमोद बढ़ावतु है॥ यह यामिनिसी गजगामिनि देखत नींद ज्यों नेह दबावतुहै९०॥दृष्टानुराग नायकको त्रिकाल अक्षर ३९गुरु ९ लघु३०॥

दो० सनिकँजालचखभखलगन उपज्योसुदिनसनेह॥
क्यों न नृपतिह्वै भोगवै लहिसुदेशसबदेह ९१

यह दृष्टानुराग है नायकाके नेत्र अंजनसहित देख नायकके अनुराग उपज्यो सो सखी नायकासों कहति है. नायका परकीया॥ कवित्त॥ देखी एक वनिता विचित्रवर वानिकसों जाकी ज्योतिहीसों जगमगि रह्यो गेहु है। विहँसि विहँसि मृदुबोलत सरस बानी बरसत अमी मानों बूंदनको मेहु है॥ कहै कविकृष्ण क्यों

न भूपतिहै भोगकरै रजधानी सकल सुदेश पाय देहुहै। नैन मीन लगत पै अंजन लसतुसनी ऐसे शुभयोग समै उपज्यो सनेहुहै ९१॥ दृष्टानुराग नायकको मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० मोहूसोंतजिमोहदृग चलेलागवहिगैल॥
छिनकुछायछबिगुरुडरी छलेछबीलेछैल ९२

यह दृष्टानुराग है नायकको देख नायका में अनुराग उपज्यो है सो नायका सखी सों कहतिहै नायका परकीया प्रौढ़ा॥ कवित्त॥ जायरीते मोहनी को मंत्र डारि दीनों उन रूपकी मिठाई तायरीते कलमले हैं। ज्यों ज्यों हठिकरि रोकरही ओट अंचलमें त्यों त्यों अतिबलकरि उतहीकोहले हैं॥ मोहूसों जहूतो नतो पल कमें करिहातो छोड़ि सबनातो वाकी गैललाग चले हैं। नन्दको कुवँर आलीबीस बिसु ठगुहैरी देखतही देखि मेरे दोऊ नैन छले हैं ९२॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० फेरिकछूकरिपौरितैं फिरचितईमुसकाय॥
आईजामनिलैनजिय नेहेगईजमाय ९३

यह नायका परकीया जो चेष्टा याकी देखी है सो नायक सखी सों कहत है॥ कवित्त॥ केसरि बरन सुवरनहू बरनजीतो बरनी न जाति अवरन वानवैगई। कहत बिहारी सुन सरस पियूषमीठी मति बैनरनि चितैगई॥ भौंहनि चढ़ाई चाई मृदुमुसकाय नेकु चंचल चलायचख चेरो चितैकैगई। लीने करबेली अलबेली सो अकेली बिथ जा वनकों आई जिय जावन सो दैगई ९३॥ वानर अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० चितवनि भोरेभायकी गोरेमुंहमुसकानि॥
लागनिलटकीअलिगरेचितखटकतनितआनि ९४

यह नायकाकी चेष्टा नायका सखी सों कहति है पूर्वानुराग होत है॥ कवित्त॥ भूलत न क्योंहू वृषभानुतनयाकी वानि वह अंगिरान अंगुरिन चटकायकैं। वह गोरे वदुरारे वदनकी मुसकानि वह चहचही चितवनि भोरे भायकैं॥ घूंघट करनि करकमल उसारि वह लटकि मिलनि सजनीसों लपटायकैं। ऐसी भांति जबते मैं निरखी है तबहींते पलपल रांफ खटकत चितआयकैं ९४॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० इती भीरहूभेदिकै कितहूकै इत आय ॥
फिरैडीठजुरदीठसों सबकीदीठबचाय ९५

यह नायकाके चितैवेकी चतुराई सखी सखीसों कहतिहै। नायकहू सखी सखी सों कहै तो होय नायका परकीया ॥ सवैया ॥ बैठी सखीन की साभे सभा सबही के सुनैनन माहिं बसें। पूछेते बात बनाय कहै मनकी मनके सबदास हसें ॥ खेलतहैं इत खेल उतै पिय चित्र खिलावत यों बिलसें। कोउ जानै नहीं दृग दौरि करै कितहू पिय आनन छूवै निकसैं ९५ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० गड़ीकुटुम की भीर में रही बैठि दै पीठि ॥
तऊपलकपरिजातुइत सजलहसौंहींदीठि९६

यह नायकाके सनेहकी निकाई अरु चितैवेकी चतुराई नायकको कहति है नायक परकीया सवैया ॥ प्यारी प्रवीण सनेह सनी नखते शिखलौं सुखकी निधि स्योंहीं । कैसेहु भी बरते न टरै जुचुभी चितचाहनि नेह निचोहीं ॥ बैठी वधू गुरुनारिन में जऊ नारिनवाय खरी सकुचोहीं। लाजपगी पलएक तऊ परिजात इतै वहदीठि हँसोहीं ९६ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नहिंनचाइचितवतिदृगनि नहिंबोलतमुसकाय ॥
ज्योंज्योंरुखरूखोकरै त्योंत्योंचितचिकनाय ९७

यह नायकाकी चेष्टा नायक सखीसों कहत है कि यह रुखाई मेरे चित्त को चिकनावतु है ॥ कवित्त ॥ जोरत न लोचन नचाइ नेहचाई भरे मृदु मुसकानि कौनभाव दरशातहैं। बोलत न कबहूं मनमोहन मधुरबैन भोंरति न भृकुटी मरोरत न गातहै ॥ कहैं कविकृष्ण वाकी गरबीलीबानि कछू सहज बशीकर को मंत्र जान्यो जातहै। ज्योंही ज्यों रहत प्यारीराधा रूखरूखे करि त्योंहीं त्यों खरोई खरो चित्त चिकनातुहै ९७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० चितई ललचौहैं चखन डटघूंघट पटमांह ॥
छलसोंचलीछुवायकै छिनकछबीलीछांह ९८

यह नायका परकीया है चेष्टा करिगई है सो नायक सखीसों कहत हैं ॥ कवित्त ॥ पूरण सुधानिधिसों वदन दिखाय फिर घूंघटकी ओट कीनी कनुक ल-

जायकै॥ घूंघटके पटमें ह्वै निरखि निशंक चितवनि ललचोहीं चाह चीकनों जतायकैं॥ कहै कविकृष्ण मृदुमुसकि अलीकी ओर चली काहूछल सों छबीली छ-वाह छायकैं। हाहा कहिकोही जाहि ए री छविसोहीं वह मोहीते न टरत रही जु रीझिजायकैं ९८॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो॰ त्रिबलीनाभिदिखायकरि शिरढकिसकुचसमाहि॥
गलीअलीकी ओटकै चली भली बिधिचाय ९९

नायका परकीया की चेष्टा देखी है सो नायक सखी सों कहत हैं॥ कवित्त॥ भोरी वैस इंदुमुखी साँकरी गली में मिलि सुंदर गोविंद को अचानक ही आयकैं। कालिदास जरीजेब अंगनि जवाहिरकी बाहिरह्वै फैली चांदनीसी छवि छायकै॥ नेरोगयो श्यामसोई विहंसि बिलोकी वाम हेरयो तिरछौंहैं नारि नैसुकनवा-यकैं। गोरे तनु चोरे चित जोरेदृग मोरे मुख थोरे बीच कोरे लागिचली मुसकायकैं ९९ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो॰ डगकुडगतिसीछ्वैचलीठुकचितचलीनिहारि॥
लियेजासु चितचोरटी इहैगोरटी नारि १००

यह नायका की चेष्टा नायक सखीसों कहत है॥ सवैया॥ भानुसुता जल न्हान हीं जात सुजानु सखीन में आनँदबाढ़ी। पीछेते आय सुनाय कछू कहिकै बतियां छतियां करिगाढ़ी॥ यों पलकै पलकैं चितई सुचितो ढिग न्यार रही फिर ठाढ़ी १००॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो॰ मोहऊंचीआंचरुउलटि मोरिमोरिमुंहमोरि॥
नीठिनीठिभीतरगई डीठिडीठिसोंजोरि १०१

यह नायका की क्रिया जो देखीहै सो नायकके चित्तमें बसी है बारबार सखी सों कहत है नायका परकीया॥ कवित्त॥ रूप की अपार राधा ठाढ़ी निज सद्वार जाकी छवि पर रति वारिये करोरिकै। मोहिदेखि नेकु लजाय कै दृढ़ाय भौंह बा-जी चितवनि मांझ लीनो चित चोरिकै॥ मोरिमोरे मोंह जमुहात अंगरानी पुनि आलस वलित नैन बहुरि ढोरिकै। नीठिनीठि गई भौन भीतर सरोजमुखी डीठिसों मिलाय डीठि नीके नेहजोरिकै १०१॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३०॥

दो॰ ऐंचतसोंचितवनिचितै भईओटअलसाय॥

फिरिउभकानिकोमृगनयनदृगनलगानियांलाय १०२

यह नायका की चितवन नायकके चित्तमें बसी है सो नायक सखी सों कहत है वैसेही फिरि चितवै यह अभिलाप ॥ कवित्त ॥ खिरकी ढुवारि नवनागरि निहारि इत ठाढ़ो वनवारी मनमथ छवि छायकै। विहंसि विलोकि शशिवदनी लजायकै सुऐंचतसी मनुभई ओट अलसाय कै ॥ लगनलगाई चितलगई चुरायकै विहारीलाल रह्यो ठगकीसी मूरिखायके। उत चितवन सब काज विसरायकै सु फिर अवलोकिवेकी आश उरलायकै १०२॥करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० वेठाढ़ेउमदाहउतजलनबुझैबड़वागि ॥
जाहीसोंलाग्योहियोताहीकेहियलागि १०३

यह नायका परकीयाकी मकाशचेष्टा है नायक को देखिकै सखी को आलिंगन करत है सो सखी प्रगटकहति है॥ कवित्त ॥ मेरोमुह चूमे तेरी पूजी साध चूमिवे की चोटें औस अनुकथोंसि रनप्यास डाटेहैं। छोटे कर मेरे कहा छुवावति छवीलीछानी छुवबो जाके छुवायवे को अभिलापबाढ़ेहैं। खेलन जो आयेही तौं खेलौ जैसे खेलियतु कैसे राय कीसौं ते ये कौन खेन काढ़े हैं। फूलफूल भेंटति हैं मोहिकहा मेरीभटू भेंटैकिन जायमेंजु भेटवे को ठाढ़े हैं १०३, मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० देख्योअनदेख्योकियो अँगअँगसबैदिखाय ॥
पैठतिसीतनमेंसकुचि बैठीचितैलजाय १०४

यह नायका परकीया को चितैकै लाजकरिबो देखो सो नायक सखीसों कहत है॥ कवित्त ॥ सोहत स्वरूप सनी बैठीही छवीली राधा होहूं तहां निकस्यो अचानकही आयकै। मेरीओर देख उन देखो करि मुसकानि अंग अंग सकल सुसुन्दर दिखायकै ॥ पैठतसी तनमें सकुचात न रोचतसी चितवन वाह बैठी सिमट लजाय कै। वह मुसकान चितवन सकुचनि क्योंहूं टरत न रही मेरे हियमें डरायकै १०४॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० चिलकचिकनईचटकिसों लफतिसटकलौंआय ॥
नारिसलोनीसांवरी नागिनिलौंडसिजाय १०५

यह नायका की सांवरी सूरति देखि आसक्तभयो सो सखीसों कहत है॥ क-

बित ॥ चिलकति चारु चिकनाई की चटक भरी चलति फलति जैसे लग चलकति है। सांवरी सलोनी अतिलोनी अजौं होनी बैस शोभा सनीसी समनि सहत लसति है ॥ कुटिल सुभाई चितवनि प्रेम विषभरी नागिनि ज्यों यह ब्रजनागरि बसति है । मनको डसति अरु तनको लहरिआवै लागत न यंत्र मंत्र अद्भुत गति है १०५ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० मैंहौंजान्योंलोयननु जुरतबाढिहैजोति ॥
कोहौंजानतुडीठिको डीठिकिरकटीहोति १०६

यह नायका अपने नेत्रन को आसक्त सखीसों कहति है अरु यह प्रगट करति है कि जबते वे आंखदेखी तबते और कछू सूझत नाहीं ॥ कवित्त ॥ जादिनाते आलीमैं कही कि मनमोहनके लोचन सलोने देखे अतिहित वाढ़ि है। तादिनाते मैंहूं यह जानी चारि नैनभये ज्योतिकी प्रकाश कछू अधिकाई चाढ़ि है ॥ जोरतही नैन विथा तनमें बगरिगई मदनहुताशन बरतजाढ़ि जाढ़िहै । कौन यह जानतो डीठिही की डीठिबीर होत किरकटी कोऊ सकत न काढ़ि है १०६ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० त्योंत्योंप्यासेहीरहत ज्योंज्योंपियतअघाय ॥
सुगनसलोनेरूपको जनचषतृषाबुझाय १०७

यह नायका के नेत्रलगे हैं सो सखी सों कहत है ॥ कवित्त ॥ हरिमुखचंद त्यों चकोर है रहति जानि लोचन कमलगत भौंरकी गहत हैं। देखतहू देखतरहत दिखसाध लागी होत अनमेषयों बिशेष उमगतहैं ॥ टोने कछू प्राणप्यारेको सलोनो रूप ताते नेक न बुझात तृषा कल न लहतहैं। तृप्त न होत क्योंहू माईरी नयन मेरे पियत अघाय त्यों त्यों प्यासेई रहत हैं १०७॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० अलियनलोयनशरनको खरोबिषयसंचार ॥
लगेलगायेएकसे दोउनकरतसुमार १०८

यह अपने नेत्रकी अवस्था सखीसों कहत है अथवा नायककहै ॥ कवित्त ॥ शरजाके लागे ताहि सुधि न रहत कछू जो हनत ताके उर रंचक बियान हैं। तिनतें अधिक कुसुमायुधके पांचों बान जिनके लगे ते टरैं मुनिन के ध्यान हैं ॥ कृष्ण प्राणप्यारे की दुहाई जियजानी अली सबहीतें बिषम बिशेष नैन

वानहैं। दुहुन बिकलकरैं जतन लगैं न आने दुहूंभांतिलगेहू लगायेहू समान हैं १०८॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० दृगनिलगतबेधतहियहि बिकलकरतअँगआन ॥
ये तेरे सबते बिषम ईछन तीछन बान १०९

यह नायका के नेत्र देखि नायकको बिकलताई भई सो सखी नायकसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ भौंह कमान बिनाजिहतैं छुटिटेढ़ेचलैं दुहूंओर अनेरे। नैनन आनि अनूक लगे हिय वेधत क्योंहू फिरैंनहिं फेरे ॥ और सबै अँग व्याकुल है सरसातबिथा प्रहलात घनेरे। रीतिगहैं सबते बिषमैं बिषमै शर ईछन तीछन तेरे १०९ ॥ मद कल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

सो० कोड़ाआंसूबूंद कसिसांकरबरनीसजल ॥
कीनेंबदननिमूंद दृगमलंगडारेरहत ११०

यह नायका देख नायक के नेत्र बिवश भयेहैं आंसूपरत हैं मूंदे रहत हैं सो सखीसों सखीकहति है ॥ सवैया ॥ तेजबनें बृषभानुसुता हरिके दृगनेक निहार हरे हैं। वे तबतें न हलें न चलें रहे वाहि चितौनकी चाह भरे हैं ॥ कोड़ाकिये अँसुवानकी बूँद जंजीरबड़ी बरुनीजकरे हैं। नेकु अबैं उनकी सुधिलेहु मलंगमनों मुंहमूंदपरे हैं ॥ पुनः कवित्त ॥ तपै बिरहानल में पलकउठाये भुजा ध्यान लीन मननिशिबासर बिहात हैं। डोरे लाल सजीसाज असुव फटकमाल कोये सोये बसन भगी हैं दरशातहैं ॥ आठौ यामजागैं अँगबिशद बिभूतिभरे बोलैं न मुख दुखसहे शीतबात हैं ॥ तेरे मितसके वे योगी हीन हेतुसधे योगी युगलोचन बियोगीके लखात हैं ११० ॥ शार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६ ॥

दो० कहतसबैकबिकमलसे मोमतनैनबखान ॥
नतरुकुकतइननिपलगतउपजतबिरहकृशान १११

यह नेत्र लगनि है आंखलगते बिरहरूपी आगिहोंत है यह बचन नायक कहे तो बने ॥ कवित्त ॥ बरनि बरनि दृग कहत सकल कवि कमल कुरंगमीन खंजन समान हैं। कहै कबिकृष्ण रचिरचि चतुराननने लोचन ये पाहनबनाये मेरे जान हैं ॥ कमलसों कमललगाय देखेकैयो बेर एकआंक क्योंहू उपजु न कृशान हैं। लागतही तिय नैन तबहीं उपजिउठें लगनि अगनि याते प्रकट प्रमान हैं १११ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० सबहीत्योंसमुहातिछिनुनचलतसबनदैपीठि॥
वाहीत्योंठहरातयहविकलनुमालौंडीठि ११२

यह नायका लक्षिताहै सखी नायकसों कहति है सखीको वचन सखीहूसों बनै॥ कवित्त॥ लालमनमोहन की छविपर तूतो बलि रीभि रहो मोहिं वह रावतिहै भोरी ज्यों। प्रीति उर अन्तरकी प्रकट विलोकि मति सोइकिये कैसे निबहत चोरी चोरी ज्यों॥ सब त्यों लखत मिले काहूसों न तेरी डीठि पीठि दै चलति पुनि सबही की ओरी ज्यों। इतउत हेरिचित चोरहीकी ओर आई रहत है ठहराय मंत्रकी कटोरी ज्यों ११२॥ करभ अक्षर ३१ गुरु१७ लघु १४॥

दो० ढरेढारतेहीढरति दूजेढारढरैन॥
क्योंहोंआननआनसों नैनालागतनैन ११३

यह नायक अपने नेत्रनकी आसक्ति कहतु है अरु नायका के भ्रमहै कि नायक और सों आसक्त है सो नायक नायका को भ्रम दूर करत है। जो नायका सों कहे तो उराहनोहू सम्भव है॥ सवैया॥ और ते बानपरी सुपरी न टरै वह कोटि उपाय कियेहूं। कृष्णकहै जिहिरीभि रचे तितते न लचै न कहूं लचेहूं। त्योंहीढरे जिहढार ढरे नहिं दूसरे ढारढरे सपनेहू। आनकिये कहूं आनन आन सों नैन हगनेक न लागत केहूं ११३॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० हरिछबिजलजबतेंपरेतबतेंछिनबिछुरैन॥
भरतढरतबूड़ततिरतरहतघरीलौंनैन ११४

यह नायका अपने नेत्रनकी आसक्ति सखी सों कहतिहै॥ कवित्त॥ आजु निरख्यो मैं ब्रजराज को कुँवर कान्ह जाके अंग अंग आली मनही हरतु है। कृष्णप्राणप्यारे की दुहाई वा निकाई देखे कोरि रतिपति अति लाजनि मरतुहै॥ ताकी शोभा सलिलमें जबते नयनपरे तबते घरीलों छिनहू न बिछुरतु है॥ ऐसे भये रचबही करत अनेकभाइ भरतढरत पुनि बूड़त तिरतुहै ११४॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० ललनतुम्हारेरूपकीकहौरीतियहकौन॥
जासोंलागतपलकपलुलागतपलकपलौंन ११५

यह नायका की अवस्था सखी नायकसों कहति है कि जबते तुम देखो हो तबके वाके पलकहू नाहिंलागत नायकाहू नायकसों कहै तो संभव है॥ स-

वैया ॥ वारक देखैसुध्यौ न रहै दिखसाधलगैं कुलकानिभगैं । मोहनी रीति कछू मनमोहन रावरे रूपको यों उमगैं ॥ कौनठगौरी लईकितकीहू रसानों बशीकर मंत्रपगैं । जाकी कहूं पलएकलगे पलताकी पलौं पलकैं न लगैं ११५ । मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० हैहियरहतहईछईनईजुगतजगजोय ॥
डीठिहिडीठिलगेदईदेहदूबरीहोय ११६

यह नायका के नेत्र नायक को देखके लगे अरु देहदूबरी होति है। सो नायका सखी सों कहति है सखी सखीहू सों कहै तो बनै अद्भुतहू है ॥ सवैया ॥ देखत देखतहू न लहै कल प्रेम मरोरि उठै अति भारी । देखेबिना न सोहाय कछू पुनहाररटे अतिहोत दुखारी ॥ व्याकुल है अकुलाय महा मुरझाय रहै निशिनींद बिसारी । नैनलगे तन दूबरो होय अनोखी सनेह की रीति निहारी ११६ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० देखतकछुकौतुकइतैदेखौनेकनिहारि ॥
कबकीइकटकडटिरहीटटियांअँगुरिनफारि ११७

यह नायका कहति है नायका को देखति है सो सखी नायकके चाव बतावत है । सखी को बचन नायक सों प्रीति करायबो प्रयोजन ॥ कवित्त ॥ मैनहूंते ऐन मनमोहन तिहारी छबि नैनन में खुभी ब्रजबाल रिझवारिकैं । बगरको बाग सागुननँदको तिरासात तैं निरखिसकै न प्यारी बदन उघारिकैं ॥ बिनदेखे कल न परत याते देखिबेको करचो है उपाउ देखौं इतधौं निहारिकैं । कबकी निमेष भूलि लोचन लगायइत उठिरही टाटीकर पल्लव सों फारिकैं ११७ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० इनअँखियांदुखियानकोसुखहीसिरज्योनाहिं ॥
देखबनैनदेखिबोविनदेखेअकुलाहिं ११८

यह अपने नेत्रन की लगनि नायका सखी सों कहति है प्रौढ़ा परकीया ॥ कवित्त ॥ आपहीतें लागें येतौ कहेकाहू के न लागें रैनदिन जागे हैं वियोग आगिधखियां । रूप माधुरी को ज्योंज्यों पीवैं त्योंत्यों भूखी रहैं होहिं न अदूखी ये विदूखी सदा लखियां ॥ लपट निपट पट संपुट न रोकी रहैं अकुलाय दहैं जाय मधुरी समधियां । चैन है न आठोयाम इनहीं को कृपाराम सुविहायो तनु तामें

दुखिहाई आंखयां ११८ ॥ सेनक अक्षर २९ गुरु १९ लघु १९ ॥

दो० चकीजकीसीह्वैरहीबूझेबोलतनीठि ॥
कहूंदीठलागीलगीकैकाहूकीदीठि ११९

यह नायका लक्षिता है सखी नायकसों कहति है सखीहू सों कहति है ॥ सवैया ॥ आजचकीसी जकीसी कहा कछु अंग सम्हार हिराइसी हेरी । बूझेहूं नीठकहै मुखवैन हलै न चलै जनु चित्रनकेरी । मैरीलखे यह तेरी नईगति मोमति शोच समूहन घेरी । दीठिलगी किधौं काहूकी तोहिं कि दीठिलगी कहूं काहूसों तेरी ११९ ॥ मराल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० नेहननैननकोकछूउपजीबड़ीबलाय ॥
नीरभरेनितप्रतिरहैंतऊनप्यासबुझाय १२०

यह नायका अथवा नायक अपने नेत्रनकी आसक्ति सखीसों कहेहै सखी सखीसों इनकी व्यवस्थाकहै तऊ संभवहै ॥ सवैया ॥ एकपलौनलगैं पलकैं ललकैं लखिवेकिछिलागी चटी । नीरभरी निशिद्योसरहैं न मिटैं तऊ भरिवृषा उपटी ॥ आठहूयाम तपैं तरफैं उपचारहूसों न घटै न घटी । यह रीति लगी नहीं आंखिन को कोऊ पावक व्याधि भलैमगटी १२० ॥ मरालअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० कैवाआवतयहगलीरहैंचलायचलैन ॥
दरशनकीसाधैंरहैंसूधेहोयँननैन १२१

यह नायका अपने नेत्रनकी दशा सखीसों कहति है यहनायका मध्या परकीया है ॥ सवैया ॥ कान्हअली बहुबेरगलीमहँ आवत चारु सिंगार कियेहूं । देखिवेको तबहीं तबहीं ललचाइ रहौं न चलाय चलेहूं ॥ लाज अचानक आयगई पछितात यहै अपने जियमेंहूं । सो हैं चितैवेकी साधरहै बर सूधो विलोचन होत न केहूं ॥ १२१ ॥ मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० साजेमोहनमोहकोमोहींकरतकुचैन ॥
कहाकरौंउलटेपरैंटोनेलोनेनैन १२२

यह नायका मौढ़ा परकीया नायक को देख नेत्र याके अकुलात हैं सो सखी सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ बूझतहौं सतभाय सखी यहसीख इन्हैं सिखई कहु कौने । मैं सजे मोहन मोहिवेको बहुअञ्जन साज बनाय सलोने । देखतहीं

ललचाय रहे अब ये अपने सपनेहु न होने। मोहींको दैनलगे दुखनैन ये ज्यों उलटे परिजात हैं टोने १२२॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो॰ मोहूंसोंतजिमोहदृगचलेलागिउहिगैल॥
छिनकछ्वायछविगुरुडरीछलेछबीलेछैल १२३

यह नायका अपने नैनन की आसक्ति सखी सों कहति है॥ कवित्त॥ जा घरीते मोहनी को मंत्र डारदीनों उन रूपकी मिठाई तावरी ते कलमले हैं। केतो हठकरि रोकिहारी ओट अबलकी त्यों त्यों अति बलकरि उनही को हले हैं॥ मोहूं सों जुहोतो नातो पलक मैं करिहोतो छोड़ि सब तातो वाकी गैललागि चले हैं। नन्द को कुँवर आली बीस बिस्वे ठगुहैरी देखनही देख मेरेदोऊ नैन छले हैं॥ १२३॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो॰ लोभलगेहरिरूपकेकरीसाटजुरिजाय॥
हौंइनबेचीबीचहीलोयनबड़ीबलाय १२४

यह नायका अपने नेत्रन की आसक्ति सखी सों कहति है॥ सवैया॥ नन्दकिशोर की मोहनी मूरति देखतहीं अति मोमन भाई। तौलगि लोभलगे दृग आगेई जायमिले मिलिसाद मिलाई॥ आपनौ स्वारथ साध्यौ सबै विधि होई न बीचही बीचरी माई। कैसे करों न कछू बनिआवत नैननके मतमें तो ठगाई १२४॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु १६॥

दो॰ यशअपयशदेखतनहींदेखतश्यामलगात॥
कहाकरोंलालचभरेचपलनैनचलिजात १२५

यह नायका को सखी शिक्षा देत है तासों अपने नेत्रन की आसक्ति कहति है सवैया॥ सासु रिसाति भखै ननँदी जनि तू सिखवै सखि सीख के बैना। है ब्रजवास बवायभई चहुंओर चले उपहास की सैना। देखत सुन्दर सांवरी मूरति लोक अलोककी लीक लखैना। कैसी करों हठके न रहैं चलिजात तऊ लचिलालची नैना॥ १२५॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो॰ नैनानेकनमानहीं कितोकह्योसमझाय॥
तनमनहारेहूंहँसैं तिनसोंकहाबसाय १२६

यह नायका अपने नेत्रन की आसक्ति कहतिहै॥ सवैया॥ सहिये जगके उपहास निते रहिये गुरु लोगन मांझगसें। डर आनि यहै अपने उर हों समझाय

रहीं नाहिं नेकवसे॥ अरु रश्वक मेरो कह्यो न करैं तनहूं मनुहारें तऊ हुलसें। यह नेम गह्यो सजनी इन नैननु पै हरिहेर हँसैई हँसैं॥ १२६॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० सकेसताइनतमबिरहनिशिदिनसरससनेह॥
रहैवहैलागीदृगनिदीपशिखासीदेह १२७

यह नायका को ध्यानहूं करत है तऊ बिरह घटत नाहिं सो नायक सखी सों कहत है॥ सवैया॥ वा मृगलोचनि के बिछुरे जु भई गति सो नहिं जात उचारी। शुद्ध दशा परिपूरण नेह निवातथली उर अन्तर धारी॥ यद्यपि दीपशिखा सम नैनन लागिरहै तनकी द्युति प्यारी। तथापि सूझै हिये न कछू भरिपूर रह्यो बिरहातम भारी १२७॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० लाजलगामनमानहींनैनामोबशनाहिं॥
येमुहँजोरतुरंगलौंऐंचतहूचलिजाहिं १२८

यह नायका सखी सों अपनी आसक्ति नैनन की अवस्था कहति है॥ सवैया॥ देखत वा नटनागरिकी छबि फांदिपरे हटके न रहाहीं। लोचनलोल तुरी मुहँजोर सुलाज लगाम को मानत नाहीं॥ ऐंचतहीं अपने इतको बलिये बलकैं उतही चलिजाहीं। कैसी करों नहिं मो बश ये कुल कान के चाबुक तें न डराहीं १२८॥ अथ चित्तजगनि मदकल अक्षर २५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० फिरफिरचितउतहींरहतटुटीलाजकीलाव॥
अंगअंगसबझोरमेंभयोभौंरकीनाव १२९

यह नायका के अङ्गकी छबि पै रीझी है सो अपने चित्तकी आसक्ति सखीसों कहत है॥ कवित्त॥ यौवन महानद में रूप को सलिल भरयो तरल तरङ्ग हाव भावन को भाव है। अङ्गअङ्ग छबिकी उमङ्ग झकझोरी भौंर चपलकटाक्ष तहां फस्यो चित नाव है॥ चलिपै न सकत भ्रमत रहै वाहीं ठौर तरकि तनूका जिमि टूटी लाज लाव है॥ लागत न क्योंहीं कुलकानि की बिशाल बली धीरज प्रबल पतिवारी कौन दाव है १२९॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३०॥

दो० इततेउततउततेइतेंछिनन्नकहूंठहराति॥
जकरनपरचकरीभईफिरिफिरिआवतजाति १३०

यह नायका मध्या परकीया है सो याकी व्यवस्था सखी सखीसों कहति

है जो सखी नायक सों कहै तो संभव है ॥ सवैया ॥ जबते अटकी नवनागर सों तबते न कहूं मन लावत है । ठहरात नहीं छिन एककहूं निशि वासर ज्यों वहरावत है ॥ कबहूं इतते उत धावत है कबहूं उतते इत आवत है । चकरी जिमि आवत जातबधू पलकौं न कहूं कलपावत है १३० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कोजानेह्वैहैकहाव्रजउपजीअतिआगि ॥
मनुलागैननुनालगैचलेनमगलगिलागि १३१

यह नायक अथवा नायका के दृष्टानुरागते विरहभयो है सो विरह की आग सों मन व्याकुल है सो सखी सों कहत है ॥ सवैया ॥ दीसै न धूम बरै विन ईंधन उन्नहै प्रगटे न शिखाई । नैसक नैननलागतहीं मनु आगिलगे सब अंगन दाहै ॥ लोचन नीरढरै न बुझै उपजी ब्रजमें कोउ आग महा है । देखहूं दीठ परै न कछू अब जानेधौं आगे को ह्वै है कहा है १३१ ॥ वानर अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० डरनटरैनींदनपरैहरैनकालविपाकु ॥
छिनकछाकुउछकैनफिरखरोविषमछविछाकु १३२

यह नेत्र लगनि है सो नायका अथवा नायक सखी सों कहै है कि छवि को छकु छकोखरो विषम है सो विषमता वर्णन करै है ॥ कवित्त ॥ सुधि कौन करै नींद नैसकोन परै महाभय ते न टरै मुख निकरै न वाकु है । कहैं कविकृष्ण क्यों हूं एक बेर छकै सोतो उछकै न नेको न समैको परिपाकु है ॥ सीरोलागे बरेनिशिदिन तरफरै पलकनि गतिहरै धरै काहूको न भाकुहै । और मतवारे ते तो मेरे मतवारे यह सवहीं ते विकट विषम छवि छाकु है १३२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० उड़ीगुड़ीलखिललनकी अँगनाअंगनमांह ।
बौरीलोंदौरीफिरतछुवतिछबीलीछांह १३३

यह नायका परकीया प्रौढ़ा है सो नायक की चंगकी छांहछुयेते मिलेही को सुख मानतु है सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ नन्दलला नवनागरि पै निजरूप दिखाइ ठगोरीसी नाई । बाहरजात बनै गृहते न, बिलोकिवेको अतिही अकुलाई ॥ प्यारे की चंग इतेमें उड़ी लखिमोद भरी निज आंगन आई । होत

गुड़ीकी जितेजित छांह तितैतित छूवेको डोलत धाई १३३ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो॰ चलतघेरघरघरतऊघरीनघरठहराय ॥
समझउहींघरकोचलैभूलवहीघरजाय १३४

यह नायका प्रौढ़ा परकीया है जहां चित्त लाग्योहै तहांजात है सखी सखीसों कहति है॥ कवित्त॥ निधरक भई आनि गावत है नंदघर और ठौर कहूंठोहैहून अहटाति है। पौरिपाछे पिछवारे देहरी उसारे द्वारे आंगन अटारी इहीवीच मँडराति है॥ हरि रसराती सिख नेकहू न होती होति प्रेम रस माती न गनति दिनराति है। जबजब आवति है तबकछु भूलिजात भूल्यो लेन आवति है फेरि भूलिजाति है १३४॥ मरकट अक्षर ३८ गुरु १७ लघु २१ ॥

दो॰ ह्याँ ते ह्वाँ ह्वाँ ते यहां नेको धरत न धीर॥
निशिदिनडाढ़ीसीफिरतबाढ़ीगाढ़ीपीर १३५

यह नायका के चित्त में लगन लगी है सो याको मनकहू कल पावतु नाहीं याकी दशा सखी सखी सों कहति है,॥ कवित्त॥ शोभा मनमोहन की परम रसालचित्त चुभि ब्रजवालकैन छिन विसरेकहूं। वरसत जल तरसत दृग देखिवो को कहो ऐसी लगनि दुसयेहू दुरेकहूं॥ घरते वगर आवे वगर ते घर धावे फिरै ज्यों विकल पल कल न लहै कहूं। वाढ़ो मनमथवीर नैस को धरै न धीर डाढ़ीसी फिरत ठाढ़ी छिनु न रहै कहूं १३५ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो॰ पलनचलैजकसीरहीथकसीरहीउसास॥
अबहोतनुरितयोंकहौंमनपठयोकिहिपास १३६

यह नायकाकी प्रीति लगीय लगी है सुरति वहीं जाय है सो याकी दशादेखि सखी कहति है॥ कवित्त॥ सांसन उसासति है वासकी सम्हारहै न ऐसी ह्वैकै कौनकैधौं हिय में हितैरही। कितुहैरी तेरी मनुरीतो सों लगत तन अन्नहीं तू सुध वुध कोहि क्यों चितैरही॥ चित्रकीसी लिखीडरी जकित अचेत भई पलकन लगत भूल चकित चितैरही। काहू हेरि हरीमति विसरी सबै सुरति हां तो तेरीयहगति देखि थकितैरही १३६॥ पयोधर अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३०॥

दो० ज्यों ज्यों आवतनिकटनिशि त्योंत्योंखरीउताल ॥
झमकिझमकिटहलैंकरै लगीरहचटैंबाल १३७

यह नायका मौढ़ा है सो सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ गौनोभये दिन केउ भये हियमें हरि हेतकी ज्योतिसीजागी। वासर ज्यों वहरावत नीठि विधीच सकैं रसमें अनुरागी ॥ आवते ज्यों ज्यों नजीक निशा तिय त्योंत्यों उछाह उमंगनि पागी। सत्वर काज करै घरके रवनी रतिकेलिके लाहके लागी १३७॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० भृकुटीमटकनिपातपट चलतलटकतीबाल ॥
चलचखचितवनचोरचितलियोबिहारीलाल १३८

यह नायका मौढ़ा है नायक की शोभा देखि मोहित भई है सो अपने चित्तकी वृत्ति सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ वनते निकसये वनमालगरें वनिता भृग वांगुरिमें दृगकीने। फेंटकसे कटि पीतपटी उपटी छवि सिंधु सुधारस भीने ॥ कै नटनागर चेटक सों चलचाहनिही चितुगोसंग लीने ॥ लीनों सोकौन किशोर कन्हा मुरली कर मोरपखा शिरदीने १३८॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० छुटननपैयतुबसिछिनकु नेहनगरयहचाल ॥
मास्योफिरफिरमारिये खूनीफिरैखुस्याल १३९

यह लगन को वर्णनहै ताके जाके लगति है ताको अधिक दुखहै जाकी लगति है ताके कछूमनहूंमें नाहीं आवत सो नायका अवस्था सखीसों कहतिहै सखी सखीहू सों कहै तोजनै ॥ कवित्त ॥ छिनवसें छूटिये न विन बसे वनपटी नेह नगरी में यह अटपटी रीतिहै। लीजतछोंड़ाय मनुरतन यतन नाहिं अतनुमहीप तहां अधिक अनीति है ॥ मारेही को मारियतु खुशीभये खूनी फिरैं जीतेहीकी हारि अरु हारेहीकी जीतिहै। सरवसु दीजे तऊ परवश परियतु जहां कछूलोकपरलोक की न भीतिहै १३९॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० क्योंबसियेक्योंनिवहिये नीतिनेहपुरनाहिं ॥
लगालगीलोयनकरैं नाहकमनबँधजाहिं १४०

यह लगन है नेत्रनकेलगे मन बंधतु है यह अद्भुत अनीति है सो नायका अथवा

नायक सखी सों कहैहै ॥ कवित्त ॥ पावक मचण्ड याते भागेहूंनछूटियतु दरिय-तु ज्यों ज्यों उपचार कीजियतुहै । मदलक जानु पै मगन चलत पैये चितत्रितु दीजे ताऊ हित भीजियतु है ॥ ऐसे भैमपुर कैसे वसिये निवाहिये क्यों देखें ये अनीति छिनुछिनु छीजियतु है ॥ लागनिकरत धाय मैन मैन मतवारे नाइक विचारो मनु वांधि लीजियतु है १४० ॥ चारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० झमकिचढ़तउतरतअटा नेकनथाकतदेह ॥
भईरहतनटकोवटा अटकीनागरिनेह १४१

यह नायका मौढ़ा नायक की शोभा देखि आसक्ति भई सो देखिबे को चढ़ति उतरति है सो याकी व्यवस्था सखी सखी सों कहति है ॥ कबित्त ॥ कान्हर की बनक विलोकिकै विकानी बाल तादिन ते देखिबे को यतन करतु है । सुरभी च-राय ब्रज आइबेकी बेर जानि सरवस होत गृहकाज विसरतु है ॥ सांक गुरुजन सांक है न ठाढ़ीरहे छिन इतु छिन उत याविधि ढरति है । नटकेवटा ज्यों नट-नागर के नेह पागी ऊंचे अटा झमकि चढ़ति उतरति है १४१ ॥ पयोधर अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० मैंतोसेकैवरकह्यो तूजिनइन्हैंपत्यात्र ॥
लगालगीकरलोयनन उरमेंलाईलाव १४२

यह लगन है नायका अथवा नायक अपने मन सों कहै है सखी सों कहिवो संभवित नाहीं ॥ कवित्त ॥ तोसों मैं कहीही केउ बेर समझाय इन नैनन के मतलागे भारीखता खायवो । तव तो न सिखमानी इनहीं की मति ठानी अब कहाहोत परवश पछतायवो ॥ लगालगी इनकीनी उरको लगाय दीनी लगनि अगनि ताके कहां भगिजायवो ॥ कीमत यतन सीरी त्यों त्यों होत दुख नेरो निशिदिन अंनत अनंग को सतायवो १४२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० सारीडारीनीलकी चोटअचूकचुकैन ॥
मोमनमृगकरबरगह्यो अहेअहेरीनैन १४३

यह नायका के नेत्रदेख नायकको मन हाथ रहतनाहीं सो सखी सों कहै तोहू बनै ॥ कवित्त ॥ जाइचढ़े यौवन के वनमें विहार करैं काहूके न रोंके रहैं विक्रम अकथके । भृकुटी कुटिलचाल अंजन असित्रवास तरलकटाक्ष गहैं आयुध सुहथके ॥

सारीनीली टाटीवोट आवत अचानकही करतअचूक चोट रहत नथथके । मोमन कुरंगको ये करलेत हाथके राधे तेरे नैन ये अहेरी मनमथ के १४३ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० जेतबहोतदिखादिखी भईअमीइकआंक ॥
गैतिरछीदीठनिअबै ह्वैवीछीकेडांक १४४

यह पूर्वानुराग जे चितवन संयोग में सुख दीन्हों ते वियोग में सुधिआयों सालतिहै सो सखी नायक । अथवा नायक सखीसों कहै है विरहकी दशा अवस्थान में सुमिरन कहिये ॥ सवैया ॥ रंगरली में भलीविधि सों बहुभांतिनके सुख देत हैं जेई । ते इनकुंज अग्रेप्रतिकूल विलोकहिये दुखसूल सलेई ॥ नेहके आदिरसीली चितौन हुती इकआंक अमीसमतेई । वीसाविस्वे विष शायकह्वै उरसालत वांकी विलोकनि वेई १४४ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० नेकोवहनिजुदोकरी हरषजुदीतुममाल ॥
उरतेबासछुट्योनहीं बासछुटेहूलाल १४५

यह पूर्वानुराग है नायका की प्रीति सखी नायकसों कहतिहै तौ तुमसों कहा कसनहीं ॥ सवैया ॥ जादिन याही अलीनकी देखत रीझि हिये हितु मानकैभारी । आपनेहीं ते उतारदई तुम फूलकीमाल बिशालविहारी ॥ तादिनते वह बारिभतारको माणहूते लगी अतिप्यारी । बासगई कुंभिलाइगई पै करी न तऊ उरते छिनुन्यारी १४५ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० खिनखिनमेंखटकतसुहिय खरीभीरमेंजात ॥
कहजुचलीबिनहीचितै ओठनहीमेंबात १४६

यह नायका परकीया है कहीं भीर में नायक देखो है सो बाने जो कियो कीनों सो इन देखी पै बात न सुनी सो सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ आज मिली ब्रजबाल अचानक मोमति वोके सनेह गई है । जाती हुती आति भीर में सुन्दरि मोतनु हेरि हियो उमही है ॥ लाजते नैन विलोकिसकी वन कीन तऊ रसरीति सहीहै । ओठनही में गई जु कछू कहि मैं न सुनी पछताओ यही है १४६ ॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० बनितनकोनिकसतलसतहँसतहँसतइतआय ॥
हगखंजनगहिलैगयोचितवनिचोपलगाय १४७

यह नायका प्रौढ़ाहै कैसी छबिसों श्रीकृष्ण देखतिहैं तैसेही अपने नेत्रन की लगनि सखीसों कहति है।। सवैया ।। आजकहो बनको इतहै चलि बालिकसों यशुदाको कन्हाई। मोर किरीट लसै मुरली लकुटी अरु पीतपटी छबिछाई ।। मोढिग आय भरयो रसभाय हरे मुसकाय मुरयो सुखदाई। कैथिकी चाहन चोपल गायकै लेगयो नैन में मोलिनिमाई १४७ ।।मदकल अक्षर ३५ गुरु१३ लघु २२।।

दो० जबजबवहसुधिकीजियतुतबहिंसबहिसुधिजाहिं ।। अँखियनअँखिलागीरहैंआंखौलागतनाहिं १४८

यह पूर्वानुराग नायका अथवा नायक सखी सों अपनी बात कहै है।।सवैया।। यह प्रीति की रीति अनोखी लखी कछु जानि न जात कहा गति है। चितचाहकी चोप चढ़ेयेरहै अरु प्रेमविथा उरपागति है ।। नितआंखिनसों वेई आंखिलगी रहैं आंखिन कैसेहू लागति हैं। जबहीं जब वे सुधकीजतहै तबहीं सबही सुधि भागति है १४८ ।। वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २० ।।

दो० जहांजहांठाढ़ोलख्यो श्यामसुभगशिरमौर ।। बिनहूंउनछिनुगहिरहित दृगनअजौंवहठौर १४९

यह पूर्वानुराग है जहां श्रीकृष्ण देखे हैं तेई ठौर श्रीकृष्ण की भावना करिकै नेत्रन को आग्रहन करतु है सो नायका सखी सों कहै है ।। कवित्त ।। केलि सुखसागर में झेलि रंगरली परिपूरन विविध करती मनोरथनु। तनमन बाढ़ो उमगि अनुरागु भागु आगतहो मथवा सखीको अनहूतेअनु ।। कृष्ण प्राणप्यारे की दुराई अतिछवि छायो जिन जिन कुंजनि मिलत होरी श्याम घनु। तेई तेईकुंज अबहीनहूं विलोकैं विनु माई गहि राखत घरीकलौं अजौं दृगनु १४९ ।। वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ।।

दो० सघनकुंजछायेसुखदसरसिजसुरभसमीर ।। मनहैजातअजौंवहै उहियमुनाकेतीर १५०

यह पूर्वानुराग है सो यमुना के तीर संयोग में जो चित्तकी वृत्ति होतही सो वही भावना करिवो सही होतिहै सो नायका सखीसों कहतिहै ।। कवित्त ।। सघन निकुञ्जछाये सुखरसुहाये अरु मंडित सरस गुंजपुंज मधुपन की । प्रफुलित मंजु अरविन्दनके वृन्द आवैं त्रिविध बयारिले सुगन्ध कुसुमनकी ।। लतिका ललित छविचलित लहलहाति जेहूती विहार भूमिनन्द के सुमनकी । कृष्ण प्राणप्यारे

की सों वेई यमुनाकेतीर अजहूं निरखि वेहगति होति मनकी १५० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १५ लघु २० ॥

दो० फिरिफिरिबूझतकहिकहाकह्योसांवरेगात ॥
कहाकरतदेखेकहाअलीचलीक्योंबात १५१

यह नायका अधिक आसक्त है सो सखीको वेरवेर वाहीकी बात बूझति है ॥ कवित्त ॥ कबहूंक आलीपर अंगिरायडारैं अंगुदिनवेहरावे क्योंहूं कलन पराति है। झतर सहेली लाय उनके संदेशो सुनि सुनिते मसिद्ध मनुयेसिये अरातहै ॥ हांहाकहि कैसेगई कैसी कैसी बातैंभई कहाहै लालन मनधीर न धरति है। एक वेरबूझि फिरि बूझि औरो बूझि फेरि फेरिफेरि वहै बात बूझिवो कहति है १५१ ॥ पयोधर अक्षर ३२ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मननधरतमेरो कह्यो तूआपनेसयान ॥
अहेपरनिपरप्रेमकेपरहथपारिनप्रान १५२

सखी नायका सों कहति है कि प्रीतिके प्रसङ्ग तें प्राणपराये हाथ पराति हैं सतमति करै तो यह प्रसन्न है कि सखी प्रीतिकरति मनै क्यों करतिहै सो मनौ-नाहिं करति प्रीतिदृढ़ावति है कि प्राण पराये हाथ पैरंगे जो तोहिं कहति है तो कर मानवती के प्रसन्न सखी नायका सों कहै तो येहू बनै कि प्रेमकी पराग में तू पर अरु प्राणजुहैं नायक ताहि परायेहाथ मतिपरै ॥ सवैया ॥ तू नहीं मानत मेरो कह्यो अपने मनमानसयानपुआरी। देखवेको ललचावति ज्यों कछु थोसनि तैं यह रोस निहारी ॥ नेहकहूं नँदनन्दन सों लगि जैहै तो फेरि न ह्वैहै रारी। बेचत प्राणनु क्यों परहाथ फँसै प्रति प्रेमफँदा ब्रजनारी १५२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० चितवतबचतनहरतहठिलालनदृगबरजोर ॥
सावधानकेबटपरायेजागतकेचोर १५३

यह नायक के नेत्रनपै आसक्त सो नायक के नेत्र याके मनको जोरावरी हरि हरिलेत हैं सो नायका सखीसों कहतिहै ॥ कवित्त ॥ राखत सलूक मिले मदन महीपतिसों सुतनु सरकि जात कानन की ओर हैं। चपरि हरति ब्रजबालनके मन धनु सरति मरोर भरे यौवन मरोर हैं ॥ जागतिहूं मुसै सावधान को बिवश करै चप-

लखितीन शरवेधतसजोर हैं। मोसों कहि आली ब्रजलाड़िले के लोलदृग ठग हैं कजाक हैं डकैत हैं कि चोर हैं १५३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० नावकशरसेलायकैं तिलकुतरुणिइततांकि ॥
पावकझरसीझमकिकै गईझरोखाझांकि १५४

सवैया ॥ साजे शृङ्गार भरीछबिभार हिये बिरहागिनि बारिगई है। चोपभरी कछु ओखे सों ओढ़र झरोखेहू नेक निहारिगई है ॥ पावक जु वालसी बालि विलोकिकै नावक तीरसे मारिगई है। झांकतबांक लखी जबते तबते सुधिमोहिं विसारिगई है १५४ ॥ मदकल अक्षर ३४ गुरु १२ लघु २२ ॥ नायककौ ध्यान नायका ॥

दो० कबकीध्यानलगीलखों यहघरलागिहैकाहि ॥
डरियतुभृंगीकीटलौं मतवहई ह्वैजाहि १५५

यह नायका नायकके ध्यानमें लीनह्वै रहीहै सो सखी सखीसों कहतिहै॥सवैया॥ डिबिलोकति हौं कबहीं यह पूरण प्रेमहिये धरिबो। पाहन की पुतरी ह्वै रही स थो उर अबलाको धरिबो ॥ ध्यानहिं ध्यानमें जो कबहूं यहहोय वही तौ कहाकरिबो। याको घरा अबलागिहै काहि कहागति है डियहै डरिबो १५५ ॥ चल ६ . ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० सरसतुपोंछतुलखिरहतु लगिकपोलकेध्यान ॥
करलैं यों पाटल बिमल प्यारीपठयेपान १५६

यह नायका की आसक्ति नायक सों अधिक है सो वाके हाथ के पान देखि जो चेष्टा करतु है सो सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ प्राण पियारे तिया पठये करहेतु हिये सरसें परसें। पाटल पानखरे सुथरे जिनकी छबि देखि हियो तरसें ॥ पोंछत हैं पटलै कबहूं कबहूं दरसें कबहूं परसें। ध्यानकपोलन को कबहूंकरि चुंब तयों रसकी बरसें १५६ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १७ लघु २१ ॥

दो० अधरधरतहरकेपरति ओठदीठिपटजोति ॥
हरितबांसकीबांसुरी इंद्रधनुषरँगहोति १५७

यह नायका मुरली बजावति देखि रीझी है सो वह शोभा भांति २ कर क-

हति है। सखी सखी सों कहतिहै॥सवैया॥ चलिदेखुरी वानकसी बनिकैव्रजराज को लाड़िलो आवत है। मुखचन्दकी चीर मरीचिनसों चलिनैन चकोर सिरावत है॥ जब दीठिको ओठनको पटको मुसकानको रंग मिलावतहै। तो बाँसुरी बाँस हरेकीलला सुरचापके रंगदिखावत है १५७॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२।२४॥

दो० कितीनगोकुलकुलवधू काहिनकाहिसिखदीन॥
कौनेतजीनकुलगली ह्वै मुरलीस्वरलीन १५८

यह मुरलीकी धुनिने रीझी सो सखी शिक्षादेतिहै तासों या मुरलीकी मोहनता कहति है॥ सवैया॥ कौनठगोरी भरीहरी आज बजाई है बांसुरिया रसभीनी। तान सुनी जिनहीं जितहीं तिनहीं तिन लाज विदाकर दीनी॥ घूमे खरीखरी नंद के द्वार नवीनी कहा अरु बालप्रवीनी। या व्रजमण्डलमें रसखान सुकौन भटू कुलटू नहिं कीनी १५८॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० लईसौंहसीसुननकी तजिमुरलीधुनिआन॥
कियेरहतदिनरातदिनकाननलागेकान १५९

यह मुरली सुनी है तबते और कछुसुनत नाहीं सो सखी सखीसों कहति है॥ सवैया॥ मोहनकी मुरलीकीअली जबते मधुरी धुनि कानपरी है। बालभई तबहीं ते लटू इहकाज समाज सबै बिसरी है॥ कानन कानन ओर किये रहैं कामखरी कलकानकरी है। बात सुहात न होत कछू सुनिबेकी मनोमनआनिकरी है १५९॥ पयोधर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० उरलीनेअतिचटपटी सुनिमुरलीधुनिधाय॥
हौंनिकसीहुलसीसुतोगोहुलसीउरलाय१६०

यह मुरली सुनि सबकाम छांड़ि हुलसी निकसी वह न देख्यो तब जु कछू अवस्थाभई सो सखीसों कहतिहै॥ सवैया॥ भौनके कोनमें बैठीहुतीहों कछू गृहकाज के साजपगीरी। वारककान्हकरी तबहीं मुरली धुनि प्रानन आनखगीरी॥ हौं लखिबेको उछाह भरी निकरी वह दीठपर्‌यो न ठगीरी। नैननको अरु काननको मन को तबते तलावेली लगीरी १६०॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० फूलेफदकतलैफरी पलकटाक्षकरवार॥
करतबचावतवियनयन पाइकघाइहजार १६१

यह दोनों के नेत्र आपसमें कटाक्षन की चोट कराति हैं औरन की दृष्टि बचावत हैं सो सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ अंगनु अङ्ग अनेकअंगनि सिखये नव यौवन नायक हैं। फांदत फूले निसांकगहे करवाल कटाक्ष सहायक हैं ॥ ओढेकों ढालकरी पलकैं ललकैं अति जोम सों लायक हैं। विपलोचन चोट बचावति हैं तिय नैन कि मैनके पायक हैं १६१ त्रिकलअक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० कहतनटतरीझतखिझतमिलतखिलतलजिजात॥ भरेभौनमेंकहत हैं नैननहींसों बात १६२

यह दोऊ भरे घरमें नेत्रनहीं में सब बात करत हैं सो सखी सखी सों कहति है सवैया ॥ जानतलालकी जानतलाल सखीहू कहूंनलखी अनखातें। नीचें है नारि निहारि प्रसिद्ध भौंमानु वसींठ दुहूंकी दिशातें ॥ चोरिहीं में चितचोरिबो जोहनि नैन निहोरिबोनेहकीघातें। रीझि रिसानि हँसी हठसों इम नैननहीं निबही सब बातें १६२ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० डीठिपरतबाँधीअटनि चढ़िआवतजातडरात ॥ इतेंउतेंचितदुहुनके नटलोंआवतजात १६३

यह दो उनके चित्त लगे हैं सुपरस्पर अपने अटापरते निशंक देखतहैं सो सखी सखीसों कहतिहै ॥ कवित्त ॥ नैनके झरोखे आनि डीठ न परत बांधि गाढ़े सुत जोरते तनाव कररांखे हैं । अनमिल्यो तनमिले इमिकरिभाषत है ऐसी मनमिले मिलिवेन अभिलाखे हैं ॥ नटकी अटकी कहूंनटकी कलाकत ताऊपर दौरिदौरि दोऊ रसचाखे हैं। बड़े बंस बीच रसनितनसों बांधिराखे चाढ़े उतरत तेतौ उतरत भाखे हैं १६३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० जुरेदुहुनकेदृगझमकि रुकेनझीनेचीर ॥ हलकीफौजहरौलज्यों परतगोलपरभीर १६४

यह दो उनके नेत्र घूंघटकी ओट पलकैं मिलगये हैं सो सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ बैठी अलीगण मैं नवनागरि आयौ तहांचलिप्यारो बिहारी । लालकी दीठि बचायबे को मुख घूंघट ओट करयो न निहारी ॥ नैनसों नैनउमंग मिले न रहैं पटओट कितो पचिहारी । रोकिसकै न हरौलकी फौज ज्यों गोलपै आनिपरै भरु भारी १६४ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० दूखोखरोसमीपकोलेतमानिमदमोद ॥
होतदुहुनकेदगनहीं बतरसहँसीविनोद १६५

यह दोऊ नेत्रनही में बातें करत हैं मिलिबे को सो सुख मानत हैं सो सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ प्रेमप्रभाव दुहूनके कैसेहू मोपै बनें न बखानत हैं । चारुकली चितचातुरी की रस भाइभरी अरु आनत हैं ॥ यद्यपि दूरखरे, उतऊंचे समीपहीको सुख मानत हैं १६५ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० उनहरकीहँसिकैइतैइनसोंपीमुसकाय ॥
नैनमिलेमनमिलगयेदोऊमिलवतगाय १६६

यह दोऊ गाय मिलवति मन मिलगये सो सखी सखीसों कहति है नायका परकीया ॥ कवित्त ॥ उनहँसिहांकिये यहां की है नईसीगाय मोपै न धरति कालिहकेते दुखदये हैं । इन मुसकाय कही भृकुटीनचाय ऐसी गाइहै हमारी हीलै और सो बनाये हैं ॥ कहैं कविकृष्ण मिले बैननिसों बैन अरु नैनन सों नैन रीझि रस बशभये हैं १६६ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० यदपिचवाइनचीकनीचलतिचहूंदिशिसैन ॥
तदपिनछांड़तदुहुनकेहँसीरसीलेनैन १६७

यह नायका परकीया है सो दोउन के नेत्र देखत है तब हँसतही है सो सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ नेहकी घातलगी जबते तबतें रसरीति रहै नहिंढांकी । देखतही उरमोद भरै उरकौन करै कुलकान कहांकी ॥ यद्यपि सैनचलायबसी उपहास समेत चलै चहुंघा की । तद्यपि छांड़तनैन दुहूंके रसीलीहसीर विलोकनि बाँकी १६७ ॥ करभअक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० झूठेजानिनसंग्रहे मनमुंहनिकसेबैन ॥
याहीतेमानोकिये बातनकोबिधिनैन १६८

यह दोऊ आपसही में बात करति है सो सखी सखीसों कहतिहै कविकी उक्तिहूहोय ॥ कवित्त ॥ इत ब्रजराज को कुंवर रसराशि उत बीन वृषभानुकी कुंवारि बरवानिकै । ठाढ़े हितवाढ़े आप अपने अटानिपै करत कटाक्ष मनमथ की कलानिकै ॥ वदन ते निकसे ते झूठेहोत मेरेजान बैननकी संग्रहहू करयो न यह जानिकै । परम प्रवीन दोऊ याहीते परसपर लोचननहीं में बतरात सुख मानिकै १६८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० चितवतजितवतहितहिये कियेतिरीछेनैन ॥
भीजेतनदोऊकँपत क्योंहूंजपनिवरैन १६९

यह दोऊ परस्पर आसक्त हैं सो जपकरत देखत हैं सखीसों सखी कहति है ॥ कवित्त ॥ यमुना के तीर नरनारिन की भारी भीर तदपि निरख बिनु हरषे रहेन हैं । कहै कविकृष्ण चित्तचैंपसों खगत अनुराग सों पगत उमगत मनमैन हैं । योंहीं दिन बितवति हियहेत जितवत चितवत चायसों तिरीछे किये नैन हैं । भीजे पट कंप तनकाहूते चपत दोऊ अधिक जपत क्योंहों जपनिवरेन हैं १६९ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० घामघरीकनिवारियेकलितललितअलिपुंज ॥
यमुनातीरतमालतरुमिलतिमालतीकुंज १७०

यह नायका परकीया वाग्विदग्धा स्वयंदूती नायका को वचन नायका सों ॥ सवैया ॥ चारुतमालकलिन्दीके तीर उसीर सुगन्ध समीर हरैमन । मालती माल निकुंजनि में मिल गुंजत मत्त मधुव्रत के गन ॥ फूलनिके भरि भूम लतारही बेलि लगी लपटाय तमालन । कीजै बिराम घरीक इतै यह आतप नेक निवारिये लालन १७० ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० छैछिगुनीपहुँच्योगिलति अतिदीनतादिखाय ॥
बलिबावनकोव्यौतसुनिकोबलितुम्हैंपत्याय १७१

यह नायक के चित्तकी वृत्ति ललचो देखि नायका प्रीति बढ़ाइबे को कहत है अरसापराध देखि खंडिताहूकहै सो संभवहै ॥ कवित्त ॥ झूठकाज को बनाय मिसहीसों घरआय सेनापति श्याम बतियानिउचरत हैं । आयकै समीप करहँसी सुसयानहीसों हँसि हँसि बातनही बांहको धरत हैं ॥ मैंतो सब रावरेकेबातजिय में कीजानि जाके परपंचयेते हमसों करतहैं । कहां ऐसी चतुराई पढ़ीआप यदुराई अंगुरीपकरि पहुंचे को पकरत हैं १७१ ॥ मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० लाईलालबिलोकिये जियकीजीवनमूल ॥
रहीभौनकेकोनमें सोनजुहीसीफूल १७२

यहि नायका को सखी ले आई है सो नायकसों कहति है ॥ सवैया ॥ जाहि बिलोकि कै प्यारे बिहारी सम्हार तुम्हैं सबभूल रही है । आई सुजीवनमूल बिलोकिये तो हितसों अनुकूल रही है ॥ बैठी दुकूल में अंगदुराय तऊ तनकी द्युति भूल

रही है। चौंधत लोचन भौनके कोनमें सोनजुही मनो फूलरही है १७२॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १२ लघु २०॥

दो० रहीपैजकीनीजमें दीन्हींतुम्हेंमिलाय॥
राखहुचंपकमाललौं लालहियेलपटाय १७३

यह सखी नायकाको लैआई है सो नायकसों कहतिहै॥कवित्त॥ नैनन के तारेनमें राख्यो प्यारेपूतरीकै मुरली ज्यों लाय राखौदशन बसनमें। राखौ भुजबीच बनमाली बनमालाकरि चंदनज्यौं चतुर चढ़ायराखौतनमें॥ केशोराय कलकंठ राखी वलिकंठुलके करमकरम क्योंहूं आनी है भवनमें। चंपककलीसी बाल सूंघि सूंघिदेवतासीलेहुप्यारेलाल इन्हेंमेलिराखौ मनमें १७३॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १२ लघु २३॥

दो०अथसमागम॥दोऊचाहभरेकछूचाहतकह्योकहैन॥
नहिंयाचकसुनिसूमलौं बाहरनिकसतबैन १७४

यह प्रथमदर्शनागममें लाजके अधिक दोऊ कछु कहिसकत नाहीं सो सखी सखीसों कहतिहै॥सवैया॥ आजदुहूं मिलिकै सजनी मनमोहनसों मनसाकरि खोर मिलायो। ठाढ़ेठगेसे रहैं टकलायकै नेहकोमेह तहीं बरसायो॥ चाह भरे दोऊ चाहकह्यो कछू बोलतयोंसुख आवतपायो। सूमज्योंआवै नभौनते बाहिर द्वारसुनैंजबै याचकआयो १७४ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० करसमेटकचभुजउलटिखयेसीसपटुडारि॥
काकोमनबांधेनयहजूराबांधनहारि १७५

यह जूराबांधननायका नायकने देखी सो सखी कहतिहै जाति वर्णन होय॥ कवित्त॥ नैन ऐन पैन कैसे बान खरसानधरे आनन की ओपकछू जैसी चन्दपूरे की। कनक लतासी भुज उरज उतंग गोरे खुलिखुभी कंचुकी सबजरंगकरेकी॥ कहैंकबिकृष्ण मटकीली चारुचितवन चटकीली चूनरी चटक चोखेचूरेकी। सीस पटुटारि भुज उलटि समेटि केश क्योंन मन बांधिबांकी बांधनि जूरेकी १७५ मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४॥

दो० सहजसचिक्कनश्यामरुचिशुचिसुगंधसुकुमार॥
गनततनमनमथअपथलखिबिथरेसुथरेबार १७६

यह नायकाके केशनकी शोभापै आसक्त नायक है सो सखी सों कहत है॥ सवैया॥ निंदतहै तम पुंजप्रभा जिनकी छबिहेरि शिलीमुख हारे। श्यामसुगंध सुभाय सचिक्कन सोहत सुंदरलांबेलछारे॥ मैनमनो अपनेकरिकै मखतूलकेचीर बनायसंवारे। देखतही मन थाकिरह्यो नवनागरि केश सुदेश तिहारे १७६॥ नर॰ अक्षर १३ गुरु १५ लघु १८॥

दो॰ वेईकरब्यौरनवहै ब्यौरोकौनविचार॥
जिनहीउरझ्योमोहियोतिनहीसुरझेवार १७७

यह नायककी आसक्ति नायकाके हाथनपै है सो बार ब्योरत देख नायक सखीसों कहत है॥ सवैया॥ पानलसेसरसी रुहसे तिन ऊपर सों दृगभौंरभये हैं। केलिफिरोसी खरोसुथरी अंगुरीनखचंद प्रभानिछये हैं॥ वेही हैं हाथवहै चलिवो कहि यामें विचारकहा धौं ठयेहैं। मेरोहियो उरझ्यो जिनसों तिन ब्योरे नहीं सुरझे कचयेहैं १७७॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो॰ छुटेछुटावतजगतते सटकारेसुकुमार॥
मनबांधतबेनीबँधे नीलछबीलेबार १७८

यह नायका के बार पै नायक को मन रीझ्यो है सो नायक सों कहति है अथवा सखी सों कहतिहै कविहूकी उक्तिहोय॥ सवैया॥ सोहत है सुकुमार महा उपमा को सिवारन लागत नेरे। मेचक लांबे सुगन्ध लसें छवि देखत नेकफिरें नहीं फेरे॥ छूटे छुटावत हैं जगते इनके कछु कोटिक टोना सेहेरे। नीरजनैनी कहा कहिये मनुबांधत बेनी बँधे कच तेरे १७८॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो॰ कुटिलअलकछुटिपरतमुख बढिगोइतोउदोत॥
बंक बिकारी देत ज्यों दाम रुपैया होत १७९

यह मुखपै बार छूटेते शोभा अधिक भई है सो सखीसों कहति है सखी नायक सों कहै नायकासों कहै कविकी उक्तिहोय॥ सवैया॥ मानै भुजंग निकंज चढ़ी मुख ऊपर एकछुटी अलकैयों। कारीमहासटकारीहै सुंदर भीजरही मिलसौंधेनहीं यों। लटी लटवाइलकी ढिग वोर गई बढ़िकै छवि आननकीयों। आंकवही दिये दूजनेकारिकै होत रुपैयन ते मुहरें ज्यों १७९॥ अहिपर अक्षर ४३ गुरु ५ लघु ३८॥

दो॰ खौरिपनचभ्रकुटीधनुष बेधिकुसुमतजिकान॥

हनलतरुनमृगतिलकसरसुरकभालभरितान १८०

यह नायका कुलटा ललाट शृंगार है सो सखी नायक सों कहति है ॥ सवैया॥ कुञ्चितभौंहें कमानकसे तिहिको जिहिके शिर खोरि बनाई। ताकूं लै तीर करयो तिल है सुरके गहितापर भाललगाई ॥ खेलत यौवन के वनमें यह साज शृंगार मनोज अथाई। हेरिहनैंजु नवीन कुरंगन हीनदया उरकै कठिनाई १८०॥ बारन अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० नीकोलसतललाटपरटीकोजटितजराय ॥
छबिहिंबढ़ावतरबिमनोंशशिमण्डलमेंआय १८१

यह ललाट परटीको है ताकी उपमा सखी नायक सों कहति है कविकी उक्ति हू होय ॥ सवैया ॥ यौवन ज्योति जगामग होति शृंगार प्रभा सरसावत है। रीभि रहैं लखिलालके लोचन मोदहिये भरआवत है॥ सोहत वाको जरायजरयो विय भाल महाछबि छावत है। मानहुँ चन्द्रके मण्डल में दिननायक शोभा बढ़ावत है॥ १८१॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० भीनेपटमेंभलमली झलकतिओपअपार ॥
सुरतरुकीमनुसिन्धु में लसीसुपल्लवडार १८२

यह भलमलनिको वर्णन है सो उपमासखी नायक सों कहै सखी सों कहै कवि की उक्ति॥ कवित्त॥ जाके करणाभरण रूप के दिवाकरसे नयनदीबरणकी छबिसरसाति है। अधर सुधाधर सुधाधर से बदनमें किलकति ललित कपोलन की काँति है॥ अंतर ललित भीनेबसन में भलमलीकहैं कविकृष्ण भलकत ऐसी भाँति है। मेरे जान सागर में डार कलपद्रुमकी पलवनि सहित प्रगट दरसाति है॥ १८२॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० तियमुखलखिहीराजरी बेंदीबढ़तिबिनोद ॥
सुतसनेहमानोलियोबिधुपूरनबुधगोद १८३

यह नायकाके भाल हीरेकी बेंदी है सो सखी शोभा उपमा नायक सों कहति है॥ कवित्त॥ कनकबरण तन जगर मगर होत वोप उपजवास भौन आसपास कीनो है। सकल सकलरूप विरचि विरंचिबाले खीन कटिकठिन उरोजयुग पीनो है॥ ललित ललाट पर हीराकी लसत बेंदी कहैं कविकृष्ण देखे मनु नेहभीनो है।

मेरेजात मोदभरि अधिक सनेहकारि पूरन मयङ्कभरि अङ्कबुधलीनोहै १८३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० कहत सबैबेंदीदिये आँकुदशगुनोहोत ॥
तियललाटबेंदीदियेअगणितबढ़तउदोत १८४

यह बेंदीदियेते मुखकी शोभा अधिक बढ़ी है सो नायक सखी सों कहै अथवा सखी नायक सों कहै कविकी उक्ति होय ॥ कवित्त ॥ यौवनमों मिलि जगमगत अपार ओप महामुनिहूको मनदेखे रसभोत है । कहै कविकृष्ण छबिपुञ्जनसों छाजिरह्यो सरस शृङ्गार बरसत सुधासोत है ॥ सब कोऊ ऐसेही कहत महि मण्डल में बेंदी के दियेते आंक दशगुनो होतहै । वह नरनागरि के ललित लिलारपर बेंदी लगीबढ़ो अगणित सुउद्दोत है १८४ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पँचरँगरँगबेंदीखरी उठतऊगिमुखजोति ॥
पहिरेचीरचनोठिया चटकचौगुनीहोति १८५

यह नायका नायकने जैसी छबिदेखी है तैसी भांति सखी सों कहति है । सवैया ॥ बेंदी ललार लसे पचरंगलसै बिडरेकच कुञ्चित भौंहैं । अञ्जनरञ्जितदीरघनैनबड़ेगथके मुकतानथ सोहैं ॥ चीरचनोठियामें चमकै कछु गोरो अगोटि उरोज उठो हैं । भेदकी बातलखी बतरात परोसिनि सोहैं कपोल हँसोहैं १८५ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० भालललाबेंदीललन अक्षतरहेबिराज ॥
चंद्रकलाकुजमेंबसीमनोंराहुभयोभाज १८६

यह सिखनख में ललाटबेंदी आखतन की शोभा है सो सखी नायकसों कहति है अरु कोवहू की उक्तिहोय ॥ कवित्त ॥ उदय समैके राका चन्दसों बदन तैसें ईतरुनकी उमंगगोरे रंगमें । कंचनकी नारी बारीकाकरेजी सारी तामें दुरचो दरश तुकचबूंदतउमंगमें । भालपर रोचनको बिन्दुछबि देत तामें अलखलसै ज्यों गङ्ग सरसुती संगमें । त्रासु मानिवमको सुधाकरकी कलामानोबसी है निशङ्कभननि तुरअगमें १८६ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० भाललालबेंदीछये छुटेबारछबिदेत ॥
गह्योराहुअतिआहकरिमनुशशिसूरसमेत १८७

यह नायकाके ललाटपै बेंदी है अरु तापर बार छुटे हैं सो शोभा सखी कहति

है नायकसों अथवा सखीसों कविहूकी उक्तिहोय ॥ सवैया ॥ रमैरुचिसों रति संपति दंपति कान्ति दुहूंकी तहां सरसी । वृषभानुसुता घनमें जिमि दामिनि श्याम के संग सुरंग लसी ॥ क्रीड़तप्रारछुटे इकबार तिरछोनाड़पै मुखओपगसी । मनो रोपसों दोऊगहे स्वरभानु अचानक आनि कै भानुशसी १८७ ॥ त्रिकलअक्षर ३९गुरु ९ लघु ३० ॥

सो० मङ्गलबिंदुसुरङ्ग मुखशशिकेसरिआड़गुरु ॥
इकनारीलहिसङ्गरसमयकियलोचनजगत १८८

यह शिखनखमें ललाट शृङ्गार है सो सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ मङ्गल बिंदु सुरंग विराजत भामिनि भाल महाछबि छायो । आनन चन्द्र कलापरिपूरण केसरि आड़मनों गुरुआयो ॥ कृष्णकहैं इकनारी में आई मनों परिपूरण योग लखायो । नैनभरे रस की बरषा करि चैनसमूह हिये उमगायो १८८ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० हाहाबदनउघारिदृग सफलकरैंसबकोय ॥
रोजसरोजनकेपरैं हँसीशसीकीहोय १८९

यह मुखवर्णन है सो सखी नायका सों कहै है नवोढ़ा के प्रसंग में बनै मान छुड़ायबे को कहै तो बनै ॥ कवित्त ॥ लोचन लहेको फल सफल हमारो करि प्यारी प्राण प्यारे को सनेहरस लीन करि । तेहीं पाई परम निकाईकी अवधिअब येतो वृषभानु की कुंवरि अरबीन करि ॥ टारि पट घूंघट को हाहाहे उघारि मुख निजछवि पानपर्मे पीकेनैन मीनकरि । कंजछविछीनकरि शशिहि मलीनकरि सौतिकको दीनकरि प्यारेको अधीन करि १८९ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥ डिठोना वर्णन ॥

दो० लौनेमुंहडीठनलगै योंकठिदीनोईठि ॥
दूनीह्वैलागनलगी दियेडिठौनाडीठि १९०

यह डिठौनाको वर्णन नायक सखीसोंकहै नायकासों कहै सखीसों कहै ॥ सवैया ॥ तोहिलखेरतिकी द्युतिलाजत राजतओप शृंगार कियेते । भौंहनकी बरणीन परै छबिमोहन न्यायही मोल लियेते ॥ सुंदरआनन डीठिनलागे कह्योअलियों हितमानहियेते । तोमुखतैं अवलागन लागीरीदूनी है डीठिडिठौना दियेते १९० ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु १३ लघु २६ ॥

दो० सूरउदितहूमुदितमन मुखसुखमाकीओर ॥

चितैरहैचहुंओरते निहचलचखनचकोर १९१॥

यह मुखवर्णन सखी नायकासों कहै ॥ कवित्त ॥ सुखको समूह वृषभानु की कुँवरितेरे मुखको प्रकाश जगमगत अमंद है । याहितें विलोकि छविहरषि लटू है भंवु भांवरी भरत फिरै प्यारो नँदनन्दहै ॥ योंवहू निशाकोरहै विधिने बिनानकहू देखे उमगत अतिआनंदको बृंद है । सकल विलास छोडिएक आश लगेरहै भौंर जानें कमल चकोर जानें चंदहै १९१ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० पियतियसोंहँसिकैकह्यो लख्योडिठोनादीन ॥
चंद्रमुखी मुखचंद्रते भलो चंद्रसम कीन १९२

यह डिठोना वर्णन नायक नायकासों कहै अथवा शृङ्गारकर्ती सखीसों कहै सवैया ॥ प्यारी को चारुश्रृंगार निहारि हिये पतिके अतिमोद भरयो है । वाहि चपोड़ा कहो मुसकाय सही विधिरूप सकेल धरयो है ॥ जामुखकी अकलंक प्रभासकलंक मयंकखरोनिदरयो है । सो मुखतें वै डिठोनादै आजु भलो यह चन्द समानकरयो है १९२ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० छप्योछबीलीमुखलसैं नीलेअंचलचीर ॥
मनोंकलानिधिझलमलै कालिंदीकेनीर १९३

यह नायकाके मुखको वर्णन सखी नायकसों कहै है नायकाहू सों कहै है ॥ कवित्त ॥ भावती तिहारी को गईही लैंद गिरिधारी ताहि देखेमेरोमन परयो छवि भौरमें । कृष्णमाणप्यारे की लुनाई होत जगरमगर वाके सोनेसे शरीरसों ॥ खंजनमैंत्ररविवकीरकी प्रभा निदर बदनदुराय बैठीझीने नीलेचीरमें । मेरेजान पूरण कलानिसों झलमलात परदसुधानिधि कालिंदजाके नीरमें १९३ ॥ मर्कट अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० कियेहायचितचारुलगि बजिपायलतुवपायँ ॥
पुनिसुनिसुनिमुखमधुरधुनि क्योंनलाललल्चायँ १९४

यह नायका की आसक्तिजानि सखी नायकासों प्रीति बढायबेको कहति है वाणीवर्णन ॥ कवित्त ॥ गजगतितेरी हेरीलटू तबही भयो तापै सुनी पायलकी झनक सुहाईरी । तबहीतें वाके उरलागी अति चटपटी तुवमिलवेको ललकतु है कन्हाईरी ॥ वीनाकेसुरनहूतें मधुरसरसधुनि कालिहकहूंने उनवानी सुनिपाईरी । काहेते नवाके उरमदनमरूरि उठैं कहोसेही कहन जरूर तोसों आईरी १९४ ॥ पयोधर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० छिनकुऊबीसेऊखवह नहिंजौलगिबतरात ॥
ऊषमयूषपियूषकी तौलगभूखनजात १९५

यह नायका के बानकी मधुराई सखी नायकसों कहति है ॥ सवैया ॥ जाके सुने धुनबीनकहा गहिलाज पिकी बनभागत है । जो सुनिकै कविकृष्ण कहैं मुनि की मतसा अनुराग है ॥ जौलों छबीले लला तुमसों वह बालन बातन पागत है । तौलों महूष पियूषकी ऊखकी भूख न कैसे हूं भागत है १९५ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० जरीकोरगोरेबदन बढ़ीखरीछबिदेख ॥
लसतमनोंबिजुरीकिये शारदशशिपरिवेख१९६

यह नायका के मुखपै किनारी की शोभा नायक सखीसों कहै है ॥ कवित्त ॥ पून्योसीतिहारी लाल प्यारें में निहारी वह तारेसम मोतिन के शृंगारही साजिकै । झीनोपट गातन चांदनीसी औरदार जालजोचनच कोरनकों देखें दुखभाजिकै ॥ सेनापति तनसुख सारीकी किनारी बीचि नारी के बदन अधिकछबिरही छाजिकै । पूरणशरदचन्द चिंताकै आसपास रह्यो है अखण्ड मानो मण्डले बिराजिकै ॥ १९६ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० नासामोरनचायदृग करीककाकीसौंह ॥
कांटेसीकसकतहिये गड़ीकटीलीभौंह १९७

यह नायकाकी भौंह नचायेकी चेष्टा देखि नायक सखीसों कहतहै ॥ सवैया ॥ मोननहेरिपरोसन सों बतरानिकछू बनोरसकाकी । ये करगोरनिकों घुतिहोतन वांको निकाई तखे संपनाकी ॥ नाकचढ़ाई उचाय के ओदन छायकरी दृगसौंह ककाकी । वा छबिकी नेकटीलीसी भौंह कोजेमें शूलसी सालबाकी १९७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥ नेत्र वर्णन ॥

दो० वारोंबलितोहगनपर अलीखंजमृगमीन ॥
आधीडीठिचितौनजिहिकियेलालआधीन१९८

यह नायकाके नेत्रनकी अधखुली चितवन देखि नायक आधीनभयो सोसखी नायकसों कहै ॥ कवित्त ॥ कारे भपकारेरतनारे अनियारे सोहैं लहज हरारे मनमथ मतवारे हैं । लाजभरिभोरे सारे चपल तिहारेतारे साचेकेसे ढारे प्यारे काके बवारे हैं ॥ आधीचितवनही में आधीन किये तैं हरिडोनेसे वशीकरके लोने । गि-

हारेहैं। कमलकुरंग मीन खंजन भँवर वृषभानुकी कुँवरि तेरे नैननपै वारेहैं १९८॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४॥

दो० चमचमातचंचलनयन बिचघूंघटपटझीन॥
मानहुंसुरसरिताबिमलजलउछलतयुगमीन १९९

यह नायका के नेत्रन की शोभा सखी नायक सों कहै नायकहू नायकासों कहै सखी सखीसों कहै छन्द उपजाति॥ कवित्त॥ रूपकी रसाल आज देखी ब्रजबाल एक केती शोभासनी वाके सोनेसे शरीर में। टारयो न टरत वह भाव मोहिबे में क्योंहू बैठी मुखढांकि गुरु लोगनकी भीरमें॥ कहै कविकृष्ण अतिचंचल बिशाल वांके लोचनयुगल झलकत झीने चीर में। क्यों न मनहोय छबि निरखि अधीर विवमीन उछलत मानों सुरसरि नीरमें १९९॥ मराल अक्षर ३३ गुरु १४ लघु २०॥

दो० करैचाहसोंचुटकिकै खरेउड़ौंहैंनैन॥
लाजनवायेतरफरत करतखुदीसेनैन २००

यह नायका के नेत्रलाज अरु चाह दोउनके वश खुशीसी करत हैं सो सखी सखीसों कहति हैं नायकाहूसोंकहै॥ कवित्त॥ नैननवनागारेकै ललतुरंग अङ्ग छबि की तरंग रंगन धरैं धरैं। मदन मवीन तिन्हें फेरिबो सखावतहै घूंघटकी ओट ऐसे कौतुक करैंकरैं॥ कीने चाह आतिगीसों चूकिकै चपलहोत खरेई उड़ौंहैं ते उमंग सों भरैं भरैं। लाजवागवस ज रफततांइभरे करतखुदीसी पगधरत हरैं हरैं २००॥ मच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० शायकसमलायकनयन रँगेत्रिबिधरँगगात॥
झखौबिलखिदुरिजातजल लखिजलजातलजात २०१

यह नायका के नेत्रनकी शोभा सखी नायकसों कहै॥ कवित्त॥ शायक से घायकहैं तीखनतरलदृग श्वेतश्याम अरुण त्रिविधरँगे गातहै। कहै कविकृष्णजाके उरमेंभिदत ताहि सुधि न रहत गातघूम घननातहैं॥ येतेपर भौंहैं ये विषम विषअञ्जन सों याहीते बिशेषबिथा उरसरसात हैं। सफरी बिलोकिजल बिलखि दुरितमृग भटकत बिपिन लजात जलजात हैं २०१॥ मर्कट अक्षर ३० गुरु १८ लघु १२॥

दो० बरजीतैशरमैनये ऐसेदेखेमैन॥
हरिणीकेनैनानते यहरिणीकेनैन २०२

कवित्त ॥ चीरेकीने खंजनकसेरेकीने कंजपुंज उपमाको नेरे आलिरंचक लगे-नहें । सोहत विशाल ये रसालसाल सौतिन के देखे मनुहरत करत चितचैन हैं ॥ चपलकटाक्षवर जीतत मदन शर सुखके निकर औरै देखेऐसे नैन हैं । कामदुख दन्दनीके वृषभानुनन्दनीके हरिणके नैनतें हरिणी के नैन हैं २०२ ॥ पयोधर अक्षर १५ गुरु १२ लघु २३ ॥

दो० रसशिंगारमंजनकिये कंजनभंजनदैन ॥
अंजनरंजनहूंबिना खंजनगंजननैन २०३

यह नायकाके नेत्रनकीशोभा सखीसों नायक कहै नायकाहू सों कहै नायका नायक सों कहै सखी सों कहै ॥ सवैया ॥ कंजकुरंग गुमाननगंजन पीमन अंजन हैं अनियारे । खंजन मीननके मदभंजन अंजनहूं बिनयेकजरारे ॥ लाज समाज सुशी-लहसी रसरंगभरे विधिमैनसुधारे । कृष्णकहा उपमा कहिये तिय याजगमें हग तेरे उभारे २०३ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० जोयुगगतसिखयेसबै मनोमहामुनिमैन ॥
चाहतपियउद्वैतता सेवतकातनुनैन २०४

यह नायका के नेत्रनकी शोभा अरु तरुणाईको बिलोकि पियकी चाह सखी नायकसों कहतिहै सखीसखीसों कहै ॥ कवित्त ॥ लीनोउपदेश महामुनिमनिकेत को योगकलाकुशल बिमल बिलसंत हैं । तनमन मोहनसों एकभयोचाहतहैं कानन को सेवत जगत ज्योतिवंत हैं ॥ कृष्णमांणप्यारेकी दुहाई जिन्हैं देखतही विरह क-लेश दुख सकल निहसंत हैं । सरलसुभाई उरमांभधरे श्याम छवि प्यारी तेरे नैन मनहरनमहंत हैं २०४ ॥ वानर अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० सबअँगकरराखीसुधर नायकनेहसिखाय ॥
रसयुतलेतअनंतगत पुतरीपातुरराय २०५

यह नायका की पुतरीन की शोभा अरु नेह की अधिकाई सखी नायकसों क-हति हैं ॥ सवैया ॥ चारुमभा पलकैं झलकैं मृदुपीतपटी पहरे सुथरी हैं । नायकनेह सिखायसबै रसभेदसुधाय मवीन करीहैं ॥ कृष्णकहैं अतिचाइनसों गतलेतमनो बहुभाय भरी हैं । लेतरिझाय मनैं अतिचातुर पातुरराय किधौं पुतरीहैं २०५ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० लागतकुटिलकटाक्षशर क्योंनहोहिबेहाल ॥

कढ़तजुहियेदुशालकर तऊरहतनटशाल २०६

यह नायकाके नेत्र नायक के हृदय में खुभे हैं सो सखी नायका सों कहति है नायक सखी सों कहतहै नायका सखी सों कहै ॥ कवित्त ॥ भिदेभूवतीर तें तौ तनकौ बढ़ावैं पीर जानियह बात जिय सकलड़रात हैं । लागे ब्रजनागरि के कुटिलकटाक्ष शर क्यों न होहि बिकल बिहाल सबगात हैं । बिकमनिधान अति पारथ के बानहूते मेरे जान इनके अनोखे उतपात हैं । देखिये न घाय उरकटक दुशालकरें येतेपर देखो नटशाल रहिजात हैं २०६ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥ नासावेधवर्णन ॥

दो० वेधतअनियारेंनयन वेधतकरननिषेध ॥
बरबटबेधतमोहियो तोनासाकोवेध २०७

नायका की शोभा नायक नायकासों कहत है ॥ कवित्त ॥ अनियारे नैन वेधत बिराने मन को अचरिज पैन सहज सुभायकै । तोहिं निरखत वृषभानु की कुँवरि अदभुतकी तरंगरही मेरेउर छायकै ॥ सोहैं किधौं नहकी निकाई को निकेत किधौं सुख मधुकरने सुरुचिकीनों आयकै । बरवटसों हियो वेधत है प्यारीतेरी नासिका को वेधमन रहै क्योंधिरायकै २०७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० बेसरमोतीद्युतिझलक परी अधरपरआय ॥
चूनोहोयनचतुरतिय क्योंपटुपोंछ्योजाय २०८

यह नायकाके ओठ ऐसे उज्ज्वल हैं जो मोतीकी झलक ललाईके मध्य श्वेत झलकतिहै सूयचूनो जानिपोछत है सखी याकी भ्रांति दूर करति है अथवा नायका झलकदेखि निश्चय करतिहै सो सखी कहतिहै जो नायका सखी सों कहै तो रूपगर्वितहूहोय ॥ सवैया ॥ आज शृंगार बन्यो तियतेरो जगमग ज्योति समूह करै । देखत आरसी बारही बार हिये हरिको कहि क्यों न हरै ॥ वेसरके मुकता की प्रभा अति उज्ज्वल आनि परी अधरै । होय न चूनो लग्यो मृगलोचन क्यों पटसों अब पोंछपरै २०८ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० इहद्वैहीमोतीसुगथ तूनथगरबनिशाँक ॥
जेहिपहिरेजगदृगग्रसतिलसतहँसतसीनाँक २०९

यह नायकाके नथकी शोभा सखी कहतिहै अन्योक्ति कवित्तहू में बनै कवित्त॥ सुरनसमेत नाकहीते कहति मुकतनियुत मुकति पुरीसी दीसतिहै॥ कहैं कविकृष्ण मनमोहन के मोहिबे को मोहनी की सिधिमान शोभा सरसति हैं॥ तोहिं पहरेते जग नयन ग्रसति अति छवि बरसत मानों नासिका हँसति है। अहे नथ उर में निशाक तू गरबकरि द्वैही मुकता के मोल सहति लसति है २०९॥ बारनअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० जटितनीलमणिजगमगति सींकसुहाईनाँक॥
मनोअलीचंपककली बसिरसलेतनिशाँक २१०

यह नायका की सींक पहिरेते सुशोभा भई सो उपमा सखी सखी प्रति कहतु है सखी नायक सों कहति है नायकाहू सों कहै॥ कवित्त॥ पूरण मयङ्क केकि अङ्क में लसत किरु नैक निरखतही हरत चितचेत है। प्रफुलित पङ्कज पै सोहै कर-हाट किधों तिलको सुमनु सुख सौरभ समेत है॥ नीलमणि जटित छबीली तेरी नाकपर सींक यों लसति महाशोभा को निकेत है। मेरेजान मुकलित चम्पककी कलिकापै बैठ्यो अलि साँकु निशांक रस लेत है २१०॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० यदपिलौंगललितौतऊ तूनपहरइकआँक॥
सदाशङ्कबाढ़ी रहै रहै चढ़ीसी नाँक २११

यह नायकाकी नाक में लौंगहै ताकरि नाक चढ़ीसी दीखतिहै सो सखी नायकासों कहति है॥ कवित्त॥ किधौं है वदनछबि दीपको सुमेरु जाकी जगर मगर ज्योति पूरण प्रकासिका। किधौं कविकृष्ण चारुचम्पक की कलिका है सहजसुगन्ध निकसत जाते श्वासिका॥ तदपि लवंग अति ललित लसत तऊ तू मतपहरि डरपति उरदासिका। मानके भरमभूलि मोहन विलोकिरहे मृगनैनी निरख चढ़ीसी तेरी नासिका २११॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० सालतहैनटशालसी क्योंहूंनिकसतनाहिं॥
मनमथनेजानोकसी खुभीखुभीजियमाहिं २१२

यह नायकाकी खुबीकी शोभा नायक सखीसों कहत है॥ सवैया॥ राधिका प्यारी के आननपै छवि तीनहूं लोककी आनि गुभीहै। मैं निरखी जबते तबते मनमेरो लुभाइ तहांही चुभी है॥ रूपकेनो इयकान स वाके विराजत ओप अनूप

खुभी है। सालत है जु मनोज के नैनेकी नोक मनो उरमांझ खुभी है २१२॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० लसतसेतसारीढप्यो तरलतर्योनाकान ॥
पर्योमनोसुरसरिसलिलरविप्रतिबिम्बविहान २१३

यह तरयोना वर्णन सखी को वचन नायकहू को वचन कविहूकी उक्तिहोय॥ कवित्त ॥ सुंदरसुकुमार बालचलति मराल चाल अंगअंग भूषन समूह वरसत है। कद्दर पदरपन लसतकपोल फल बलदेव सुसमासमूह वरसत है॥ नगमणिजटित जरायको तरौना तामें ताकी झलकनि ऐसी भांउ परसत है। सुरकाति माणि की मयूखन सों मिल्योएक प्रभाकर मानों प्रतिबिम्ब दरसत है २१३॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० तरवनिकनककपोलद्युति बिचबीचहीबिकान ॥
लाललालचमकतचुनी चौकाचिह्नसमान २१४

यह तरवनिकी शोभा सखी नायकसों कहै तो सुरतगोपना होय॥ कवित्त॥ आजकीबनक बरणत न बनत तेरी छविकी छटान की घटासी उमँगतिहै। दमकत सरस शृङ्गारकी अपार ओप यौवनकी कांति जगाज्योतिसी जगति है। कनक तरयोननुको ललित कपोलन की द्युति में समायगयो अदभुत गति है। कृष्ण प्राण प्यारे कीसी चारु चमकति येतोलाल लालचुनी चौका चिह्न सी लगति है॥ २१४ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० लैसमुरासातियश्रवण योंमुक्तनद्युतिपाय॥
मानोपरसकपोलके रहेस्वेदकनछाय २१५

यह मोतिनको मुरासा को वर्णन करिकहै तो लक्षिता जानिये॥ कवित्त॥ आज नवनागरीकी आगरी विलोकी छवि देखवेको नैनन्जलचाय ललकत है। कहै कविकृष्ण वही बानिक विलोकि ठगे रीझिरगे तबते लगत पुलकत है॥ आननकी छवि लखि चन्द द्युतिमन्दहोत ताइपै अनारवे चिह्न अति सरसन है। मेरे जान परस कपोल इनहूकेउर लह्यो है प्रस्वेदवेई बुंद झलकत हैं २१५॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० नखशिखरूपभरेखरे तोमांगतमुसकानि ॥
तजतनलोचनलालची येललचाहींबानि २१६

यह नायका अथवा नायकमुसकान देख्यो चाहतहै सो अपने नैनकी आसक्ति कहतहै ॥ सवैया ॥ देखतही अनिमेषरहे उमड़ेसे परे न विचारतगोहूं । रावरे रूप अनूपसों पूरि रहेहे जऊ नखतेशिखलोहूं ॥ मांगतहै इतने परनो मधुरी मुसकानि अघात न त्योंहूं । नैनभये अतिलालचीये ललचानकी बानि न छांड़त क्योंहूं २१६ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० नेकहँसौंहीबानितजि लख्योपरतमुखनीठि ॥ चौकाचमकनिचौंधमें परतचौंधसीदीठि २१७

यह अकारण हँसी जानि गुरु सखी नायकासों शिक्षाके प्रसंग में चौका की चमक की बड़ाई करै अथवा नायकहू नायकासों कहै तो संभव है ॥ कवित्त ॥ तैसी ये जगतिज्योति शीश शीशफूलन की चिलुकत तिलक तरनि तेरे भाल को । तैसी ये दशनद्युति दमकत केशोराय तैसोई लसत लाल कंठ कंठमालको ॥ तैसी ये चमकचारु चिबुक कपोलन की झलकत तैसो नकमोती चलचाल को । हेरेहेरे हँसि नेक चतुर चपलनैन चितु चकचौंधे मेरे मदनगुपाल को २१७ ॥ मरकट अक्षर २२ गुरु १७ लघु १५ ॥

दो०ठोढ़ीगाड़वर्णनं॥डारैंठोढ़ीगाड़गहिनैनबटोहीमारि चिलकचौंधमेंरूपठग हांसीफांसीडारि २१८

यह ठोढ़ीकी गाड़को वर्णन नायक नायकासों कहै ॥ सवैया ॥ केशन के वन के उपकूलनहीं भृकुटी गिरवोट विचारै । चारु लिलार शिंगार की चौंत्र में देतमचंड दगा नहिं हारै ॥ फांसी गरे मुसकानकी पारिकै ठोढ़ी की गाड़ कुवां गहिडारै । प्यारी महाठग तेरोस्वरूप दयातजि नैन बटोहिन मारै २१८ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० ललितश्यामलीलाललन बढ़ीचिबुकछबिदून ॥ मधुछाक्योमधुकरपर्यो मनोगुलाबप्रसून २१९

यह नायका की ठोढ़ीपै लीला की शोभा सखी नायकसों कहति है ॥ सवैया ॥ कुंकुम गारिकियो मनुदेह महासुकुमार सुगंधको भौना । रूपसुधा भरचो चंदसों आनन लाललसै मनको ललचौना ॥ ठोढ़ी की गाड़में श्यामलबिंदु निहारत वारिथकेमनुगौना । कै मधुपान गुलाबके फूलमें मत्तपरयो मनो भौंरको छौना २१९ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० खरीलसतगोरीगरे धसतिपानकीपीक॥
मनोंगुलीबँदलालकी लालतालद्युतिलीक २२०

यह कण्ठ वर्णन है सुकुमारता सखी नायकसों कहै॥ सवैया॥ प्यारे मैं पियारी तिहारी लखी नखतें शिखलौं सुनिकाई भरी है। केशरिकी सुकुमारि मनो छविपुञ्जसों औपविरंचि करी है॥ गोरीके गोरे गरे मनु मोहति सोहति पीक की लीक खरी है। चीरगुलीबँद लालको लाल मनो द्युतिकी मनिलीक परीहै २२० वारन अक्षर ३८ गुरु १७ लघु २८॥

दो० कुचगिरिचढ़िअतिथकितह्वैचलीडीठमुखचाड़॥
फिरिनटरीपरियेरही परीचिबुककीगाड़ २२१

यह अङ्ग देखत देखत दृष्टि ठोढ़ी की गाड़ में जायपरी सो टरतिनाहीं सो नायक अपनी अवस्था नायका सों कहै अथवा सखी सों कहै॥ सवैया॥ दीठिनदी त्रिवली तिरनीठि रुमावलि काननतें निकरी है। पीन उरोज पहार चढ़ी अतिथाकि तऊ न वहां ठहरी है॥ चाहि चली मुखमण्डलकी छवि बीचहीले विधि ऐसी करी है। ठोढ़ी की गाड़ गढ़ेमें परी सुपरीपरी न तहां ते टरी है २२१॥ त्रिकल अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० चलतनपावतनिगममगजगउपज्योअतित्रास॥
कुचउतंगगिरिवरगह्यो नैनामैनमवास २२२

नायक नायकासों कहै सखी कहै तोऊ बनै॥ सवैया॥ लूटतमाल मुनिन्दनके मन ज्ञान बिसाति लेको निबह्योहै। वेदको पन्थ चलै कहि कैसे सबै जगमें अतित्रास चह्यो है॥ कृष्ण कहै त्रिवली सरितारु मिली बनराम गढ़ा सुलह्यो है। ऊंचे उरोज पहार के बोर मनोज महीप मवास गह्योहै २२२॥नरअक्षर ३३गुरु१५लघु१८॥

दो० दुरत्तनकुचबिचकंचुकी चुपरीसारीसेत॥
कविआंकनकेअरथलों प्रगटदिखाईदेत २२३

॥ यह कंचुकी के बीच कुच शोभायमानहैं तिनकीप्रभादेख नायक नायकासों कहै सखी नायका सों कहै नायकसों कहै॥ कवित्त॥ कञ्चनवरन मनहरन अडोल गरु वैसे गोल गोरेशीश श्यामताधरतुहैं। उन्नतकरेरे खरे चिकने सुनाईभरे मदन वशीकरसे मनको हरतुहैं॥ ऐसे कुचभीनी सित कंचुकी तलांछमांझ प्यारी ये दुराये न दुरत उघरत हैं। कहैं कविकृष्ण जैसे सुकवि के आंकन

में अरथउमंग डीठि मगट परतु है २२३ ॥ त्रिकल अक्षर ३१ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० उरमानिककीउरबशी तटउघटतहगदाग ॥
छलकतबाहिरभरमनोंतियहियकोअनुराग २२४

यह उरवशीकी शोभा सखी नायकासों कहै याके अनुरागकी पूर्णता प्रगट करतिहै जो सखी नायकासों कहै तो तियपदतें संबोधनहोय. नायका. लक्षिता ॥ कवित्त ॥ हिये आलवालतें मगट कोकनद फूल्यो किधौं अनुराग आभा उमंगी है सरवर। ईश्वर सुमति किधौं भोरही उदितभानु बैठी चक्रवांकन के प्रेमको मगट कर ॥ मोतिन की माल सोहै गंगाजूकी धारा तामें ध्यानलाय तीसरा नयन खोलि दीनो हर। मानक नियम कुचअग्र उरवशीयोहै मंगल मुदित मानो मेरुके शिखरपर २२४ ॥ नरअक्षर ३९ गुरु १५ लघु २४ ॥

दो० बड़ेकहावतआपसों गरबेगोपीनाथ ॥
तौबदिहौंजोराखिहौ हाथनुलखिमनुहाथ २२५

यह नायकाके हाथकी शोभा सखी नायकसों कहति है ॥ कवित्त ॥ सिंधु मथिशशि शशिमथि नखनाके नेही कीनेहैं सुतिकहै कविपतियाइ है। चीर के कलपतरु कोये आंगुरिनकरी मनहोत वहि मनचिते फल पाइहै ॥ कमला हिये के कंज दलकीहथेरी कीनी तापर भँवरभये आंवरही खाइहै। हौंतो त्रिभुवननाथ जानिहोपै ऐसे तियहाथन निरखि जब हाथनि बिकाइ है २२५ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० नखरुचिचूरनडारिकै ठगुलगायनिजसाथ॥
रह्योराखिहठलैगयो हथाहथीमनुहाथ २२६

हाथकी शोभा देखि नायककौ मनु याके हाथनाहीं रह्यो सो नायक अपने मन की गति सखीसों कहतहै नायकाहू सों कहै ॥ सवैया ॥ बूंदलसै महँदीके सुरंग जहाँ अरुनायके रंगरलेकै। रेखनशीकरमंत्र दिखायके साथ लगायलियो अपने के ॥ चारुनखाद्युति चूरन डारि अधीनकियो बहुभांति सुरेके। राखेहूं पै न रह्यो ममहाय हथाहथी हाथगयोमनु लैके २२६ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० गोरीछिगुनीअरुननख छलाश्यामछबिदेय ॥
लहतिमुकतिरतिपलकुयह नैनत्रिबेनीसेय २२७

यह नायकाकी अँगुरीकी शोभा नायककहत है ॥ सवैया ॥ कोवरीगोरी लसै छिगुनी अरुलालमभानख की सुखदैनी । तापर श्यामछलाकी फबीछवि नैननकी लखिलागत ऐनी ॥ लोचनसंत लहै रतिमुक्तनि सेवक देखतही मृगनैनी । तोकर माहिं विराजनहै यह तीरथराजकी रीति त्रिवैनी २२७ ॥ त्रिकल अक्षर १९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० बढ़तनिकसिकुचकोररुचि कढ़नगोरभुजमूल ॥
मनुलुबिगोलौटनुचढ़त चौटतऊंचेफूल २२८

यह नायका जाछविसों देखीहै सो नायक सखीसों कहत है ॥ सवैया ॥ वन आजुलखी वृषभानुसुता जगज्योतिरहीं चहुंकूलन की । चिहुटी चित में उकसाये भुजा बहचौटनि ऊंचित फूलनकी ॥ बढ़ती कढ़ने कुचकोरनकी रुचि चारुप्रभा भुज मूलनकी । लटिगो मनुलौट विलोकतही छवि मोहिं न कैसहुं भूलन की २२८ ॥ बारन अक्षर १८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० फरउठायघूंघटकरत उसरतपटगुझरोट ॥
सुखमोटैलूटीललन लखिललनाकीलोट २२९

यह नायकाकी लौटकीशोभा नायकनेदेखीहै सोसखी सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ जातिही बालगलीमें अलीसंग आवत मोहन देख्योअगोटैं । ज्योंकिये हाथ उठायकै त्योंउसरी पटकी गुझरोटैं ॥ सो छविमोपै कहीनपरै कछूकोरिन कोर लुटी सुखमोटैं । लाललह्यो अतिमोद हिये नव नागरिकी निरखी जब लोटैं २२९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ कटि वर्णनम् ॥

दो० लगीअनलगीसीजुबिधि करीखरीकटिखीन ॥
कियेमनौवेहीकसरि कुचनितंबअतिपीन २३०

यह नायकाकी कटि यौवनके आयेतें घटबढ़ ह्वैगई है सो सखी नायक सों कहति है कबिहूकी उक्तिहोय ॥ कबित्त ॥ रूपसांचे ढारिरचिपचिकै सुधारे विधि अंग अंग सकल सुदेश रसभीने हैं । तापै तरुणाईने बनाई कछु औरै विधि खीन करे पीन अरु पीन करे खीने हैं ॥ छोलि छोलि ठाकुअति सूक्ष्मकै राखे ताहि लच कत जानिकै यतन ऐसेकीने हैं । करिहांकी कृशता की साधिकै कसर मानों उरज नितंब अति पीनकरिदीनेहैं २३० ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० लहलहातननकनई लचिलगलौंलफिजाय ॥

लगलांकलौइनभरी लेइनलेतलगाय २३१

यह नायकाकी जो शोभादेखी है सो नायक सखीसों कहत है अथवा सखी नायका सों कहै सो संभव है॥ कवित्त॥ लकलके तनमें लहलहाति तरुनाई ताकीनई अरुनई रहीछबिछायकै। कुचनके भार चष लगलौं लफ़ति जब चलति गयंदगतिसहज सुभाय कै॥ कहैं कविकृष्ण नखशिखलौं लुनाईभरी मानौं महा मोहनीने देहधरी आइकै। सूक्षमलसत अति यारि को सो आंकु ऐसे लगै लांकवारी लेतलोइन लगाइ कै २३१॥ बानरअक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० बुधिअनुमानप्रमानश्रुति कियेनीठठहराय॥
सूक्षमकटिपरब्रह्मकीअलखलखीनहिंजाय २३२

यह कटिवर्णन सखी सखीसों कहै नायकसोंकहै नायका सखीसों कहै नायक सों कहै कविहूकी उक्तिहोय॥ कवित्त॥ सुमन में बासजैसे सुमन में आवे कैसे नाहीं नाहीं कही जाति हां कहां चलत है। सुरसरि सूरतनया में सुरसती जैसे वेदके बचन बांचे सांचे निरहत है॥ बुधिअनुमानते प्रमान पारब्रह्म ऐसे कामिनी की कटि कवि मीरन कहत है॥ परिवाके शशिकी कलाज्यों रहै अम्बर में परिवाको अच्छ परतच्छ न लहत है २३२॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० जंघयुगलजोइननिरे करेमनोबिधिमैन॥
केलितरुनदुखदैनये केलकलासुखदैन २३३

जंघकी शोभा नायक सखी सों कहै सखी नायकसों कहै॥ सवैया॥ कारे करेरे कुरूपकरीकर क्यों समहोत प्रभा इनकीके। सोहत सुन्दर पीन सचिक्कन मोहन हैं मनमोहन पीके॥ केलिकलोल कलाके निधान महादुखदायक हैं कदलीके। तोयुगजंघ बिरंचि मनोज बनायकरे निरेलोयनहीके २३३॥

दो० रह्योढीठढाढसगहे शशिहरगयोनसूर॥
मुख्योनमनमुरवानिचुभि भौचूरनचपिचूर २३४

यह मुरवानिकी शोभा में नायक को मन चुभ्यो है सो सखीसों कहतहै नायकाहू सों॥ सवैया॥ प्रान पियारी के पांयन ऊपरि पुंज प्रभाको परै उमग्योई। देखतही अति रीझके चायसों जायतहां मनमेरो लग्योई॥ सूररह्यो अति साहस कै कविकृष्ण कहैं न डराय भग्योई। चूरभयो चपि चूरनसो पै तऊ न मुरयो मुरवान पग्योई २३४॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० पायँमहावरदैनको नायनबैठीआय॥
फिरिफिरिजानिमहावरी एँड़ीमीड़तजाय २३५

यह नायनकी सहस अरुणाई को अधिक सखी सखीसों कहति है नायकहूसों कहै तो संभवहै॥ कवित्त॥ मेंहदीहूदैवे चन्द्रमुखी के बरणहोत प्यारीके चरण नवनीतहूंते नरमें। सहजललाई काशीराम बरणी न जाय जिनके निहारें कविहूकी मति भरमें॥ एँड़ी ठकुराइनिकी नाइनि गहति तब ईंगुरसो रंग दौरिजात दरवरमें। दीनी है कि दैबी है निहारे शोचे बार बार बावरी सी है रही महावरके कर में २३५॥ मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४॥

दो० कोहरसीएँड़ीनकी लालीदेखिसुभाय॥
पायमहावरदेनको आपभईबेपाय २३६

यह नायकाकी एँड़िनकी शोभा सखी नायकसों कहै॥कवित्त॥कोहरकहांहै बंधुजीव को बिलोकियो चाहै लाजनते कमल मुदित फूलि फूलि कै। मानिक पँवारी बिम्ब कैसें पटतरहोत ऐसी द्युति सहज उठति ऊलिऊलिकै॥ चाइन सों पाइन महावर लगायवेको आई ठाकुराइन निकट अनुकूलिकै। कहै कविकृष्ण चारुबदन बिलोकतही नाइन बिचारी गई सबसुधि भूलिकै २३६॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरु २७ लघु १४॥

दो० अरुणबरणतरुणीचरण अँगुरीअतिसुकुमार॥
चुवतसुरँगरँगसीमनो चपिबिछियनकेभार २३७

यह चरणांगुलीनकी शोभा नायक सखीसों कहतहै नायकाहूसों कहै सखी अथवा कहै कविकी उक्तिहोय॥ कवित्त॥ मन्दगति हरै कलहंस न लहत कल समद गयंदनको गरवगरत है। कुशा मगमाप्यारे चारुचरण निहारे वाके जलज ... जियलाजहि धरत है॥ अतिसुकुमार तरुणीकी पग अँगुरीन ऐसी अरुणाई को उजास उघरतहै। मेरेजान परचो बिछियान को अपार भार ताहीसों उमँगरंग निचुरचो परत है २३७॥ मराल अक्षर ४२ गुरु ८ लघु ३४॥

दो० पगपगमगअगमनपरत चरणअरुणद्युतिझूलि॥
ठौरठौरलखियतउठे दुपहरियासेफूलि २३८

यह नायकाके चरणन में अरुणता की अधिकाई सखी नायक सों कहै नायक नायकासों कहै सखीसों सखीनायकसों सखीसोंकहै॥ कवित्त॥ प्यारीके

पगन पाय ऐसी अरुणाई ताते सुगधिवधून दिनसाँझ करि भाष्यो है। वागूहै कढ़न वाके शिशिरलुनानहूमें किशलय अलीतोरिवेको अभिलाष्योहै॥ चिन्तामणि चांदनी बिछौना पर आवैलाल मखमल की बिछौनामनु नाहिं नाख्यो है। चरण धरतवाके आंगनपटिकवन्ध मानौलाल विद्रुमदलनि बांधि राख्योहै २३८॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो॰ सोहतअँगुठापायके अनवटजस्योजराय॥ जीत्योतरवनिदुतिसुढर पस्योतरनिमनोपाय२३९

यह नायका के शृंगारका आरम्भ है सो एकही अनवट पहरचो है ताकी उपमा सखी नायकासों कहतिहै॥ सवैया॥ प्यारी शृंगार सवाँरन बैठी अचानक आयो तहां दधिदानी। ज्योंहुतीत्योंहीं रहीनवनागरि नन्दकिशोर के रूप लुभानी॥ नीको जराव अनौटलसे पगके अंगुठा उपमा सो बखानी। पायँपरचो है मनो रविआयकै तेजकी हारि तरचोनासों मानी २३९॥नायक अक्षर ४४ गुरु४लघु४०॥

दो॰ सरसकुसुममड़रातअलि नझुकिझपटिलपटात॥ दरसतअतिसुकुमारतापरसतमनुनपत्यात २४०

यह सुकुमारता विशेष है अरु कोऊकसखी नायकासों अनभिज्ञ जानत है सो नायक की सखी भ्रमरके प्रसंगकरि अन्योक्ति में वाको भ्रम निवारण करति है॥ कवित्त॥ सुखको अगार उपवनको शृंगार चारु सौरभ विविध उमगत जाको गात है। सरसको सुमनु सरस अति शोभासन्यो निरखि लुभानो अलिदेखे न अघात है॥ कहैं कवि कृष्ण अतिरीझपग्यो आसपास रहै मड़रानो न झपटि लपटातहै। दरसत ताकोतन अति सुकुमार तातें परसत वाकोमन क्योंहूं न पत्यातहै २४०॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो॰ भूषणभारसम्हारिहै क्योंयहतनसुकुमार॥ सूधेपायँनपरतधर शोभाहीकेभार २४१

यह सुकुमारता है सखी नायक सों कहतिहै कि भूषण पहिरत विकल होय याते वेगचलै॥ कवित्त॥ बोलति चलनि चतुराई चितवनितिन त्योंहि नाहिंचित औरठौर ठहरातु है। वाको अंगजवटि जुओपीतिय मेलऊहि तेऊ उपमादै और सुकवि सिहातु है॥ कूरता निहारि सुकुमारजी विचारि यह कीनेवित भूषणहि भूषणसो गातुहै। सकिहै सम्हार कैसे आभरण भारपाई आभाहूको भारनसम्हारयो तनजातुहै २४१॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मैंबरजीकैबारतू इतकितलेतकरौंट ॥
पँखुरीलगैगुलाबकी परिहैगातखरौंट २४२

यह नायका विश्रब्ध नवोढाहै सपने में थिरता नाहीं याते सखी डरदिखाय शयन करावति है ॥ सवैया ॥ मैंबरजी बहुवार अहे नहिं मानत तू सो कहाधौं करैगी। लेतकरौंट इतै मुरि क्यों अरी उरकोलौं इतैक धरैगी ॥ कोमल आपने अंग निहारि तबै सुकुमार सुक्यों सम्हरैगी। पांखुरीगात गुलाबकी जो गड़िजैहै कहूं तौं खरौंट परैगी २४२ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥ यह नायक के हृदय में नायका बसै ॥

दो० नजकधरनहरिहियधरैं नाजुककमलाबाल ॥
भजतभारभयभीतह्वै घनचंदनबनमाल २४३

यह नायक के हृदय में जोनायका वसति है ताविपरीतको अधिक सखी सखी सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ निजभक्तनके हितको कमलापति संततचित्त विचारकरैं अतिचन्दन अंगलगावैं नहीं बहुफूलनकी नहिं मालधरैं ॥ अरु जो कबहूंक शृंगार सजैं कवि कृष्ण तऊ कलकैसपरैं। यह शोचहिये निशियोस डरैं अति नाजुक श्रीमति भारभरैं २४३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० छालेपरिबेकेडरनि सकतनहाथछुवाय ॥
झिझकतहियेगुलाबके झमाझमावतपाय २४४

यह नायकाके चरणनकी सुकुमारता सखी नायकासों कहति है सखीहू सों कहै ॥ सवैया ॥ पौनलगै अलिपंखको होति चलाचल कैसे बयारकरैं। कृष्णकहै कहूंकेशरि अंग लगायेतौ सौति उछाहभरैं ॥ प्यारीके नाजुक पायँ निहारिकै हाथ लगावत दासीडरैं। धोवतफूल गुलाबकेलै पै तऊ झझकै मति छालेपरैं २४४। मराल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥ शिक्षा ॥

दो० लग्योसुमनह्वैहैसफल आतपरोसनिवारि ॥
बारीबारीआपनी सींचसुहृदतावारि २४५

सखीको वचन नायकासों है शिक्षारूप ॥ कवित्त ॥ बारीहै न बावर तू देतलड़वा वरयो क्यों मान करिबेको उरमें सरविचारिये। अबहीं तौं नेह बेलि नवल लगाई ताहि जतन जतन दृढ़कैरिपोषि पारिये ॥ लाग्योहै सुमन सुतौ होहिगो सफल अब कहै कविकृष्णरिसआतप निवारिये। सीखमानिमेरीमति सौतिनुके बौतेकरे प्यारी

प्रीति रसहीसों सींचि हित वारिये २४५ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० तूरहिहौंहीसखिलखो चढ़नअटाबलिबाल ॥
सबहिनुबिनहींशशिउदै दीजतुअरघअकाल२४६

यह नायकाके मुखकी शोभा अधिकायहै सो सखी नायकासों कहतिहै॥सवैया॥ हौंही अटा चढ़िहौं शशिदेखन तू सजनी रहि आंगनही तिन । और जिनेकव्रती ब-निता सब देखत चंद्रउदो छिनुही छिन ॥ तो मुखदेख उछाह भरी सब देहिंगी अर्घमयंक उदैबिन । औरन को व्रतभङ्गकरै मति होहिगो पातक मान कह्यो किन २४६ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० दियोअरघनीचेचलौ संकटभानोजाय ॥
सुचतीह्वैऔरौसबै शशीविलोकैंआय २४७

नायकाके मुखकी शोभा सखी कहति है ॥ सवैया ॥ पूजि निशाकर अर्घदियो अब नीचे चलौ बलि संकटमाने । औरनकी दुचिताई मिटै जिन साध उपास मनोरथ ठाने ॥ चंद उतै इत तो मुखचंद किते बिनवै चित शोच समाने । वै अपने व्रत पूरेकरै जुरहीचकि आजुजैवर आने २४७॥ मदकल अक्षर ३१ गुरु १३ लघु२२॥

दो० कहालडैतेदृगकरेपरेलालबेहाल ॥
कहूंमुरलिकापीतपट कहूंमुकुटबनमाल २४८

यह नायका के नेत्रदेखि नायककी जो दशाभई सो सखी नायका सों कहतिहै प्रयोजन कि तेरी चाहहै तू चल ॥ कवित्त ॥ कहूं बनमाल कहूं गुंजनकी मालकहूं संगसखाग्वाल ऐसे हाल भूलगये हैं । कहूंमोरचंद्रिका लकुट कहूं पीतपट मुरली मुकुट कहूं न्यारे डारिदये हैं ॥ कुंडल अडोल काहि सुन्दरस बोलैं बोल लोचन हैं लोल मानों काहू हरिलिये हैं । घूंघटकी ओटह्वैकै चितई की चोटकरि लालनगोता घरीतें लोटपोट भये हैं २४८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पियमनरुचिह्वैबोकठिन नरुचिहोतशृंगार ॥
लाखकरोआंखिनबढ़ैबढ़ैबढ़ायेबार २४९

यह नायका शृङ्गार करिकै बिलंब करतिहै सो सखी नायकसों कहतिहै अथवा तियको शृङ्गार देखि याके ईर्षा भई सो सखी सों कहतिहै यातें प्रेमगर्विता होय ॥ कवित्त ॥ बैठ्यो कुंजसदन बिलोकत है तुवमग तेरो नाम मोहन रटत बारबारही ।

उठचलि हिलमिल मानिरंगरली अली मेरो कह्योमान अनगनति कहारही ॥ पिय मन वसिकरिवो यह कठिन अरु तनद्युति सरस ते साजहू शृङ्गार०। कहै कविकृष्ण कीजै लाखकयतन तऊ लोचन न बढ़त बढ़ाये बढ़े बारही २४९ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० गहलीगरवनकीजिये समैसुहागहिपाय ॥
जियकीजीवनजेठसों माहनछांहसुहाय २५०

यह सखीकी शिक्षाहै अरुज्येष्ठाके भेदमें यासों नायककों हेतु अधिकजानिकै तिहूँको कहवो सम्भव है ॥ सवैया ॥ आलिहौं समझावत तोहिं यहै तजियालकहा सुख देइ हमें। कलक्यों न कहै वलियौवनको मनमोहनसों मिलि क्यों न रमें॥ छड़-चावरी पाय सुहागसमौ जिन येतौ गुमानधरै जियमें। सवको वह जेठमें जीवनिमूरि सुछाँह सुहाय न माह समें २५० ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० सघनकुंजघनघनतिमिर अधिकअँधेरीराति ॥
तऊनदुरिहैश्यामयह दीपशिखासीजाति २५१

यह नायका नायक सघनकुंजनमें निरशंक वैठे हैं सो गुरु सखी नायक सं ना-यकाकी दीप्तिको वर्णनकरि शिक्षाकराते हैं अरुनायकें सखीसों कहै है वा नायकको लेआव अथवा कुंजमें लैचलि तहां सखीको कहवो सम्भवहै ॥ सवैया ॥ वाके समीप नहींहूदुरैं लखिलेनवे दूरहितें उपहासी। कीजै कहा वसुहैकछु जो विधि या निधि दीपतिहै परकासी॥काहूकी आंखिन मूंदिन जानतहू वलिजाऊंनहूजे उदासी लाऊं सकैसे अँधेरहू मांझ उजेरी जू नागरि दीपशिखासी २५१ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० फूलीफालीफूलसी फिरतजुविमलविकास ॥
भौंरतरैयाहोहुगे चलततोहिंपियपास २५२

यह मनायवो सखी नायकसों कहति है ॥ कवित्त ॥ निरखि निकाई तेरी हौंतो हौं विकाई वलि तूहूअलवेली कछू मेरो कह्यो करैगी। तेरी तन द्युति आगें रति न रतीकु लागै सांची कहिकोलौं ऐसो हठ उरधरैगी ॥ फूलीफाली फिरत शृङ्गार सजैं सौति तेरी तिनके कुमानकोहि तूधौं कवहरैगी। भौंरकतरैया सम दे खियेंगी प्यारी सव हितुकारि जवतू पियाकी ओर ढरैगी २५२ ॥ शृङ्गार अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० तनभूषणअंजनदृगनपगनमहावररंग॥
नहिंशोभाकोसाजियतुकहिबेहीकोअंग २५३

यह नायकाके अंगकी स्वाभाविक शोभा सखी नायकासों कहति है॥कवित्त॥ सहज अरुण गुलफननतें उठतछटा तिनके निकट कहा जावककोरंगुहै। गातकी गुराई आगे कञ्चन के आभूषन फीके से लगत रंचशोभा को न संगु है॥ अंजनहूं आंजेबिन नैनकजरारे दीखें खंजन अनेकनको होत मान भंगु है। सो तन शृँगार कछु शोभाकों न साजियतु अवहीं अजान अहेवातहीको अंगुहै २५३॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० वेंदीभालतमोरमुँहसीससिलसिलेबार॥
दृगआंजेराजैखरीएहीसहजशृँगार २५४

यह नायका की सहजकी शोभा सखी नायक सों कहतिहै॥ कवित्त॥ केसरि की वेंदी भाल भौंह मधि राजत है सुरंग कपोल तिल सोहत अपार हैं। पान भरे आनन कटाक्ष दृगकानन लौं सोहैं कच श्याम मखतूल कैसे तार हैं॥ वेसरिको मोती छवि नेह उझकावनको भरमी सुकवि अंगअंग सुकुमार हैं। लाखहीकी चुरी यह लाखनु नहति अरु सादगी की सादगी सिंगार को सिंगारहैं २५४॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० खरीपातरीकानकीकोनबहाऊबान॥
आककलीनरलीकरैअलीअलीजियजान २५५

यह नायका को अन्यासक्त जानि नायकके मनमें भ्रमभयो है सखी निवारन करति है॥ सवैया॥ वोलसिरीरुख वंधन नाहिंनै गंधसुहात न गन्धफली को। आरति मालतिकी न रती लवलेश न आवत है लवलीको॥ बारही दूषन दैनवकै घसिकोन कहाऊं कनैर कलीको। माधुरीकी मधुराई वँध्यो न चलैचित अंकाकी ओर अली को २५५॥ मराल अक्षर ३३ गुरु १४ लघु २०॥

दो० तोरसराच्योआनबसकहैकुटिलमतिकूर॥
जीभनिबौरीक्योंलगैबौरीचाखिअँगूर २५६

नायकाको अन्यासक्त निश्चय जानि नायक सखीसों कहै सो सखी भ्रमनिवारण करति है॥ सवैया॥ तेरोही ध्यानधरै नंदनंदन कानननहूं सुनै तेरी कथा है। तो रसरंग मैं पागि रह्यो निशिवासर तेरोई रूप सरा है॥ ताहि तू और

सों राच्यो कहै काहि मोसों इहामन आय कहा है। यावरी देखु विचारि हिये कोउ दाखहि खाय निमोरिहि चाहै २५६॥ मंडूक अक्षर ३० गुरु १८ लघु १२ नायका की चेष्टा॥

दो० डोरीलाईसुननकीकहिगोरीमुसकात॥
थोरीथोरीसकुचसोभोरीभोरीबात २५७॥

नायका मौढ़ा लि नायककी चेष्टा देखीहै सो सखी सखीसों कहतिहै॥ सवैया॥ जादिन ते यह सांवरो नैनसों नैन मिलै मुसकाय गयो है। तादिनतें कवि कृष्ण कहैं मन वाहीके हाथ बिकाय गयोहै॥ थोरीसी लाज गहै हित चीकनी भोरीसी बात बनाय गयो है। कानन को अब वे बतियां सुनिवेही की डोरी लगाय गयो है २५७॥ बानर अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० जौलौंलखौंनकुलकथातौलौंठहराय॥
देखेआवतदेखहीक्योंहूरह्योनजाय २५८॥

यह नायका मौढ़ा अपनी इढ़ती सखी सों कहति है अरु नायकाको स्वरूप ऐसो सुन्दर है जो देखेते क्योंहू नाहीं रह्यो जातु नायका को वचन सखी सों सखी को वचन नायका सों सम्भव है कि ताहि देखत नाहीं तौलों कुलकथा दृढ़ देखेते क्योंहूं रह्यो न जायगो॥ सवैया॥ जौलौं न डीठपरे मनमोहन हाने वदौं सखि तौलौं सयानहिं। ठीक जुठानि पतिव्रत को करिलै कुलकानि कथा के बखानहिं॥ लोचन क्योंहू न रोके रहैं जब देखति वा मृदुमूरति कानहिं। देखे बिना न रह्यो परै कैसहू मेरो कह्यो किन सांचकै मानहिं २५८॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० रह्नसक्योकसकरह्योबसिकरलीनोमार॥
भेददुसारकियोहियोतनद्युतिभेदीसार २५९॥

यह नायकाकी तनद्युति सखी नायकसों कहतिहै॥ सवैया॥ राधिका रंगभरी को मनो विधि तीनहू लोकको रूप दियोई। ताहि अली अवलोकतही विधिनैनन मेम पियूष पियोई॥ यद्यपि कैतो रह्यो कसकै धरिकै अतिधीरज मेरो हियोई। तद्यपि वा तनकी द्युति भेदकसारने भेद दुसार कियोई २५९॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥ नायकाको वचन नायकासों॥

सो० तोतनअवधिअनूपरूपलग्योसबजगतको॥

मोहगलागेरूप दृगनिलगीअतिचटपटी २६०

यह नायका के रूपसों नायक के नेत्रलगे हैं सो अपने नेत्रनकी तलफनि कहति है नायक को वचन नायका सों ॥ सवैया ॥ सुंदरताकी जुहीपरभावधि तैं रतिकी धुति पायतुपेली । को रमणी रमणीपतिहूपुर राधिके तासम होय जुहेली ॥ तो तन सोहै लुनाईकी खानि लयो तिहूंलोकको रूप नवेली । त्यों तिह रूप लगे मम नैन लगी भ्रम नैननि त्यों तलबेली २६० ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ आलंबनि भाव ॥

दो० गलीअँधेरीसाँकरीभोभटभेराआन ॥
परेपिछानेपरसपरदोऊपरसपिछान २६१

यह अँधेरी गली में जाभांति भेंटभई सो सखी सखीसों कहतिहै सो परस्परको पहिचानिवो दोउनको आगम मिलापहै यह व्यङ्ग नायका परकीया ॥ सवैया ॥ रैन अँधेरी घने घुमड़घन भूमि महातम पुञ्ज छये हैं । तैसीये सांकरी लांबी गली भटभेर अचानक दोऊ भयेहैं ॥ गातसों गातही लागतही जिय जानिगये लपटाय गये हैं । राधिका माधोजू माधोजू राधिका आपहीतें पहिचान लये हैं २६१ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० उयोशरदराकाशशीकरतक्योंनचितचेत ॥
मनोमदनक्षितिपालकोछांहगीरछबिदेत २६२

यह मानवती सों सखीको वचन नायका सों मानछुड़ायवे को प्रयोजन ॥ सवैया ॥ बलिया जु सुहानी राकाकी रैन विहारसमौ सुखसाजतहै । वह देखरी इंदु उदोतमयी अरुणाई गहे छबिछाजतहै ॥ अवलोकतनाहिं रिसैन तियान की मान कहूं डरभाजत है । यहमानो मनुमदा क्षितिपालको मानिकछत्र बिराजत है २६२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० डिगतपानडिगलातगिरिलखिसबब्रजबेहाल ॥
कम्पकिशोरीदरशकेखरेलजायेलाल २६३

यह सात्त्विक भाव सखीको वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ लोपसुन्यो बलिकै मघवा तब कोपिकै मेघसबै मुकलाये । गोधनकान्ह धरयो तबही सबके उरके भय भूरि भगाये ॥ पानडरे डगुलात लख्यो गिरि लोगसबै ब्रजके अकुलाये । गोरी किशोरी निहारिकै कंपतिगात खरेनँदलालनजाये २६३ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो॰ सुरतिनतालनतानकीउठ्योनसुरठहराय ॥
धैरीरागबिगारिगोबैरीबोलसुनाय २६४

यह सात्त्विकभाव नायका को वचनसखी सों अरु सखी को वचन नायकासों होय सो लक्षितासखी सखीहूसोंकहै तो सम्भवहै परकीया॥ सवैया ॥ लेकर बीन प्रवीनतिया सुरसाधिकै गानकोठाट ठयो है। द्वारपै आयकै ताहीसमै मनमोहन काहू की नाथ्यलयो है ॥ तानकहूं अरुतालकहूं सुरतोकहू और तें और भयो है। बैरी अचानक बोलसुनायकै नंदको राग बिगारि गयो है २६४ ॥ शार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३५ ॥

दो॰ ध्यानआनढिगप्राणपतिमुदितरहतिदिनराति ॥
मुलकिकँपतिपुलकतिपलकुपलकुपसीजतजाति २६५

यह नायका विरहिनी ध्यानकर मिलसे तबहीं सात्त्विक भाव होत है सो सखी सखीसों कहति है सखी नायकासों कहै तौहू संभवहै॥ सवैया ॥ वा हरि बिछुरेगति ऐसीभई सुवखान कहां लगकीजै। ध्यानही ध्यान में चंदमुखी मिलि प्राणप्रिये रसरंग में भीजै ॥ रैनदिनारहै मोदभरी वहै कोहै वियोगिनि क्यों तन छीजै। कंपित है-कवहूं ललकै कवहूं पुलकै कवहूंक पसीजै २६५ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो॰ स्वेदसलिलरोमांचकुशगहिदुलहीअरुनाथ ॥
हियोदियोसँगसाथकेहथलेवाहीहाथ २६६

यह विवाह समय दोउन के अति सनेहके आधिक्यतें सात्त्विकभाव भयोसो सखी सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ मंडपमण्डल तीरथ साधिकै वेद विधान सों दानदियोहै। स्वेदभयो सोई नीर नयो उलहै फलकै कुशपुञ्ज लियोहै ॥ मैनमुनिंद भयोगपढ्यो रति केलि हिये अभिलाष कियो है। दोउनलौं अपनो अपनो योहियोहथलेवाई हाथ दियोहै २६६॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो॰ तच्योआंचअतिबिरहकीरहेप्रेमरसभीज ॥
नैननकेमगजलबहैहियोपसीजपसीज २६७

यह नायका अथवा नायक वियोगतें अँसुवा बहतहैं तिनको उत्प्रेक्षा करत हैं सखी सखीसों कहति है॥ सवैया ॥ जादिनतें ब्रज नागरिको मन नंदकिशोर के नेहनह्यो है। आंच तच्यो विरहानल की हितकेरसमें अति भीजि रह्यो है ॥ तामें

तरंग उमंग उठ्यो तोहि ऊपर प्रेम नुराग रह्यो है। तातें पसीज पसीजहियो विविनैनन के मगनीर बह्यो है २६७॥ मराल अक्षर १४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मैंयहतोहींमैंलखीभक्तिअपूरबबाल॥
लहिप्रसादमालाजुभौतनुकदम्बकीमाल २६८

यह सात्त्विकभाव सखीको वचन नायकसों परकीया लक्षिताहाय॥ सवैया॥ को रिझवारि न प्रेम पगी रँग लालन के रँग लाल भई है। को न छकी छवि देखि गुपाल की को वनिता न विहाल भई है॥ मैं निरखी यह तोतन आज अपूरव भक्तिरसाल भई है। मालप्रसाद की पावतही सब देह कदंब की माल भई है २६८॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० नेकउतैउठिबैठियेकहारहेगाहिगेहु॥
छुटीजाततुहदीछिनुकमहदीसूकनदेहु २६९

यह नायक को देखि नायकाको सात्त्विकभाव भयो है सो सखी नायक सों निवेदन करतिहै नायकाहू सनेह के आधिक्यते नायकसों कहतिहै॥ सवैया॥ आजलों कैसेहू जानिपरी न चली जबते रसरीसिचला। देखि तुम्हें उमँग्यो अवहीं करपल्लव छोरन स्वेदजला॥ बैठहु नेक इतै उठिकै उघरी यह आवति प्रेमकला। जातछुटी अवहीं नुहदी महदी छिनु सूकन देहु लला २६९॥ मद कल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० पहरतहींगोरेहिगरेयोंदौरीद्युतिलाल॥
मनोपरसिपुलकितभईमौलसिरीकीमाल २७०

यह नायक की माला स्पर्शते नायकाके सात्त्विक भाव भयोहै सो सखीनायक सों कहतिहै॥ कवित्त॥ सौरभ सहित चुनिचुनिकै कुसुमचारु अपने करन मन मोहन गुही बनाइ। मैंतौजायदीन्हीं उनलीन्हीं अति आदर सों पहिरी हिये में प्राणप्यारी हितसरसाइ॥ कृष्ण प्राणप्यारे के गोरेगरे ताहि छिन उपजी नवल द्युतिरही ऐसी छवि छाइ। मेरे जानि लालमौलसिरी की ललित माल पुलकित भई वाके तनको परसपाइ २७०॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० हितकरतुमपठियोलगेयाबिजनाकीबाय॥
टलीतपतितनकीतऊचलीपसीनोन्हाय २७१

यह नायक के बीजनाकी बयारलगे नायका के सात्त्विक भाव भयो सो सखी

नायक सों कहति है॥ सवैया ॥ मोरपखो उतको रुचिकै दितकै पठयो तुम प्यारे विहारी। ताहि बिलोकतही तियकी तनताप टरी अँगपे मद भारी॥ हौंतो बिलोकि अचंभैरही अबलौं न कहूं गति ऐसी निहारी। वा बिजना की बयार लगे वह न्हाय पसीना के नीरमें नारी २७१॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १२ लघु २३॥

दो० सहितसनेहसकोचसुखस्वेदकंपमुसकानि॥
प्रानपानकरिआपनेपानधरेमोपानि २७२

यह नायकाको पानदेत नायका के सात्विकभाव भयो अरु नायकके प्राण वा त्रिहँसनि को देखि वाके वशभये सो सखी सों नायक कहत है॥ सवैया॥ वा मृगलोचनि के सब अंग अनंग विलास वसीकृत हेरे। स्वेद सकोच सुने कवि कृष्ण सनेह भरे सुखपुंज घनेरे॥ कंपतपात कछू मुसकात चढ़ायके भौंह विलोचन फेरे। मोकरपान दयो हितसों उन प्रानलपे अपनेकर मेरे २७२॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० यहबसंतनखरीअरीगरमनशीतलबात॥
कहिक्योंभलकेदेखियत पुलकपसीजेगात २७३

यह सात्विकभाव देखि सखी नायकसों कहतिहै परकीया लक्षिता जानिये॥ कवित्त॥ सोहिव समान में यह तो बसंतऋतु नाहिंनै गरम अरु शीतलनि अति है। कहै कविकृष्ण वलि हमसों तो सांची कहि काहेते छबीली भई तेरी ऐसी गतिहै॥ कबहूं तपत गात कबहूं पुलकहोत कबहूं पसीजआवै कबहूं कँपति है। जानिहैरी जानी हितसानी अरसानी रहि देखि दृगिदानी प्रेम रस में पगति है २७३॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४॥

दो० ऊंचेचितैसराहियतुगिरहकबूतरलेत॥
झलकतदृगमुलकतबदनपुलकततनकिहिहेत २७४

यह नायकको कबूतर देखि नायकाको सात्विकभाव भयो सो सखी नायका सों कहति है परकीया लक्षिता॥ कवित्त॥ अंबर में शोभासाजि उड़त कपोत येतो बाजीकैरंगमें गिरह आछी लेतहै। तिन्हें सबै कोऊ नैन ऊँचे कर चाहत है रीभरीभि सुघर सराहत सहेत है॥ चाहिबो सराहिबो बिसरिगयो तोहि प्यारी देखतही देखिरही हेरे चितचेतहै। झलकत नैन मुलकत है अधर तेरे साँची अंगपुलकत सो किह हेतहै २७४॥ मंडूक अक्षर ३० गुरु १८ लघु १२॥

दो० रहौगुहीबेनीलखैगुहिबेकेत्योनार॥
लागेनीरचुचानजेनीठसुकायेबार २७५

यह नायक सखी वेष ह्वैके नायकाको शृङ्गार करनलाग्यो बेनी गुहति सात्त्विकभाव उपज्यो तब नायकाने जानी सो नायकसों कहतिहै॥ सवैया॥ गोपीको वेष बनाय गुपालजू श्रीवृषभानुसुता ढिग आये। हौंसजिजानिन नीके शृंगारके कही सुकरौं कहि बैन सुनाये॥ बेनी गुहावत प्यारी कही सुघराय इतेकितते तुम पाये। नीर चुचान लगे अवहीं सतकारे से वारजे नीठ सुकाये २७५॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० राधाहरिहरिराधिकाबनिआयेसंकेत॥
दंपतिरतिबिपरीतसुखसहजसुरतहूलेत २७६

यहलीला हावभाव रतिविपरीत समय सखीसोंकहै॥ कवित्त॥ दंखिवेको देह द्वैपै एकमन एकप्राण रूपशील वैसगुण चातुरी समेतहैं। जैसे दोऊ सांचे वनराचे मैगदीलेगे मनो आजलौं न देखे कहो ऐसे हियहेत है॥ राधामाधो माधोराधा अदलबदल वेष बनि बनिआये केलि केलि के निकेतहैं। कहै कविकृष्ण दोऊ सहज सुरतिकरि रति विपरीतके विविध सुखलेतहैं २७६॥ त्रिकल अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३०॥

दो० तजीशङ्कसकुचिनरहति बोलतअतिवकुबाकु॥
दिनछनदाछाकीरहतिछुटतनछबिकोछाकु २७७

यहि नायका के छबिको अर्व है सो सखी सखी सों कहतिहै मदइव जो नायक की छबिको छाकु सखी कहैतो लज्जिता होय॥ सवैया॥ कछु बूझत बातही ऊतर देत न लाइ दई अनिमेष चकै। अरु कानिकरै न अलीनहूं की तजिलाज भरोखनि है झझकै॥ सब शङ्क तजी सकुचै न हिये मुह आवै सुबाकु कुबाकु बकै। रहै रैन दिना वृषभानु सुता छबि छाकछकी न छिनौछकै २७७॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु ३२॥

दो० रहीदहेंडीढिगधरीभरीमथनियांबारि॥
फेरतकरउलटीरईनईबिलोवनहारि २७८

यह नायका को विभ्रम देखि सखी नायकसों कहति है सखी सखी हूसों कहै तौहू संभव है॥ सवैया॥ पास दहेंड़ी धरीये रही जलसों भरिकै जुमथानी लईहै। थंभसों नेती लपेटिदई उलटीकर फेरतताम रईहै॥ मोहि तो लागत नीको

मश उर पूरण प्रेमकी रीति ठई है। सांवरी मूरतिकी रिझवारिनई तू विलोकनहार भईहै २७८॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ कुट्टमित॥

✓दो० लहिसूनेघरकरगहतदिखादिखीकीईठि॥
गड़ीसुचितनाहींकरतकरललचौंहीडीठि २७९

यह सुरतांत रससमय नायका की जो चेष्टा देखी सो नायक सखीसों कहतहै परकीया कुट्टमितहाव॥ सवैया॥ देखादी देखीकी ईठि अचानक डीठि परी अकिली गृहमाहीं। साहसकै अपने उरमें अति मोदित जाय लई गहि बाहीं॥ लै सिसकी झहराई करौ उन तीक्ष्णनैन किये चहुँघाहीं। कैलल चावनिडीठिकरी वह नाहीं येते टरै अवनाहीं २७९॥ व्यालअक्षर ३७ गुरु १० लघु २७॥

दो० हरषिनबोलीलखिललननिरखिअमिलसँगसाथ॥
आँखिनहींमेंहँसिधर्योशीशहियेधरिहाथ २८०

यह बोधकहाव नायका मौढ़ा परकीया नायक को देख चेष्टा बनी सों सखी सों सखी कहति है॥ सवैया॥ ऊखन साथमें देखि गुपालहिं गोपकुमारिकरी चतुराई। बैन कछू न कहे मुखते लखि फूली मनो निधि नवनिधिपाई॥ हाथपर्यो हियपै पहिले पुनि शीशछुयो रसरीति बढ़ाई। आंखिनहीं में कछू बिहँसी पियको जियकी सबबात बताई २८०॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० लखिगुरजनबिचकमलसोंशीशछुवायोश्याम॥
हरिसन्मुखकरिआरसीहियेलगाईबाम २८१

यह नायका परकीया मौढ़ा दुहुँन जो चेष्टाकीन्ही सो सखी सखी सों कहति है॥ सवैया॥ आज दुहूं मिलिकै सजनी कछु सैननहीं समझ्यो समझायो। गोरीलखी गुरुलोगनमें सरसीरुह सों शिरश्याम छुवायो॥ सो लखिकै वृषभानु सुता दियो ऊतर भेद न काहुन पायो। कृष्ण कहैं हरिके सम्मुहें कर दर्पण बाम हियेसों लगायो २८१॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥ किलकिंचित्॥

✓दो० सुनिपगधुनिचितईइतैन्हातदियेहीपीठि॥
चकीझुकीसकुचीडरीहँसीलजीलीडीठि २८२

यह नायका आसमय नायकते देखी ता समयकी जो चेष्टा उनकी सो नायक सखी सों कहत है॥ सवैया॥ कामकी बामहूते अभिराम लसै दुति यौवन

की रससानी। न्हातही पीठ दिये अकिली सकिली धुनि मो पगकी पहिचानी॥ जा-छबिसों चितई यहि ओर सुकैसेहूं मोपै न जातबखानी। चौंकीचकी सकुची डरपी करि डीठि लजोंडी झुकी मुसुकानी २८२॥ पयोधर अक्षर २६ गुरु १२ लघु२४॥

दो० बालमबारेसौतिके सुनिपरनारिबिहार॥
भोरसुअनरसरिसरली रीझखीझइकबार२८३

यह नायककी बहु नायकता सुनिकै नायकाके दुःखभयो सो सखी सखीसों कहति है॥ सवैया॥ बैठी सखी जुसमाजमें प्यारी श्रृंगार के साजन सों सरसानी। काहूकही तुवसौतिके ओसरे आनयधूके गयो दधिदानी॥ सो सुनिकै कवि कृष्णकहैं रहसी बिलखी हुलसी उकलानी। एकहीबेर लखी मृगलोचनि रीझि खिझी मुसकानी रिसानी २८३॥ मराल अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० पतिरतिकीबतियांकही सखीलखीमुसकाय॥
करिकैसबेटलाटली अलीचलींसुखपाय २८४

यह नायका नायकसों सुरतारंभ समयजानि सखी कछु मिसकरि उठिचलीं सखीको बचन सखीसों॥ सवैया॥ चौपरि खेल खरी बनिता ब्रजराज बिलोकतही ललचानी। सैननसें कछु केलिकलोलकी बातकही मनमें न भुलानी॥ प्यारी अलीनकी ओर लखी हँसि यों रसभाव हिये सरसानी। देखि सबै सुखपाय चलीं अपने अपने गृहऊठि सुठानी २८४॥ बानर अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० लखिदौरतपियकरकटुक बासछुड़ावनकाज॥
बरुनबनागाढ़ेदगन रहीगुढ़ौकरिलाज २८५

सवैया॥ रतिमंदिर में नवनागरि कान्ह मिले रसरङ्ग हिये धरिकैं। दलुदौरत देख्यो तहां पियको कर वास छुड़ावनको अरिकैं॥ कविकृष्ण कहैं ठहरात तहां न सकी रहि धीरज को धरिकैं। गाहि ओट घने बरुनी बनकी रही नैननलाज गुढ़ौ करिकैं २८५॥ शार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६॥

दो० सकुचिसुरतिआरंभही बिछुरीलाजलजाय॥
ढरकिढारढुरिढुरिगई ढीठभईढिगआय २८६

यह प्रौढ़ानायकाकी सुरति सखी सखीसों कहति है॥ कवित्त॥ अतिअभिराम श्याम रति मंदिरमें बिहरत उमंग अनंग रङ्ग भरिकै। नखदान रददान चुंबन अधरपान आलिंगन करत अनेक भायभरिकै॥ सुरतके आरंभही लाजरती सखी

निपट लजाय जियगई कहूंढरिकै ॥ हाड़सुहियेमें गहि निग्रकहैं लजकै आय ठाढ़ीभई निपट हिठाई हीठढ़रिकै २८६ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० मौंहनग्रासतिमुंहनटति आंखिनसोंलपटाति ॥
ऐंचिछुटावतकरइँची आगेआवतिजाति २८७

यह सुरतारंभके समय मौढ़ा नायकाकी जो चेष्टा है सो सखी सों कहतिहै नायक सखीसों कहै तौहूं संभवहै ॥ कवित्त ॥ प्यारे पानि गह्यो आनि भौनमें अकेली जानि नैनन चढ़ायकै सतोनी सासैरत है। नैननईंसोहीं डीठि राखतहै सौहैं मुसकायकै लजोहीं अङ्ग अङ्ग ठहरात है ॥ भयो मन भायो ज्यों सुरत सुखपायोहिये आनंद बढ़ायो नेकनेकनि डरात है। झटकि छुटावै बांह मिलैगी चाहै मनमांह करै नाहीं नाहीं याही मिस नियरातहै २८७ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० दीपउजेरेहूंपतिहिं हरतिवसनरतिकाज ॥
रहीलपटछबिकीछुटन नेकोछुटीनलाज २८८

यह सुरतवर्णन नायक के तनकी छविको अधिक सखीको वचन सखी सों ॥ कवित्त ॥ तैसो प्रकाश रतिमंदिर के दीपनको तैसोई सगुह जगमगत रतनको। तैसी थे सुधानिधि से मुखकी निरखि जोति मोहनके मनभाव उमँग्यो अतनको ॥ प्रीतमबिहारीलाल लेबेको सुरतसुनि निजकरवसन झटकि हरयो तनको। छबिकी छटानहीं सों रही लपटाय राधे मानो उनहूंनकी छुटी न लाज तनको २८८॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० यद्यपिनाहिंनहींनहीं बदनलगीजकजाति ॥
तदपिभौंहहांसीभरिन हांसीहियठहराति २८९

यह सुरतारंभ नायका मौढ़ा सखीको वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ बैठी शृंगार सजे व्रजनारि अचानक मोहन आयो तहांहीं। पाणि गह्यो अवलोकि अकेली अलौकिक केलि कला चितचाहीं॥ यद्यपि वा नवनागरिके मुखलागी यहै जकनानन नाहीं। तदपि हांसीभरी भृकुटीन में वीसविसे ठहरात है नाहीं २८९ ॥मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० चमकतमकहांसीससक मसकझपटलपटानि ॥
येजिहरतिसोरतिमुकति औरमुकतिअतिहानि २९०

यह सुरत वर्णन नायक को वचन अथवा कवि की उक्ति ॥ कवित्त ॥ किल कनि मुलकनि हेरनि हरनिचितुचमकनि झमकनि धनि मुसकानि है। लवनिमि लनि औरसभरी कसकनि ससक मसक झपटनि सुखदानि है॥ लटकनि मटकनि दुरनि मुरनि कलि कुंजनि ललनि ललकनि लपटानि है। ऐसीरीति रतिसोई मुकति कहावति है मुकत कहावै और सोतो अतिहानि है २९० ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥ सुरतांत वर्णन ॥

दो० सकुचिसरकिप्रियनिकटतैं मुलकिकछुकतनतोरि ॥
करआँचरकी ओट कै जमुहानी मुँहमोरि २९१

यह सुरतान्त नायका मौढ़ा सखीको वचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ केलिकला कुशल कुरंगनैनी पिकबैनी जाकीछवि पर सौति वारि एक कोरिकै। शयनसोपागी अनुरागी पतिसंगजागी मैनके विलासन सों लेतचित चोरिकै॥ सखी सकुचि मनमोहनके निकट कछुक मुलकी अंगरानी तनतोरिकै। शोभा वह मोपै क्योंहूं जात न वखानी कर अंचरकी ओट जमुहानी मुंह मोरिकै २९१ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० लखिलखिअँखियांअधखुलन अंगमोरअँगराइ ॥
आधिकउठिलेटतिलटकि आलसभरीजँभाइ २९२

यह सुरतान्त नायका मौढ़ा सखीको वचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ शैनसुख पागी अनुरागी हरिसंगजागी शोभा सरसानी अरसानी जमुहात है। विथुरी अलक झुकी आवत पलकै मनमथकी झलकै अतिरस वरसात है॥ ललित कपोल पै लसत नीकी पीकलीक दोऊ भुजजोर मुँह मोर जमुहात है। अधखुली आंखिन सों आली तन अवलोकि आधीउठि सेजही लटकि लटि जात है २९२ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० नीठि नीठि उठिबैठिहूं प्योप्यारीपरभात ॥
दोऊनींदभरेखरे गरेलागिगिरजात २९३

यह सुरतान्त नायका सखीको वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ वृषभानुलली व्रजराजलला रतिसंगरमें निशि संगजगे। कवि कृष्ण कहैकुल कामकला बहु भाय विलास हिये उमँगे॥ उठिबैठिनि सेजपै नीठि तऊ उठिपै न सकैं अति मेम पगे। अति नींद भरे सरसातखरे बहुरयों गिरजात गरेही लगे २९३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० रँगीसुरतरँगपियहिये लगीजगीसबराति ॥
पैंडपैंडपरठठकिकै ऐंड़भरी ऐंड़ाति २९४

यह सुरतान्त सखीको वचन सखीसों जो सखी नायकसों कहै तो लक्षिता होय ॥ सवैया ॥ सब रैन जगी हरिकंठलगी रतिरंगरँगी अलसात खरी है। डग एक चलै फिरिकै चितवै मुरिकै अँगरात मरोर भरी है ॥ बिथुरी अलकैं झलकैं अमबारि झुकी पलकैं मुखडार ढरी है। लगि पीककी लीक कपोलन नीकै लसै अतिसारी सलोट परी है २९४ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० योंदलमलियतनिरदई दईकुसुमसोंगात ॥
करधरदेखोधरधरा उरको अज्योंनजात २९५

यह नायका सुरत समय मर्दित अति विकल भई है सो सखी नायकसों कहति है ॥ कवित्त ॥ सुख हैं सखीन विचदैके मोह धायकै खवाय कछु चाइ वर कीनी बसुबसु है। कोमल मृणालिकासी मल्लिकाकी मालिकासी बालिका जुड़ाहीं मांझ मानसकिपसु है ॥ जानेन बिभाति भयो कैसे बसुनेको बात देखो आय गात जातभयो किधौं असुहै। चित्रसी तुरासी यह चित्रनी बिचित्रगति कहाँ नयेरसिकधौं यामें कौन रसुहै २९५ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० लहिरतिसुखलगियेहिये लखीलजौंहींनीठि ॥
खुलतनमोमनबँधिरहीवहेअधखुलीडीठि २९६

यह सुरतान्त नायकाको वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ केलिकला सुखझेलि प्रभात लसी पर्यंकपै राधिका प्यारी। अंकलगी तऊ लाजपगी रही नारि निवाय महा छविधारी ॥ सोहैंचितैबेको मोहु हठ्यो तब नैसक भौंह उचाय निहारी। सावनिंदी अँखियां अधखोली चितौन हियेतें टरै नहीं टारी २९६ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० बिनतीरतिबिपरीतकी करीपरसपियपाँय ॥
हँसिअनबोलेहीदियो ऊतरदियोबताय २९७

यह रतिविपरीत है सो सखीको वचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ केलिकला कुशल कुरंगनयनीके अंग अंगकी निकाई द्युतिरतिकी रती करी। बहिरतअंतर विहरे विहरे विविध मदन महीपकी विभूत बढ़ती करी ॥ तैहीं रतिमंदिर में रावे के परसि पग रति विपरीत की पियारे बिनती करी। प्यारी मुसकाइ अ-

न बोलेही बतायो। दिया मीतमके जीकी चाहयाही में सही करी २९७ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पर्योजोरबिपरीतरतिरमीसुरतरणधीर ॥
करतकुलाहल किंकिणीगह्योमौनमंजीर २९८

यह विपरीत बर्णन नायका प्रौढ़ा सखी को वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ श्री वृषभानु सुता तनयौवन ज्योति जगे रति लाजन लागी। भौंहें बिलासनि हासनिकै हरिसाजन को सुख साजन लागी ॥ धीरमहा रतिसंगर में विपरीत रची रति राजनलागी। मौन गह्यो बिछियान तहीं रसना रसहीरस बाजन लागी २९८॥ पयोधर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० मेरीबूझतबाततूकतबहरावतबाल ॥
जगजानीबिपरीतरतिलखिबिंदुलीपियभाल २९९

यह नायका प्रौढ़ा रतिविपरीतकीनी सखीसों दुरावतिहै सो मवीण सखी जानिलई सो नायक सों कहति है ॥ सवैया ॥ हों हितूकै बलबूझतहूं तू बहरावत बातहीं मेरी। पून्योंको चंद उदोत करे तब कैसे दबै किये ओट अँधेरी ॥ तैं हरिसों विपरीत करी रति क्यों दुरिहै अवतो हमहेरी। नीकी है जानि परी सबको पियभाल लखी बिंदुली तियतेरी २९९॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४॥

दो० रमनिकह्योहठिरमनसोंरतिबिपरीतबिलास ॥
चितईकरलोचनसतरसगरबसलजसहास ३००

यह नायक ने रतिबिपरीत की बातसुनाई चितवनमें चेष्टा कीनी सो सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ बृषभानुसुता नँदनन्द लला रसकेलि कलान प्रवीणखरे। रति मंदिर में अति प्रेमपगे रतिकंत बिलासके रंगढरे ॥ रतिकी विपरीतकरैं रमनी हँसि यों जब प्यारे निहोरे करे। तब प्यारी किये लखि नैन तिरीछे गुमान भरी अरु लाज भरे ३०० ॥ मच्छअक्षर ४१ गुरु ११ लघु ३० ॥ सखीन को लखिबो ॥

दो० पटकीढिगकतढांपियतसोहतसुभगसुभेख ॥
हदरदछदछबि देतई हँसै दरदकी रेख ३०१

यह सुरति को चिह्न नायका दुरावति है सो सखी नायका सों कहति है ॥

सवैया॥ आज भट्टरतिरंग के मंदिर तू मनमोहन के सँगलागी। केलि विलासनि कै बड़िभागिन तैं रिझयो फलले अनुरागी॥ ढांकतक्यों पटकी हिगसों अनिसों हति चारुमभान सों पागी। देतमहाछबि की हदयों यह रेख रदच्छद की सद लागी ३०१॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० आजकछूऔरैभये ठयेनये ठिकठैन॥
चितकेहितकेचुगलयेनितकेहोहिंननैन ३०२

यह नायका के नेत्र सुरत चमकत देखि सखी नायक सों कहै तो लक्षिता होय नायकासों कहै तो खंडिता॥ सवैया॥ आलसके रसमें प्रियके रँग लालके रंग सुरंग भये हैं। देतकहै चितके हिनकी चुगली ठिकठैन नयेई ठये हैं॥ निंदत हैं अरविंदप्रभा अनुराग पराग में पागिगये हैं। होहिंन ये नितके सजनी दृग आज अपूरब ओप छये हैं ३०२॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० सुरतदुराईदुरतिनहिं प्रकटकरतरतिरूप॥
छुटेपीक औरै उठे लाली ओठअनूप ३०३

यह सुरत के चिह्न देखि सखी नायक सों कहति है परकीया जो नायका सखी सों कहै तो अन्यसंभोगदुःखिताहोय॥ सवैया॥ भूषणचारु बनायसंगे कच फूलगुहे रुचि आइबनाई। होत कहापलटे पटराधिके लीक कपोलन पोंछिकै आई॥ देतकहै रतिरंगकी भांति अनूपमकांति दुरैनदुराई। पान की पीक छुटे अधरानपै और कछूअगटी अरुणाई ३०३॥ मरकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० मोसोंमिलवतिचातुरी तूनहिंभानतभेउ॥
कहेदेत यहप्रगटहीं प्रगट्यो पूसपसेउ ३०४

यह नायका स्वेद लखिसखी सुरत भयो जानि कहतिहै लक्षिता जानिये॥ सवैया॥ आजपगी सुखपुंज में प्यारी निकुंज में केलिकरी मनभाई। पीक गई छुटि ओठनपै प्रगटी मुखमंडलपै अरुणाई॥ भेदकी बात कहैं किन भामिनी मोसों चलावत क्योंचतुराई। तोतन देतकहे प्रगटै यह पूसके मास पसेउ न्हाई ३०४॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० नटिनशीशसबिताभईलुटीसुखनकीमोट॥
चुपकरिये चारीकरै सारी परी सरोट ३०५

यह नायका लक्षिता मरगजी सारी देखि सखी नायकासों कहतिहै॥ कवित्त॥

रसकी उमङ्गभरी रङ्गभरी सोहति है अङ्गकी शिथिल द्युति अमिजल छाई है । झूमति झुकति अंगुराति जमुहाति मुसुकाति अरसाति सरसातयों सुनिकाईहै ॥ मोटेलूटी सुखकी प्रगटभई तेरेशीश क्यों तू मुकरति मनमथ की दुहाईहै । चुपक्यों न करै बलि येई तो करत चोरी जेतू आजसारी में सरोट पारिआई है ३०५ ॥ म-राल अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मोहिंकरतकतबावरीकियेदुरावदुरैन ॥
कहेदेतरँगरातकेरँगनिचुरतसेनैन ३०६

यह नायका के नेत्र देखि सखी कहै तो लक्षिताहोय जो नायक के विद्यमान नायकको सखी सों नायका कहै तो खंडिता होय ॥ कवित्त ॥ सुरतिके चिह्न च-तुराईसों लुकायतन भूषणबनायसमे बसन तुरत है । कृष्ण प्राणप्यारे के सनेह सरसानी तातें गातअरसाने रस उमँगि दुरतहै ॥ काहेको सयानी मोहिं बावरी करत अब किये तैं दुरावकहिं कैसेकै दुरत है । प्रगट पुकारे रंग रातके कहत येतो लोचन युगल मानो रंग निचुरतहै ३०६ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

√दो० लाजगरबआलसउमँगभरेनैनमुसकात ॥
रातरमीरतिदेतकहिऔरैप्रभाप्रभात ३०७

यह नेत्रन को भावदेखि सखी नायकसों कहै तो लक्षिताहोय जो नायका ना-यकसों कहै तो खण्डिताहोय ॥ कवित्त ॥ सारस तैं सरस लसत भरे आरस भ-हारस मगनहेरि हिये हरिलेत हैं । लालडोरे राजतहैं और उपसाजत हैं फूले मु-सकातहैं निकाईके निकेतहैं ॥ मैनकी उमंगभरे यौवन के रंगभरे लाज की तरंग भरे गरब समेत हैं । शंभुसुखपागे मिसजागे दृगतेरे बाम राती रमिरतकी प्रभात कहे देतहै ३०७ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० कोटियतनकीजेतऊनागरिनेहदुरैन ॥
कहेदेतचितचीकनो नईरुखाईनैन ३०८

यह नेत्रदेखि सखी नायका सों कहै लक्षिता होय ॥ सवैया ॥ तो मनमोहनसों मिलयों मनमें तबहीं छबिहीं लखिपाई । बूझत तोहि हिये हितु मानिकै मोसों च-लावत तू चतुराई ॥ कोटिउपाय करै किन नागरि नेहको डीठि दुरै न दुराई । नैनन मांझ रुखाई नई यह देत कहे चितकी चिकनाई ३०८ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० सहीरँगीलेरतिजगेजगीपगीसुखचैन॥
अलसौंहैंसौंहेंकियेकहैंहँसौंहैंनैन ३०९

यह नायकाके नेत्रन को भाव देखि सखी कहै लक्षिता॥ सवैया॥ मोसों छबीली छिपाव कहा परतच्छहीं छाती सों छैल लगाईहौ। देवकहै अलसौंहीं हँसौंहींसी आई रिसौंहीं हिये उमँगाईहौ॥ प्यारे पिया पर्यंकपै पारिकै प्रेम पियूष पिवाय पगाईहौ। कामकलोलनि कामिनि आजुकी यामिनि चारहू याम जगाई हौ ३०९॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४॥ युगल दर्शन॥

दो० नितप्रतिएकतहीरहत वैसबरनमनएक॥
चहियतयुगलकिशोरलखिलोचनयुगलअनेक३१०

यह युगलकी शोभा अरु दोउन के हितकी अधिकता सखी को वचन सखीसों कहति है॥ सवैया॥ नित श्री वृषभानु सुता नँदलाल विराजतहैं छवि पुञ्ज छये। कबि कृष्णकहैं मनशील वहिक्रम नागरताइक रंगरये॥ सुख देखि सिहात सवै सजनी विधिसों विनवैं अभिलाषभये। यह रूप विलोकिवेको तन मैं मतिरोमनि लोचन क्यों न भये ३१०॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० मिलिपरछाहींजोन्हसों रहेदुहुनकेगात॥
हरिराधाइकसंगही चलेगलिनमेंजात ३११

यह दोउनको मिलबो गली में जात एकही जानि परत है॥ कवित्त॥ दोऊ रसभीने रूपरीझे तरुणाई भरे दुहुनके नेह उमँगत गातगात हैं। दंपति करति चतुराई के चरित्रचारु और कौन जाने ये प्रवीननकी वात हैं॥ जहां परछांहीं तहां प्यारी यों विलोकियति जोन्हको प्रकाश तहां कान्हहीं लखातहैं। कहैं कविकृष्ण कुञ्जकेलिको निशङ्कभये दोऊ एक साथही गली में चले जात हैं ३११॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० तजितीरथहरिराधिका तनद्युतिकरिअनुराग॥
जेहिब्रजकेलिनिकुंजमगपगपगहोतप्रयाग३१२

यह युगल वर्णन॥ कवित्त॥ तीरथनि संका काहेको तु भटकत क्यों अटकत ब्रज शोभाकी हिलगमें। राधावनमाली की सरस गोरे श्याम द्युति सकल निकाई को लसत सारसंग में॥ तासों करि प्रीति यह निगम प्रसिद्ध विधि सिद्धि विनि शंकरसे निनहू ते अंगमें। डगडग प्रतिहोत प्रगट प्रयाग पग

जिनके परतिकेलि कुंजन के मगमें ३१२॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० उनकोहितउनहींबनै कोऊकरोअनेक॥
फिरतकोकगोलकभयो देहदुहूंजिवएक ३१३

यह दोउन के हितकी अधिकाई सखी सखी सों कहति है॥ कवित्त॥ आधे आधे कहिवेको राधे माधो लहिवे को आधो छिन राधातें न माधो बिछुरत हैं। ऐसो कछू नेम गह्यो मनमें न भेदरह्यो दुहुन के प्रेम बढ़यो कह्यो न परतहै॥ पलक में आय इत पलक में जाय उत पलक न लाय नेंट बिथ्यासी धरत है। राजाराम मेरे जान दुहूँतन एकप्रान काग आपूनरीव फिरवो करत है ३१३॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० प्रियसौंतिनदेखतदई अपनेहियसोंलाल॥
फिरतसबनमेंडहडही उहींमरगजीमाल ३१४

यह नायका की मालपाय बहुत प्रसन्नभई है सो सखी नायक सों कहति है प्रेम गर्विता होय॥ कवित्त॥ सौतिके लखत मनभावन मयाके दीनी उरतेउतारि परगटकीनी रतिहै। तबहीं ते रहसति बिहँसति हुलसति बिलसति लसत गुमान भरी अतिहै॥ मनमें मुदित फूली तनमें समात नाहि चल चित्त ब्रत अनुराग उभलतिहै। मरगजीमाला वही उर धरैं बालावह डहडही आलिन के झुण्ड में फिराति है ३१४॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० अपनेकरगहिआपही हियपहिराईलाल॥
नीलसिरीऔरैचढ़ी बोलसिरीकीमाल ३१५

यह नायक ने अपने हाथ बनाय बोलसिरीकी माला पहिराई ताहि पाइ याकी शोभा अधिकभई सो सखी नायकसों कहति है॥ सवैया॥ आपने हाथन बीनिके फूल बनाई गुही मन नाथ कन्हाई। माल सुबोलसिरी की रसाल सुगन्ध भरी अतिही छबिछाई॥ आलिन के गनमें लसिकै हँसिकै हठि प्यारी हिये पहिराई। ओपअनूप लही तरुनी बरनी न परै अनुराग निकाई ३१५॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० तीजपरब सौतिनसजे भूषनबसनशरीर॥
सबैमरगजैमुहुकरी उहींमरगजेचीर ३१६

यहनायका प्रेम गर्विता मरगजेचीर ताको गर्वभयो तातें शृंगार न कियो सो

सखी को बचन सखीसों कहति है ॥ कवित्त ॥ सौतिन हुलसि गनगौरिकी परब साधि भूषणवसन बहुभांतिन सुधारे हैं । तिलकतमोरवेंदी बेसर तरयोना सजि अंजनसों आंजि चारु लोचन अन्यारे हैं॥ कृष्ण प्राणप्यारे के रिझायबे को होड़ा होड़ा चपल कटाक्ष हाथभाइनसों ढारेहैं । उहीं एकराति मरगजे चीरहीसों सवही के नीके मुख अति फीके करिडारे हैं३१६ ॥ मदकल अक्षर३५गुरु१३लघु२२॥

दो० औरैगतिऔरैबचन भयोबदनरँगऔर ॥
द्योसकतेंपियचितचढ़ी कहैचढ़्योहैत्यौर ३१७

यह नायका नायकके प्रेमगर्वतैं काहूको मन आनतनाहीं सो सखी सखीसों कहै ॥ सवैया ॥ औरही चाल विलोकन औरही देखो यों आननहूरँग औरही। बोलत आनहीं भांति गुमानसों ज्यों निधनी निधि पाइकै बौरही ॥ बूझेहू बात के ऊतर देत न डीठिकहूं ठहरात न ठौरही । द्वैकदिनाते चढ़ी हरिके चित प्यारी चढ़ायेही राखत त्यौरही ३१७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० कियोजुचिबुकउठायकै कंपितकरभरतार ॥
टेढ़ीयेटेढ़ीफिरत टेढ़ैतिलकलिलार ३१८

सवैया ॥ ठोढ़ी उठायकरयो चितचायसों नंदलला अतिही अनुरागे । भाल लगावतही अंगुरीकर कम्पभयो अति हेत सों पागे ॥ आने न आने मनै तबतें न गनै कछु आपने प्रेम के आगे । टेढ़ीयें टेढ़ी फिरै मृगलोचनि टेढ़ोई टीको लिलार पै लागे ३१८ ॥ शार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६ ॥

दो० सुघरसौतिबसपियसुनत दुलहिनिदुगुनहुलास॥
लखीसखिनसोंडीठकरिसगरबसलजसहास३१९

यह नायका गुनगर्विता आपने गुनके गुमानते सौतिनके आगमको दुखनाहीं मानति प्रसन्नभई सो सखी तन चितवति है सो सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ रूपकी राशि सखीन समाज में सोहै शृंगार सजें ब्रजनारी । काहूकही सुघरायन कै तुवसौतिनैलीनों रिझायबिहारी ॥ यौंसुनिकै अतिही हुलसी गुन चातुरी की परमावधि प्यारी । लाज गुमानभरी मुसकाय कै रंचक डीठि अली तनडारी ३१९ ॥ वारनअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० दुसहसौतिसालीसुहिय गनतनाहिंबिहाय ॥

धरेरूपगुनकोगरब फिरतअछेहउछाय ३२०

यह नायका आपरूप के गुनके गर्बतें और को चित्तमें आनतनाहीं सो सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ नाह के स्याहमें प्यारी अछेह उछाहभरी पटभूषण ठानत। जानत है निहचै अपने जिअको वनिता करिहै नइहांनत ॥ रूपके यौवन के गुनके अभिमानतें आनहीं नाम न आनत । यद्यपि सौतियां सोल तऊ उरमें वह ती न रती दुखमानत ३२० ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० खलबढ़ईबलकरिथके कटैनकुबतिकुठार ॥
आलबालउरझालरी परीप्रेमतरुडार ३२१

यह प्रेमकी दृढ़ता सखी सों नायकाकहै अथवा नायककहै ॥ कवित्त ॥ देखत ही मूरति मधुर मनमोहन की नैननके मिलै मिल्यो मर अवदात है । आलवाल उरते प्रगटभयो प्रेमतरु दिनदिन झालरतु अति सरसातहै ॥ ताहि दूरिकरबेको कितने खलजन खगि कुबनि कुठार गहि कीनो उतपात है। कहै कविकृष्ण सबैथाके अति बलकरि नेक न घटत त्यों त्यों दृढ़ होत जात है ३२१ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० करतजातजेतिकघटनि बढ़िरससरितासोतु ॥
आलबालउरप्रेमतरु तितौतितौदृढ़होतु ३२२

यह सनेह के अंगमें दृढ़ता नायकाकी अथवा नायक को बचन सखीसों सखी नायकाहू सों कहै तो संभव है ॥ कवित्त ॥ आलवाल उरमें मनोज बयो नेहबीज ताते भयो आली प्रेम अंकुर उदोत है ।सुरति सलिल सोंच्यो याही ते उमंग उठ्यो दुहुनके प्रेम बढ्यो कह्यो न परत है ॥ पलक में आय इत पलक में जाय उत पलक नचाय नट बियासी धरत है । राजाराम मेरेजान दूहूंतन एक मान कागदग पुतरीन फिरबो करत है ३२२ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० मोहदयोमेरोभयो रहतजुजियमिलसाथ ॥
सोमनबांधनसौंपिये पियसौतिनकेहाथ ३२३

यह नायका मौढ़ा उराहनो नायका बचन ॥ सवैया ॥ जो मन मोहिं मथ कै दियो तुम तो जियसों मिलिकै रसभीजै । भेदरखो न स्वरूपसुभायमें प्रेमपियूष सदामिलिपीजै ॥ मैं अपनो करजान्यो यही अब अंतरहोत छिनै छिन छीजै । सोमन

जोरावरी करिमोहन सौतिनके कर बांधनदीजै ३२३ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० भयेबटाऊनेहतजि बादबकतबेकाज ॥
अबअलिदेतउराहनौंउरउपजतअतिलाज ३२४

यह नायका परकीया प्रौढ़ा उराहनौं नायक को विद्यमान नायका सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ नैननसों तनसों मनसों रहनेई मिले तबहूते सुखसाजनि। भूलिगईं सब वे बतियां हितपुञ्जन की बहुभांति बिराजनि॥ ये तजि नेह बटाऊ भये अब यारु बकैं सजनी बिनकाजनि। देत उराहनौं ऐसेन को अपने उरही चपिये अतिलाजनि ३२४ ॥ मदकल अक्षर ३० गुरु ८ लघु २२ ॥

दो० तोहीनिर्मोहीलग्यो मोहीयहैसुभाउ ॥
अनआयेआवैनहीं आयेआवतआउ ३२५

यह नायका परकीया प्रौढ़ा है नायक की निठुरताई अपने हृदय की आसक्ति उराहनौं देकर प्रकट करत है नायकाको बचन नायकसों ॥ कवित्त ॥ नेह भरे नैननकी जबते नजर मिली तबहीं ते चितको लगायो अति चाव है। मिलत मिजाज मन हिलमिल एक भयो पर्यो प्रेमफंदको अनोखो उरभाव है ॥ कहनलकत तेरो हियो निरमोही अति मेरो हियोगहौं यहू ऐसोई सुभाव है। तेरे अनआये अनआवै है रहत यह तेरे आये आयजात प्यारो तन आव है ३२५ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० ललनसलोनेअरुरहैं अतिसनेहसोंपागि ॥
तनककचाईदेतदुख सूरनलोंमुहलागि ३२६

यह नायका प्रौढ़ा है नायक अन्तःकरणमें कछू कपट जानि उराहने से प्रगटकरतहै नायकाको बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ नेकचितै चितचोरतहौ उर जोरतहौ अनुराग सचाई। रावरे प्रेम प्रबंधनकी जितही तितही सुनिये चरचाई ॥ रूपसलोनेसों नेहपग्यो हरिप्रीति के रंगमें बुद्धिरचाई। सूरनलौं मुहलागिवऊ दुख देत लला यहनेक कचाई ३२६ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० आपदयौमनफेरलै पलटैंदीनीपीठि ॥
कौनचालयहरावरी लाललुकावतडीठि ३२७

यह नायका प्रौढ़ा उराहनो देते है नायका को बचन नायकसों ॥ सवैया ॥

नंदलला, उरभाय, हियो अब देखबे कों तरसावतहौ। अब तो हमको यह जानिपरी यह लाजइतै नहिं आवतहौ॥ तुम मोहिं दयो अपने मन आपही फेरलै क्यों शिर नावतहौ। अबतो पलटे इतपीठिदई हरिकाहेंको दीठि लुकावतहौ ३२७॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० बिरहबिथाजलपरसिबिनुबसियतमोहियताल॥ ॥कछुजानतजलथंभबिधिदुरयोधनलौंलाल३२८

यह नायका प्रौढ़ा उराहनो नायकाको वचन नायकसों॥ सवैया॥ हरिमो हिय प्रेम सरोवर में बसिबो निशिवासर ठानतहौ। कबि कृष्णकहैं अपने उर को हमसों पिय भेद न मानतहौ॥ बिरहारु बिया नहिं नेकु तुम्हैं पै हमैं अतिही दुख दानतहौ। कछु जानिपरी दुरयोधनलौं जलथंभन की विधि जानतहौ ३२८॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० दक्षिणपियह्वैबामबसि बिसराईतियआन॥ एकैबासरकैबिरह लागेबरसबिहान ३२९

यह नायका प्रौढ़ा सुनायक को उराहनो देतहै दक्षिणपिय या पदतें चतुर पिय संबोधन जानिये जो दक्षिण नायक न बनै॥ कबित्त॥ रसरीति नागरहौ चातुरी के सागरहौ कोटिकाम कलानिधि उपमा न परसै। सब सुख देतहौ निकाई के निकेतहौ तुम्हैं देखतही प्रीति सबही के उरसरसै॥ दक्षिण सनेहहारि ऐसेभये बाम बसि बिसराई और तियदेखिबेको तरसै। कहैं कबिकृष्ण एकभौनबसि रहें हम ध्यान लागी विरह विहानलागी वरसै ३२९॥ सुरनअक्षर ४६ गुरु २ लघु ४४॥

दो० फिरतजुअटकतकटनबिन रसिकसरसनखियाल॥ अनतअनतनितनितहितनुचितसकुचतनहिंलाल३३०

यह नायका प्रौढ़ा उराहनो नायकाको वचन नायकसों॥ कवित्त॥ कृष्णप्राण प्यारे जग जानत तिहारे गुन गूढ़न उधारे ऐसी ढरनिढरतहौ। सबही को भावतहौ रसिक कहावतपै रसन रसीलेलाल ख्यालसे करतहौ॥ अटकत फिरत लगनबिन ठौरठौर प्रेमपन सांचो कवहुँन उधरतहौ। अनत अनत नितकीजत नवल नेह रंचकहू जियमें न सकुच धरतहौ ३३०॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० सुभरभरयोतुवअगुनकन नुपक्योकुतकुचाल॥

क्योंधौंदाख्योज्योंहियो दरकतनाहिंनलाल ३३१

सवैया ॥ मो उरमें अनुरागके फूलतें प्रीति प्रतीत कली प्रगटी ज्यों सावरे औगुन के कनका छलके वकुला संग भूरि भरेत्यों ॥ वेचकताई की वासनसों कवि कृष्ण कहै परिपक्व भयोयों । आवत मोहिं परेखो यहै अब दाड़िम ज्यों दरकै न हियो क्यों ३३१ ॥ कच्छ अक्षर ४१ गुरु८ लघु ३३ ॥

दो० सदनसदनकेफिरनकी सघनछुटैहरिराय ॥
रुचैतितैबिहरतफिरौ कितबिहरतउरआय३३२

यह नायका प्रौढ़ाउराहनो नायका को बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ डोलत लाल घनेघर झांकत प्रेमको आंककहूं न उघारौ । जानिपरे अबतौ ब्रजसौं उर ही करिहैं हम ध्यानतिहारो ॥ बानपरी सुन क्योंहूं छुटै मनुमाल तहीं रुचि मान पधारो । भावतसेज विहार विहारी यों तो कितयां इत आयविहारो ३३२ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥ स्वाधीन पतिका ॥

दो० छिनकुचलतठटकतछिनकु भुजप्रीतमगलडारि ॥
चढ़ीअटादेखतघटा बीजुछटासीनारि ३३३

यह संयोग शृंगार नायका स्वाधीनपतिका सखी को वचन सखीसों कहतिहै ॥ कवित्त ॥ सावनके मास मनभावन के संग प्यारी अटापर ठाड़ी भई घटा अंधियारी में । दामिनी के धोखे चकचौंधे दृग कविनाथ छविनसों मुरि दुरै पिय अंकवारी में ॥ कोटिरति वारौं ऐसी राधाजूके रूपपर रंभा रङ्क कहा शङ्कशचीकै निहारी मैं । पागिरहीरस जागिरही जोति लाजनिमें नेह भीजो वेहमेहभीजी सेतसारी में ३३३ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० टुनिहाईसबटोलमें रहीजसौतिकहाय ॥
सुतेऔंचिष्यौआपत्यौंकरीअदोखिलआय३३४

यह नायका स्वाधीनपतिका सखीको वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ रात दिना छकियाही के धाम पग्यो रसमें रहतो सुखदाई । पासपरोस बके कहतीं यह बीस बिसे तियहै टुनिहाई ॥ तू जबते गुनरूपकी राशि सुशील सुहागिल गौतेही आई । भागपनी अपने बशकै तैं भलीकरी सौतिकी छूतिबहाई ३३४ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० तोपरवारौंउरबशी सुनराधिकेसुजान ॥

तूमोहनकेउरबसी ह्वैउरबसीसमान ३३५

यह नायका स्वाधीनपतिका सखी को वचन नायकासों ॥ कबित्त॥ रूप की उजारी बृषभानुकी दुलारी राधे तेरीये निकाई हेरि सौति सब हारी है। तेरेगुण गायबेको तेरेई रिझायबेको तेरी प्रीतिहीको पनुगह्यो गिरिधारीहै ॥ तेरोनाम तेरो ध्यान तेरोही हिये में धरे तेरो रसबस भनगायहू बिसारी है। तूही उरबसी ह्वै कै उरबसी मोहनके तेरी छवि ऊपर को उरबसी वारी है ३३५ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० तूमोहनमनगड़िरही गाड़गिढ़ीनिगवालि॥
उठतसदानटसालसों सौतिनकेउरसालि ३३६

यह नायका स्वाधीनपतिका सखीको वचन नायका सों ॥ सवैया ॥ खीन करीकटि पीनसेपेट कुठोर उठे कुच कोलिल वैनी। कंबुसो कण्ठ कलाधरसोमुख कोटि कटाक्षन की अतिपैनी॥ तू मनमोहन के मन ग्वालिरही गढ़िकेलकला सुख दैनी। सौतिनके उर सांझ सदा नटसाल ज्यों सालत हैं मृगनैनी ३३६ ॥ करभ अच्चर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० नभलालीचालीनिशा घटकालीधुनिकीन॥
रतिपालीआलीअनत आयेबनमालीन ३३७

यह नायका उत्कंठिता परकीया नायकाको बचन सखीसों ॥ कबित्त ॥ आज मन मोहन को मग निरखत मेरे पलक न लागे प्रीति उरतैनहाली है। भई नभ लाली देखि फीकी परी नखताली सुनि पतिधुनि चिटकाली निशाचली है ॥ काहूरवनी की लखि मदगज चाली तासों जानि पतिरीझि वनमाली रतिपाली है। कहा कहौं आली इत मदन बिपति घाली खालीसेजभई जैसी आली बिकाली है ३३७॥ वासक शय्या ॥

दो० झुकिझुकिझुपकोहैंपलन फिरफिरजुरिजमुहाय॥
बींदुपियागमनींदमिसिदींसबअलिनउठाय३३८

यह नायका परकीया वासक शय्या सखीको वचन सखीसों क्रिया विदग्धाहू संभव है ॥ सवैया॥ जानि समै पिय आगम को चतुराई करी चित चाह के चाह कै। सैकरि आधिक मूंदिकै आंख झुकीसी करी पलकैं चपलायकै॥ जोरि भुजा तनतोरि गिया अंगिरानि खरी अरसाय जँभाय कै। बैठीहुती ढिग आई अली

सुदई सरऊठ महीसों उठायकै ३३८ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० निशिअँधियारीनीलपट पहिरिचलीपियगेह ॥
कहोदुराईक्योंदुरै दीपशिखासीदेह ३३९

यह नायका कृष्णाभिसारिका सखीकी शिक्षा अंगदीप्ति आधिक्य अरु जो प्रत्युत्तरहोय तो नायका के वचन तैं रूपगर्विता होय ॥ कवित्त ॥ हेरि हेरि अंगन लगावत अरारसुत फेरि फेरि ऐतो फेर काहे तू करति है। लालके सँदेश रचि जात हिये भीजि भीजि आवत पसीजि सुघराई उघरति है॥ मंडन छबीली यह छवितेरी छाजति है मेरी या अँधेरीमें तू दियासी वरति है। आपहीतें कर चतुराई चल्यो चाहत सुगातकी गुराई यों दुराई क्यों दुरति है ३३९॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० अरीखरीसटपटपरी बिधआधेमगहेर ॥
संगलगेमधुपनलई भागुनगलीअँधेर ३४०

यह नायका कृष्णाभिसारिका अपनी रातकी वात सखी सखी सों कहति है राहमें चन्द्रोदय भई छायलीनी या पदतैं रूपगर्विताहू भई ॥ सवैया ॥ श्यामनिशा लखि तैसेई साज शृंगार कैहौं पतिपास चलीरी। त्यों अधगैल उदोत भयो शशि देखत ओमति शोच लगीरी॥ पंकज छांड़ि सुगन्धके लोभ लगी संग भौंरन की अवलीरी। ताहीसमय मगभागनि आयकै छायलई उन कुंजगलीरी ३४०॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० छिप्योछपाकरछितिछयोतमुससहरनसम्हारि ॥
हँसतिहँसतिचलिशशिमुखी मुखतेंआंचरडारि ३४१

यह नायका शुक्लाभिसारिका राहमें चन्द्र अस्तभयो देखि संकुचित भई तब सखी सावधान करति है ॥ सवैया ॥ तेरे कहे सजि शुभ्रशिंगार चली चलि हैं गहिकै गतिमन्दहि। अथयो सोम अली अधवीचही देखि छयो क्षितिपै तम वृन्दहि॥ घूँघटको पटटारिकै प्यारी उघारिदै तू अपने मुखचन्दहि। वारस नैमति जोन्ह हँसी कर यों चलिकै मिलरी नँदनन्दहि ३४१ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० उठिठकुठकुयेतोकहा पावसकेअभिसार ॥
जानिपरैगीदेखियो दामिनिघनअँधियार ३४२

यह सखी नायका सों कहतिहै कि अभिसारको सहजही समयहै नायका परकीया ॥ सवैया ॥ क्यों तन नील निचैल सजै सखि क्यों मृगमंदको लेपकरैगी। पावसके अभिसारको येतो विचार कहा चितमाहिं धरैगी ॥ कुंजके भौन निशंकहै क्यों न चलै हरिकंतहि अंकभरैगी। श्यामघटा की अंधेरी में तेरी छटासी तन द्युति जानि परैगी ३४२ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥ शुक्लाभिसारिका॥

दो० जुवतिजोन्हमेंमिलगई नैननहोतलखाइ ॥
सौंधेकेडोरनलगी अलीचलीसँगजाइ ३४३

यह नायका शुक्लाभिसारिका सखीको वचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ तनकी गुराई तरुनाई की निकाई छाई जाकी उजराई ते उजारी उपमाति है। शरद निशामें प्यारी विशद शृँगारसजै गजगमनीकी शोभा अति सरसाति है ॥ चली अनुरागी मिलि मोहनके मिलिवे को चांदनी में मिलगई क्योंहू न लखाति है। सौंधेके डोरन सुलगी अली संगचली मानों पूनोचन्द सहतारन लखाति है ३४३ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० गोपअथाइनतेंउठे गोरजछाईगैल ॥
चलिचलिअलिअभिसारकीभलीसंझखिसैल ३४४

यह नायका संध्याभिसारिका सखीको वचन नायका सों कि ऐसे समय अभिसारिका ॥ सवैया ॥ छोड़ि अथाइन गौलयवेको उठी सब गोपन की अवली है। छीन भई सुखही रविकी छवि गौरज पूरत गैलगली है ॥ चंदकला मगटी न अजौं चलि क्यों न करै अलि रंगरली है। मानि सुहागिनि मेरो कह्यो अभिसारकी सैलसँझखे भली है ३४४॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० पलसोहैंपगपीकरंग छलसोहैंसबबैन ॥
बलसोहैंकतकीजियतयेअलसोहैंनैन ३४५

यह नायका मौढ़ा अधीरा खण्डिता नायका को बचन नायकसों ॥ कवित्त ॥ सोहत शिथिल गात या रसमें पागे निशिजागे ताते आरसके ढार ढरियतु है। बैन तुतरात अंगरात मुर बेरि बेरि फेरि फेरि हेरि हेरि हिय हेरियतु है ॥ बैनसनें छलसोहैं पीकपगे पल सोहैं देखि छविहगनि अनन्द भरियतु है। कृष्ण प्राण प्यारे श्रमकाहे को करत एतो अलसोहैं नैन बलसोहैं करियतु है ३४५ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० कतलपटैयतमोगरेसोनजुहीनिशिसैन ॥
जिहिचंपकबरनीकियेगुललालासैनैन ३४६

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता फूलन के नाम शब्द को चमत्कार है ॥ सवैया ॥ मोगरे भूलिन लागिकै लालन सोनजुही निशि सैन में प्यारी । जाको लसै वन चंपक सो दसनावलि कुन्दकली छविधारी ॥ लोचनलाल गुलालाके रंग करे निजरैनि जगायविहारी । निंदतहै अरविंदनकी छवि मीतपराग भरे भर-भारी ३४६ ॥ मराल अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० कतकहियतदुखदैनकोरचिरचिबचनअलीक ॥
सबैकहावरह्योलखैलालमहाउरलीक ३४७

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायका को बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ आजमयाकर मेरे पधारे लसी छवि रैनविहार विहारे । क्यों कहिये दुखदैन को वैन बनाय बनाय सनेहहिहारे ॥ घूमतलोचन नींदभरे उघरे उरमें नख चिह्न तिहारे । और कहाव रह्यो सब लाल लिलार महाउरलीक निहारे ३४७ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० पटसोंपोंछिपरीकरौखरीभयानकबेख ॥
नागिनह्वैलागीदृगननागबेलरसरेख ३४८

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायका को बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ आजमयाकर मेरे पधारे खुली बड़भागिनिकी सुघरी है । प्रीतम येपटसोंरस पोंछि परीकरो मोमति हेर हरी है ॥ लागत है मम नैनको आहि सुभामिनिसी में भूरि भरी है । केलिसमै अहिबेलिके रंगकी रेखनिमेषनिपै उघरी है ३४८ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० जिहींनामभषणरच्योचरणमहाउरभाल ॥
उहींमनौंअँखियाँरँगीओठनकेरँगलाल ३४९

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायका को बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ वाही के नैनको काजर ओठपै नीको लग्यो जनि पोंछिकै खोऊ । वाही के पायँ को जावक रंग लिलार महाछवि देतहै सोऊ ॥ ऐसो बनाय शृंगार करयो जिहिहै वहबाल विचच्छन कोऊ । जानहुँलाल रंगी उनहीं अँखियां अधरान के रंगमें दोऊ ३४९ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० पलनपीकअंजनअधर धरेमहाउरभाल ॥
आजमिलेसभलीकरीभलेबनेहौलाल ३५०

यह नायका मौढ़ा अधीरा खण्डिता नायकाको वचन नायकसों ॥ सवैया ॥ आज बनेहौ भले नँदलाल भये सब बानिक सोहतभारी। मंडनु आंखिन पीकलगी अरु लीकलगी कछु ओठनकारी॥ बाईं तो बाहँतिलोछरही यह दाहनीबांह सिहात तिहारी। बैठी खगेखगि लाग उठी यहकैसी बिराजत बीरनसारी ३५०॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० वाहीकीचितचटपटी धरतअटपटेपाय॥
लपटबुझावतविरहकी कपटभरेऊआय ३५१

मौढ़ाधीरा नायका को वचन नायका सों ॥ कबित्त ॥ अनतवसे को हौं तौ बिलगुन मानत हौं सब रसबस कीयो चाहै बहुनायकै। ताके भागे जागे जाके संगनिशिजागे मेरेभोर भये आये हितू हियकौ जनायकै॥ जानियतु वाहिकी लगीहै चितचटपटी अटपटे चरण परत डगलायकै। लपटबुझावत हौ विरह हुताशनकी कपट भरेऊ प्राणप्यारे तुम आयकै ३५१॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० गहिकगांसऔरैगहै रहैअधकहैबैन॥
देखिखिसोहैंपियनयन कियेरिसोहैंनैन ३५२

यह नायका खंडिता नायकसुरतके चिह्न दुरायकै याके आये यहवात करन लावत रातमें नायकके नेत्रदेखि तेइ न जानी सो दातछोडिकोपके गांस गहै सखी को वचनसखीसों ॥ सवैया ॥ आवत प्राणपतीहिं विलोकि सुधासम नेह की डीठसों हेरे। धायकै आगे है आयलये हियमें उमगे सुखपुंजघनेरे॥ आधेसे बैनकहैं ई रहै सुखगांस भरे उरकोप करेरे। कान्हके नैनखिसात विलोकि रिसाइकै प्यारी तिहीं दृगफेरे ३५२॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० पावकसोनैननलग्यो जावकलग्योजुभाल॥
मुकरजाहुगेपलकमें मुकरबिलोकोलाल ३५३

यह नायका मौढ़ा अधीरा खंडिता नायका को वचन नायकसों ॥ कवित्त ॥ मैन छबिरैनके उनींदे नैनमूंदे आवैं नींदके अरस इन्दीवरनंदरत हौ। पियरो बदन भयो हियरो लुवत मोहिं सियरो करत ज्यों ज्यों नियरो करतहौ॥

आलससुप्यारी जियऐसेके पठाये पिय ताके उठि दिनमति पावन परत हौ। कं-चनु कराये मधुकरकीसी माले लाल मुकरविलोको कतमुकरे करतहौ ३५३॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० तेहतरेरेत्योरकरि कतकरियहदृगलोल॥
लीकनहींयहपीककीश्रुतिमनझलककपोल ३५४

यह नायक सापराध जानि नायका नेत्र चंचल करत है सो नायका सखी नायकाके चित्तको भ्रम निवारणकरत है सखीको वचन नायकासों नायका सखीसोंकहै तो सुनसुरतगुप्ता परकीया होय॥ कवित्त॥ आजलखि पति कछु औरैभांति तेरीगति आननवै उमग ललाई ललकति है। भृकुटी कुटिल अति टेढ़सों तनोनी भई नैननमें रिसकी तरंगछलकति है॥ कहै कविकृष्ण यह धोखोहि इहांतो करि पीकलीक जानतूजबोल बलकति है। ललित कपोल पर भी-केके विलोकि श्रुति भूषण की मनकी झलक झलकति है ३५४॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० आयेआपभलीकरी मेटनमानमरोर॥
दूरकरोयहदेखिहै छलाछिनीयाछोर ३५५

यह खंडिता नायका की सखी नायक सों कहति है॥ सवैया॥ आप कृपा करि आयेभली करी आजको वानिक मो मन मोहै। देखत रावरी मोहनी मूरति मानमरोर धरै उर कोहै॥ काहू छबीलीको छोटोछला यह छोर छिगूनीके छाजतछोहै। देखिरिसायगी दूरकरो कछु जानत हौ अनआय लसो है ३५५॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० लालनलहिपायेदुरै त्योरीसौंहकरैन॥
शीशचढ़ेपनिहांप्रकट कहैंपुकारेनैन ३५६

यह नायका मौढ़ा धीरा खंडिता नायका को वचन नायक सों॥ सवैया॥ आये उनींदे जँभात तऊ कछुभेद न जान्यों हियेकी मैं भोरी। वाकुचकुंकुम के लगे चिह्न मिलायहिये मसके जिहि गोरी॥ लाललही अबतो सब बात दुरे नहीं सौंहकरौ किन होरी। शीशचढ़े पनिहां दोऊ नैन पुकार कहैं रतिरंग की चोरी ३५६॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १४ लघु २१॥

दो० तुरतसुरतकैसेदुरत मुरतनैनजुरिनीठि॥

डौंड़ीदैगुनरावरे कहैकनौड़ीदीठि ३५७

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खंडिता सखीको वचन सखीसों ॥ कबित्त ॥ चिह्न अंग अंगके दुराये चतुराईकै पै आरस गमन गात दुरदहनात है। प्रेम सुधापानके हुलासतें मुदित मन मैन मुखसने ऐन बैन तुतरात है ॥ तुरत सुरत कही कैसेकै दुरतलाल नीठिजुरि मुरत नयन जलजात है । कृष्ण प्राणप्यारे यह डौंड़ीदै कनौड़ी दीठि प्रकट करत रात रतिवारी बात है ३५७ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मरकतभाजनसलिलगतइन्दुकलाकेबेख ॥
भीनभँगामेंझलमलै श्यामगातनखरेख ३५८

यह नायका खंडिता नायकाको वचन नायक सों ॥ सवैया ॥ नाहकी छाती में देख नखच्छद नारिनरौढ़ा कह्यो पुन ऐसें । सुन्दर बागेकी चोली में मेलिकै ल्यायेहो चंदकला धरिकैसें ॥ खेलिबेको हमहैं यह देहूजू यों कहिकै हरि दौर हरेसें । लायलई उरसों हँसिके गसिदोऊ रहे कसि राखिये जैसें ३५८ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० नखरेखासोहैतनई अलसोंहैंसबगात ॥
सोंहैंहोतननैनयेतुमसोंहैंकतखात ३५९

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायकाको वचन नायक सों ॥ सवैया ॥ हरिजानिपरी हमहूं पै मया पगधारे इतै रतिकेलिकिये । तुमतौ सबके सुखदायक हौ सबही कों बनै सुखपुंजदिये ॥ मुकरौ जिन ये प्रगटै लखिये जुलगी टटकी नखरेखहिये । दगसोंह न होत संकोचनतें अबकाहेकों सोंह इतीकरिये ३५९ ॥ वानर अक्षर ३६ गुरु १० लघु २६ ॥

दो० तरुनकोकनदबरुनबरभयेअरुननिशिजागि ॥
वाहीके अनुरागहग रहेमनो अनुरागि ३६०

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायका को वचन नायकसों ॥ कवित्त ॥ कृष्ण प्राणप्यारे प्रात प्रीति कै पधारे मेरे देखे मैन मूरति बिरहगयो भागिकै । मृगजे बागे रसरागे लटपटी पागै आसर मगन अंगरहे अंकलागिकै ॥ रावरे लसत अतिलोचन ललितभये कोकनद अरुनअरुन निशि [illegible] जान प्राणपति

वाही प्राणप्यारी के परम अनुराग में रहे हैं अनुरागिकै ३६० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० सोहतसंगसमानसोंयहैकहैंसबलोग ॥
पानपीकओठनबनै काजरनैननजोग ३६१

यह नायका प्रौढ़ा खंडिता नायका को बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ ग्रंथननैं यह बात प्रमाण है यों चलिआयो मतौ सबहीको । जैसेको तैसोई जोग जुरै तब होत महासुखदायक जीको ॥ जो बिपरीत बिलोकिये संग कुढंगतही रँगलागत फीको । पानकी पीकबनै पिय ओठन आंखिनही लगै काजरनीको ३६१ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु१३ लघु २२ ॥

दो० प्राणपिया हियमें बसी नखरेखाशशिभाल ॥
भलोदिखायोआनयहहरिहररूपरसाल ३६२

यह प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायका को बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ पूरणनेम सों प्राणपियारी बसायहिये हियरो हुलसायो । भालनई नखरेख बिराजतसोय मयंक लसे छबिछायो ॥ लोचन रागु रजोगुण राजत घूमत नैन तमोगुण पायो । पीतम प्रातही आनि यहै जुभलो हरि को धर रूपदिखायो ३६२ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० यहांनचलिबलिरावरी चतुराईकीचाल ॥
सनखहिये खिनखिननटत अनखबढ़ावतलाल ३६३

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायका को बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ यहां न चलै कछू रावरी लाल चलावत जे चतुराई की चाल। छाती नखच्छद पीक सुगाल धरे अतिरंग महाउर भाल ॥ खात इतेपर सौंह गुपाल हिये उमगावत क्यों रसजाल । भाग बड़े उहि भामिनी भाल हिये उमगी जिह भेटतमाल ३६३ ॥ नर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० बैसीयेजानीपरति अँगाऊजरेमांह ॥
मृगनैनीलपटतजुयह बैनीउपटीबांह ३६४

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायका को बचन नायकके विद्यमान सखीहू सों कहै ॥ कवित्त ॥ काहे को करत चतुराई के चरित्र लाल शोचभरी सूरत प्रकट पेखियतु है । सौंहैं जिन करौ नैन नेक सोहनीसी शोभा अतिही

विराजै अंगअंग लेखियतु है ॥ कृष्ण प्राणप्यारे कुच कुंकुम की छायरही छाती पै उघरि यह अबरेखियतु है । मृगनैनी लपटति ऊपटीखये पै वैनी ऊजरे भँगा में अरटेपी पैंजयतु है ३६४ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० नकरुनडरुसबजगकहतकतबेकाजलजात ॥
सोहैंकीजैनैन जो सांचीसोहैंखात ३६५

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायका को वचन नायकसों ॥ सवैया॥ मोहिंतो लागत नीके महा तुम आये प्रभातप्रभातरसो हैं । जो करिये तो हिये डरिये विन कीये किते डरिये डरसो हैं ॥ क्यों विनकाज सँकोच भरौ उर काहेको कीजत नैन लजोहैं । जो तुम सांची ये सोंह करौ हरितौ इतक्यों न करौ मुखसो हैं ३६५ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० रहोचकितचहुँघाचितै चितमेरोमतिभूलि ॥
सूरउदयआयेटगन रहीसांझसीफूलि ३६६

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायकाको वचन सखी से होय नायक सों होय ॥ सवैया ॥ देखत रावरी मोहन मूरति मोहिं सबै सुधि भूलिरही है । आज महाछवि छाजत भोर निकाई सबै अनुकूलि रही है ॥ चाहिरह्यो चहुँघा चकिसो चित आचरजै मति डूलिरहीहै । आयेहौ सूरउदोत भये दिविनैननसांझसी फूलि रही है ३६६ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० कतबेकाजचलाइयत चतुराई की चाल ॥
कहेदेतयेरावरेसबगुन बिनगुनमाल ३६७

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायका को वचन नायक सों ॥ सवैया ॥ सौतिके धाम विराम कै आपु प्रभातइते पगधारत हौ जब । मैन छकी छवि ऐन दिखाय अनंदहिये उपजावतहौ तब ॥ क्यों विनकाज चलावतहौ चतुराईकी चाल ललाहमसों अब । माल विना गुनकी उरपै उपटी गुनरावरे देत कहेसब ३६७ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० दुरैनधरिधांधौंदिये येरावरी कुचाल ॥
बिषसीलागतहै बुरी हँसीखिसीसीलाल ३६८

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खंडिता नायका को वचन नायक सों ॥ सवैया ॥ जानतहो हियके हितसों उनहीं के वसेसुखसों निशिनासी । भोर किहूभ्रम भूलि

कै लाल पधारे इतैकछु कीनी कृपासी॥ ढीठ्यो दियोकहो कैसेहुरै इहओरहीतै जु कुचाल प्रकासी। लागत बीस बिसे बिषसी सुखिसापन के मुख आवतहाँसी ३६८॥ मराल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० गड़ेबड़ेछबिछाकुछकिछिगुनीछोरेछ्वैन॥
रहेसुरँगरँगरँगिउहीं नुहदीमहदीनैन ३६९

यह महदीको वर्णन है अरु जो नायका को बचन नायकसों होयतो खण्डिता होय जो नायकाको बचन सखी सों होय तो गुणकथन॥ सवैया॥ वाकी छबीली छिगूनी के छोरपै ये रुचपुञ्ज नयेई नयेहैं। तापर चारुलसै नुहदी महदी दल विद्रुम जीत लये हैं॥ ताकी महाछबि के मदछाकि छुटै न अजौंगड़ ऐसे गये हैं। ये बिबि लोचन वाई के रंगमें राचिकै मानो सुरंग भये हैं ३६९॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० कतसकुचतनिधरकफिरौ रतिपोषोच्टतुमैन॥
कहाकरौजो जानिये लगेलगोहैं नैन ३७०

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा खण्डिता नायका को बचन नायक सों॥ कवित्त॥ कृष्ण प्राणप्यारे आज प्रीतके पधारे होतै तनमनवारौं बहुहुलसि बधाइये। नेक निरखन लगे जाहि जो लगौहैं नैन ताको तुम कहाकरौ ग्रीव न नवाइये॥ कैसें राख्यो जान मोरिमनु बँध्यो प्रेमडोरि तुम तन खोरि कहो रंचको न पाइये। काहेको सकुचकीजै रुचै तितै सुखदीजै आलिहै निशंक रसलीजै जहां पाइये ३७०॥ पयोधर अक्षर २६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० अनतबसेनिशिकीरिसनुउरबररहीबिशेखि॥
तऊलाजआईझुकतखरेलजौहैंदेखि ३७१

यह नायका प्रौढ़ा अधीरा सखी को बचन सखी सों॥ सवैया॥ राति कहौं अनतै बितई मनमोहन केलि कला सुखसौहैं। तातै हिये अतिही रिसछाय रही अनखाय चढ़ाय कै भौहैं॥ भोरही आवत देखिजऊ कहिवे कै भई झुकवैन रुखौ हैं। आईतऊ अति लाजहिये निरखे जब लालखरेई लजौहैं ३७१॥ नरअक्षर २३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० बिलखीलखैखरीखरीभरीअनखबैराग॥

मृगनैनीसैननभजै लखिबैनीकेदाग ३७२

नायका अन्यसंभोगदुःखिता सखीको वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ साजिसृंगार हुलासकै आई विलोकिरही चकि दूरते भङ्कहि। सौतिकी चीकनी चोटीको दाग लग्यो टटकौ पतिकै परयङ्कहि ॥ ठाढ़ी जकीसी कपोलधरे कर रोषभरी भृकुटी करि वङ्कहि। शोचसनी विलखै मृगलोचनि लेत उसास न आवत अङ्कहि ३७२ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नई विरहबढ़तीव्यथा खरीविकलजियबाल ॥
बिलखीदेखिपरयोसन्योहरखिहँसीतिहिकाल ३७३

यह नायका अन्यसंभोगदुःखिता एक तो नायक यासों हितनाहीं करत ताते विकल है दूसरी परोसिन देखी ताही समय तब खरी बिलखी अरु नायक याके परोससों रहत है सो वह यह बिलखी देखि अतिप्रसन्न भई ॥ सवैया ॥ बालमको हित आन वधूसों रहै न कहूं घर एक घरी है। ता दुख बाल महाजिय व्याकुल कामखरी कुलकान परी है ॥ बाढ़ी व्यथा अतिडाढ़ीसी डोलति गाढ़ी वियोग की गाढ़ परी है। त्यों मृगनैनी परोसको देखि खड़ी बिलखी लखि मोद भरीहै ३७३ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० रहीपकरि पाटी सुरसि भरे भौंह चितनैन ॥
लखिसपनेतियआनरतिजगतहुलगतहियेन ३७४

यह नायकाने स्वप्नमें नायक अन्यासक्त देख्यो तब जागतहू मान नाहीं छोड़त अन्यसंभोगदुःखिता सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ दंपतिकेलि कलोलपगे उर लागे रमोय गये पलिकाहीं। ऐसे में प्यारी लख्यो सपनो हरि आनवधूसों किये गलवाहीं ॥ पाटी सों लागिरही मृगनैनी भरी रिसनैनन भौंहन माहीं। चौंकि यहै चितपागी महातिय जागी निशा हिय लागत नाहीं ३७४ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० छलापरोसिनहाथतै छलकरिलियोपिछान ॥
पियहिदिखायोलखिबिलखिरिससकुचीमुसकान ३७५

यह नायका अन्यसंभोगदुःखिता सखीको वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ पेखि परोसिनके करप्यारी करी चतुराईकै चारुकला है। मांगिलियो कछु ऊठमसों बहु कै मनुहारि छलाऊमलाहै ॥ मीतमसों मुसकाय कही कविकृष्ण कहैं रुखरोष र-

लाहै। नेक इतै लखियै मनमोहन आज भलो हमपायो छलाहै ३७५॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० गह्योअबोलोबोलप्यो आपै पठै बसीठि॥
दीठिचुराई दुहुनकी लखिसकुचौंहींदीठि ३७६

यह नायका अन्यसंभोगदुःखिता सखीको वचन सखी सों॥ सवैया॥ आपनी प्यारी अलीको पठै पियप्यारे को आपही बोलि पठायो। आगे ह्वै आय लियो हितसों हियरो हुलस्यो नियरो जब आयो॥ येतेमें कृष्ण दुहून की दीठि लजौंहीं लखी उरते हतचायो। बोलैकी भारी मलोलो भरयो जियकासों कहै अपनो डहकायो ३७६॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० सुरंगमहावरसौतिपग निरखिरही अनखाय॥
पियअंगुरिनलालीलखैउठीखरीलगिलाय ३७७

यह नायका अन्यसंभोगदुखिता सखीको वचन सखी सों॥ सवैया॥ पेखि सुरंग महावर सौतिके पाइन बालरही अनखानी। याही बिलोकि त्रिकायेगो मोहन बात यहै अपने उर आनी॥ येतेमें प्रीतमकी अँगुरीन ललाई बिलोकि खरी बिलखानी। पावकबाल जगी उरमें मुरझात महारिसमें अकुलानी ३७७॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० बिथ्योजावकसौतिपग निरखहँसीगहिगांसु।
सलजहसौंहींलखिलियोआधीहँसीउसांसु ३७८

यह नायका अन्यसंभोगदुःखिता सखी को वचन सखी सों॥ सवैया॥ बाल हँसी कछु गांस गहै लखि फैल्यो महावर सौतिके पायनि। जानि यहै अपने जिय में यह जानित नाहीं शृंगारके भायनि॥ येतेमें मोदभरी मुसकात लजौंहीं बिलोकनि देखि सुभायनि। आधी ये हांसी उसासभरी अकुलातखड़ी बिसरी चितचायनि ३७८॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० हठहितकर प्रीतम लियो कियोजुसौतशृँगार॥
अपने करमोतिनगह्यो भयो हराहरुहार ३७९

यह नायका अन्यसंभोगदुःखिता याको हार नायकने लैकै सौतको पहरायो सो नायका सखी सों कहै॥ सवैया॥ मांगि लियो हितके हठि प्यारे ने हारु सुचारु प्रभानसों पाग्यो। ताहिलै लालची लाल गह्यो काहू सौति के धसतिहीं

अनुराग्यो ॥ वाहीकी रीझ शृंगार कियो लखि याके हिये अनुखाहट जाग्यो। आपने हाथ वनाय गह्यो मुकताको हराहर हार सो लाग्यो ३७९ ॥ नर अक्षर २३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० प्यारोसोरसुहागको इन बिनहीं पियनेह ॥
उनदेहीअंखियांकके कैअलसोंहींदेह ३८० ॥

यह नायका सौति को आलस बलदेखि अरु रसमसी आंखि देखि सखी सों काकुध्वनिकरि कहतु है अन्यसंभोगदुःखिता होय जोई सखी नायकसों कहै तौ याकी रिस को निवारण होय ॥ सवैया ॥ सैंकरि आंखि उनींदीकरी अधऊतर सौं मुख बोल उचारचो । बारहींवार जँभायकै योंहीं खरो तन आरसके हर ढारचो । झूठी जतावत है सुखसेन जगी यह यामिनि याम निवारचो । देखि तौ मीतमकी विन मीति सुहाग को सोरकितो यह पारचो ३८० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० सखिसोहतगोपालके उरगुंजनकीमाल ॥
बाहिरलसतमनोप्रिये दावानलकीज्वाल ३८१ ॥

यह नायका मौढ़ा अधीरा खण्डिता नायका को वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ भाग बड़ी निरख्यो यह बानकु आजुकी हौं वलिजाऊं घरीकी । प्रेनप्रभालखि लागत है कछु मोहितो मैनकी मूरत फीकी ॥ देखरी मोहन के उरभावती माल बिराजत गुंजकीनीकी । पीवहुती प्रगटी सुतौबाहिर ज्वालमनौं बड़वानलहीकी ३८१ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० मुंहमिठासदृगचिकनई भौंहैंसरलसुभाय ॥
तऊखरेआदरखरो खिनखिनहियोसकाय ३८२

यह नायका सादरा धीरा मौढ़ा नायकाको वचन नायका सों ॥ कबित्त ॥ बदन कमलतैं अधिकहितसाने बैन मधुरेकढ़त अमी जिनमें चुचातु है । भृकुटी सुभायही सरल लखियत कहूं रोस को न रंच लवलेस दरशातु है ॥ नेहकी निशानी रससानी चितवनि त्यों हीं कैसेहूं न मोपै यह भेदलह्यो जातु है ॥ ज्यों ज्यों अतिखसो आदर करत प्यारी त्यों त्यों मेरो हियोखरो खरोई सकातुहै ३८२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० खरेअदबइठलाहठी उरउपजावति त्रासु ॥

दुसहशंकबिषकीकरे जैसेसोंठमिठासु ३८३

यह नायका आदरातिधीरा मौढ़ा नायका को बचन सखी सों॥ सवैया॥ गांसगह्यो उर में जितनो कछू मैंतौ न चूकइतीक करी है। बानसजी इटलाहट की अवकाहेसौंयों गाढ़जानिपरी है॥ त्रासहिये उपजावै खरो अतिआदर सों अभिमानभरी है। सोंठ चवात ज्यों मीठी लगै सबकोऊ कहै विषही की डरी है ३८३ चल अक्षर २७ गुरु ११ लघु २६॥

दो॰ नहिंनचायचितवतदृगन नहिंबोलतमुसकाय॥
ज्योंज्योंरुखरूखोकरै त्यों त्यों चितचिकनाय ३८४

यह नायका प्रौढ़ा धीरा अकृतगुप्ता नायकाको वचन नायक सों॥ कवित्त॥ जोरतन लोचननचाई नेहचाईभरे मुरिमुसकान कौन भाव दरसात है। बोलत न कहूं मनमोहन मधुर वैन मोरजिन भृकुटी मरोरत न गात है॥ कहै कविकृष्ण वाकी गरवीली बानिकछू सहज वशीकरको मंत्र जान्यो जात है। ज्योंहीं ज्यों रहत प्यारी राधा रूखे रूखकरि त्योंहीं त्यों खरोई खरो चित चिकनातु है ३८४॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो॰ जोतियतुमजियभावती राखीहियेबसाय॥
मोहिंझुकावतदृगनकै वहईउझकतिआय ३८५

यह मान भ्रम नायककी आंखिनमें अपनो प्रतिबिंब देखि अरु स्त्री जानि नायका कहतिहै॥ सवैया॥ नेकमनै करो पायँपरौं हरिकाहेसों मोसों रसीदतिहै। राजकरो नितयाहिलिये रहौ यामें कहा कहनावति है॥ जो तुमराखी बसायहिये पियप्यारी तिहारी कहावति है। झांकत रावरी आंखिन आन वहै तियमोहिं झुकावति है ३८५॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो॰ चिरजीवोजोरीजुरै क्योंनसनेहगँभीर॥
कोघटिहै वृषभानुजा वेहलधरके बीर ३८६

यह परस्पर मान सखीको वचन सखीसों॥ कवित्त॥ अनगने औठपाय रावरे गनै न जाहि वेऊ आहितपकि करैया अतिमानकी। तुम जोई सोई कहो वेऊ जाय सोई सुनै तुम जीभपातरे वेपातरी हैं कानकी। कैसो कैसो रायकाहि करजोंमनाऊं काहि आपनेसयों कोधों सुनव सयानकी। केऊ वड़वानल की

है है सोईअहै बीज़ तुम वासुदेव वे हैं वेटी वृपभान की ३८६॥ मरकट अक्षर ३१ गुरु ७ लघु २४॥

दो० दोऊअधिकाईभरे एकैगौंगहराय॥
कौनमनावैकोमनै मानैमतठहराय ३८७

यह परस्पर मान है दोऊ अधिकाई भरे सो नायका मानवती नायकरूप मानी अथवा नायका को मान देखिबे की गौं हैं सखीको वचन सखीसों अरु दोऊ अन्यासक्तहोहिं यह कहिबो संभव है॥ सवैया॥ आजचलीं रसही रसमें कछुवात दुहूंनसों क्योंकहि आवै। लैअपनो अपनी रिसमें अरुझायो हियो अब को सुरझावै॥ दोऊखरे अधिकाई भरे गहे एकही गौं कोउ भेद न पावै॥ कौन मनावै मनै कहिको मतमानो दुहूंनको मानहीं भावै ३८७॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० मानकरतवरजतनहीं उलटिदिवावतिसौंह॥
करीरिसोंहींजाहिगी सहजहसोंहींभौंह ३८८

यह मान दृढ़ावतहै सो मान छुड़ायवो प्रयोजनहै सखीको वचन नायका सों॥ सवैया॥ रूखों करयो रुख नैन चढ़ाय कै बैन कहैं मुखते अनखोहैं। मान करयो सुभलीकरी हौं न मनेकरौं औरं दिवावति सोहैं॥ मोहूंसों बूझै न ऊतर देत सुदेखोगी मोहन को मुख जोहैं। करीहींमों हौंरिहौंयगी लाला ये सहजही सुहसोंहीं ये भौंहैं ३८८॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु१२ लघु २४॥

दो० रसकेसेरुखशशिमुखी हँसिहँसिबोलतबैन॥
गूढ़मानमनक्योंदुरै भयेबूढ़रँगनैन ३८९

यह नायका अधीरा को मानहै सो सखी नायक की नायका सों कहत है॥ सवैया॥ ऊपरकोरस कोसौं करयो रुखभाव किये हितके सरसातें। सूधेचितै हँस बोलतबैन कहै मुखमीठे सुभाव सुधातें॥ नेहके चिह्न जनाय सबै विधि श्वास दबायकै तेहके तातें। मान हियेको दुरै केहिक्यों जु मजीठके रंगभये दृग रातें ३८९॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० चितवनरूखेदृगनकी हाँसीबिनमुसकानि॥
मानजनायोमानिनी जानिलियोपियजानि ३९०

यह नायका मानवती पै मानके लक्षण कुछ प्रकट करै नहीं पै प्रवीण नायक

ने जानी सखीको वचन सखीसों नायकाहूंसों होय ॥ कवित्त ॥ वैसेही चितौन जैसे आगे चितवतही पै नेह चिकनाई को न दृगन निसानी है। मधुर वचन त्योंहीं बोलत विहँसि पै सरस मुसक्यानकी न बान पहचानी है॥ ऐसी भांति भामिनी जनाई झूठमारीति जानि मन प्यारे भेष देखतही जानी है॥ साथ कै रुखाई रिसठानी तें सयानी सो मवीननकी डीठ तें रहत कैसे छानी है ३९० ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० कपटसतरभौंहैंकरी मुखअनखौंहैंबैन ॥
सहजहँसौंहैंजानिकै सौंहैंकरतेनैन ३९१

यह मान परिहास है नायका मौढ़ा सखीको वचन सखी सों ॥ कवित्त ॥ प्रीतमकी प्रीतिकी प्रतीति लखिवेको प्राणप्यारी कछु कीनो परिहास झूठोमान ठानि। कहै कविकृष्ण उर ऊपर रुखाई भरि वदन विदोरि वैठि धारिकै कपोलपानि॥ आपनी अलीनहू सों जोरतनु छवमुख वैन अनखाय कहिवेकी ज्यों ज्यों गहीबानि। भृकुटी सतरकीनी कपटसों तानिऐपै सौहैं न करत दृगसहज हँसोहीं जानि ३९१ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० मनुनमनावनकोकरै देतरुठायरुठाय ॥
कौतुकलाग्योप्योंपियाखिजहूरिझवतजाय३९२

यह नायका को मनु देखिवो प्रयोजनहै सो सखी सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ रोसभरी अँखियानहूंकी अविलोकन मांझ भरचो रसभारी। याहीतें मानहुँको रुख देखिवेकी नँदनन्द हिये रुचिधारी॥ होत मनोही मजा सवहीं तवसें करि देत रुसाय विहारी। कौतुक लाग्यो इहीरस के खिजहूके रिझावत राधिका प्यारी ३९२ ॥ मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० भलेपधारेशवरे कै गुड़हलको फूल ॥
ताहीदिनतेनामिट्यो मानकलहकोमूल ३९३

यह नायका परकीया उपपतिको विरह दुराइबे को पतिसों मानकीनों सो सखी सखीसों कहतिहै जो सखी नायकसों कहै तो खण्डिताहोय ॥ कवित्त ॥ जाही रजनी के घर वसै आनघर वसै जानैकौन कहा मंत्र कैसे पढ़िनायो है। वाही रजनी तें अजौं मिट्यो न अनैसा मान सखी पचिहारी काहूमरम न पायो है॥ कहै कविकृष्ण ऐसो रूठनो सुन्यो न देख्यो जैसोइहि लरिहार उरमें इ-

ढायो है। पाहुनैपधारे आछे फूल गुड़हरको है कलहको मूलबावगर बगरायो है ३९३ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० मोहूंसोंबातनलगे लगीजीभजिहनाय ॥
सोईलैउरलाइये लाललागियतपाय ३९४

यह मध्यमा नायका सों बातें करत जानि नायका सों आसक्त होय नायक ने ताहीं को नामलीनों सो नायका नायकसों कहतिहै ॥ कवित्त ॥ कैतो राखोगोय हो प्रगट हियेको भाव जासों रंगमगि मन रत्यो अनुरागि कै। उघरो रसिक रस रीतिका प्रवीनताकी भलै सुधि कीनी मोसों बातनहूं लागिकै ॥ कृष्ण प्राणप्यारे पूरी प्रीतिको धरमयहै पायो अब मरम भरम गयो भागिकै। पायँनपरति हरिवाही उरलेपै जाही रमनीको नामरह्यो रसनामें पागिकै ३९४ ॥

दो० बिधिबिधिकौनकरे टरै नहीं परेहूपानु ॥
चितैकितैतेलै धस्यो इतोइतेतनुमानु ३९५

यह मनायबो सखीको वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ खोयपरैं मनमोहनहूं बहु भांति हिये रसभायभरे तौ। प्रीतिकी चोप चढ़ाय अलीन कही समझाय बिनैकरि केती ॥ लोचन तेरे तऊ न चले अनखाय नचत्र अतिरोस रचेतौ। नेकचितै मृगनैन कितेते भरचो भरि मानइतो तनयेतौ ३९५ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० अहेकहेनकहा कह्यो तोसों नन्दकिशोर ॥
बड़बोलीकितहोतबलि बड़ेदृगनकेजोर ३९६

यह मनायबो सखी को वचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ सांची कहि मोसोंअहे काहेते कहत नाहिं तोसों कहाकह्यो मनमोहन कन्हाईरी। क्यों तू बड़े बोल ऐसो बोलत गुमान भरचो ऐती रिसरासतें कहा तैं गहि पाईरी ॥ कृष्ण प्राणप्यारी अतिहितू कै मनावत है करिमनुहार बहुबात मैं बनाईरी। मानकह्यो मेरा बलि उलटन करिजोपै तेही पाई बड़ी बड़ी आंख छबि छाईरी ३९६ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० हँसहँसाय उरलाय उठि कहि न रुखोहैं बैन ॥
जकितथकितह्वैतकिरहे तकितबिलोछेनैन ३९७

यह मानका परिहास नायक के विद्यमान सखी नायका सों कहति है जो ना-

चक को सुरतापराध दुरायबेको कहै तौहू संभवहै ॥ कवित्त ॥ मान कियो हौ हितो मनावै प्यारो पांयगहि रासके यतनको विचार कहा कीजिये । रसिक रसाल तेरे लोचन विलोके चाहि चक्रित ह्वै रह्यो ऐसे लाह कन पीजिये ॥ हाहा तोहि सौहैं अबधूती करि भौहैं बिन कहि न रुखी है लाल छाती लायलीजिये । हँसिये हँसाइये री सुख सरसाइयेरी रस बरसाय दुख सौतिन को दीजिये ३९७ ॥ करभअक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० येरीयहतेरीदई क्योंहूंप्रकृतिनजाय ॥
नेहभरेईराखिये तूरूखीयलखाय ३९८

यह मनायबो सखी को वचन सखी सों ॥ कवित्त ॥ कौनपरी प्रकृति छुटायेहू छुटै न क्योंहू ज्यों ज्यों कीजै ऊनी त्यों त्यों दून पेखियत है । कृष्ण प्राणप्यारे की दुहाई तेरी गति देखे मेरी मति शोचसों सनी विसेखियत है ॥ यद्यपि सनेह भरे उर में बसाय प्यारे प्रीति सरसाई अनलेखे लेखियत है । तऊतिय भौंहन में बैननमें नैननमें तेरे अंग अंगमें रुखाई देखियत है ॥ ३९८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० क्योंहूंसहबातनलगे थाकेभेदउपाय ॥
हठदृढगढगढ़वैसुचलि लीजैसुरँगलगाय ३९९

यह गुरुमानहै सखी नायकसों कहतहै कि वाको मान चलिछुटैगो सखीको वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ आज सज्यो हठको गढप्यारी न देखत धीरज कौनको दीजै । क्योंनहू भांतिलगै सहबातन भेदउपायथके मनछीजै ॥ लोचन दूतनक्योंहू मिलै हरिमानिये मंनु विलम्ब न कीजै । आप नहीं चलिये बल जानु सुरंगलगाय जोलीजै तौलीजै ३९९ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० अनरसहू रसपाइयतु रसिकरसीली पास ॥
जैसेसांठेकीकठिन गांठ्योभरीमिठास ४००

यह मानवती की शोभा सखी नायकसों कहति है ॥ कवित्त ॥ मानिनीबिहारी मनमोहन निहारी कछु मांपै न कह्यो परतुशोभाको विलासहै । नासिका सिकोर मोर भृकुटी अनखि बैठी लोचननु मांझ अरुणाई को प्रकासहै ॥ रसिक रसाल वा रसीलीकी विलोकि छवि अनरसहू में ऐसे रसको निवासहै । कहै कवि कृष्ण जैसे सांठेकी सरस रीति गांठिहै कठिन भरी तऊ मिठासहै ४०० ॥ मरकट अक्षर ३४ गुरु १६ लघु १८ ॥

दो० हमहारीकैकैहहापाइनुपारतप्योरु ॥
लहुकहाअजहौंकियेतेहतरेरेयोरु ४०१

यह नायका मानवती सखीको वचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ नेहनातो तोरि ति-नुकालौं तू तनगिवैठी तिमईकेहठ ऐसे देखे सुने हैं कहूं । कैतिन न छाई ब्रजबाल-कजुगाई परितोसीपैरिहाई न दुहाईदेखी मैंकहूं ॥ केती मनुहारि ठानीपांयपरेदधिदा नी सतभायमानी मुखबानी आनी है कहूं । लागी काके मतरानी सांझहीतें सत-रानी रैन्यों पतिरानी ववरानी तुननैकहूं ४०१ ॥ भ्रमर अक्षर २७ गुरु २२ लघु ४॥

दो० सोहेहू हेर्योनतें केतौधाईसोंह ॥
येहोक्योंबैठीकिये ऐंठिउबैठीभौंह ४०२

यह अति गुरुमान है सखीको वचन नायका सों ॥ कवित्त ॥ केती मनुहारि करि हारयो नंदलाल ब्रजवनिता निहाल होत जाके नैन चाहतें । होतोतू सयानी परकहा चितमानी येतेंरिसके समाज बिनु काज अवगाहतें ॥ सोंह हेरबे-को हमकेतिखाई साईंनऊ नेरोमन लाग्यो क्यों न रसके उमाहतें । कियो कहाचा-हति है साही क्यों न करै बाले ऐंठी बैठी भौंहकरि बैठी अब काहेतें ४०२ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० निरदइनेहुनयोनिरखि भयोजगतभैभीतु ॥
यहनकहूअबलौंसुनी मरिमारियेजुमीतु ४०३

यह मान बिरह सखी को बचन नायक सों नायक के पक्षकी सखी है जो परकीया नायका कहिये तोकहिये ॥ सवैया ॥ ऐसो अधीनभयो मनमोहन तो बिननेक न अंगसमारहिं । ताहितो तरसावत बावरी क्यों न करै मिलकुञ्ज बिहा-रहिं ॥ तेरोनयो निरदे हिन हेरि दुरयो जगुहाहिं भरीभय भारहि । आजलौं ऐसी सुनी न कहूंगति आपमरे अरुमीतको मारहिं ४०३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० हठनुहठीलीकारिसकै यहपावससतुपाय ॥
आनिगांठिज्योंघुटततयोंमानगांठिछुटिजाय ४०४

कवित्त ॥ दामिनी चपल गतिसोऊ श्याम धनही सों मिलिविहरति अति शोभा सरसाति है । द्रुमनसों लहलही लतिका लिपटरही सबही के उरमीति रीति

अधिकाति है ॥ कैसी ये हठीली कोऊ रूठनी न ठानि सकै मदनमरूरनि सों छाती अकुलाति है। देखो रतिपावस के नेहकी निकाई माई आनिगांठ खूटैमानगांठछूटै जातिहै ४०४ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० सतरभौंहरूखेबचनकरतकठिनमननीठि ॥
कहाकरौंह्वैजातहरिहेरिहँसौंहींदीठि ४०५

नायका मौढ़ा उत्तमा सखी सिखावतिहै कि तू मानकर याके नायककी देखे तही मानरहै नाहीं नायकाको वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ तेरो कह्यो रूखरूसनो ठानति हूं रूखरूखो कैतानति भौंहैं। नीठिकठोर करै मनहूं मुख हूतें बखानति बैन रुखौं हैं ॥ ताको कहावसु मेरी अलीलचै लालची जो अपनी तकि गौंहैं। कैसी करौं मनमें हनको मुख देखत लोचन होत हँसौहैं ४०५ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मिलेदुहूंकेदृगझमकिरुकैनझीनेचीर ॥
हलकीफौजहरौलज्यौं परतगोलपरभीर ४०६

मानमोचन सखी को वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ बैठी अलीगनमें नवनागरि अचानक आयो तहांगिरिधारी। लालकी डीठि बचायवे को मुख घूंघटओट कियेन निहारी ॥ नैनसों नैन उमंगि मिले न रहे पटओट किती पचिहारी। रोक सके न हरोलकी फौज ज्यों गोल पै आनि परै भरुभारी ४०६ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० मोहींकोछुटिमानगौ देखतहीब्रजराज ॥
रहीघरिकलौंमानसी मानकियेकीलाज ४०७

मानमोचन सखीको वचनसखीसों ॥ सवैया ॥ बोलेहीबोलै हँसेहीहँसै अरुसैनकहै कछु बात हिये की। अंकहूं मांझ निशंकनि होत सुशंक हिये पिय पाय छियेकी ॥ केशवरायसों डीठि छिपाये छिपैगी कहूंनहिं ज्योति दियेकी। मोहन के मिलैमान छुट्यो पै छुटी नखसी अनुमान कियेकी ४०७ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० चलौचलैछुटजायगौ हटरावरेसंकोच ॥
खरेचढ़ायेहेतुअब आयेलोचनलोच ४०८

यह मानछुटायवे को सखी को मनोजत नायक को लैआयवे को है सखी को

बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ जानेको कालिह तिहारी पियारी कहाजियजानि महा रिसठानी । केती मैं बातबनाय मनाय करी मनुहार पै एक न मानी ॥ क्यों हू के आज डरैं हगभौंह कछूकनई जुहुती अतितानी । लालचलो अवलोकि तुम्हैं छुटिजायगो मानअबै इमजानी ४०८ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० तुहूकहतहौ आपहू समुझत सबैसयान ॥
लखिमोहनमनजोरहै तौमनराखौमान ४०९

यह नायका मौढ़ा सखी कहति है तू मानकरि सो नायका सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ मानकिये रमनी जिनके बश पीतम होतमतौ यह तेरो । हौंहु यहै अपने चित आनति जानतुहौ करिस्यानुघनेरो ॥ तो करोमन्नरी मोहन को लखि जोसखी हाथरहै मन मेरो । रूसिबो जीमें बिचारतिही पैकहा करो त्योरनहोत तरेरो ४०९ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मोहिंलजावनलाजये हुलस मिलै सब गात ॥
भानउदैकी ओसलौं मान न जानेजात ४१०

नायका मौढ़ा मानमोचन नायकाको बचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ तूतो सिखवति मनमोहनसों मानकरि मेरेहुहिये मैं तू बिचार ठहरातरी । निरखत कृष्ण माण प्यारे की छबीलीछबि आपही ते हुलसिमिलत सबगातरी ॥ कहा करौं निलजये मोहीं को लजावत हैं कहूं जोपैहोय कछु कहिबे की बातरी । भानुके उदोतभये ओसकनकीसी भांति मानमनमें तेहूं न जानत बिलातरी ४१० ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० नैना नेक न मानहीं कितो कह्यो समुझाय ॥
तनमनहारेहूहँसै तिनसों कहाबसाय ४११

नायका मौढ़ा नेत्रोपालंब नायकाको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ सहिये जगके उपहासन तें गहिये गुरुलोगन मांझ गसैं । डरआनि यहै अपने उरहों समझाय रही नहिंनेकुनसैं ॥ अरु रञ्चक मेरो कह्यो न करैं तनहू मनहारे कहूं हुलसैं । यह नेम गह्यो सजनी इन नयननु पैहरिहारि हँसैई हँसैं ४११ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० रहैं निगोड़े नैन डिग गहैं न चेत अचेत ॥
हौंकसुकरि रिसकोकरौं ये निसखेहँसदेत ४१२

यह नेत्रपालनवहै सखी नायका को दृढ़ावति है कि तू भ्रम न करि नायका अपने नेत्रनके स्नेहकी आधिक्यइहै सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ हेतु अहेतु कछू न बिचारत क्योंहू अचेतन चेतगहैरी। देखत वा मनमोहनकी छवि क्योंहू लगातन मेरे कहेरी ॥ हूंकितनौंके सुकै रिसको करौं येन सिखेहुसिकै उन हेरी। कैसी करों यह नयनन को यह बान परी ढिगहू के ढहेरी ४१२ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० सकुचनरहियेश्याम सुनि येसतरौंहें बैन ॥
देतरचौंहौं चितकहें नेहनचौंहें नैन ४१३

यह प्रथम समागम नायकापरकीया सखीको बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ आगे हैंलीवोयहै इनको उतचाहइतैं हगखैलेई है। मानियेको यहई प्रतिउत्तर मानिये बात जुमौनमई है ॥ रोसकी बातवहै रसको रुखे काहे को केशवछांड़दईहै। नाहीं यहां तुम नाहीं सुनी यह नारि नईन की रीति नई है ४१३ ॥ मर्कट अक्षर ३० गुरु १८ लघु १२ ॥

दो० कहालेहुगे खेल में तजौ अटपटी बात ॥
नेकहँसोहीं है भई भौंहें सोहें खात ४१४

यहनायका औरसों आसक्त जानि नायकाने मानकियो नायक मनावन आयो सो वाही नायकको नाम मुहते निकस्यो सो सखी नायकसों वाकेमान छुड़ायवेको परिहासको प्रसंग चलायो सखी को बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ हाँसी तो कीजिये तासों लला जो हँसै सुखपाय नयेतिय ऐसी। बारहीबार लै और को नाम झुकावो इन्हें तजो बानि अनैसी ॥ या परिहासतें लेहो कहा करिये तोइते कहिको मुखैसी। सोहें किये भई नीठिहँसोहीं यह भौंह कमान मनोजकी ऐसी ४१४ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० खिचे मान अपराधहूं चलिगेबढ़े अचैन ॥
जुरतदीठि तजरी सखी हँसदुहुनके नैन ४१५

यह मानमोचन नायकाके नेत्र तौ मानसोंखिचे नायकके नेत्र अपराधसों खिचेहैं पै अचैनते बिना देखे रह्यो न जाय यातेरस भरुखिसी आपहीतें छोड़िकै दोउनके नेत्र हँसे सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ मानके भामिनि ऐंचरही हग रातकहूं हरि भ्रन्त न सेई। यांही ते मोहन नारिनवाइरहे उरशोच संको चगसेई ॥

ई ॥ कृष्ण कहैं बिन देखेंदुहूंनके मैनअचैनाहिये सरसेई । डीठजुरै तजिरीसखिसी विधि नयननामिलैं मुख पाइहँसेई ४१५॥ चल अक्षर १७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० अजहुँनआयेसहजरँग बिरहदूबरेगात ॥ अबहींकहाचलाइयतललनचलनकीबात ४१६

यह नायकाप्रवत्स्यत्पतिका सखी को बचन नायकसों नायकाहू को बचन नायकसों ॥ सवैया ॥ खेलतिमें कहूं कान्हकह्यो तुम कालिहहोजैहो चरावन गाई । सो सुनिके उन दीरघश्वास भरी सबअंग परीपियराई ॥ तादिनकी वा नवेलीके अंगनि आजहूं लौंनमिटी दुबराई । लालरहो मनबोलै कहा अबहीं चरचा चलिबेकी चलाई ४१६॥ चल अक्षर १७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० बिलखीडबकौंहैचखन पियलखिगवनबराय ॥ पियगहिबरिआयोगरैं राखीगरेलगाय ४१७

यह नायका प्रवत्स्यत्पतिका मध्या वाकी यहदशादेखि नायकने गवनबहराय कै गरेसोंलगाय सखी को बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ पतिप्राणप्रिया बिछुरै न कहूं सुखसोंरहै प्रेम पियूष पिये । हितुमानि बिदेशको होनबिदा हरिआयो पयान को आजुकिये ॥ निरखीडबकौंहैसे नैनकिये बिलखी मृगलोचनि सांस लिये । नकही चलिबेकी कछू बतियां छतियां भरिलीनी लगायहिये ४१७॥ मद्कल अक्षर १५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० ललनचलनसुनचुपरही बोलीआपुनईठि ॥ राख्योगहिगाढ़ेगरौंमनोगलगलीडीठि४१८

यह नायका प्रवत्स्यत्पतिका सखीको बचन सखीसों मध्या प्रवत्स्यत्पतिका ॥ कवित्त ॥ प्यारी के भवन अतिहितकरि प्राणपति आयो बिदाहोन परदेश को उमहिकै । ललनचलन सुनि रही मनबोलीतिय आलीनहूबचन सुनायो कछू कहिकै ॥ चकितसीभई चकचौंहदुसो छायो हिय आवत सलिलदोऊ नैननते बहिकै । गलीगली डीठिकरि हेरीहेरि सनमुख मेरेजानिराख्यो येहीगाढ़ीगरो गहिकै४१८॥ चलअक्षर १७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० ललनचलनसुनिपलनमें अँसुवाभरकेआय ॥ भईलखाइनुसखिनहू झूठेहीजमुहाय ४१९

यह नायका मध्या प्रवत्स्यत्पतिका सखीको बचन सखीसों क्रियाविदग्धा

परकियाहूहोय ॥ सवैया ॥ खेलतही सजनीगनमें वृषभानुकुमारि सरूपसों सानी। कान्हर कालिह करैगो पयान सुनी यह काहूके आननवानी ॥ आंखन में अंसुवा झलकें यह भेदकी बातअजीहू न जानी। यों मुहमोरि जँभायबेको करि ऊंठ मुंह पोंछति नैनसयानी ४१९॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० रहिहैंचंचलप्राणये कहौकौनकीओट ॥
ललनचलनकीचितधरीकलनपलनकीओट ४२०

यह नायका मौढ़ा मवत्स्यत्पतिका नायकाको वर्चन सखीसों ॥ कवित्त ॥ मैन सुखसंगन में नेहकी तरंगन में अंग अंग पागिरहे रंगमें उमहिहैं। कृष्ण प्राणप्यारे ते न छिनौभर न्यारेभये औरही ते वसतभये ऐसी बानगहिहैं ॥ पलन की ओट भये कलन कहत क्योंहूं जैसीगति होत सोधों आवत न कहिहैं। ललन विचारी चित चलन की बात अब कौनकी अरोट ये चपलमाण रहिहैं ४२०॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० चाहभरीअतिरिसभरीबिरहभरीसबगात ॥
कोरिसँदेशेदुहुनके चलेपौरलौंजात ४२१

यह प्रदेशको गमन दोऊनके हियकी अधिकाई सखी सखीसों कहतिहै ॥ सवैया ॥ कौनहूं काजको कान्हर कीन्हो पयान मुहूरत साधभलेई। अन्तरहोत दुहूंन को ज्यों अकुलात वियोग के शूलसलेई ॥ चाहभरी अरु प्रीतिभरी रसरीति भरी बतियांनिरलेई। पौरलों जात दुहूँनकी ओरते आलीरी कोरिसंदेश चलेई ४२१॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० मिलिचलिचलमिलिमिलिचलत आंगनअथयोभानु।
भयोमुहूरतभोरको पौरीप्रथममिलानु ४२२

यह प्रदेश पयानको समय सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ सोहैं किये ढरकोंहैं से नैन टरै न कहूं हियकोहिलिये। आगेहू आये न सूझै कछू रुकबो न मुंहश्रुति सामलिये ॥ भोरते सांझ भई न अजों घर भीतर बाहिर ओटलिये। रहे गेहकी देहरी ठाढ़े ठगे रटलागी दुहून चलौ चलिये ४२२॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० बामाभामाकामिनी कहिबोलोआवेश ॥
प्यारीकहतनलाजनहिंपावसचलतबिदेश ४२३

यह नायका मौढ़ा प्रवत्स्यत्पतिका नायका को वचन नायक सों ॥ सवैया ॥ आयेही मांगम मेंपै बिदा इत पांवससे घुमड़े घनकारे। कामिनी भामिनी बाम के बोलहू प्यारी कही जिन नंद दुलारे ॥ रंचकहू न लजातहिये हित के अब ये दुख दीजतु भारे। ऐसे में छांड़ि बिदेशचले कहो मेरी कहागति प्राणपियारे ४२३ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० पियप्राणनकीपाहरू करतयतनअतिआप ॥
जाकीदुसहदशापरयो सौतिनहूंसंताप ४२४

यह नायका प्रोषितपतिका सखीको वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ तापतपीबिरहानलके बिलखी वह नागरि खीन निहारी। आंखिनहीं में रहे अब प्रानि के प्राणसरै सुधिप्रानि बिसारी ॥ सौति सरै उपचार करैं गनकै पियप्राणन को रखवारी। दाहनु वाकी दशा निरखे उनहू के परयो जियसंकट भारी ४२४ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पावकझरतेमेहझरदाहकदुसहविशेखि ॥
दहैदेहवाकेपरस याहिदृगनहींदेखि ४२५

यह नायका प्रोषितपतिका बिरहिनी नायका को वचन सखी सों उद्वेगने नायकाहू सखी सों कहे तो संभव है ॥ सवैया ॥ धूमधुरे धुरवागहरे अरु अम्बर पूरमही अवगाहे। देखरी पावक की झरतें यह मेहकी ज्वाला कराल महा है ॥ वाही भटूपरै मैंहीदहै यह नैननहीं निरखे तनदाहै। वागिरिधारी बिना बचिबेको तुही कहि और उपायकहाहै ४२५ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० कहेजुबचनबियोगिनी बिरहबिकलअकुलाय ॥
कियेकोरअँसुवासहित सुवातिबोलसुनाय ४२६

यह नायका प्रोषितपतिका सखी को वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ प्राणपती बिनवातियको इकसाथ सबै दुख आनपरे हैं। वाकी दशालखि पास के वासी उसासभरे गहरे गहरे हैं ॥ जे कहैं बैन बियोगनिने अकुलाय बियोग बिथान भरे हैं। वे बतियां अबतोल सुवा सबही अँसुवान समेत करे हैं ४२६ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० दुसहबिरहदारुणदशा रहैनऔरउपाय ॥
जातजातज्योंराखियतप्रियकोनामसुनाय ४२७

यह नायका प्रोषितपतिका विरहिनी सखीको बचन सखीसों दश मनस्थान के भेदमें ब्याधि जानिये ॥ सवैया ॥ माणपिया परदेशकियो तिय अंगअनंग तरंग निताये। सीरी है जात जरै कबहूं उपचार विचार निते सबछाये ॥ ईठनिधाय खवासिहितू मुरझायरही न भये मन भाये। ऐसे कहैं जो बचै तो बचै कहौ गावतेभावते मोहनमाये ४२७ ॥ नरअक्षर १३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० रह्योऐंचिअंतनुलहै अवधिदुशासनवीरु ॥
आलीबाढ़तविरहज्यों पञ्चालीकोचीरु ४२८

यह नायका प्रोषितपतिका प्रौढ़ा नायकाको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ चैन परै नहीं मैनदहै दिन नैननसाँझ रहै जलछायो। भावै न भोजन भौन सुहाइ न हायहिये परताप तचायो ॥ ऐंचति औध दुशासनवीरु जकृतलकै तऊ अन्त न पायो। वहके बिछुरे बिरहासुबढ़्यो अब द्रौपदीके पट ज्यों अधिकायो ४२८ ॥ त्रिकल अक्षर ३२ गुरु ९ लघु १० ॥

दो० तियहियनिग्रजुरुगीचलत पियनखरेखखरोट ॥
सूखनदेतिनसरसई खोटिखोटितनखोट ४२९

यह नायका प्रोषितपतिका सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ सैनमें रंगरंगी रसरंग अनंग तरंग उमंग सुहाई। कान्हरके करकी नखरोट कहूं तियके उरमें लगिआई ॥ पी परदेशगयो जबते तबते लननीधनको धनपाई। देखन खोट खरोट खरोटिन सूखन देत यहै सरसाई ४२९ ॥ नल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० मरिबेकोसाहसुककै बढ़ेबिरहकीपीर ॥
दौरतिहैसमहींशशिहिसरसिजसुरभिसमीर ४३०

यह नायका प्रोषितपतिका सखी को बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ श्री मनमोहन सों जबते बिछुरी तबते न पलौं कलपावति। नीरबिना सफरी ज्यों खरी पै परीतलफैरुभई दुबरीअति ॥ दौरतसामुहेसीर समीर सरोजनलै हियरासों लगावति। ऐसी भईरी दशातनकी अब प्राणपयान की राह बतावति ४३० ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० बासिसकोचदशवदनबश सांचदिखावतिबाल ॥
सियज्योंशोधततियतनहिं लगनअगनकीज्वाल ४३१

यह नायक नायका के लगनिके लगते सनेहकी अधिकाई है याते अगनि-

भई है सो याकी दशा सखी नायकसों निवेदन करति है ॥ कवित्त ॥ जादिनते लग्यो नवनेह मनभावन सों तादिनाते मैनकी मरोरनि मरति है। त्रास गुरु लोगनिके साँसनि सकति भरि एक आशलागी निशिवासर भरति है ॥ वसत सकोच दशवदनके वश याते कछु न वसात ध्यानपतिको धरति है। लगनिकी अगनिकी ज्वालनि में बाल निजदेहको सियालौं वह शोधन करति है ४३१ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० करीबिरहऐसीतऊ गैलनछांड़तनीचु ॥
दीनेहूंचसमाधरै चाहैलहैनमीचु ४३२

यह नायका प्रोषितपतिका सखीको वचन नायकसों बिरह निवेदनकरि सखी सखीहूसों कहै ॥ कवित्त ॥ अतिही कृशंगी खरी कृशहूने वसकरि हरिके वियोग दुखदेह दहियतु है। नैननि निहारिनमैं नेकहू न डीठि परै सेजतन वसन में सोग लहियतु है ॥ बरुनी वयारी लागै जिन उड़िजाय शेष सखी के समाज अनमेष र-हियतु है। अतनसी भई सुतो विसरी के बेधवेको मैनहू के नैन उपनैन चहियतु है ४३२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० औंधाईसीसीमलखि बिरहबिकलबिललात ॥
बिचहीसूकिगुलाबगो छीटोछुईनगात ४३३

यह नायका प्रोषितपतिका सखी को वचन नायक सों सखीही सों कहै तोवनै॥ सवैया ॥ बालनवू में मेहन सों बिछुरे बिलसी दुखदंदवाई। नीरबिना सफरी ज्यों परी तलफै बहुभांति वियोग तचाई ॥ शीतलजानि सखी करुणाकरि शीश तेशीश गुलाब निकाई। बीचही नीर बिलायगयो सब एकहूछीट न अंगलौंआई ४३३ ॥ मर्कट अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० जिहिनिदाघदुपहरभई रहितमाघकीराति ॥
तिहिउशीरकीरावटी खरीआवटीजाति ४३४

यह नायका प्रोषितपतिका बिरह निवेदन सखी को वचन नायकसों सखी को वचन सखीहूसों बनै ॥ सवैया ॥ लालतिहारे वियोगतेबाल बिहाल खरी तरफै सफरीसी। वातनतापके त्रासनते सखि कोऊ न जायसकै नियरीसी ॥ हैरहे जेठकी ज्वालनिमें जहां जाड़ेकी राति तुषारभरीसी। ताहीं उशीरके धाममें बाम सुजाड़ेकी रातिमें जातवरीसी ४३४॥ त्रिकलअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० सीरेयतननुशिशिरऋतु सहिबिरहनुतनताप ॥
बसिबेकोग्रीषमदिननु पर्योपरोसिनपाप ४३५

यह नायका प्रोषितपतिका सखी को वचन नायकसों विरह निवेदन अरु स-खीको वचन सखीहूसों संभवहै॥ कवित्त॥ जानबूझि फेरखात फेर न उताहिजात एकबेर भये जे वडोही वाड़गरके। है रह्यो अवा अवास तेज तयो आसपास उ-सते उसासन ज्यौंचाहत नगरके॥ जब जब स्वार के समीर इत आवत हैं कान्हजू तिहारी विरहनिके वगरके। पचत न डरपानि पेड़ते परसजातु सीधेमारि आलवाल उपटे नगरके ४३५॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० गनतीगनबेतेरही छतहूअछतसमान ॥
अबयेतिथिआमरणलौं परेरहौतनप्रान ४३६

यह नायका प्रौढ़ा प्रोषितपतिका सखीको वचन सखीसों॥ सवैया॥ देखुरी कैसीकरी मनभावन ऐसीधौं चाहि कहा बनिआई। औधिहू बीतिगई न लइसुधि येती धरी उरमें निठुराई॥ तागिनती गिनबेते रहे न भये सभये, बिनवा सुखदाई। ये तिथि औमलौंथोसके सोमलौं प्राणपरे तनमें रहौ माई ४३६॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० सुनतपथिकमुंहमाहनिशिलुवैचलतउहिगाम ॥
बिनपूछेबिनहीकहे जियतबिचारीबाम ४३७

यह नायका प्रोषितपतिका विदेश में पथिकके मुखकी बातसुन नायकने अन-टकरते याकी दशा जानी सखी को वचन सखीसों॥ सवैया॥ शीतसमैहू की रात में लूवें चलें उहिदेश हुताशन सानी। आपस में बतरात बड़ोही अचानक कानपरी यहबानी॥ छांड़ि दिये सबकाज बिदेशी की बुद्धितहीं घरको अकु-लानी। प्राणपियारी की आयगईसुधि जीवत है जियमें यह जानी ४३७॥ क-रभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० आड़ेदैआलेबसन जाड़ेहूकीराति ॥
साहसककैसनेहबश सखीसबैढिगजाति ४३८

यह विरहनिवेदन प्रोषितपतिका सखीको वचन नायकसों सखी सखीहूसों कहै॥ कवित्त॥ लालवनमाली बिछुरेते व्रजबाल भई निपट बिहाल बिथा

उरसरसाति है। अतनसताई वाके तनकी तताईदेखे वृषके तरणिहूंकी किरणि सि-राति है ॥ करत उपाय हायकहि बारबार मीड़िमीड़िकर करनि निपट अकुलाति है। आड़ेदेबसन अलि जाड़ेहूकी रातमांझ साहसकै नेहनाते सखी ढिगजाति है ४३८॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० मारसुमारकरीडरी मरीमरीहिनमारि॥
सींचिगुलाबघरीघरी बरीबरीहिनबारि ४३९

यह नायका प्रोषितपतिका उद्वेगदशा नायकाको वचन सखी सों अनतरङ्ग सखी सखीहूसों कहै तो बनै॥ कवित्त॥ बालम वियोगते विकल अति प्राण कछु सूझन न आनबन्यो दुखही को दावरी। और उपचारकरि मारिन मरे को जो हितू है तौलू कृष्ण प्राणप्यारे को मिलावरी॥ घरीघरी सींचत गुलाब के स-लिलसों तू कियो कहाचाहति है माहूयैं बावरी। भरत घरी पै मारी मारकी डरी है बिरहागिनि बरीये अब बारिजिन बावरी ४३९॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरु १७ लघु २४॥

दो० पलनुप्रकटबरुनीनबढ़ि नहिंकपोलठहरात॥
अँसुवापरछतियांछिनकुछनुछनायछपिजात ४४०

यह नायका प्रोषितपतिका मध्यसखी को वचन सखी सों॥ कवित्त॥ बाल नन्दलाल के वियोगते विकल याते पलपल छिन कैसे बासर बिहात हैं। विरह त-ताकी बढ़न बरणी न जाति येते मानतचे वाके कुसुमसे गात हैं॥ पलनुते प्रगट ब-ढ़त बरुनीनहूंते परत कपोलपै तुरत ढरिजातहैं। सलिलकी बूंद ताती छतियां पै पर-त ऐसे छातीपर अँसुवा छनकि छपिजात हैं ४४०॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० फिरिसुधिदेसुधिद्यायप्यो इहनिरदईनिरास॥
नईनईबहुरयोदई दईउसासउसास ४४१

यहनायका प्रोषितपतिका याकी अवस्था सखी सखीसों कहतिहै॥ सवैया॥ आलीवियोग भयो बनमाली को व्याकुल बालखरी अकुलाई। पाहनकी पुतरी है परी उपचार विचार कछू न बसाई॥ ऐसेमें बाहिदई सुधिदै सुध याय पिया दुख रास जगाई। वानिरदैसों कहा कहिये जिनप्रेम मरूकी पीर न पाई ४४१॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० बिरहजरीलखिजीगननु कह्योनउहिकैबार ॥
अहेआवसजिभीतरीं बरसतआजअँगार ४४२

यह नायका प्रोषितपतिका उद्वेग दशा सखी को वचन सखी सों नायकहूसों विरह निवेदन करै॥ कवित्त॥ बसकी किशोरी गोरी शोभा वरणी न जात गात की निकाई छबि नाहीं काहूनोन में। वासर गँवायो खेलि जियमें वियोग बेलि सांझ समय वियाबाढ़ी बैठि पियभौनमें॥ आंधिके वितीत भये रंचकौ न कलपरी व्याकुलसी भई जात सीरे मदयोग में। नीचेते उठाय नारि दीठि परे जागना सुआगि आगि आगिकैकै भाजनई भौन में ४४२॥ मदकल अक्षर २५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० इतआवतचलिजातउत चलीछसातकहाथ॥
चढ़ीहिंडोरेसैंरहे लगीउसासनसाथ ४४३

यह नायका प्रोषितपतिका सखीको वचन विरह निवेदन नायकसों और सखीको वचन सखीसों दुर्बलता अधिक है उसासनते मुकरता न संभव है॥ सवैया॥ मोहनलाल चलोचलिदेखिये आपहीजाय वियोगनके ढंग। योरेही योसनते लखिये सबदेहभई जरदी हरदी रंग॥ वैसहूके भरमें यहभांति परे बरहीन खरे दुबरे अंग। पैंछसात हिंडोरेसे बैठी जु आवतजाति उसासनके संग ४४३॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० नेकनझरसीबिरहझर नेहलताकुम्हिलाति॥
छिनछिनहोलखरीखरी खरीफैलतीजाति ४४४

यह नायका प्रोषितपतिका नायकाको वचन सखी सों अरु नायकको वचन सखीसों॥ कवित्त॥ नंदके दुलारे प्यारे न्यारे भये जबहींते तबहींते तासीहैके छाती अकुलाति है। सुधिआये घरी घरी शूलसे सलतउर भाणपरे परवश कछुन बसावि है॥ दारुण बिरह झर यद्यपि सनेहलता झरसी तदपि नेकहून कुम्हिलाति है। दिनदिन छिनछिन उमंगि अधिकहोत हरीहरी खरीखरी फ्रालरतिजातिहै ४४४॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० याकेउरऔरैकछू लगीबिरहकीलाय॥
पजरैनीरगुलाबको पीकीबातबुझाय ४४५

यह नायका प्रोषितपतिका नायकाकी अवस्था सखी सखी सों कहति है॥

सवैया ॥ ऐसीदशा लखिहू अकुलाति कितें उपचार विचारतकोरी । आनन बोलै न खोलै विलोचनि दूबरी होत छिनै छिन धीरी ॥ याके हिये कछु और अनोखी वियोग हुताशन ज्वाल जगीरी । नीरगुलाब के दूनी बरै पिय प्यारेकी बातही होत है सीरी ४४५ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० होमतसुखकरिकामना तुमहिंमिलनकीलाल ॥
ज्वालमुखीसीजरतलखिलगनिअगनिकीज्वाल ४४६

यह नायकाकी लगनिकी ज्वालकी अधिकाई सखी नायक सों कहति है ॥ कवित्त ॥ कृष्ण प्राणप्यारे लाल जबहींते भयेन्यारे तबहींते प्यारी पलकल न धरति है। ससकि ससकि अति उरमें उसासें लेत तलफि तलफि सुधि बुधि बिसरतिहै॥ विरह हुताशनकी निरखि प्रचंडज्वाल निहचै हियेमें ज्वालमुखी को धरति है । मिलबेकी कामना हियेमें करि इंदुमुखी अब सब सुखनि को होमसो करति है॥ ४४६॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० नितसंसोहंसोबचतु मनोसुयहउनमान ॥
बिरहअगनिलपटनसकै झपटनसींचसिचान ४४७

यह नायका प्रोषितपतिका सखीको वचन सखीसों कहै तो विरह निवेदनहोय॥ सवैया ॥ बिछुरे पियऊसनको विषयो वह कौन कथा जु कहावतिहै । तुमसों सु कह्यो तिहयोगजियें जिनजानहु बात बनावतिहै ॥ उहिनागर की तनतापजुहै हित है करि सो दरशावतिहै । डरदाहनि वाविरहानल के बलिवायुहमीच न आवतिहै ४४७॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

सो० बिरहसुखाईदेह नेहकियोअतिडहडहो ॥
जैसेबरसैमेह जरैजवासोजोजमै ४४८

यह नायका प्रोषितपतिका बिरहकी अरु सनेहकी अधिकाई सखीसों कहै अरु नायकहू सखीसों अपनी अवस्था कहै तो संभवहै ॥ सवैया ॥ देखो वियोगन देह सुखाय करी दुबरी रह्यो मांस न मासो । नेहलता उलहाय हरी करी हेरि सखीनहूँ कै परयोमासो ॥ आवत है जियमें उपमा कवि कृष्णकहै देखिये तमासो । ज्यों बरसे घनपावस के सब औरजमै जरै आकजवासो ४४८ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० बिरहबिथादिनपरैहो तजेसुखनसबअंग ॥

रहिअबलौंबटुखोभयोचलाचलौजियसंग ४४९

यह नायका प्रोषितपतिका नायका को वचन सखी सों अरु सखी सखीसों कहै तौहू संभवहै ॥ कवित्त ॥ जौलौं प्राणनाथके समीपरही तौलौं अङ्ग अङ्ग सरसाने सुख उमंगि उमंगिकै। न्यारे होत प्यारेके वियोग बिथा बाढ़तही नातो कारिहातो वे अगाऊ गये भगिकै ॥ दुखकी निकाई कछू बरणी न जातमाई ऐसो दुख सह्यो तऊ रह्यो प्रेमपगिकै पैनभयो हीनोरी यहांलौंसाथदीनो अबचलिबो बिचारयो संग प्राणन के लगिकै ४४९ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० अतौनेहकागरहिये भयोलखाइनटांकु ॥
बिरहतचैउघर्योसुअबसौंहडिकोसोआंकु ४५०

यह नायका प्रोषितपतिका सखीको वचन सखीहूसों नायकहूको वचन सखीसों संभवहै ॥ सवैया ॥ जौलौं समीप रह्योहरितौलग मैं अपनो मनभायो करचोई। काहूलख्यो यहभेद न जीयको यद्यपिहौं सबभौनभरयोई ॥ नेह छ्वाई हुतो हिय कागर कौनहू भांति न जानिपरयोई । सौंहडिकोसो लिखाव अली बिरहागितचै अबतो उघरयोई ४५० ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० प्रजर्योआगिबियोगकी बह्योबिलोचननीर ॥
आठौंयामहियेरहै उठ्योउसाससमीर ४५१

यह अवस्था बिरहकी नायक अथवा नायका अपनी अवस्था सखी सों कहत है ॥ कवित्त ॥ सबहीतें कठिन सनेहकी डगर यह किनदुखपायो मन प्रेमपंथ हारिकै। जाकेतन लागे सोई जानतहै भेद यह बेदन बिषमकौन सकत सम्हारिकै॥ कहै कविकृष्ण यह और अद्भुतगति मनरचो वियोग आगि बह्यो दृगवारि कै। तऊ देखो आठोयाम उठ्योई रहत हीयो दीरघ उसासनकी मरल बयारि कै ४५१ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

सो० मैंलखिनारीज्ञान करराख्योनिरधारयह ॥
वहईरोगनिदान वहैबयदऔषधवहै ४५२

यह लगन सखीको वचन सखीसों । अंतरंग सखीको कहिबोहै अरु नायकाहू अपनी अवस्था सखी सों कहै तो संभव है ॥ सवैया ॥ काहेको चौरवनोवनसार वृथा उपचारनु कैतनुवारो। भोलखि नारकरयो निरधारि लहै यह भेद न बैद बिचारो ॥ जाको स्वरूप खुभ्यो उर मैं किनताहि दिखाय व्यथा यह टारो।

औषध वैद बहै उपचार बहै पुनि रोग निदान निहारो ४५२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० तच्योआंचअतिबिरहकी रह्योप्रेमरसभीजि ॥
नैननकेमगजलबहै हियोपसीजिपसीजि ४५३

यह नायकाकी अथवा नायक की बिरहकी अवस्था सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ जादिनते ब्रजनागरिको मन नंदकिशोरके नेह नयो ॥ तादिन ते दिन रैनढरै अँसुवा तिनको यह भेद लख्यो ॥ आंचतच्यो बिरहानलकी हियके रस में अति भीजरह्यो । ताहीते अंग पसीजहियो बिबिनैननके मग नीर बह्यो ४५३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पावकझरतेमेहझर दाहकदुसहविशेखि ॥
दहैदेहवाकेपरस याहिदृगनहीदेखि ४५४

यह उद्वेगदाहा नायकाको अथवा नायकको बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ धूमधुरे धुरवागहरे अरु अंबुनपूर मही अनगाहै। देखसी पावककी झरते झर मेह की ज्वालकराल महाहै ॥ आदि पदू परसेही दहै यह नैननही निरखे तन दाहै ॥ वा गिरिधारी विना बचिवेको तुही कहु और उपाय कहा है ४५४ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० कौनसुनैकासोंकहौं सुरतबिसारीनाह ॥
बदाबदीज्योंलेतहैं येबदराबदराह ४५५

यह नायका प्रोषितपतिका बिरहकी दशा अथवा भेद में बिना नायका को वचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ कासों कहौं कौन यह ताने उरअन्तरकी सुरत बिसारी सुखकारी हरिनाहरी । सेजेमर बाढ्यो न सुमनै कमीहूं प्राण लेत बदाबदी बदरा निपट बदराहरी ॥ अंगहोत बिकल अनंग तन तावत है कौन हरै बेदन रहनचित चाहरी । कृष्ण प्राणप्यारे की दुहाई न सुहाई कछू बरसत नैननसों सलिल मनाहरी ४५५ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० श्यामसुरतिकरराधिका तकतितरणिजातीर ॥
अँसुवनिकरतितरोसकोखिनकखरोहोनीर ४५६

यह नायका प्रोषितपतिका दशा अवस्था के भेद समस्त सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ श्रीमनभावनके बिछुरे वृषभानुसुता अतिही अकुलानी ।

भोजन भौन सखी न सुहाय सुहायरदै निशिवासर वानी ॥ सूरसुनाहिं निहारी रही उनहारकछू हरिकी पहिचानी । आंसुन के परवाह कयो छिन एक खरी हो तरोसको पानी ४५६ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० सोवतजागतसुपनवश रसरिसचैनकुचैन ॥
सुरतश्यामघनकीसुरत बिसरैहूबिसरैन ४५७

यह अपने चित्तकी प्रीति सखीसों कहति है दशअवस्था के भेदमें स्मृति जानिये ॥ सवैया ॥ बहर जाउँ तौ बाहरही घर आऊं तौ आवत संगलगेही । भौन के कोनमें बैठि रहौं डरि पैठिरहै हियमें पहलेही ॥ नींदहूमें नकवानी करै छिनहूछिन आवतहै सपनेही । सोवत जागत रैन दिना मनमोहन मोहन चैन न देही ४५७ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० मोयहऐसोईसमौ जहांसुखदतुखदेत ॥
चैतचांदकीचांदनी डारतकियेअचेत ४५८

यह नायका प्रोषितपतिका दशअवस्थानमें उद्वेग नायका को वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ ज्यालमई अब मानीमालसमीरतें पीर हिये सरसाई । पावक पुञ्ज सो चम्पक चंदन चंद्रकुचंदलख्यो न सुहाई ॥ चैतहरै चित चैतकी चांदनी बेधत बानन काम कसाई । आनि बन्यो अब ऐसो समौ दुखदेन सबै जुहुते सुखदाई ॥ ४५८ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० हौंहींबौरीबिरहवश कैबौरोसबगांव ॥
कहाजानियेकहतहै शशिहिशीतकरनांव४५९

यह नायका प्रोषितपतिका नायका को वचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ कुंभजहू अचयो सुपचयो न याहीने उगडारयो तमहू डरपि विषकंद सों । देखी अवलिनको कलंकी लै चढ़ाये शीश ईश कहा जानि हित कीनो मतिमंद सों ॥ कैधौं सबहीकी मति हीन भई मेरीआली कैधौंहौंहीं बौरीभई मैन दुख दंदसों ४५९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० औरैभांतिभईवये तौसरचन्दनचंद ॥
पतिबिनअतिपारततिपतिमारुतमारुतमंद ४६०

प्रोषितपतिका ॥ कवित्त ॥ जेई जेई सुखद दुखद अब तेई भये कविदहुर बिछुरत यदुपति । शीतलमंदसुगन्ध हूं जोई हुती सोई भई शानित आनिल

हवेततिय ॥ तरुभये तीर ब्यालभई बल्लिय जगुभई यमुन कुसुममये कतिय ॥ जिन वन हम विहरति श्रीपतिसंग तिनवन अब विहरन लगि छतिय ४६० ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० इतआवतचलिजातउत चलीछसातकहाथ ॥
चढ़ीहिंडोरेसेरहे लगी उसासन साथ ४६१

यह नायका प्रोषितपतिका कृशताको आधिक्य सखी को वचन नायक सों सखी सखीहूं सों कहै तो होय जस अवस्थानमें ब्याधि श्वास संचारी सुकुमारता न संभवैहै ॥ सवैया ॥ मोहनलाल चलो चलि देखिये आपही जाय वियोगनके ढँग । थोरेई थोसनगे लखिये सबदेह चढ़ी जरदी हरदी रँग ॥ बैसहूके भरमें यहि भांति परे पर हीन खरे दुबरे अँग । पैंड़ छसात हिंडोरेसे वैठी जु आवतजात उसासनके सँग ४६१ ॥ त्रिकल अक्षर १९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० हरिहरिकरिबरिबारिउठति करिकरिथकीउपाय ॥
वाकोजुरबलिबैदज्यों तौरसजायतोजाय ४६२

यह नायका प्रोषितपतिका व्याधि अवस्था विरह निवेदन सखीको वचन नायकसों ॥ कवित्त ॥ हरि हरि रटन बड़न ब्यथा छिनु छिनु बरि बारि उठत वाके नेरेजात जरिये । करि करि थकीहै उपाय सब आली अब कछु न वसाय उरशोच भार भरिये ॥ येहो बलिवैद अब रावरे सुरसही बचै तो बचै बाल बलिवाकी पीर हरिये । तीखो ताप टारिये धरम उरधारिये निवारिये गहरु करुणा के ढार ढरिये ४६२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मरी डरी कि टरी ब्यथा कहा घरी चलिचाहि ॥
रहीकराहिकराहिअतिअबमुखआहिनआहि४६३

यह नायका प्रोषितपतिका दशअवस्थाभेदमें जड़तासखी को वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ ऐसीको छांड़ि विदेशगयो हरि जो कबहूं बिछुरी न घरी है । हाय यहै रट लायरही गति याकीलखे मतिमेरीहरी है ॥ बाल बियो बरजामि भरी बेकराहनि क्यों अबही बिसरी है । पीरटरी कि परीहै मरी चलि देखिअरी कहा दूरखरी है ४६३ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० मरनभलोबरबिरहते यहबिचारचितजोय ॥
मरनमिटैदुखएकको बिरहदुहूंदुखहोय ४६४

यह नायका प्रोषितपतिका नायका को वचन सखीसों अरु नायकहू को वचन सखीसों संभव है ॥ सवैया ॥ नेकहीके बिछुरे सबही सुखसाज भये दुखदायक भारे। नैननीर झरीबरसैं तरसैं छतियां बिन प्राण पियारे ॥ आली बियोग व्यथा हरिवेते भलो मरिबो मन मान्यो हमारे। एक को दुःख मरे मिटिजात बियोग में होत हैं दोऊ दुखारे ४६४ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ बिरह निवेदन ॥

दो० करकेमीड़ेकुसुमलौं गई बिरहकुँभिलाय ॥
सदासमीपनसखिनहूं नीठपिछानीजाय ४६५

यह नायका प्रोषितपतिका सखीको वचन नायकसों अरु सखीको वचन सखीसों होय ॥ कवित्त ॥ प्यारे नँदनंदन तिहारे बिछुरे ते मोपै कहत बनैन जैसी भई वाकी गति है। आली जे रहत निशिवासर समीप तिनहूं पै पहिचानी वहनीठहीपरतिहै ॥ त्रासदेखि पास जैवो छांड्यो पासवान नेह येते मान मदन हुताशन बरति है। कोमल कुसुम मानो मीड़्यो करबर करि ऐसे कुँभिलाय मुरझाय गई आतिहै ४६५ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० नेकनजानी परतयों पर्‍यो बिरहतन छाम ॥
उठतदियेलौंनादिहरि लियेतिहारोनाम ४६६

यह नायका प्रोषितपतिका बिरह निवेदन सखीको वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ लाल तिहारे बियोगते वाको बिहात घरी बिधिबासर कीसी। छाम भयो अतिही तनबाम को काम दहै सुधि बुद्धि हरीसी ॥ सेज में नेकहू जानी परै नहिं देखिये कंचनरेख लिखीसी। रावरो नाम सुनै इकबारही नादि उठै द्युतिदीप गहीसी ४६६ ॥ मरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० जो वाके तनकी दशा देख्यो चाहत आप ॥
तौबलिनेकबिलोकिये चलिअचकाचुपचाप ४६७

यह नायका प्रोषितपतिका व्याधि अवस्था सखीको वचन सखी सों नायक को लै चलिवो प्रयोजन है ॥ सवैया ॥ पाहनकी पुतरी ह्वै परी बरसैं अँसुवा ससैं तनतावैं। ज्यों ज्यों करै उपचार बरै त्यों पर्‍यो हम लोगनको अति पावैं ॥ वाकी दशा अब ऐसी भई हरि जिव अवलोकोई चाहत आवैं। तो वह शोच रहै न बजाय त्यों यों अचका चलिये चुपचावैं ४६७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ।

दो० तजतअठाननहठपस्यो शठमतिआठौयाम ॥
भयोबामवाबामको रहतबामकेकाम ४६८

यह नायका प्रोषितपतिका विरह निवेदन सखी को वचन नायक सों सखी सखी हूसों कहै तो संभवहै ॥ कवित्त ॥ लाल मनभावन तिहारे बिछुरेते वाल विरह अगिनिमें बरत नेहनाधे हैं। वेईकाम काम बामदेवके भरमभूलि दस्योंवाही वाम सों विषम बैरवांधे हैं ॥ शठमतिहठभरि दयाघरपरिहरि आठों यामरहत सरोस रससाधे हैं। कीजेधोंकहाउपाउ छोड़त न औटपाउ तकैंहनिवेको दाउ लग्यो इह धांधे हैं ४६८ ॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० बालबेलिसखिसुखदई रहीरूठिरुखधाम ॥
फेरडहडहीकीजिये सुरससींचिघनश्याम ४६९

यह अनुराग निवेदन सखीको वचन नायकसों पुरुषमानहूके प्रसंगहूमें संभव है ॥ कवित्त ॥ हितकर जाको हरिलीन्यो चितलाल यह कितहै उचिततांहि येतो दुखदीजिये। जानतहौ नीके प्रीतिरीति को प्रवीणपनु कीजे न गहर सुख दैकै सुख लीजिये ॥ रावरे दुसहयेही रूखे रुखधामहीं सो वालबेलि सूखी जाहि निरख सुखीजिये। प्यारे घनश्याम जगजरनि निवारतहौ सींचिकै सुरस फिरि डहडही कीजिये ४६९ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० लालतिहारेबिरहकीअगिनिअनूपअपार ॥
सरसैंबरसैंनीरहू झरहूमिटैनझार ४७०

यह नायका प्रोषितपतिका सखीको वचन नायकसों विरह निवेदन ॥कवित्त॥ कृष्ण प्राणप्यारेलाल बिछुरेतिहारे बाल अतिही विकल मिलबेको तरसति है। सारीहोत सीरे उपचार ताते ताती छिन छिन अकुलात छाती पीर परसति है। वाकेतन रावरे बियोगकी अगिनि ऐसी अद्भुत गतिसों अपार दरसति है। महाझरहूते झार सीरीन परत परिजरत ज्योंज्यों नीरकी झरनि बरसति है ४७० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० देखतदुरैकपूरज्यौंउपैजायजिनलाल ॥
छिनछिनजातखरीखरीछीनछबीलीबाल ४७१

यह नायकाको अनुराग निवेदन सखीको वचन नायक सों विरह निवेदन हू होय ॥ कवित्त ॥ बिछुरे तिहारे लाल बिलखी बिकल बाल रीबिललात क्यों

हूं धीर न धरातहै। ऐसेमानकृश भई परे परयङ्कपर नीठि निठ निरख्यो परत वाको गातहै॥ कालहही सुआजुनाहिं आजुही सुअबनाहिं याते परजननको जीव अकुलात है। ऐसी छिन छीजनि विलाय जिन जाय वाल ज्यों कपूरदानी में कपूर उड़ जात है ४७१॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० हँसिउतारहियतेदई तुमजतिहींदिनलाल॥
राखतप्राणकपूरज्योंवहैचुहटनीमाल ४७२

यह अनुराग निवेदन है सखीको वचन नायकसों॥ सवैया॥ दूबरी ऐसी भई बिछुरे तिय सेजहूमें नलखी परै सोतौ। आली विलोकिके मंडित हाथ गयो इकसाथ सबैसुख जोतौ॥ बीसबिसे उड़जाते कपूरलौं राखो तौ प्यारीके प्राणन कोतौ। जो वह लाल तिहारोद्यो घुंघचीको हराउरमांझ न होतौ ४७२॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० कहाकहौंवाकीदशाहरिप्राणनकेईश॥
बिरहज्वालजरिबोलखैमरिबोभयोअशीश४७३

यह नायका प्रोषितपतिका सखीको वचन नायक सों॥ कवित्त॥ प्यारे मनमोहन तिहारे बिछुरेतें वृषभानुकी कुमरिभई खरी कलिकान है। जलबिन मीन ज्यों विकल तलफत अति कहौं कविकृष्ण ऐसीहोत आनबान है॥ ज्यों ज्यों करियत उपचारनकी भीर त्यों बढ़त दूनी पीररहै आंखिनहीं प्रान है। बिरहकी ज्वालनि सों जरिवेके लेखे वाको मरिबेको बचन अशीश के समान है ४७३॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३०॥

दो० यहबिनसतनगराखिकैजगतबड़ोयशलेहु॥
जरीबिषमजुरजाइयेआयसुदरशनदेहु ४७४

यह नायका प्रोषितपतिका व्याधि अवस्था सखीको वचन नायक सों॥ कवित्त॥ जरी है विषमजुर गिरी है अचेत वह घिरीहै जहूंधा व्याधि द्वन्दन में खरिये। कंचन से तनको अतन वृथा बारत है रतन उबारिये यतन हरि करिये॥ ऐसीगति देखो हौंतो मरत परेखो अब कछुन बसात छिन छिन जात बरिये। लीजियेजगत यश कीजिये धरम यह दीजिये सुदरशन वाको ताप हरिये ४७४॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० मैंलैदयोलयोसुकरछुवतछिनकगोनीरु॥

लालतुम्हारोअगरजा उरह्वैलग्योअबीरु ४७५

यह नायका प्रोषितपतिका सखी को वचन नायक सों ॥ कवित्त ॥ कृष्ण प्राणप्यारेलाल बिछुरे तिहारे अब हियो ब्रजबालको अनंग दुखदाग्यो है। कोंवरी निपट कुंभिलायगई फूल जिमि दुखअनुकूलभौ समूलसुख भाग्योहै ॥ तुमपै गयोसो मैन दीनोजाय वाही उनलीनो अति हितकारि चित अनुराग्यो है । करपरसतही छिनकगयो नीर अरुअगरजा वाके उरमें अबीर ह्वैकै लाग्यो है ४७५ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० थाकीयतनअनेककरि नेकनछांड़तगैल ॥
करीखरीदुबरी सुलखितेरीचाहचुरैल ४७६

यह नायका की लगन सखी को वचन नायक सों ॥ सवैया ॥ रोमनि रोमनि पोयगई हिय में धसि प्राणन मांझ खगी है । हौंकरिथाकी उपाय सबै हरियंत्रन मंत्रनहू न जगी है॥ देह सुखाय करी दुबरी तब बाबरी ज्यों सुधि बुद्धि भगी है। येते पै वाकी न छांड़त गैल चुरैलह्वै रावरीचाह लगी है ४७६ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० पियकेध्यानगहीगही रहीवही वहनारि ॥
आपआपहीआरसी लखिरीझतिरिझवारि ४७७

यह नायकाकी लगन तनमें ता सखी को वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ नेह लग्यो मनभावन सों उहितो अंगई यह बात नई है। ध्यानही ध्यान में आज कछू वृष-भानुसुता भई कान्हमई है ॥ आरसी में लखि आपनी मूरति आपही रीझि नि-हालभई है। पूरनप्रेमकी ज्योतिजगी उर आनसबै सुधिभूलिगई है ४७७ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० अरैपरैनकरै हियो खरैजरे परजार ॥
लावतघोरगुलाबमें मलैमिलैघनसार ४७८

यह नायका प्रोषितपतिका नायक को वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ कौहे को तू घनसार गुलाब में घोरि घनोघसि चंदन लावै । काहे को सिगरे नीर भिगोय उसीरपपान समीर डुलावै ॥ तोहींकहा जक ऐसीपरी मजरी उर आगि खरी भज-रावै । ये उपचार करै न परै कल जातेपरै किन ताहि मिलावै ४७८ ॥ मरकट अ-क्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० रँगरातीरातैहिये पातीलिखीबनाय॥
पातीकातीविरहकी छातीरहीलगाय ४७९

यह पातीसखी को वचन सखी सों॥ कवित्त॥ जबतें वियोग भयो लाल मनभावन सों तबहींते प्यारी तलफल मुरझायकै। तैनजल बरसति मिलिवेको तरसति सरसति मदनमरूर बहु भायकै॥ अतिअनुराग में बनाये लिखि प्राणपति ऐसेमें अचानकही दीनी काहू आयकै। हित अकुलाती सोतो विरहकी काती जानि राती पाती रही ताती छाती सों लगायकै ४७९॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० कहाभयोजोबीछुरे मोमनतोमनसाथ॥
उड़ीजाहुकितहूगुड़ी तऊउड़ायकहाथ ४८०

यह नायककी पत्री नायका को॥ सवैया॥ जो करतार रची सु सही विधि और विचार अकारथही है। वेदपुरान पुरानैसुनी सब कोऊ कहै यह गाथही है॥ अंतर बीचपरयो तो कहाभयो मोमन तो तुव साथही है। जाहु गुड़ी कितहूं बढ़ि डोर उड़ावनहार के हाथही है ४८०॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० करलैचूमिचढ़ायशिर उरलगायभुजभेंटि॥
लहिपातीपियकीलखति बांचतिधरतिसमेटि ४८१

यह नायक की पत्री आई ताहि देखि नायकाकी जो दशाभई सो सखी सखी सों कहति है॥ कवित्त॥ नैननीर बरसत देखिवेको तरसत लागे काम सरसत पीरउर अतिकी। पाये न संदेशे ताते अधिक अंदेशे बड़े शोचै सुकुमार पै न कहै मन गतिकी॥ ताही समय काहू औचकही आनि चिट्ठी दीनी देखतही सेनापति पाई प्रीति रतिकी। माथे लै चढ़ाई दोऊ दृगनलगाई चूम छाती लपटायराखी पाती प्राणपतिकी ४८१॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० कागदपरलिखतनबनत कहतसँदेशलजात॥
कहिहैसबतेरोहियो मेरेहियकी बात ४८२

यह पत्री नायक की अथवा नायका की परकीया॥ कवित्त॥ पाती में लिखत कैसे बनत जिती है चाह सागर को सलिल चुरूमें कैसे कीजिये। कहत संदेश उर आवत है लाज अति अधिक अंदेश यही छिन छिन छीजिये॥ मन ऐसो मानसमिलैन कोऊ मधिमाती जासों समझाय जियकी भेदकहि दीजिये।

यातेप्रीति रीति अवदातमेरे हियेकी बात आपने हियेते नीकी भांति जानि लीजिये ४८२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० तरझुरसीऊपरगिरी कज्जलजलछिरकाय ॥
पियपातीबिनुहीलिखीबांचीबिरहबलाय ४८३

यह नायका प्रोषितपतिका विरहकी अधिकाई पत्री लिखबेते जानीगई ॥ कवित्त ॥ प्यारे को संदेश लिखिवे को बैठी साहसुकै लिखत बन्योना अति विरह मलीनी है । सरताते पानिके परसपरजरी और ऊपरते गिरी अँसुवनि जलभीनी है ॥ ऐसीपै लपेटि उनसौंपी सजनीके हाथ उनजाय त्योंहीं प्राणनाथ हाथ दीनी है । खोलतही पाती पिय तानीकी सुरतिकरि छाती गहबरि आई आंख भरलीनी है ४८३ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० बिरहबिकलबिनहीं लिखी पातीदई पठाय ॥
आंकबिहूनीयोंसुचित सूनेबांचतजाय ४८४

यह नायका प्रोषितपतिका की पत्री आई यातें दोउन के विरहकी अधिकाई की शून्यता जानिपरी ॥ कवित्त ॥ विरह मकरते न तनकी तनक सुधि बाल अति व्याकुल अचेत ऐसी हैगई । लिखिबकोलई पाती लिखन बन्यो न कछू वैसीये लपेटि प्राणपतिपै पठैदई ॥ वाकी बिकलाई की कहांलौं अधिकाई कहौं एकसी दुहूँकीगति एकबेर है भई । चपरी प्रवीनी वह जऊ अंकहीनी तऊ बांचि सुनि हियके लगाय छातीस लई ४८४ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० चलतचलतलौंलैचले सबसुखसंगलगाय ॥
ग्रीषमवासरशिशिरनिशि पियमोपासबसाय ४८५

यह पत्री नायकाकी नायकसों ॥ सवैया ॥ रैनदिना रहतेई मिले रसरंग उमंगनमें मनहारे । ऐसोसनेह बढ़ायकै देखरी कैसीकरी उनकान्ह पियारे ॥ लैगयो संग लगायसबै सुख दैगयो शोचटरै नहिं टारे । पूसकी यामिनी जेठ के द्योस बसाय गयो अब पासहमारे ४८५ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० गोपिनकेअँसुवनभरी सदाअसोसअपार ॥
डगरडगरनैह्वैरही बगरबगरकेबार ४८६

यह ब्रज को विरह निवेदन ऊधोको वचन श्रीकृष्ण सों सखी को वचन सखी सों ॥ कवित्त ॥ योग दैन गयोहौं वियोग बारि बारिधि में बूड़तबच्यो हौं नाथ

नारी नैनयों बहै । गंगहू सहस्रधार अधिक सुधारजानि बरषा न होहि जो रहोगे गिरिहू गहै ॥ येतोजल उनैहै न बारिधि समैहै कछू मुनिपर अच्यो न जैहै कानखोलिकै कहै । कवि महलाद जो मिलाप पारि बांधिहो न बदुकि बटाके पात रात्रेभलेरहै ४८६ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कियोसयानसखीनसों नहिंसयानबहमूल ॥
दुरैदुराईफूललों क्योंपियआगमफूल ४८७

आगमोत्सव नायका सखीसों सखीको वचन ॥ कवित्त ॥ ललित कपोल आजु मंदमुकुतन लागे आननपै भई कछू औरै अरुणाईरी । मैंतो पूछी सुखमानि तैं कछू रुखाई ठानि घूंघुटमें ढांकि मुख डीठ क्यों चुराईरी ॥ नाहींनै सयानपु बीस बिसे भूलिहै सयानी सजननसों करी जो चतुराईरी । फूलकी सुबासलों बिकास पहली होत फूलहरि आगमकी क्यों दुरे दुराईरी ४८७ ॥ त्रिकल अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० आयो मित्र बिदेशते काहू कही पुकार ॥
सुनहुलसीबिकसीहँसीदोऊदुहुननिहार ४८८

यह नायका परकीया इक नायक उपलसों दोउनको सनेह है गयो आगम में दोउनके हर्षभयो याही ते परस्पर जानिपरी सखीको वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ कान्हर के बिछुरे ब्रजबाल दुबौमनही मनमें मुरझानी । कृष्ण कहै वहरायवे को मनु वैठ दुहूंमिलि चौपड़ठानी ॥ मोहन मीत बिदेशते आयो पुकारिकै काहू कही जब बानी । सो सुनि दोउदुहून बिलोकि लसी बिलसी हुलसी मुसक्यानी ४८८॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० मृगनैनीदृगकीफरक उरउछाहतनफूल ॥
बिनहीपियआगमउमगि पलटनलगीदुकूल ४८९

यह आगम स्वप्न पतिका सखीको वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ बालबरी अकुलात हिये नँदलाल बियोग व्यथा उरजागी । ऐसेमें आन अचानकही हुलसी छतियां सुघरी अनुरागी ॥ वाम बिलोचन के फरके मृगलोचन जीसे उछाहन पागी । फूलभरी बिनहीं पिय आगम चारु दुकूल चुवावन लागी ४८९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मलिनदेहवेईबसन मलिनबिरहकेरूप ॥

पियआगमऔरैउठी आननओपअनूप ४९०

यह आगमस्यत्पतिका सखीको वचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ लाल मनभावन के बिछुरे मयंकमुखी अतिहि बिकल चित परयो चिंता कूप है। अधिक अनंग पीर तीरसी खगत हिय चांदनी लगत जैसी ग्रीषमकी धूपहै ॥ कीनो न शृंगारु चारु वैसी ये मलिन देह वसन मलिन उही बिरह के रूपहै। कहै कवि कृष्ण पिय आगम सुनतबाढ़ी और ओप आननपै उमँगि अनूप है ४९० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० रहेबरोठेमेंमिले प्रियप्राणनकेईश ॥

आवतआवतकीभई बिधिकीघरीघरीश ४९१

आगमोत्सव नायका को वचन सखीसों संचारी के भेद में औत्सुक्य जानि ये सवैया ॥ आये विदेशतें प्राणपती यों तियाकी सुनै छतियां सियराई। नैनन लागिरही दिखसाध मनोज उमंग हिये भरिआई ॥ कृष्णकहैं मिलवे कहै काहूसों पौरि में जौलौं रह्यो सुखदाई। आवत आवतकी सुघरी विधि वासरहू ते खरी सरसाई ४९१ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कहिपठायजियभावती पियआवनकीबात ॥

फूलीआंगनमेंफिरै आंगनअँगनसमात ४९२

आगमोत्सव सखीको वचन सखीसों सञ्चारहर्ष ॥ सवैया ॥ बाल वियोग मलीन महा बिसरी सुधि हास विलासहू भूलै। येवे पै औधि व्यतीतभई उरमें कही साथ सबै दुख झूलै ॥ आवन त्यों मनभावनकी सुनिकै उमहै सुखपुञ्ज समूलै। आंगन में हुलसी फिरै सुंदर आंगन अंग समात न फूलै ४९२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० नाचअनाचकहीउठे बिनपावसबनमोर ॥

जानतहीनंदितकरी यहदिशनंदकिशोर ४९३

यह आगमोत्सव नायकाको वचन सखी सों सखीहूको वचन नायक सों कवित्त ॥ राधा यों विशाखासों कहति जाको रूप मोहि चारु चित्रपट अवरेखते दिखायोरी। जानियत वह चितचोर नंदपून धूत आली यहि कानन कहूंते आज आयोरी ॥ लहलही होत बहुकालकेरी सूखी बेल फूलत सुमन ऐसो वनछवि छायोरी। बिन उनएहूं घन भये हरषित मन नाचनाच मोरन कुलाहल मचायोरी ४९३ ॥ ... अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० बामबाहुफरकतमिले जोहरिजीवनमूरि ॥
तौतोहीसोंभेंटिहौं राखिदाहिनीदूरि ४९४

आगमोत्सव भुज फरकतहीं नायकाको वचन वाम भुजा प्रति ॥ सवैया ॥ कान्ह बिसासी बिदेश रह्यो वसि मैन दही वहु भांति हिये हौं । वाम भुजाफरकी तू भने अवहौंहू यहै निश्चयपन कोहौं ॥ कैसेउ वा मनभावन को अब जो भरिआंखिन देखनपैहौं । राखिहौं दूरि या दाहिनी वामको तोहीसों गाढ़े आलिगन दैहौं ४९४ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० बिछुरेजियसंकोचयह बोलतबनैनबैन ॥
दोउदौरिलगेहिये कियेनिचोहेंनैन ४९५

यह परदेशतें इन दोउनके हितको आधिक्य सखीको वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ दम्पति आपुस में कहतें पलु ओटभये पलभाण रहैना । आयो विदेश बितै वह वासर नंदलला अति चैनको ऐना ॥ येतो बिछोह भयेहू जिये यह लाजते बोलत बैनबनैना । दोऊलगे लपटाय हिये पै निचोहे किये संकुचोहें से नैना ४९५ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० यदपितेजरोहालबल पलकौलगीनवार ॥
तउग्वैंड़ोघरकोभयो पैंड़ोकोसहजार ४९६

यह परदेशतें आगम आगतपतिका नायका औत्सुक्यसंचारी ॥ सवैया ॥ कौनहूं काजको प्राणपिया परदेश समो बहुतै बितयो है । राधिका की सुधि कै कविकृष्ण तिहींछिन भौनको गौनु ठयो है ॥ यद्यपि तेज जुरी नियरोघर तद्यपि कोस हजार भयो है । ग्वैंड़ेको पैंड़ो न काट्योकटै अभिलापसमूह हिये उनयो है ४९६ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २२ ॥

दो० छिरकेनाहनवोढ़दृग करपिचकीजलजोर ॥
रोचनरँगलालीभई बियतियलोचनकोर ४९७

यह ज्येष्ठा कनिष्ठा को भेद अन्यसंभोग दुःखिताहू होय सखीको वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ नंदलला ललनागण में जलकेलिरची रसरीति रलाई । चूम कले हरे बहुभांति दुरे भरिअंक करी तरलाई ॥ भावती लोचनके छिरके करकी पिचकी जलधार चलाई । सौतिके लोचन कोरन मांझ तहाँ भई रोचनरंगललाई ४९७ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० मिसहीमिस गतपदुसह दईऔरबहराय॥
चलतललनमनभावतिहतनकीछांहछिपाय ४९

यह ज्येष्ठा कनिष्ठाके भेदमें संभवहै सखीको वचन सखीसों॥ सवैया॥का
सुजानके मोपैकछू रसरीतिके भेद कहे नहिंजाहीं। आतप को मिसकै बहराय द
संग औौर तिती बनिताहीं॥ छैलगहीं वह गैलभटू यमुनातट केलि निकुञ्ज जह
हीं। राधिका प्यारी को लैचल्यो संग किये अपने तनकी परछाहीं ४९८॥ म
कल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० लाजगहौ बेकाजकत घेररहे घर जाहिं॥
गोरसचाहतफिरतहो गोरसचाहतनाहिं ४९९

यह नायका प्रौढ़ा दानसमैं॥ कवित्त॥ लाज क्यों न गहौ बिनकाज मगघे
रहौ इतराइबोल कहत अनैसेहौ। गोरस न चाहतहो गोरसको चाहतहौ भ
भांति जानतहौं कान्ह तुम जैसेहौ॥ कृष्ण प्राणप्यारे ब्रजबिदित तिहारेगुण
खनके चोरबेको घरघर पैसेहौ। अब यह बनऐसे चलन चलावतहौ सोहै ल
हसत लसत मन लेसेहौ ४९९॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० पहलाहार हिये लसे सनकीबेंदीभाल॥
राखतखेतखरीखरी खरोउरोजनबाल ५००

यह नायका जातिवर्णन नायकाको बचन॥ सवैया॥ पातरीलांक कठोर
कुचगोरी अंगठलुनाई भरी है। मेचकपीन गरेबड़े दृगओठन में अरुणाई धरी
हार हिये पहुलाको लसै बिलंदीसन को पखुरी की करी है। राखत खेद
ब्रजनागरि यौवन जाति खरी निखरी है ५००॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु
लघु २४॥

दो० टटकीधोई धोवती चटकीली मुख जोति॥
लसतरसोईकेबगर जगरमगरद्युतिहोति ५

यह जातिवर्णन सखी नायकके रूपकी निकाई नायकसों निवेदन करति
कवित्त॥ बैठी अपरस ब्रजनागर सरवसवेप पेखि मनमोहनकी सुध बुध ह
कृष्ण प्राणप्यारे की दुहाई बैस तैसीदई विधिने सकेल शोभा कीन्ही मानों स
दमके वदन ज्योति विदस बरन धौति पहिरे लसन सौति रूपगुण आगरी।

ह्यो प्रकाश अति जगर मगर तिहि बगर रसोई के अपार ओप बगरी ५०१ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० यदपिनाहिंनाहींनहीं बदनलगीजगजाति ॥
तदपिभौंहहांसीभरिनु हांसीपैठहराति ५०२

यह जातिवर्णन नायका मौढ़ा सुरतारंभ ॥ सवैया ॥ बैठि शृंगार सँवै व्रजनारि अचानक मोहन आयो तहांहीं । पांखि गहो अवलोकि अकेलि अलौकिक केलि कलोचित चाहीं । यद्यपि वा नवनागर के मुहलागी यहै जकनानन नाहीं । तथापि हांसिभरी भृकुटीनमें वीस बिसे ठहरात है नाहीं ५०२ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० दृगथरकाहे अध खुले देह थको है डार ॥
सुरतसुखदसीदेखियतदुखितगरभकेभार ५०३

यह जातिवर्णन गर्भिनि की शोभा सखी नायकसों कहै सखी सखी सों कहै नायक सखी सों कहै ॥ सवैया ॥ बोलत बैन हरेई हरेरु भई छवि आनन की पियरीहै । आधे खुले अलसाहैं से लोचन देह थकीहै से ढारढरी है ॥ गरभको भार धरै सुकुमार जक दुखितो नवनारि खरी है । नीकी तऊ अति लागतहै मनोकेलि कलोलकी रंगभरी है ५०३ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० ज्योंकरत्योंचुटकीचलति ज्यों चुटकीत्योंनारि ॥
छबिसोंगतसीलै चलतिचातुरकातनहारि ५०४

जातिवर्णन नायक को वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ ज्योंकर त्योंहीं चलै चुटकी उघरे भुजमूल बड़ी छबिभारी । चारु कताई की मोरन ग्रीवकी टोरन जीव टरै नहीं टारी ॥ भौंह उचे तिरछे करलोचन लेत किधौं गतिरूप उजारी । पातुर मानो मनोजपकी अति चातुर कातनहारि निहारी ५०४ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० मुखउघारिप्योलखिरहत रह्यो नगो मिससैन ॥
फुरकेओठउठेपुलक गये उघरि जुरनैन ५०५

यह जातिवर्णन परिहास सखी को वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ पौरिते बोल सुन्यो पियको उठि पौढ़िरही पटओट सयानी । झीने दुकूलमें लाललखी बड़री अँखियां झलकैं सरसानी ॥ शिरोमणि पंचिलियो अचरा वहरायकै कान्हर त्यों

तिरछानी। ओठसों ओठ लगायरही दृगदावि कपोलनहीं मुसकानी ५०५ मच्छ अक्षर ४१-गुरु ७ लघु ३४॥

दो० नहिंअन्हायनहिंजायघर चितचहुंट्योतकितीर॥
परसपुरहरीलैफिरत बिहँसतिधसतननीर ५०६

यह जातिवर्णन नायका परकीया क्रियाविदग्धा सखीको वचन सखी सों॥ सवैया॥ न्हायवेको यमुनागई बाल तहां वनितानकी है अतिभीरो। त्योंहीं अचानक कृष्णकहै कहुँडीठपरचो नटनागरनीरो॥ चाह चुभ्यो चित न्हाहि सुकौन गयो नहिं जातु कँपातुशरीरो। अंजलिनीरभरै गहिडारत नाकसकोरि कहै यह सीरो ५०६॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० मुँहपखारिमुड़हरभिजे शीशसजलकरछवाय॥
मोरउचैघूंटैनुतै नारिसरोवरन्हाय ५०७

यह जातिवर्णन कविकी उक्ति॥ सवैया॥ बैठिके तीर पखारिकै आनन हाथ भिजै जलकेशन छ्वैकै। कृष्णकहै कसुसों उसराइ कधौंधरचो शीशकी चीर भिजैकै॥ ढूकर पंकज दोऊखये धरिमोरि उचैकटि खीनलचैकै। यों ब्रजबाल सरोवरन्हात महाछविसों घुटुवानते नेकै ५०७॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० बिहँसतिसकुचतिसीदिये कुचआंचरविचबांह॥
भीजेपटतटकोचली न्हायसरोवरमांह ५०८

यह जातिवर्णन कविकी उक्ति सखी नायका की शोभा नायकको दिखायवे को कहै तौहू संभव है॥ सवैया॥ देव दिवाकरको करि वंदन कृष्ण कहै मनहीमें मनावति। बांहदिये कुचअंचल बीच लजाय हिये हँसि नैन नचावति॥ भीजेदुकूल रहै लपटाय महाछवि कंचनसे नछावति। यों ब्रजनागरि रूपउजागरि न्हाय सरोवर तीरको आवति ५०८॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० मुंहधोवतियेड़ीघसति हँसतिअनगवततीर॥
धसतनइंदीवरनयन कालिंदीकेनीर ५०९

यह जातिवर्णन नायका की चेष्टा सखी सखीसों कहतिहै॥ कवित्त॥ न्हायवेको आई अति रीझि मुडरायहिये कृष्ण मोहणप्यारेको स्वरूप दरसनि है। इंदीवरनैनी अनगावति अनेकभांति पैवह कालिंदीके न सलिल धसंति है॥ परसि बिसारै करु कोरिकोरि शोभानिधि नासिका सकोरि मुंहमोरि बिहँसति है। बदन पखा-

रतिहै वाके दृग ढारतिहै गुलफ घसति अतिरंग बरसति है ५०९ ॥ नर अक्ष
गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० ओठउचैहांसीभरी दृगमोहनकीचाल ॥
मोहनकहीसुचालियो पियततमाखूलाल ५

यह जातिवर्णन नायका को वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ मैं निरख्यो जब
तेजिपकीगति जानत कौन बियोरी । जो कछु रूपकीरीझ खुभी चित जा
इकमेरो हियोरी ॥ हांसीभरी चख मोहनकी छबि ओठ उचे इकभांत किये
पीवत लाल तमाखूकेघूट कही उनमोहन पीन लियोरी ५१० ॥ चल अक्षर
गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० अँगुरिनउचभारभीतिदै उलमचितै चखलोल
रुचिसोंदुहुनदुहूनके चूमेचारुकपोल ५११

यह जातिवर्णन दोउनके हितकी सी रसाई सखीको वचन सखीसों प्रकी
सवैया ॥ आज अटू ब्रजनागर नागरि कीनों विलास महारस मान्यो । चा
चोपसों चाहिचहूंधा त्रियो जब कोऊ इतौ तब जान्यो ॥ दैभर अंतर भीति
उलमें अंगुरी उचिकौतुक ठान्यो ॥ चारुकपोल दुहूनके दोउन चुंबनकै अ
सुख मान्यो ५११ ॥ मरकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० हँसिओठनबिचकरउचै कियेनिचौंहे नैन ॥
खरेअरेपियकेपिया लगीबिरीमुंहदैन ५१२

यह जातिवर्णन नायक की शोभा सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥
कही अतिही हठकै तब राधिका के जियमें यह आई । त्रीतनवाय दुराय
किये नत नैन कछू मुसकाई ॥ बीरी बनायलई करकंज खवैवे को मंजुभुजा
साई । यों हितकी सरसाई बिलोकि भई मनमोहनके मनभाई ५१२ ॥ मराल
क्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० नाकमोरिनाहींकहै नारिनिहोरेलेय ॥
छुवतओठबियआंगुरिन बिरीबदनप्योदेय ५

यह जातिवर्णन सखी को वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ आजदुहूंको बि
अली में दुरै दरस्यो कहते नहिं आवत । नंदलला अतिही हठकै वृषभ
मारि को पान खवावत ॥ ओठनसों बिय अंगुलिछ्वै मुसकाय कै

नैन मिलावत। नासिका मोरि मरोरिके भौंह करै तियनाहिं त्यों त्यों सुख पावत ५१३॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० बतरसलालचलालकी मुरलीधरीलुकाय॥
सौंहँकरैभौंहनहँसै दैनकहैनटजाय ५१४

यह नायका परकीया मौढ़ा जाति वर्णन सखीको वचन सखी सों॥ सवैया॥ आज लखो वृषभानुलली मनमोहनसों रसखेलढरी है। बातनके चसके मुरली मुरली हरिकै दवकायधरी है॥ ज्यों ज्यों इहाकारि मांगैलला वह त्योंत्यों कछू अठिलात खरी है। दैनकहै मुकरै हँस भौंहन सौंहकरै रसभाय भरी है ५१४॥ मदकल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० गदरानै तनगोरटी ऐपन आड़ लिलार॥
हूठ्योदईचलायदृग करतिगँवारिसँवारि ५१५

यह जाति वर्णन नायका की शोभानायक सखीसों कहत है॥ कवित्त॥ शोभाके रसभरी रूपकेसे सांचेढरी बिनहूं शृंगार छविकहीं न परति है। ललित लुनाईसने गातमें सरसभरे तरुणाई आनभरी औरहू भराति है॥ वटुरारे वदन पै ऐपनकी सोहैआड़ तैसीये चिवुकगाड़ मनको हरतिहै। सहज सुभाय अठिलायकै गँवारी गोरी हूठ्यो दैचलाय नैनघायल करति है ५१५॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० नाकचढैसीबीकरै जितेछबीलेछैल॥
फिरिफिरिजानबहैगहै प्योककरीलैगैल ५१६

यह जातिवर्णन सखीको बचन सखीसों॥ सवैया॥ सखि जातचले दोउ तीर पंथ उराहने पांयन रंगढरैं। वह प्यारे की रीझ रिझावन प्यारी की भौंवै न ओहू बखानिपरैं॥ अतिनाजुक छैलछबीली तिया जित नाकसकोरि कै सीबी करैं। कवि कृष्ण कहै यह चाहपग्यो तित जानिकै पीतम पांयधरै ५१६॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० जालरंध्रमगअगनुको कछुउजाससो पाय॥
पीठिदियेजगत्योरह्यो डीठझरोखालाय ५१७

यह जातिवर्णन नायका की अंगदीप्ति देखि नायक को और बात सब भूलगई है सो सखी सखी सों कहति है॥ कवित्त॥ प्यारी खण्डगीसरै रसीली

रंग रावटीमें तकिताकी ओर छकि रह्यो नंदनंद है। कालिंदास वीचिन दरीचिन है छलकति छबिकी मरीचिनकी झलक अमंद है ॥ लोगदेखि भरम कहा धौं है या घरमें सुरङ्ग मग्यो जगमगी जोतिन को कंद है। लालन को जाल है कि ज्वालनि को भाल है कि चाथिकरु चपला कि रवि है कि चन्द है ५१७ ॥ मंदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० दोऊ चोर मिहींचन खेलनिखेल अघात ॥
दुरतहियेलपटायकै छुवतहियेलपटात ५१८

यह जातिवर्णन चोर महींचना खेलत दोउन को विलोत सखी सखीसों कहति है ॥ कवित्त ॥ वेषुकै कुमारिकाको व्रजकी कुमारिकानि मांझमांझ केशवदास त्रास पगपेलिकै। कामकी लतासी चलिये मथासिसी अमल बुधिबलराधिका के कंठ भुजमेलिकै ॥ दुरदुर दूरिदूरि पूरिपरि अभिलाप लाखलाख भांतिकी अनूप रूप केलिकै। जनीके अजिर आनि रजनी में सजनीरी सांची कीनी श्याम चोर मिहचनी खेलिकै ५१८ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० दृगमिहचतमृगलोचनी भरेउलटभुजवाथ ॥
जानगई तियनाथके हाथपरसहीं हाथ ५१९

यह जातिवर्णन सखी को वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ बैठीहुती वृषभानुकुमारि अचानक आयो तहां गिरिधारी। प्यारुकै लोचन मोचुनपै उनहूं भुज लौटि भरयो अंकवारी ॥ प्रीतमकेकरके परसे उमग्यो उर आनँद बुद्धि विचारी। याहीते वा मनभावन को पहिचान हँसी सुविचक्षण प्यारी ५२० ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० पीतमदृगमिहचतपिया पानिपरस सुखपाय ॥
जानिपिछानिअजानलों नेकनहोतजनाय ५२०

यह जातिवर्णन सखीको वचन सखी सों ॥ सवैया ॥ खेलन में कहूं पाछली घातें अचानकही चलिआये विहारी। मूंदके प्राणपियारी के नैन चह्यो चुप है रसरीति संचारी ॥ यद्यपि वा मनमोहन को करलागतही उमग्यो सुख भारी। तद्यपि जानिकै आपनी गौंहि अजान भई वृषभानुदुलारी ५२० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० दीठिपरोसिनईठकै कहेजुगहेसयान ॥

सबैसँदेशेकहिकह्यो मुसकाहटमेंमान ५२१

यह परकीया मौढ़ा सखी को वचन सखी सों ॥सवैया॥ जाइ परोसिनके दु-खपीसों भुकी ललनारिसजीमें ढिठाई। सोही परोसिन ढीठ यहांलग ईठह्वै याहि मनावन आई॥ मीतमके जे सँदेशे हुते वे कहे सबही करिकै चतुराई। येते पै मान कह्यो मुसकाय यहै कहि प्यारो खरीकै रिसाई ५२१ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० चितवतरसतमिलतनबनत बसिपरोसकेवास ॥
छातीफाटीजातसुनि टाटीओठउसास ५२२

यह परकीया अनुराग नायकको अथवा नायकाको वचन सखीसों ॥ कवित्त॥ नीचीडीठि आपनपै कोलग चितैये बलि कैसेहून देखे जाहु जेतो शोच करिये। मुरलीकी धुनि सुनि द्वारेउभकीने से खमनके डरैते तनही में कांपडरिये। लाजन की भीर पल पैठोहून पावै नैन धीरे धीरे सकुच वढ़ाई पांवधरिये। कीजै कहाकान्हर कनोड़े भये जीतों नाहिं नातो एक चासमें उसास लेले मरिये ५२२॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० ढीठ्योदैबोलतहँसत प्रोढ़बिलासअपोढ़ ॥
त्यौंत्योंचलतनपियनयनछकियेछकीनवोढ़ ५२३

यह मदगानसमय सखीको वचन सखी सों॥ कवित्त॥ आज वरुनीकी वारनीकी मैं बिलोकी वह शोभा मेरे नैननमें अवलौं वसति है। ज्यों ज्यों वह ढीठ्यो दैकै बोलत सरसनैन नागरनबेली हेरिहेरि कै हँसति है॥ कहै कविकृष्ण गर लागिवे को ललकाति प्रौढ़ा के सकल विलास विलसतिहै। त्यों त्यों छकैतियनै छकाई ऐसे पीके नैन पलकनिहू की भूली गति दरसाति है ५२३ ॥ अहिवर अक्षर ३८ गुरु ५ लघु ३३ ॥

दो० हँसिहँसिहेरतनवलतिय मदकेमदउमदाति ॥
बलकिबलकिबोलतबचन ललकिललकिलपटाति ५२४

कवित्त॥ छिनक में हँसै छिनरावै छिन देखिरहै छिनकमें बैठि छिनलोटि लोटि जात है॥ छिनक में ठाढ़ी ह्वैकै सखिनसों बातैं करै छिनक में झूमि झूमि मुर मुस कातहै॥ गातकी न सुधि न सम्हार कछू अंवर की छिनकहू में आलीहू के अंग लपटात है। छिनक में रीझिरीझि वारको बदन चूमै छिनक में

फेरि फेरि बूझे वही बात है ५२४ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मिलिचन्दनबेंदीरही गोरेमुहनलखाय ॥
ज्योंज्योंमनलालीचढ़ै त्योंत्योंउघरतजाय ५२५

यह मद्पान समय नायका की शोभा नायकको कहै अथवा सखी सखी सों कहै ॥ सवैया ॥ कछुआजु लखी मद्पान समय ललना कि प्रभा जियतें न टरै। कविकृष्ण कहै बलकै ललकै मनमोहन को हँसि अंकभरै ॥ द्युति चन्दन की बिंदुलीकी रही मिलि गोरे लिलार न जानिपरै। अरुणाई चढ़ै मदकी मुख ज्योंहीज्यों त्योंहीत्यों जात खरी उघरै ५२५ ॥ नरअक्षर २३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० निपटलजीलीनवलतिय बहकिबारुनीसेय ॥
त्योंत्योंअतिमीठीलगे ज्योंज्योंढीठ्योदेय ५२६

यह मद्पान समय सखी को वचन नायकसों ॥ सवैया ॥ लाजभरी अतिही नवनागरि जाकी सुधाई सुघाईके गाई। ताहिबकी छवि देखिबे को पिय प्यारे भुराय कै बारुनि छाई ॥ ज्यों ज्यों उमंग उठै मदकी तिय त्योंत्यों निशंक है देत ढिठाई। ढीठ्योही लागत नीकी महा वह मानौं भरी बहुभांति मिठाई ५२६ ॥ मच्छ अक्षर ३१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० मानतसासोकररही बिवशबारुनीसेय ॥
झुकतिहँसतिहँसहँसझुकति झुकझुकहँसहँसदेय ५२७

यह मद्पान नायकाकी शोभा नायक सों कहति है सखी सखीहू सों कहै ॥ कवित्त ॥ बारुनी विवश मनमोहन सों मानठान आज मृगलोचनि तमाते को लसति है। चारु तरुणाई में निकाई छबिछाई त्योंत्यों गोरे मुखपर अरुणाई सरसनि है ॥ कबहूं बदन पट घूंघटके ढांकलेत कबहूं उघारिदेत रंग बरसति है। झुकति हँसति हँस झुकति झुक हँसति हँसि हँसि झुकै झुक झुकके हँसति है ५२७॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० रूपसुधाआसवछक्यो आसवपियतबनैन ॥
प्यालेओठपियाबदन रह्योलगायेनैन ५२८

यह मद्पान समय नायका की शोभा देखि नायक छक रह्यो। सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ बारुनी को बलिआयो समै कहते न बनै कछु कौतुक भारो। आवत रंगभरी मृगनैनि रह्यो द्युति को भरि भौन उजारो ॥ आस-

वरूप सुधाकै छक्यो मद पीवेको भूलिगयो सुधिप्यारो। प्याले सों ओठ पियामुख नैन लगाये रह्यो छविको मतवारो ५२८ ॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० खलितबचनअधखुलितदृगललितस्वेदकनजोति॥
अरुणबदनछबिमदछकी खरीछबीलीहोति ५२९

यह मदपान समय नायकाकी शोभा सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ नैन कछू उघरे से मुँदे अरु बैननमें शिथिलाई रसीली। स्वेदके बूंदनसों झलकै अरुणद्युति आनन पै चटकीली ॥ तैसी ये रूप उजागरि नागरि सोहत शोभासनी गरवीली। चारुजगी तन यौवन जोति छकै मद होत खरी ये छबीली ५२९॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० छकिरसालसौरभसने मधुपमाधुवीगंध॥
ठौरठौरझौरतझपत भौंरभीरमधुअंध ५३०

यह वसन्तऋतु समय जो मानवती नायकसों सखी कहै तो मनायवो होय जो नायका नायकसों कहै स्वयंदूतहोय ऐसे नायकहू को कहिवो सम्भव है जो नायक सखीसों कहै तो अपनी अवस्था प्रयोजन नायका मिलाप ॥ सवैया ॥ फूलनके रसके चसके अवगाहि थके सव वेलि जितावन। माधुरी के मृदुगन्धसने अरविन्द पराग सों पागिरहे तन ॥ मंजुरसाल के सौरभ सों मिलमत्त भये सुरत्यों न रहीमन। ठौरनि ठौरनि झौरनि झूमि झुके मधुअंध मधूव्रतके गन ५३०॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० फिरघरकोनूतनपथिक चलेचकितचितभागि॥
फूल्योदेखपलाशवन समुहींसमुझदवागि ५३१

यह वसन्त समय नायका को वचन नायका सों होय तो प्रोषितपतिका सखी को वचन नायक सों होय ॥ कवित्त ॥ देखो ऋतुराज को समाज बन बागन में प्रफुलित सुमन रहे हैं जोति जागिकै। कुसुम पलाश के अंगार जानि चहूं ओर चोंचन सों चापत चकोर अनुरागिकै ॥ आगे तें विलोकि फूले मैनमद चित ऊले नूतन पथिक भूले भरम दवागिकै। पुरी उरऐल परदेशकी बिसारी गैल लौटि चले घरको चकित चित भागिकै ५३१ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० बनवोटनपिकबटपरा लखिबिरहानिमलिमैन ॥

कुहौकुहौकरिकरिउठत करकरिरातेनैन ५३२

यह वसन्त समय सखी को वचन सखीसों होय तो अपनी अवस्था जताय्यो होय ॥ सवैया ॥ मैन महीप को मानिमयी द्रुमडारि चढ़े चहुँ ओरनि दूकत। देखतही विरहीजन को करि लोचनलाल कुहो कुहो कूकत ॥ बीसबिसे बन बाटनमें बटपार बसे पिक भूलत कूकत। प्राणपती बिन क्यों बचिवो अब दांवपरे रिपु क्यों टुक चूकत ५३२ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० दिशिदिशिकुसुमितदेखियतउपवनविपिनसमाज ॥
मनोबियोगिनकोकियो शरपंजरऋतुराज ५३३

यह वसन्त समय है सखी को वचन नायकसों होय तो मनायवो नायकसों होय तो प्रवत्स्यतपतिका ॥ कवित्त ॥ आयो है मदन क्षितिपाल को हुकम पाइ आमल प्रबल ऐसो अमल चलायो है। मानगढ़ तोरिबे को अधिक प्रचण्ड वह देखो सबहीके अनुराग उमगायो है ॥ वन उपवन जित तित अवलोकियत दिशि दिशि कुसुम समूह छबिछायो है। वैरसाधि विषम वियोगिनके रोकिबे को मानों ऋतुराज शरपंजर बनायो है ५३३ ॥ करभ अक्षर २८ गुरु २० लघु ८ ॥

दो० हीऔरैसीह्वैरही टरीअवधिकेनाम ॥
दूजेकरडारीखरी बौरीबौरेआम ५३४

यह वसन्त समय नायकाकी अवस्था सखी नायकसों कहति है सखी सखीहूसों कहै ॥ सवैया ॥ मोहन सों बिछुरी जबते तबतें न लही कल एक घरी है। नैनन नीरहरै निशिवासर व्याकुल बाल अचेत खरी है ॥ ऐसीदशा पहलेहीहुती पुन औरैभई सुधि औधिटरी है। तापर बौर रसालन देख्यो बसन्त के मोसरबौरी करी है ५३४ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० कहिलानेयेकतबसत अहिमयूरमृगबाघ ॥
जगततपोबनसोंकियो दीरघदाघनिदाघ ५३५

यह ग्रीष्म समय नायकाको वचन नायकसों हेठ अतो प्रवत्स्यतपतिका सखी को वचन नायकसों नायकहू सों होय ॥ षट्पद ॥ एक भूतमय होत भूत तजि पंचभूत भ्रम। अनिल अंबु आकाश अवनि ह्वैजात आगिसम ॥ पंथ थकित मद मुकति सुखित सिन्धुरस जोवत। काकोदर करिकोस उदरतर केहरि सोवत ॥ पिय प्रबल जिय यह विधि अबल सकल विकल जलथल रहत। तजि केशवदास

उदासमति जेठमास जेठे कहत ५३५ ॥ पयोधर अक्षर ३८ गुरु १२ लघु २६ ॥

दो० बैठिरहीअतिसघनबन पैठसदनतनमाह ॥
देखदुपहरीजेठकी छाहौंचाहतछांह ५३६

यह ग्रीष्म समय नायकाको वचन नायक सों स्वयंदूत ऐसे नायकको वचन नायका सों जो नायका की सखी नायकसों कहै तो सदेश को निवारण होय ॥ कवित्त ॥ तरवर लता बन ऐसे मुरझाय गये जैसे कामिनी को मुखकंत बिन भयो है। सरिताभई है छीन ऐसेसर जलहीन प्यारीदीन होती जो बिदेश पतिगयोहै ॥ अवनि अकाशपानी नाहबिन ऐसे जैसे नाहके वियोग भामिनी ज्यों तन तयो है। जेठकी जरनि मांह छांहहुतिकाति छांह एहो रिझवार परदेश को गयो है ५३६ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नाहिनयेपावकप्रबल लुवैंचलतचहुँपास ॥
मानहुँबिरहबसंतके ग्रीषमलेतउसास ५३७

यह ग्रीष्मसमय नायका प्रोषितपतिका नायकाको वचन सखी सों ॥ कवित्त ॥ चन्दकर मंडलते मंडके अखंडधार बरषत पावक प्रचंड किधौं यहरी। कृष्ण प्राण प्यारे की दुहाई किधौं आय बड़वानलकी लूवैं ताते तचति दुपहरी ॥ चंडकर मंडली ते पावकन बरषत लूवैं न चलत जिन्हैं देखमतहहरी। मेरे जानि प्रीतम बसन्त के वियोगभये ग्रीषम बिरहनी उसासे लेत गहरी ५३७ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० लैचुभकीचलजातजित तितजलकेलिअधीर ॥
कीजतकेशरनीरसे तिततित केशरनीर ५३८

यह जलकेलि सखी को बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ मोहन सों जलकेलि रची वृषभानुसुताहि तरंगमें बोरी। कृष्ण कहै कविता छविपै रतिकामकी वारौं करोरि के जोरी ॥ चूभकलै गहरै जलहू चलिकै जितही जितजात किशोरी। केशरि के जल केशरि केशरि नीर करै तितही तितगोरी ५३८ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० पावसघनअँधियारमहि रह्यो भेदनहिं आन ॥
रातद्योसजान्योपरत लखिचकईचकवान ५३९

यह वर्षा समय स्वयंदूत नायक को वचन नायका प्रति नायका को बचन स-

खी सों ॥ सवैया ॥ अम्बर आनि दिशा विदिशा सगरे तमही को वितान सो तान्यो। मेचक रंग बसै जगमें अति मोद हिये निशिचार न मान्यो ॥ पावस के घन के अँधियार में भेद कछू न परै पहिचान्यो । द्योस निशाको विवेक सुनौ चकई चकवान के बोलते जान्यो ५३९ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० कुढंगकोतजिरँगरली करतियुवतिजगजोय ॥
पावसगूढ़निवातयह बूढ़नहूरंगहोय ५४०

यह वर्षा समय सखी को वचन नायका सों मनायवो ॥ सवैया ॥ पावस आवतही खग पुंजनि मोद सो कुंकुम चाय दई है। चायभरी वहु भाय भरी मिति रंगरली वनितानि ठई है॥ कोप प्रसंग कुढंग निवार निहारि घटा उनई जुनई है। गूढ़न है यह वात गुसायन बूढ़न देखि सुरंग भई है ५४० ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० धुरवाहोंहिनलखिउठै धुवांधरन चहुँकोद ॥
जारतआवतजगतको पावसप्रथमपयोद ५४१

यह वर्षा समय नायका प्रोषितपतिका नायका को वचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ मेरो कह्यो मानि जिय नेहचौ के जानि आली प्रथमही पावस के वल वपरत है। शीतल समीर मिल्यो तैसोई सहायकरु विरही विजारे कहि कैसे उवरत है ॥ जगहि जरावत ये आवत उमड़घन ताही त्रास खगकुल शोर ये करत है। चपलान चपल झरप ज्वाल जालनिकी तेई धूम धार ये न धुरवा परत है ५४१ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० वेऊचिरजीवी अमर निधरकफिरोकहाय ॥
छिनबिछुरेजनकीनहिन पावसआवसराय ५४२

यह वर्षा समय सखी को वचन नायकासों नायका को वचन सखी सों कवि की उक्ति ॥ सवैया ॥ घोर घटा घुमड़ी चहुँओर करैं बहुभांतिन शोर विरावो । भूमि हरी वह शीत समीर गहैं गति मंद सुगंध सुभावो ॥ ऐसे समय छिनएक बिछोह भई जिनकी गईछूटे न आवो । वे चिरजीवी भये जगमें अजरामर क्यों न निशङ्क कहावो ५४२ ॥ मरालअक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० अबतजिनाउउपावको आयोश्रावनमास ॥

खेलनरहिबोखेमसों केमकुसुमकीबास ५४३

यह वर्षा समय प्रोषितपतिका नायकाको वचन सखी सों ॥ कवित्त ॥ जौलौं मन रह्यो हाथ तौलौं न उसासी गाथ आगयो बिरह दुख खलनको सहिबो। प्यारे नँदनंदन की आवन अवधि आश जैसे तैसे रह्यो जीव अब कहा कहिबो ॥ आयो सखी आवन जो आयो मनभावनरी अब तू उपायन को छाँड़ि वृथा चहिबो। कदम कुसुमकी सुवासको प्रकाश भयो खेलुहै न मानन को कुशलसों रहिबो ५४३॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० तियतरसौंहैंमुनिकिये करसरसौंहैंनेह ॥
धरपरसौंहैंह्वैरहे झरबरसौंहैंमेह ५४४

यह वर्षा समय है कविकी उक्ति औ स्वयंदूती नायका को वचन नायक सों ॥ कवित्त ॥ हरित पुहुमि जल भरे वन उपवन चहुँओर सौरभ के उमँगि उदयरहे। उयही लता लहलही छविछायरही कुञ्ज कुञ्ज खग कुल कोलाहल कैरहे ॥ उमड़ि घुमड़ि परसंसैं पुहुमि धन सोहैं बरसौंहैं भूमि ह्वै रहे। हेरि हेरि मुनि मन सिय तरसौंहैं होत इत घन हेरे अनुराग के उतै रहे ५४४॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३०॥

दो० चलितचलितश्रमस्वेदकणकलितअरुणमुखतैन॥
बनबिहार थाकीतरुणि खरेथकाये नैन ५४५

यह वनविहार नायका की शोभा नायककी स्तुति सखी सखीसों कहति है॥ कवित्त॥ सुखमा कलित तरुणाई की गुराई मांझ उमँगि प्रकाश अरुणाई के सुहाये हैं। तैसेई ललित श्रम स्वेद कण झलकत जगमगज्योतिके समूह सरसाये हैं॥ कहै कविकृष्ण देखिरहे अनमेष ह्वैकै चालन न क्योंहू पगऐसे रीझि धाये हैं। विपिनविहारी रसज्ञाकी व्रजबाल बाकी थकित प्रभानखरे लोचन थकाये है ५४५॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० बरजै दूनी हठ चढ़ै नासकुचै न सकाय॥
टूटतकटिदुमचीमचकिलचकिलचकचजाय५४६

यह सखी समय हिंडोरेकी शोभा नायकसों कहति है॥ सवैया॥ रही खसि शीशते सारी सुरंग सम्हारे नहीं नकजूटतिहै। छलसों अवलोकति नंदलला हि लगी रहे रैनु अहूटति है॥ उझरै कबरी झलकै छवि पीठिपै डीठि महासुख लूटति है।

चमकै मृगलोचनि केलिभरी लचकै कटियौ जनु टूटतिहै ५४६ ॥ चल अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० घनघेरोछुटिगोहरषि चलीचहूंदिशराह ॥
कियोसुचैनोआइजग शरदशूरनरनाह ५४७

यह शरद समय राजनीति मसंग कविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ छूटे गयो ब्रजनु चलनु अपमारग को अपने आने सतमारग समीति है । सोहत परम हंस शूर शुभ कलानिधि गाइद्विज देवतानि पूजिबे की प्रीति है ॥ केशवराय सबही के हृदय कमल फूले सोहत शरद कियौं आछी राजनीति है ५४७ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० अरुणसरोरुहकरचरन दृगखंजनमुखचंद ॥
समयआयसुन्दरशरदकाहिनकरतअमंद ५४८

यह शरदसमय कविकी उक्ति है ॥ कवित्त ॥ सोहत अरुण सरसीरुह चरण कर जिनहि जगतप्रिय वदन नानाई । कलारिपूरण सुधानिधि वदन लसै जाकी अङ्गन छवि कहत न आवई ॥ देखियत खञ्जन तरल कजरारे नैन कहैं कविकृष्ण देखि जीव सचुपावई । समय सुखपुञ्ज सनी सुन्दर शरद आई कौनके न उरमें अनन्द सरसावई ५४८ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० कियोसबैजगकाम वश जीतिजिते अजेय ॥
कुसुमशरहिशरधनुषकरिअगहनुगहननदेय ५४९

यह हेमन्त समय कामोद्दीपन अधिक होताहै सुनायक अथवा नायका सखि तों कहै ऐसोही सखीको वचनहू सम्भवहै कविकी उक्ति होय ॥ कवित्त ॥ मृगीसे मुनीश सिद्ध ईश शतक्रतु केसे केते कीने निकतगनै के कहाँ काहि काहि । मानियत जाको नऊखण्डमें अखण्डधाकु जीते महिमण्डलके अजित जितीकआहि ॥ कहै कविकृष्ण जिन फूलनही के आयुधसों कैसेकैसे बली भेदे सादसुदेते कुचाहि । जीते जिहिनीनोंलोक ऐसो बली मनमथ अगहन न गहन देत शरचापताहि ५४९ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० ज्योंज्योंबढ़तिबिभावरी त्योंत्योंबढ़तअनन्त ॥
ओकओकसबलोकसुख कोसकोसहेमन्त ५५०

यह हेमन्त समय कवि की उक्ति मुख्य है संयोग शृंगार में बनै विप्रलम्भहू

मैं कोक कोशको प्रसंग अन्योक्तिहू जानिये ॥ कवित्त ॥ हिमऋतु आइ भई शीत सरसायु देखि भाजि गई गरम उरोज अचलनमें । बासरकी लघुता बिलोकि मुरझास कौल सुछिन है रह्यो तेज तपन के तनमें ॥ कहै कविकृष्ण ज्यों ज्यों रजनी बढ़न त्यों त्यों उमगत मोद अनुरागिन के मनमें । दीनों कोक लोक बादर अपार सुख देखियत शोक है वियोगी कोक कोकन के गनमें ५५० ॥ मदकल अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो॰ मिलि बिहरत बिछुरत मरत दम्पति अति रसलीन ॥
नूतन बिधि हेमन्त सब जगै जुराफा कीन ५५१

यह हेमन्तसमय सखीको वचन नायकासों होय तो मानवती और कविकी उक्ति होय ॥ कवित्त ॥ दोऊ ये है देखिये दुहून बीच येकै प्राण हिनकी उमंग नई नई ये गहत हैं । अतिरस लीन दोऊ मिलैं ही विहार करैं कहै कविकृष्ण चित अति उमगत है ॥ बिछुरे न नेकहू तो जीवेको भरोसो नाहिं अति अकुलाय मैन बिथा न सहत हैं । और एक देखो हिमऋतुकी नवल रीति जगतमें सबही जुराफा ह्वै रहत हैं ५५१ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो॰ आवत जात न जानियत तेजहि तजि सियरान ॥
घरहि जमाईलों घट्यो खरो पूषदिनमान ५५२

यह शिशिरसमय दोउनकी हिनकाई है सुरानिकी आछी लगति है सो सखी दिन की लघुता कहिकै विरहीहू दिनकी निन्दा करै ॥ कवित्त ॥ बाढ़ैं की डग है बिभावरी बढ़त ज्योंही त्यों वियोगिनको हियो अकुलात है । दम्पति उमंग अनुरागनि भिजतन बर एक है रहत मिलि दुहुनको गात है ॥ पूषको दिवस लघुमानभयो ऐसे जैसे ससुरके घरमें जमाई सकुचात है । तेज को न लेश रह्यो शीतल सुभाव गह्यो आवत न कोउ कब आयो कब जात है ५५२ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो॰ रहनसकी सब जगतमें शिशिरशीतके त्रास ॥
गरम भाजि गढ़ वै भई तियकुच अचल सवास ५५३

कवित्त ॥ सूरै तजि भाजो बात कासिक में जब सुनी हिमकी हिमोचल तें चमूउँ सरति है । आयें अगहन कीनो गहैन दहनहूकी तितहूतें चलो कहूं बीर निपरतिहै । हियमें परी है हूल दौरि गहि राखिन अब निजमूल सेनापति सुमिरति

है। पूरब में तियाके कुच ऊँचे कनकाचल नगरमगढौई भई शीतसों लरति है॥ ५५३॥ वारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० तपनतेज तपतातपति अतुलतुलाई माह॥
शिशिरशीतक्योंहुनघटै बिनलपटैतियनाह ५५४

यह शिशिरऋतु सखी को वचन नायकासों नायकको वचन सखीसों॥ सवैया॥ मोलबिशाल की ओढ़हुलास दिनेश को तेज इते परहोऊ। राखहुलाई निहालिनुमें तन पावक पुंज अँगीठी संजोऊ॥ माहको शीत बिहात न कैसेहू कोटि उपायकरो किन कोऊ। जौलग पीवपिया सचुपाय रहै लपटाय न एक है दोऊ॥ ५५४॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३०॥

दो० लगतसुभगशीतलकिरनिनिशिसुखदिनअवगाहि॥
माह शशीभ्रम सूरत्यों रहत चकोरै चाहि ५५५

यह शिशिरऋतु कवि कविकी उक्ति मुख्य है॥ कवित्त॥ शिशिर में शशि को स्वरूप पावै सविता सुघामहू में चांदनीकी द्युति दमकति है। सेनापति होत शीतलता है सहसगुनी रजनीकी बासरमें झाईं झलकति है॥ चाहत चकोर सूर ओर दृग छोरकारि चकवाकी बातीतजि धार धसकति है। चन्दके भरम होतु मोदहै कमोदनी को शशि शङ्क पङ्कजनी फूली पै रहति है॥ ५५५॥ वारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० दियोजुपियलखिचखनमें खेलतफागखियाल॥
बाढ़तहूअतिपीरसुनिकाढतबनतगुलाल ५५६

सवैया॥ हरिखेलत फाग वधूगण में धनश्यामके नरिंग सनै। इत चाह भरी वृषभानुसुता उमग्यो हरिके उत मोदमनै॥ जब नैननमें तकि डारयो लला अपने करसों महरायवनै। अति बाढ़त है जऊ पीर तऊ वह काढ़त पैन गुलाल वनै॥ ५५६॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० पीठदियेहीनेकमुरि करिघूंघटपटटारि॥
भरिगुलालकीमूंठसों गईमूठिसीमारि ५५७

यह होरी खेलने को समय नायका की शोभा नायक सखीसों कहत है। सवैया॥ मोपै कछू कहते न बनै करिजैसी दशा अजनारिगई है॥ पीठि दियेही मुरी मनकै वह फागन खेलि खिलारगई है॥ घूंघट को पट टारिकै मौंह उतारिकै

नेक निहारिगई है। यों भरि मूठिगुलालसों प्यारी अचानक मूठिसी मारिगई है ५५७॥

दो० ज्योंज्योंपटझटकतिहँसति हठतिनचावतिनैन॥
त्योंत्योंनिपटउदारहू फगवादेतवनैन ५५८

यहनायका मौढ़ाहोरी खेलको समाज नायक की शोभा देखिबेको लोभ लाग्यो है सो सखी सखीसों कहति है॥ कवित्त॥ फागुन के खेलको समाज बनिआयो जैसो तैसो एक रसना सों कहत बनै न है। सांकरीगली में नंदलाल कोपकरि बाल मन भाये करत बढ़ावै चित चैनहै॥ ज्यों ज्यों नेहचाह भरि लोचन नचाय पटु फटकि कहत हँसि हँसि मृदुबैनहै। त्यों त्यों चित्त लालनको निपट उदारतऊ फगवाको देबो क्योंहू मानतु मनैन है॥ ५५८॥ त्रिकल अक्षर २९ गुरु ९ लघु ३०॥

दो० छुटतमुठिनसँगहीछुटे लोकलाजकुलचाल॥
लगतदुहनइकबेरही चलचितुनैनगुलाल५५९

यह होरी खेलको समय सखी सखीसों कहति है॥ कवित्त॥ होरी को समाज बरसाने को वगर आजु कहा कहौं आली बनिआयो नीको ख्यालरी। इत युवतीगणमें राधिका किशोरी उत सहित सखान बन्यो मदन गुपालरी॥ छुटतमुठी के संग छूटतहै एके बेर गुरुजन उरलोकलाज कुलचालरी। कहै कविकृष्ण त्यों ही लागत दुहूके तनएकैसाथ चावचित लोचन गुलालरी॥ ५५९॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० ज्योंज्योंझुकिझांपतबदन बिहँसतअतिसतराय॥
तुक्योंगुलालमुठीझुठी झिझकावतप्योजाय५६०

यह होरी खेलत नायका की चेष्टा देखि नायक रीझ्यो है सो नायक युक्ति करत है सो सखी सखीसों कहति है॥ कवित्त॥ आज ब्रज देख्यो होरी खेलको समाज वह शोभामेरे नयन में रही है बिहरिकै। राधा बनमाली को बिलास लखिआली सच मघवाके कोरिकै गुमान जातगरिकै॥ ज्यों ज्यों प्यारी झुकि झुकि झांपत बदन बिहँसत सतरातरसिको सो रुखकरिकै। त्यों त्यों छबि देखि छक्यो कृष्ण प्राणप्यारोलाल झिझकावत गुलाल मूठी झूठी भरिभरिकै ५६०॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० रसभिजयेदोऊदुहुन तौटिकरहेटरैन॥

छविसोंछिरकतप्रेमरँगभरिपिचकारीनैन ५६१

यह दोउन को परस्परावलोकन है सो सखी सखीसों होरीके ख्याल की स-मता देकरि कहति है॥ कवित्त॥ आज वृषभान की कुमारी मनमोहन को नैनन में राख्यो होरीको सो ख्याल करिकै। भरेहित चायकोऊ चकतनदाइटि करहैं टकलाय कोऊ जानत न टरिकै॥ मिजयथेवनाय अतिरसमें परसपागे अनुराग के गुलाल रंग ढरिढरिकै। कृष्णकहै छिरकत छविसों छबीले दोऊ नैन पिचकारी में प्रेम भरिभरिकै ५६१॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० गिरैकंपकछुकछुरहै करुपसीजलपटाय॥
लैयोंमुठीगुलालभरि छुटतझुठीह्वैजाय ५६२

यह होरी खेल को समय सखी सखीसों कहति है दोउन के सात्त्विकभाव कं-पन है॥ कवित्त॥ मेरी कह्योमानरी उतालीचलि देखि नेकु आज ब्रजधूम होरी खेलकी अनूठी है। केसरिसोसनेरस रसिक रसीलेजहां वरषा तहाई सब सुखन अँगूठी है॥ यय पे परस्पर दोऊ मुखमांडिवे को लेइअति चायसों गुलाल भरि-मूठी है। कछुकर पकजपसीजे लपटातकछू कांपिगिरिजात तातिखालेहोत झूठी है ५६२ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० रहीरुकीक्योंहूंसुचलि आधिकरातिपधारि॥
हरिततापसबद्योसको उरलगियारिबयारि ५६३

यह वायु वर्णन कवि उक्ति॥ कवित्त॥ ऐसीरही रुकि क्योंहो आवनेन पा-योजाके बिनमिजे प्रानन की गति अकुलातिहै। लोचन चकित जाको आगम बि-लोकिवे को चहूंओर चितवत छाती होत तातिहै॥ क्योंहू क्योंहू चलिकै अचानक-हीं आधीराति आयगई ब्यार जैसे पारिआयी जाति है। हरित तपाति सब द्यो-सकी हियेसों लागि कहै कविकृष्ण सुखसिंधु सरसाति है ५६३ चल अक्षर २७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० चुवतस्वेदमकरंदकण तरुतरुतरबिरमाय॥
आवतदक्षिणतेचल्यो थक्योबटोहीबाय ५६४

यह पवन वर्णन कवि की उक्ति॥ कवित्त॥ नीझर तड़ाग जल यंत्रन के बिमल सलिल परस ऐसे हार सों ढरेढरें। कृष्ण कहै जहां तहां सीरी छांह देखि देखि बिरमि रहत तरुतरुके तरेतरें॥ सुमन पराग रज पागि रह्यो अंग

अंग स्वेदकण बूंद मकरंदके धरें धरें । सुरभि समूह छाक्यो दक्षिण दिशातें वायु थाक्यो सो वटोही चल्यो आवत हरेहरे ५६४ यच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४॥

दो० बिकसतनवमल्लीकुसुमनिकसतपरमलपाय॥
परसियजारतविरहहियबरसरहेकीबाय ५६५

यह पवनवर्णन विरह के प्रसंग में नायका अथवा नायक सखीसों कहै है मानके प्रसंग में सखी नायकसों कहै ॥ कवित्त ॥ मञ्जुलता बेलिन के सघन निकुंजनि तें हरे हरे निकसत सबही सुहात है । सुमन कदंबनिके सुखद पराग राग सनि जाहि मिलि भौंरनकी पांति हुलसाति है ॥ मुकुलित मालिका के कुसुम सनि बनिनु ते निकसति सुरभि सहित सरसाति है । बरसि रहे की सीरी आवत बयार देखो परसहिये जरत वियोगिन की छाति है ५६५ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० रुकयोसांकरेकुंजमगकरतझांझिझुकरात॥
मंदमंदमारुततुरँगखूंदिनआवतजात ५६६

यह वायु वर्णन ॥ कवित्त ॥ सोहत शृंगार बहुभांतिन जराव साज रंगरंग कुसुम तरल अतिअंगु है । करिकालनिन भ्रमरावली लसति मुखपुहुप पराग डकयों उमंग अनंगु है ॥ झझकत सांकरे निकुंज मग निरखनु झांझसी करत झरात भरयो रंगु है । खुंदीवी करत मंद मंद मजपाचलते आवतपवन कामदेव को तुरंगु है ५६६॥ मल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० लपटीपुहुपपरागपट सनीस्वेदमकरंद ॥
आवतनारिनवोढलौं सुखदबायगतिमंद ५६७

यह वन वर्णन कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ फूलनकी रज अम्बर में नखतें शिखलों लपटी छवि छावति । स्वेदजसे मकरन्द फुही लगि नयनरसों छतियादि सिरावति ॥ कृष्ण कहैं बहुभांतिनुकै तनसों रस चौंहू दिशा महकावति । मन्दगहैं गति नारि नवोढलो ज्यारिज कुञ्जगली तन आवति ५६७ ॥ मरकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० रणितभृंगघंटावली झरतदानमधुनीर ॥
मंदमंदआवतचल्यो कुंजरकुंजसमीर ५६८

यह वायु वर्णन कवि की उक्ति ॥ कवित्त ॥ घंटन के शब्द अखण्ड लेई

सुनियत गुंजत अनंद भरयो अलिनको वृंद हैं। सुमन समूहन की धूर सों धुरेते गात मुद जल उमगि झरत मकरंद हैं॥ रंगरंग फूलनकी झूल में झपाये तन जगत बिरनिया को बिविक्रम अमंद हैं। मान तरु तोरि केका आवत गुमान भरयो मंद गति पावनु मनोज को गयंद हैं॥ ५६८॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० चंद्रोदय।हैजसुधादीधितिकलावहलखिडीठिलगाय
मनोअकाशअगस्तियाएकैंकलीलखाय ५६९

यह चन्द्रोदय वर्णन सखी को वचन नायका सों अगस्तिया के तरु तें संकेत स्थल सूचन द्विजते मिलिवे की अवधि सूचनुसाधार ते कविकी उक्ति॥ सवैया॥ देखसवै दुतियाके मयंककी कैसी कला नभज्योति जगी है। सो छवि चाहि चकोरनकी अवली हुलसी हिय मोद पगी है॥ यांनिरखी अरुणाई लिये उपमा कविके उरमें उमगी है। मानहुं व्योम अगस्तिके रूपहि एककली पहलेही लगी है ५६९॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० धनियहद्वैजजहांलख्यो तज्योदृगनदुखदंद॥
तोभागनपूरबउयौ अहेअपूरबचंद ५७०

यह चन्द्रोदय सखीको वचन नायकसों प्रयोजन नायका दिखायवो अन्योक्तहू याही प्रसंग में संभव है॥ कवित्त॥ सकल कलानि परिपूरणपियूषनिधि सोहै अकलंक सब सुखनि को कंद है। जाहि देखि वारिज बदन और तियनके सकुचि मुदित ऐसी प्रभाको अमंद है॥ धनियह द्वैज जहां नीकेकै निरखिपायो देखतही दृगनिको गयेदुख दंदहै। पूरबकी ओर तुव पूरब सुकृत फल निरखि अपूरब उदित भयो चंद है ५७०॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० शीशमुकुटकटिकाछनी करमुरलीउरमाल॥
यहिबानिकमोमनसदा बसौबिहारीलाल ५७१

यह श्रीकृष्णजू को ध्यान है कि या बानिक सों मेरे हृदय में बसो॥ सवैया॥ छबिसों कवि शीश किरीट बन्यो सुविशाल हिये बनमाल लसैं। करकंजहि मंजुरली मुरली कछनी कटि चारु प्रभाव बसैं॥ कवि कृष्णकहै लखि सुन्दर मूरति यों अभिलाष हिये सरसैं। वह नन्दकिशोर विहारसदा यह बानिक मो हिय मांझ बसैं ५७१॥ वानर अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० मोरमुकुटकीचंद्रकनि योंराजतनँदनंद ॥
मनुशशिशेखरकीअकसकियशेखरशतचंद५७२

यह श्रीकृष्णजूकी मुकुटकी शोभा सखी को वचन नायकासों भक्तको वचन हूं सम्भव है ॥ सवैया ॥ आज लख्यो ब्रजराजकुमार सुदेश शृंगार बने सिगरे हैं। रूपकी रीझ कही न परै अवलोक बिलोचन मोदभरे हैं ॥ कविकृष्ण कहैं शिर सोहत मोर किरीटचँदा छबिपुंजभरे हैं। मानों अकस शशिशेखरसों हर शेखर चंद अनेक करे हैं ५७२ वारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० अधरधरतहरिकेपरत ओठदीठिपटजोति ॥
हरितबांसकीबांसुरी इंद्रधनुषरँगहोति ५७३

यह श्रीकृष्णजूकी मुरली बजावति शोभा होतहै सो सखी नायकसों कहति है नायका सखीसों कहै ॥ सवैया ॥ चलिदेखिरी बालिकसों बनिकै ब्रजराज को लाड़िलो आवत है। मुखचंदके चारु मरीचनसों बलिनैन चकोर सिरावत है ॥ जब दीठिको ओठनको पटको मुसकानको रंग मिलावत है। तब बांसुरी बांस हरे की लला सुरचापके रंग दिखावत है ५७३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु२४॥

दो० मकराकृत गोपाल के शोभितकुंडलकान ॥
मनोधस्योहियघरसमरु ड्योढ़ीलसतनिशान५७४

यह कृष्णजू को ध्यान है तरुणाई आई हृदयमें कंदर्प प्रवेश भयो यह प्रयोजन ॥ सवैया ॥ मैं निरख्यो ब्रजराजलला द्युति पुंजहिये हित साजिरहे हैं। कृष्ण कहै दृगदीरघ देखि प्रभातके पंकज लाज रहे हैं ॥ मंजुल कानन में मकराकृत कुण्डल यों छबि छाजिरहे हैं। मानों मनोज धस्यो हिय मन्दिर द्वार निशान बिराजरहे हैं। ५७४ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० सोहतओढ़ेपीतपट श्यामसलोनेगात ॥
मनोनीलमणिशैलपरआतपपस्योप्रभात ५७५

यह श्रीकृष्णजू को ध्यान पीतांबर की शोभा नायका को वचन सखीसों सखी को वचन नायकासों भक्त को वचन ॥ सवैया ॥ बनिजा छबिसों हरि नैननमें अरु आननमें अवरोहत है। सखि सुन्दर श्याम कलेवरपै पटपीत लसै मन मोहत है ॥ त्रिभंगा कहतालबि को कहिये सुनियो तिहुंलोक में कोहतु है।

मणि नीलके शैल के ऊपरमानो प्रभातको आतप सोहतु है ५७५ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ भक्तको वचन ॥ उपालंभ ॥

दो० कबकोटेरतदीनरट होत न श्यामसहाय ॥
तुमहूंलागीजगतगुरु जगनायकजगबाय ५७६

यह भक्त वचन भगवान्सों ॥ सवैया ॥ हौं कबको रटलागि रह्यो गहि दीन सुभाव मनो बचकायक । दीनके बंधु कहावतहौ हरिकाहेते होत न आनि सहायक ॥ काहेते ढीलकरो करुणामय कृष्णकहै प्रभुहो सब लायक । जानिपरी तुमहूंको कछू अब ब्यारलगी जगकी जगनायक ५७६ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० नीकी दईअनाकनी फीकीपरीगुहारि ॥
मनोतज्योतारनविरद बारकबारनतारि ५७७

यह भक्तको वचन भगवान्सों ॥ कवित्त ॥ सेवकको संकट निवारिवेको सावधान कहत तिहारोवेद विरद पुकारिकै । कहै कवि कृष्ण त्योंही देखपरति सब साखदीननु को दीनि है अनेक दुख टारिकै ॥ आनाकानी नीकीकरि मेरीरट फीकी परी लगे न गुहारिरहे निठुराय धारिकै । जानियतु तारिवे को प्रण अब छाड्यो तुम जस जीत्यो एकबेर बारणको सुतारिकै ५७७ मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० बंधुभयेकादीनके कोतार्यो रघुराय ॥
तूठेतूठेफिरतहौ झूठेबिरदकहाय ५७८

यह भक्तको वचन भगवान् सो ॥ सवैया ॥ कौनसे दीनपै कीनीदया अपराधी कहो जग कौन उधारयो । कौन अनाथके बंधुभये प्रभुको तुम दासभये बिन तारयो ॥ ऐसेई कैसे प्रतीत करौं कविकृष्ण कहै है पुकारिकै हारयो । तूठेई तूठे निसांक फिरौ तुम झूठेई याकुअनाकहपारयो ५७८ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० थोरेईगुनरीझते बिसराई वहबानि ॥
तुमहूंकान्हमनोभये आजकालिहकेदानि ५७९

यह भक्तको वचन भगवान् सों ॥ सवैया ॥ है अतिआरत मैं बिनती बहु बारकरी करुणा रसभीनी । कृष्ण कृपानिधि दीनके बंधु सुनी अमुनी तुम काहे को कीनी ॥ रीझते रंचकही गुनसों वह बानि बिसारि मनो अबदीनी । जानिपरी

तुमहूं प्रभुजू कलिकाल के दानिनकी गतिलीनी ५७९ ॥ नर अक्षर ३२ गुरु १४ लघु ३८ ॥

दो० ज्योंह्वैहोत्योंहोयगो होहरिअपनीचाल ॥
हठिनकरोअतिकठिनहै मोतारिबोगुपाल ५८०

यह भक्तको वचन है अपनो पापकरिबेको पनु उपालंबसों करत है॥ सवैया ॥ हौं उनकी गिननीनिमें हौं प्रभुजे तुम तारेते आपनी गौहीं । कृष्ण कहै गिनते न बनैं कछु पापिनकी परमावधि होंहीं ॥ होनीहै जो कछू हैहै वहै गति मेरी ये चाल कुचालन सोंहीं । खेलन है प्रभु मेरो उधारिबो भूलिन कीजै वृथा हठ योंहीं ५८० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मोहितुमेंबाढ़ीबहस कोजीतेब्रजराज ॥
अपनेअपनेबिरदकी दुहूनिबाहनलाज ५८१

यह भक्तको वचन भगवान् सों ॥ कवित्त ॥ तुम जेते तारे तेते मोते न पतितमारे गोतो पूरे पापी कोऊ दूसरो न पेखिये । तुम्हैं बानपरी प्रभु अधम उधारिबेकी मेरे एक मापही टेक अवरेखिये ॥ दुहुनको लाज आप आपने बिरदकी है पूरी पैजपारिकै निबाहनी बिशेषिये । कहै कविकृष्ण मोसों तुम सों बहस बाढ़ी को न चलिजाय अब जीते कौन देखिये ५८१ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कौनभांतिरहिहैबिरद अबदेखिबीमुरारि ॥
बीधेमोसोंआनिकै गीधेगीधहितारि ५८२

यह भक्त को वचन भगवान् सों ॥ कवित्त ॥ पतित उधारन कहत सब कोऊ सोऊ बात झूठ अब ठहराय गो बनायकै । कहै कवि कृष्ण जिन और के भरम भूलेहौ गज पापीमन बच अरु कायकै ॥ तारयो है पखेरू एक गीध तातें गीधे तुम सोही यश ह्वयो है जगत बगरायकै । कौनभांति राखिहौ बिहारि अब देखिबे जू कठिन बनी है अब गीधे मोसों आयकै ५८२ ॥ मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

सो० मोहूंदीजेमोक्ष ज्योंअनेकअधमनदयो ॥
ज्योंबांधेहीतोष त्योंबांधेअपनेगुनन ५८३

यह भक्तको वचन भगवान् सों कि मुक्त करो बांध राखो तो अपनो करि

राखो ॥ कवित्त ॥ भांति भांति आरतकी आरति निवारत हौ प्रगट पुकारत निगमगण साखिये । ताते कबिकृष्ण दीनबंधु दयासिंधुजू सों बारबार बिनती पुकार यह भाषिये ॥ अधम अनेकन को ज्योंहीं दीनी मुक्तलूम त्योंहीं मोहूं मोक्ष देवो चित अभिलाषिये । बांधवोई जोपै मनमान्यो महाराज तो जू आपनेही गुनन बनाय बांधि राखिये ५८३ ॥ बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० निजकरनीसकुचेहिकत सकुचावतइहचाल ॥
मोहूंसेनितविमुखत्यों सनमुखरहिगोपाल ५८४

यह भक्तको वचन अपनी विमुखता भगवान्‌की भक्तिनसों सन्मुख रहिवे को पनु सुमगट करत है ॥ सवैया ॥ जानिपरै न तिहारी प्रभू गति बेदहू नीके भेद न पावत। संगफिरे ब्रज ग्वालिनिके मुनि पावैं न ध्यान समाधि लगावत । एकतोही अपनी करतूत नहीं सकुच्यो बहुरयो सकुचावत । हूंतुमसों नितही विमुखे तुम दीनदयालुहो सन्मुख आवत ५८४ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० नाहगरजनाहरगरज बोलसुनायोटेरि ॥
फँसीफौजमेंबंदबिच हँसीसबनतनुहेरि ५८५

यह द्रौपदी को समय कविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ आयुध अवट साजे भटन की भीर भारी चारोंओर विकटलियेई जाति घेरिकै । नाहरकी गरज गरूरसों गरजियत ताहीसमय पाछेते सुनायो बोल टेरिकै ॥ वाके अति विक्रम को भाव जियजान्यो यह जीतेगो समर एक एक को निबेरिकै । मबल चमूक बीच फन्द में फँसीहै तऊ उमगि उछांहसी सब तन हेरिकै ५८५ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० नहिंपावसऋतुराजयह तजितरुवरमतिभूल ॥
अपतभयेबिनपाइहै कोनवदलफलफूल ५८६

यह अन्योक्त काहू दाताके धोखे सूमपै कछू कोऊ चाहै तहां कहिये भँगरेके प्रसंग में गढ़हू के प्रसंग में ॥ कवित्त ॥ मघवा के जलसों उमगि अधिकानो बहु पक्षिन को राख्योते बसाय समुदाई है । छोड़िचित भूलि वा भरोसे मत भूलै अब वैसीतो वनिकनीठि नीठि बानिआई है॥ पावस न जानि ऋतुराजको समाज यह योंहीं कैसे हरित भरित छबिछाई है । सुनि तरुवर जौलौं हैहै न अपतौलौं नवदल फूलफल सम्पति न पाई है ५८६॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४

दो० कोऊछ्योयहजालपरि कतकुलंगअकुलात ॥
ज्योंज्योंसुरझिभज्योचहत त्योंत्योंउरभतजात ५८७

यह अन्योक्त संसारजाल अथवा प्रेमजाल के बन्धन सों कहिये ॥ कवित्त ॥ तबतो न जान्योलगि लालच भुलानो चित अब परबश पर काहे पछतात है। कहैं कविकृष्ण याके बन्धनकी यहै रीति नेक अटकत अंग अंग बँधिजात है ॥ देखयों ते परेक कोऊ छूथ्यो इहजालपरि काहैकोते बायरे कुलंग अकुलात है। ज्योंहींज्यों सुरभि भज्यौ चाहत सयानकरि त्योंहीत्यों खरोई खरो उरझत जातहै ५८७ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० यहहैहीमोतीसुगथ तूनथगरबिनिसांक ॥
जेहिपहिरेजगदृगग्रसति लसतहसतसीनांक५८८

यह अन्योक्त कोऊ थोरेहू से धनसों अथवा गुनसों अधिक सोहत होय तहां कहिये ॥ कवित्त ॥ सुरनि समेत नायका याहीते कहत मुकतनियुत मुकति पुरीसी दरसति है। कहै कविकृष्ण मनमोहन के मोहिबे को मोहनी की शिक्षा मानों शोभा सरसति है ॥ सोहि पहिरेते जग नयन ग्रसत अति छबि बरषत मानों नासिका हँसति है। अहेनाथ उरमें निसांक तू गरबकरि द्वेही मुकताके गथ सहित लसति है ५८८ ॥ मर्कल अक्षर १५ गुरु ११ लघु २४ ॥

दो० बेसरमोतीधरतितुहि कोपूछैकुलजाति ॥
पीबोकरितियअधरको रसनिधरकदिनराति५८९

यह अन्योक्त कोऊ अच्छे कुलते भयो लघु मानस अरु बड़ी ठौर जाय पहुँच्यो तहां कहिये ॥ सवैया ॥ कौन बिना न करै कुछ जातिको जीवन आपनोई जगमें गनि। है सबले बड़भागी तुही अरु आईहै तेरीही बात भलीबनि ॥ नैहीं कह्यो कुल पूरबको फलहै तुही बेसरिके मुकताधनि। धौस निशा तियको अधरामृत नीके निसांक है पीबोकरै किनि ५८९ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० पाइतरुनिकुचउच्चपद चिरमिठग्योसबगांव ॥
छुटेठौररहिहैवहै जुहोमोलछबिनांव ५९०

यह अन्योक्त लघु मानससों बड़े ठिकाने पहुँच्यो तहां कहिये ॥ सवैया ॥ सुसिममोलरहै लघुनाम भई उतपत्ति न उत्तम थामो। कौनेहू भाग लह्यो घुंघची नवनागरिके कुच उच्च ठिकानो ॥ याहीते मोह्यो सबै जगको मनत्रोही गुमान

खरे अधिकानो। ठौर छुटे रहिजैहे वही मुखकालिमारंग बजार बिकानो ५९०
वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० मोरचंद्रिकाश्यामशिर चढ़िकतकरतिगुमान॥
लखबीपायनपरलुटति सुनियतराधामान ५९१

यह अन्योक्त कोऊ लघु मानस सों वड़ी ठौरपायगर्व करे ताको मानभंग है तो जानिये तहां कहिये॥ सवैया॥ घनश्यामने आपने शीशपै राखी बनायकै चायनसों धरिहैं। जिन याको तू जीमें गुमानकरै अबतो सब लोगनकी परि हैं॥ कहि काहेको मोरकी चन्द्रिका एंड़ि ढिठाईके ढोर रही ढरिहै। वृषभानुकुमारिके मानमें तरवान तरेलुटिबो करिहैं ५९१ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० जिनदिनदेखेवेकुसुम गईसुबीतबहार॥
अबअलिरहीगुलाबमें अपतकटीलीडार ५९२

यह अन्योक्त कोऊ धनवान् निर्धन भयो होहि तहां धनके लोभी जोकनुको कहैं तो भ्रमरके संगकरि गनि यौवनहू को कहिबो सम्भव है॥ कवित्त॥ जबहीं उदित ऋतुराज को प्रताप तीखो कहै कविकृष्ण जाको विक्रम अति अपार। तब इत वाटिका न देखे हे सुखद मृदु सरस कुसुमभरे अतुल सुगंध भार॥ वही आश लाग्यो इत आवत चल्यो क्यों अलि वह तो व्यतीत भई औरसर वही वहार। गंध मधु मृदुता पराग कांति लेश रह्यो अम्बर अपत गुलाब की कटीली डार ५९२ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० वहकिबड़ाईआपनी कतराचतमतिभूल॥
बिनमधुमधुकरकेहिये गड़ैनगुड़हरफूल ५९३

यह कोऊ गुणहीनहै अरुगर्व अधिक करतहै ताको गुड़हरके फूलको प्रसंगकरि अन्योक्त सम्भवहै॥ कवित्त॥ कहा भयो जोपै पायो सहज अरुण रंग उमग ललित छविरही तनछाइ है। वहकि वहकि चित आपनी बड़ाई में तू काहेको रचत गुरुवाई यों न पाइहै॥ जाहि रसलेखेही को चसको लग्यो है सो क्यों सुमन सुगंध तजि तोपै मड़राइहै। गुड़हर फूल इतरात क्यों तू फूलि फूलि विन मकरन्द अलि भूलिहू न भाइहै ५९३॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० स्वारथसुकृतश्रमवृथा देखिविहंगविचारि॥
बाजपरायेपाणिपर तूपक्षीहिन्नमारि ५९४

यह अन्योक्ति कोऊ पराई खुशामद करि अपने को बुरो करै तहां कहिये कवित्त॥ काहे क्यों बिरानेबुरे करत पराये काज ऐसो खोटो करम बिचारतहै काहेको। येतो भ्रमनाहक शरीर को तुदेत अरु दोऊलोक आपने बिगारतहै काहेको॥ यामेंकछू सुकृत न स्वारथ समुझि देखि पातक को भार शिरधारत है काहेको। कहाभयो जोपै आनिबैठचाई पराये पाणि बाजनिज प्रचिन तू मारत है काहेको ५९४॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० जनमजलधिपानिपविमल भौजगआघुअपार॥ रहैगुनीह्वैगरपरयो भलेन मुक्ताहार ५९५॥

यह अन्योक्ति कोऊ भयातुर है भली ठौर रहवेलायक अरु छोटी ठौर अनादरै सों रहै तहां कहिये॥ कवित्त॥ जनम जलधि कुलपानिपु बिमल अति तेरी शुभ्र शोभा जगमतिहि सुहाई है। सब कोऊ जगतमें औपकरि चाहै तोहिं लैही बेशकी मत जवाहिर में पाई है॥ तेरोसंगपाय त्रिलिपाल और लालनिकी कैसीनीकी देखियत रूपकी निकाई है। ऐसी तूगुनी है गरेपरिके रहतधुनि मुकताके हार यामें कहायौं भलाई है ५९५॥ मर्कटनअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० गहेलनेकौगुणगरब हँसौसकलसंसार॥ कुचउचपदलालचिरहै गरेपरेहूहार ५९६॥

यह अन्योक्ति कोऊ आश्रयी गुणी अथवा भलोमानस आपनी गर्वजानि छोटीहूजगै अनादरसों रहै ताको कहिबो संभव है॥ सवैया॥ छोड़ि बड़े कुलकी पदवी गुणकी गरुवाई न जीमें भरै। क्यों न सबै हँसबोई करौ जग पानिपहूनिहू ते न डरै॥ हाटिन हाट बिकेइहआश बिधायौ हियेपगतें न टरै। उच्चउरोजनको सुखलाभरहै हमयाते गरेहूपरै ५९६॥ नरअक्षर ३ ३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० अतिअगाधअतिऔथरो नदीकूपसरबाय॥ सोताकोसागरजहां जाकीप्यासबुझाय ५९७॥

यह अन्योक्ति अपनो कार्य छोटेहूते होय तहां कहिये॥ सवैया॥ कूप तड़ाग सरोवर बापी किती महिमें नहिंजात बखानी। छोटी नदीरु बड़ी सरिता नद जो रचना जगदीशने ठानी॥ उत्तम मध्यम कोऊ जलाशय होतु अगाधिक औथरोपानी। ताको वही कविकुल्ण समुद्रहै जाकी तृषा जिहि ठौर सिरानी॥ ५९७ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० विषमवृषादिककीतृषा रहैसबैजलसोधि॥
मरुधरपायमतीरहू मारूकहतपयोधि ५९८

यह अन्योक्ति अपनो प्रयोजनकाहू छोटेते सिद्धभये अरु बड़े के बहुत समृद्धिहै अरु अपने काम आवै नहीं तहां कहिये॥ कवित्त॥ वृषको तन नितचै विषम करनि सब सलिल सुकातकहूँ औंडेई रहत है। जीव जंतु थलथल प्रबल अबलै सब अकल पकल होतकल न लहत हैं॥ आतप के ताये अतिप्यासके सताये जल शोधत फिरत प्राणराखिबो कहत हैं। ऐसे समैं पायोकाहू भागते मतीरातासौं मारू लोग जलनिधि न्यायही कहत है ५९८॥ मदकल ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० प्यासदुपहरीजेठके जीयमतीरनुसोधि॥
अमितअपारअगाधजलमारौंमूड़पयोधि ५९९

यह अन्योक्ति अपनो कार्य्य सिद्धभये जैसे तैसे सिद्धभये पाछे सर्व संपत्ति मिलै तहां कहिये॥ कवित्त॥ कौन काम जगतमें तासुकी बड़ाई भाई जातें कछू गरज सरै न काहूपनमें। छोटेहूँतें आपनो सफलहोय काजु तोपै वाकी पटतर और कौन त्रिभुवनमें॥ जाके प्राण दारुण निदाघनकी तृषामें वास तीरे प्रायत्रिचे सियराई भई तनमें। ताकआगे कहौ कोऊ सागरकी बात औंडी सलिलअथार कैसे आवें ताके मनमें ५९९॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० कोकहिसकैबड़ेनसों लखेबड़ीयेभूल॥
दीनेदईगुलाबकी बिनडारनयेफूल ६००

यह अन्योक्ति कोऊ प्रवीन महाजन अनजाने अविवेकको कामकरै तहां कहिये॥ सवैया॥ को यह बात सकै कहिभूलिकै कामकरै करतारन जैसे। येती करी जगकी रचना पै विचार विना न करै नहिंतैसे॥ देखिहूँको नवशासन सासबड़ेजुकरैं कछु काम अनैसे। बैसीसकण्टक डार गुलाबकी फूल सुगन्ध दये मृदु ऐसे ६०० पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० दिनदशआदरपायकै करिलेआपबखान॥
जौलगकागसराधपख तौलगतौसनमान ६०१

यह अन्योक्ति कोऊ थोड़े दिननको बड़वार गर्वकरै तहां कहिये॥ सवैया॥ धूसर कण्ठ कठोरमहा सखरये कही लोचनरंगु है कारो। नीच कहावत प

छिनमें अरु मक्षेकी साजु कुचाल निहारो ॥ आदर पाय दिना दशको अभिमान निसांक घनो चितधारो । वायस जौलौं सराधको पावहै तो लगिहै जगश्राध तिहारो ६०१ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

**दो० मरतप्यासपिंजरापस्यो सुवासमयकेफेर ॥
आयसुदैदैबोलियत बायसबलकीबेर ६०२**

यह अन्योक्ति भलेमानस को दुःखदीजै अरु नीचको आदर होय तहां कहिये ॥ सवैया ॥ दोषसमैके प्रभावको भाव भयोजग औगुनहींको रिझोवा । बूझगई गुण बृन्दन की मगदे अब क्रूर कुरूप अगोवा ॥ प्यासो मरै पिंजरा में परयो सुकहै मृदु बैननिकोज कहोवा । आदरकै बलिदेनेकी बेरबुलैयत चाहके वायसों कोवा ६०२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

**दो० यहैआशअटक्योरहै अलिगुलाबकेमूल ॥
ऐहैफेरबसंतऋतु इनडारनवेफूल ६०३**

यहअन्योक्ति जानै जहांकछू पायो है तहां वैसाई आशालग्योरहै तहां कहिये काकध्वनितें यह होय कितवाही भरोसे क्योंरहै ॥ सवैया ॥ वेइन डारन फूलहुते जिनके रसते सबदुःख भुलानो । वीति बहारगई तिनकी कुसुमावलि चित्रचुभै नहिं आनो ॥ ऐहै बसन्त वहार तबै यहवांसुख सौरभहीको ठिकानो । आशयहै जियमें धरि भौंर गुलाब के मूलरहै मँडरानो ६०३॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

**दो० पटपाखैभखकांकरैं सपरसराईसंग ॥
सुखीपरेवापुहुमिमें येहैतुही विहंग६०४**

यह अन्योक्ति जो कोऊ पराधीन अरु परदेशी नाहीं तहांकहिये ॥ सवैया ॥ भोजनकांकर बीनकरै न करै जो अधीन है काहूकी सेवा । पाखनहीके बने पटु चारु विसारको जानत भाव न भेवा ॥ नीकेरहैं गृहिनी के सदासँग पूरब पुण्यन को फललेवा । कौनहू भांति न आश पराई सुखी अपनीपै तुहीहै परेवा ६०४ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

**दो० करिलहिसूंघिसराहिहूं सबैरहैगहिमौन ॥
गंधीगंधगुलाबको गबइगाहककौन ६०५**

यह अन्योक्तिको गुणकी बूझ न करै तहां कहिये ॥ कवित्त ॥ राख्योहै बयार

तें अमोलिक अतर आगे जाके मृदुगन्धसों महकि रह्यो भौनहै। छोड़ ओड़ हाथ सबहीने लियो देखिबे को सूंघि सूंघि सबनि सराहिगयो मौनहै॥ मोल सुनै सबहीते हँसि हँसि मचाई कूक पंथगहि अब तू करत क्यों न गौनहै। अरे गन्धी आंधरे हिये पै येती चेतकर गाहक गुलाब को गवेले गांव कौन है ६०५॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० वेनयहांनागरबढ़ै जिनआदरतोआब॥
फूल्योअनफूल्योभयो गँवईगांवगुलाब ६०६

यह अन्योक्ति अप्रवीण लोगनको समुदाय होय गुणकी बूझ कोऊ न करै तहां कहिये॥ सवैया॥ चौपसों आदर तेरोकरो अरु तोहीसों राखेंहियो अनुकूलयो। तो मृदु सौरभको सुरलै जिनके मन मोदरहै अतिभूल्यो॥ कीमत तेरी बढ़ावै धनी रिझावन वहीं जिन को तुक भूल्यो। ऐसे गँवारनु के बसिवास में फूल गुलाब भयो अनफूल्यो ६०६॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० गोधनतूहरष्योहिये निधरकलेहुपुजाय॥
समझपरैगीशीशपर प्रतपशुनकेपाय६०७

यह अन्योक्ति कोऊ काहूको द्रव्यखात होय अरु पीछे देवी आवे तहीं कहिये॥ सवैया॥ सुनिकोलमुखी कलिगावतगीतजे कोकिल कण्ठ सुभायत सों॥ बहु भांतिन के पकवान बनाय सबै सतभायनसों। अबगोधन तू मृदु मानिहिये बहुभांति पुजाय लैचायनसों। परिहै सुधि तोहिं सबै तबहीं पशुखूतहिगे तन पायनसों ६०७॥ मर्कल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० नागरिबिबिधविलासतजिबसीगँवेलिनमाह॥
मूढ़नमेंगनबीकितू हूठ्योदैइठलाँह ६०८

यह अन्योक्ति जहां सब एकसे होहिं तिनमें एक और भांतिचलै तहां कहिये। कवित्त॥ रूपगुन आगरी बेनागरी होहि इहां आदर लहत बहुभाजि जिन तीनु में। चारु चतुराई के बिलास वे दुरावेरहि प्रगट काहेको करत इन तीनुमें॥ अबतो भयेहै वास यां गँवारनुमें याहीते सिखावतहीं करिबिनतीनमें। हूठ्यो दैकै इनकीसी भांति इठलाहिना तौ मूढ़नि में अब गनिये गोनिनतीनमें ६०८॥ भराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० चल्योजाहुह्यांकोकरै हाथनकोब्यापार॥

नहिंजानतइहपुरबसत धोबीऔरकुम्हार ६०९

यह अन्योक्ति कोऊ नीचनके वासमें कोऊ भलाई की बातकहै तहां कहिये ॥ कवित्त ॥ जानि बूझि काहेको तू चरचा करत इत बन कदलीकी न बिकट थरीनकी। रचिपचि वन्दन सों काहेको बनाये कुंभ काहेको ये झूलझलकाये हैं जरीन की ॥ चल्यो किनजाय वृथावासर गवा है जिन गाहकी करै को मद मोकल करीनकी। बसत कुम्हार ओङ धोबी इह गाइये तो करत खरीद खासा खरचीखरीन की ६०९ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० चुपकरिरेगंधीचतुर अतरदिखावतकाहि ॥
करिफुलेलकोआचमन मीठोकहतसराहि ६१०

यह अन्योक्ति मूर्खजानि बासों चतुराई जितावे तासों कहिये ॥ कवित्त ॥ नगर के वगरते तेरी ऊंची टेरसुनि चोपसों बुलाय लीनोंकही आगे आवरे। बैठार्‍यो निकट अति प्रीतिसों हुकम कीनों सौंधे बेस कीमतीको हमहिं दिखावरे ॥ आचमन करिकै फुलेलको कहत मीठो. तैं न अजौं जान्यो सुघराई को प्रभावरे। काहेको उघारत गुलाव को अतर गंधी कहां गई तेरी चतुराई अब बावरे ६१० ॥ बारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

राजाजयसिंह को बचन बर्णन ॥

दो० प्रतिबिंबतिजयशाहिद्युति दीपतिदरपणधाम ॥
सबजगजीतनकोकियो कायव्यूहमनकाम ६११

यह राजाकी सुंदरता बर्णन कविकी उक्ति सखीको बचन नायक सों नायका को बचन सखीसों होय ॥ सवैया ॥ राजत दरपण मंदिरमें महिमंडनुश्रीजयसिंह सवाई। त्यों प्रतिबिंबनिकी अवली चहुंओर लसें अतिही छवि छाई ॥ कैधौं अनेक स्वरूपधरे रविराजत मंडली मंडसुहाई। मानहुं जीतबे को जगमें रचना वपु व्यूहकी काम बनाई ६११ ॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० चलतपायनिगुनीगुनी धनमनमुतियनमाल ॥
भेंटभयेजयशाहसों भागचाहियतुभाल ६१२

यह राजा को दान कवि उक्ति ॥ कवित्त ॥ दीजत मँगाय कै तुरंग रंग रंगनके तुरत भंडार शिरपांयन सों भरिये। किम्मत बिशाल शाल सुरबनमाल लाल हीरा मुकताहल चकसदार ढरिये ॥ गुनी अनगुनी सबही कीजत निहाल हाल याचक

की बिपति अनेकभांति हरिये। ऐसेभये नृपति सवाई जयशाहजू सों होत बड़भाग फलभाग कहा करिये ६१२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० रहतनरणजयशाहिमुख लखिलाखनुकीफौज ॥
यांचि निराखरहूचलै लैलाखनकी मौज ६१३

यह राजाकी शूरता दान कविकी उक्ति। कवित्त ॥ कूरम सवाई जयसिंह कै अभंग जगमगत दिनेशकोसों तेज अंगअंगमें। लाग्योइ रहत नित सरमति जयको चाव दान करिबेको चितरहत उमंगमें ॥ परदल लाखनको नृपको बदन लखि सनमुख रहि न सकत रणरंगमें। अखर न जाने सोऊ लाखन लहत सब यांचै सो अयाचीहोत मौजके प्रसंगमें ६१३ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० सामासैनसयानसुख सबैशाहिकेसाथ ॥
बाहुबली जयशाहजू फतेतिहारेहाथ ६१४

यह राजाकी जयसिद्धि वर्णन कविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ जगमग्यो दल छत्रपतिको प्रताप नवखण्डमें अखण्ड दाबे अरिनु के माथहै। तेरेई उदण्ड भुजदण्डके भरोसे सोऊ रहत निशंक अनदात यहगाथ है ॥ सुभट समाज साथ सघन सयान सुख संचै सबभांतिनुकी शाहजूके साथ है। रहत सवाई जयसिंह महाराज सदा समर विजय की सिद्धि रावरेई हाथ है ६१४ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० अनीबड़ीउमड़ीलखे असिवाहकभटभूप ॥
मंगलकरिमान्योहिये भौमहिमंगलरूप ६१५

यह राजा की शूरता अरु वीररस कविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ सांभर के खेत आये उमड़ि अमित दल सैपद सुभट महाविक्रमनिधानहै। गरजे गरूर बढ़े निपट आप विकट कुबड़े सांधि बरपत बानहै ॥ साहसी सवाई जयशाहिभूप ऐसे समय वीररस राच्यो थिरभयो तिहिथान है। उमँगि उछाह महामंगल के मान्योहिये बदनको रंगभयो मंगल समान है ६१५ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० यौंदलकाढ़ेबलकतें तैंजयसिंहभुवाल ॥
उदरअघासुरकैपरे ज्योंहरिगायगुवाल ६१६

यह राजाकी शूरता पराक्रम ॥ कवित्त ॥ एकरसना सों मोपै कैसे कहै परैजैसे जेते विक्रम अमितकीनें नृपति सवाई तैं । केशव अघासुरतें राख्यो ब्रज जैसे ऐसे हसन अलीकीदिली बगिलाई तैं ॥ जेजिया निवार्‌यो दावानल सों प्रबल दुख दलकें विपति हिन्दुवान की बहाई तैं । कीली ज्योंकुचाली काटि दूरकीनों मुहकमा कीरति प्रकाश जग आप्यो उजराई तैं ६१६ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० घरघरतुरकिनहिंदुनी देतअशीशसराहि ॥
पतिनुराखिचादरचुरी कैराखीजयशाहि ६१७

यह राजाकी पराक्रम सबपै उपकार कविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ आयो इत उमड़ि अनीतसिंह ऐडायल संगलै विकट सुभटन के समाजको । कहै कवि कृष्ण इत दिल्ली के प्रबलदल निकसे सकल साजैं समरके लाजको ॥ ऐसे समय वीर विशुनेशके अजिनवाहु राखीतें दुहुनकी लाजकरिके इलाज को । घरघर तुरकिन हिन्दुनी दुनीमें सब देत हैं अशीश जयशाह महाराजको ६१७ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

हास्यरसवर्णन ॥

दो० रविबंदौंकरजोरिकै सुनेश्यामकेबैन ॥
भयेहँसौहैंसबनके अतिअनखौहैंनैन ६१८

यह हास्यरस चीरहरणको समय सखीको वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ गोपवधूनके चीरचुराय कदंबपै धायचढ्यो हरिज्योंहीं । हाथसों गात छिपाय कै वे सकुचीं सतरायकै मांगतत्योंहीं ॥ देव दिवाकरको करजोरि प्रणाम करौ कही वातरसोंहीं । योंसुनिकै विहँसोंहींभई सबकी अँखियांजुहुती अनखोहीं ६१८ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० प्रतियदोषपरानसुनि मुलकिहँसीसुखदानि ॥
कछुकरिराखीसिअहू मुंहआईमुसकानि ६१९

यह हास्यरस पौराणिकको परिहास कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ पंडितराज समाजमें बैठि कथा प्रसंग पुराणमें भाखी । जात निरैपद वीसविसे परदारसों जो हितको अभिलाखी ॥ सो सुनिकै मुग्धाकी मृगलोचनि जासोंहीं डीठमिलायकै राखी । मदमुग्धाहि विलोकतहीं उमगी मुसुकानि सरूकरिराखी ६१९ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० चितपितमारकयोगगुनि भयोभयेसुतशोग ॥
फिरिहुलस्योजियज्योतिषी समभ्योजारजयोग ६२०

यह हास्यरस ज्योतिजाके परिहास्य कविउक्ति ॥ सवैया ॥ पुत्रभयो इक ज्योतिषिके ग्रह शोधत सो चितमें हुलसानों । डीठपरयो पितुघातक योग विचार हिये अतिही अकुलानों ॥ जारजयोग लख्यो तबहीं मुलक्यो बरमानि हुलास सयानों । भूलिगयो दुख फूलउठ्यो मुख आनँदपुंज हिये अधिकानों ६२० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० बहुधनलैअहिसानकै पारोदेतसराहि ॥
बैदवधूहँसभेदसों रहीनाहमुखचाहि ६२१

हास्यरस वैद्यके परिहास कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ विज्ञ चिकित्साके भेदन में इक बैदहुतो पुरुषारथ हीनों । काहु नपुंसक को वहकाय घनोधन लै बहुतै यरुदीनों ॥ पारो मचंड बढ़ावत है चितकेलि कलोलको चावनवीनों । एकतिया सुनि वाकीतिया पतिके मुखओर चितै हँसिदीनों ६२१ ॥ वारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० देवरफूलहनैजुसु उठेहरषअँगफूलि ॥
हँसीकरतओषधिअलिनु देहददोरनभूलि ६२२

यह नायका सुरता देवरसों आसक्त है सखीको वचन सखीसों हर्ष अरु हास्यसंचारी ॥ सवैया ॥ खेल में देवरके करके वे जहीं जहीं फूललगे नवलातन । आनँदपुंज उमंग तहीं तहीं फूल उठे अतिकोमलगातन ॥ देह ददोरन भूलिअली उपचारकरैलई भेदकी बातन । जानतहों जियकी बतियां रसविज्ञतियाहँसि हेरत बातन ६२२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० औरसबैहरषीहँसति गावतभरीउछाह ॥
तूहीबहुबिलखीफिरै क्योंदेवरकेब्याह ६२३

यह नायका परकीया गुरुजनको वचन देवरसों प्रीति यहव्यंग ॥ सवैया ॥ ये सब साजे अनेक शृंगार बनीठनीडोलैं हुलास उमाहैं । गावैं हँसैं हरषैं दरषैं सुख काहू की शंक धरे चितनाहैं ॥ भौनमें मंगल साजे भरे बहु सोई लहैं सब जो चितचाहैं । देवर के इह ब्याह बहू बिलखीसी तुही लखिये कहि काहें ६२३ ॥ वारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० समयपलटिपलटैप्रकृति कोनतजेनिजुचाल॥
भोअकूरकरनाकरो यहकुपूतकलिकाल६२४

यह परसताव में सम्भव है कलियुग को वर्णन॥ सवैया॥ कासों पुकारकरों बिनती इकसार भयो सगरो जगजोऊ। जाति समय पलटे प्रकृतयों फिर क्यों न सुभाव तजो सब कोऊ॥ आरतसिंधु दयाको समुद्र अनाथको नाथ कहावतहोऊ। है गयो देखो महानिरदै कलिकाल कुपूतहि आवत सोऊ ६२४॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० दीरघसासनलेहिदुख सुखसाईनहिंभूल॥
दईदई क्यों करतहै दईदईसकबूल६२५

यह करुणारस भक्तको बचन अपने मनसों॥ कवित्त॥ जोतू दुखलहै तोतू जिन अकुलायँ लैलै दीर्घ उसास चित चिन्तामें न झूलरे। सुखजो लहै तो सब भांति सावधान रहि सम्पति मगनहैकै हरषि न फूलरे॥ थिर न रहत येतौ सुख दुख होतजात कृष्ण करुणामयीकी सुरति न भूलरे। काहेको करत अति आतुरहै दईदई जोदईदई सो भलीभांति सों कबूलरे ६२५॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० दयौसुशीशचढ़ायलै आछीभांतिअबेर॥
जापै सुखचाहतलह्यो ताके दुखहि न फेर ६२६

यह भक्तको बचन अपने मनसों॥ सवैया॥ राखतू वाको बिश्वास हिये श्रुति जाहि सदा परिपूरणटेरै। रंकते रावकरै पलएक में जो वह नेक कृपाकरहेरै॥ जो कछु तोहिं दयो जगदीश सुशीश चढ़ायके क्यों न अबेरै। जो पै लये सुख चाहतहै अबताके दये दुखको जिन फेरै ६२६॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० कीजेचितसोईतिरै जिहपतितिनकेसाथ॥
मेरेगुणऔगुणसबै गिनोनगोपीनाथ ६२७

भक्तको बचन भगवान् सों॥ कवित्त॥ तोसों एकतुहीं और दूसरो न राजा राम तेरेही रचेहैं लोकसुरनर नागरे। सोई वीतराग जिनकीने तपजप जाप सोई बड़भाग जाको तोसों अनुरागरे॥ आपतनु देखिये न देखौ करतूत मेरी अधमउधारबेकी तेरे शिरपागरे। मोसे अपराधी हैं न तोसे हैं सहनहार मोसे निरगुणी हैं न तोसे गुण आगरे ६२७॥ मर्कट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४॥

दो०. भजनकह्यौतातेभज्यों भज्यो न एकोबार ॥
दूरभजनतातेंकह्यो सोतौभज्योगँवार ६२८

यह भक्तको वचन अपने मनसों ॥ सवैया ॥ मेरीतो सीख सुनी अगुनी करिते मनऔरै प्रतीजनिजोरे। मैं कही बारहि अलीविधिसों भजिनूतिहँतैं मजदूर भयोरे॥ जाते कही अतिदूरि भज्यो रहिसोतो भज्यो हितसाजनयोरे। कृष्णकहैं यह स्यान पैं सब एकही बेर कहा नियरोरे ६२८ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

सो० मैंसमझ्योंनिरधार यहजगकाचौकाचसो ॥
एकैरूपअपार प्रतिबिंबितलखियेजहाँ ६२९

कवित्त ॥ निपट असार दुख द्वंद्वको अगार अरु भांति भांति भरयो भय भ्रमनि के भारहै। सांचोकोसो ढारयो तातें सांचोसो निहारियतु जौलौं लखियत योसों लहि थिरतारहै॥ मैंतो मनमांझ में तौ समझ्यो विचारकरि यह जगकाच ऐसो कांचौ निरधारहै। जित तित पूर रह्यो पूरण पुरुष वह एकै रूप तहां प्रतिबिम्बित अपार है ६२९ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० सैंतपायत्रैतापसों राख्योहियोहमाम ॥
मतकबहूंआयैयहां पलकपसीजैश्याम ६३०

यह भक्तको वचन ॥ कवित्त ॥ गावें गुण शेषजाको ध्यावत महेश मुनि सा- धत समाधि बहुभांति चित लायकै। ऐसो कोऊ विधि मोपै आवत न बनि जातें वशकैरों त्रिभुवनपति को रिझायकै। एकबात उरधरि अपने हियेमें करि राख्यो खेदपायहूं तापसों तचायकै। वह करुणामयी कहावत है दीनबन्धु मति कहूं पुलकि पसीजै इतआयकै ६३० ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० ब्रजबासिनकोउचितधन जोधनरुचितनकोइ ॥
सुचितनआयोसुचितई कहौ कहांतेंहोइ ६३१

यह भक्तको वचन प्रयोजन यहै है कि बिना श्रीकृष्णध्यान सुचिताई नाहीं ॥ कवित्त ॥ जाकी तनशोभ नवनीरदसी देखियत पीतपट दामिनि दमकि छबिछाई है। लोचन ललिनलसैं रसभरे तामरस कुंचित अलक अलि अवलि सुहाई है॥ ऐसो ब्रजबासिन को उचितहै धनतामें दीनेते न गनुमति तिय परछाई है। कौन भांतिहोत सुचिताई तियतोलों जौलों रूपकी निकाई वह जीयमें न आई है६३१ करभ अक्षर २८ गुरु २० लघु ८ ॥

दो० खोपैंकोपैंइंदुलों रोपैंप्रलयअकाल ॥
गिरिधारी राखेसबै गोगोपीगोपाल ६३२

यह वीररस श्रीकृष्णने गोवर्द्धन धरिकै ब्रजवासी लखराखे ॥ कवित्त ॥ लोप्यो बलिभाग सुनि कोप्यो अति सुरपति प्रभुताके उमगि गुमान मनु आये हैं। आहिकरि कही बारिवह सब एकताहै ब्रजको वहावो ऐसो चलन चलाये हैं ॥ मढ़िगोराधार बरषते विकरालघन मानों महाप्रलय के साथ चलि आये हैं। ऐसे समय नन्दके सुवन करगिरिधारि गोपी ग्वाल गाय बछे सबही बचाये हैं ६३२॥ चल अक्षर ४५ गुरु ३ लघु ४२॥

दो० प्रलयकरन बरसनलगे जुरिजलधरइकसाथ ॥
सुरपतिगरबहस्योहरषिगिरिधारिगिरिधरहाथ६३३

यह वीररस गोवर्द्धनको समय ॥ कवित्त ॥ प्रलयके घुमड़ि घन आये ब्रजमंडलपै मंडिकै अखण्डधार लायो झरअतिको। निरखि विकलभये गोपी गाय ग्वाल सब काहूके हियेमें रह्यो धीरज न रतिको ॥ ताही समय यशुदाको लाल ऐसो हालदेखि हरषि हरैयाभये ब्रजकी विपतिको। पातिलों उठाय राख्यो गिरिवर पाणिपर दूरकीनो सब्ब गरब सुरपतिको ६३३॥ निकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३०॥

दो० कहतिनदेवरकीकुमति कुलतियकलहडराय ॥
पंजरगतिमंजारढिग शुकलौंसूकतजाय ६३४

यह भंवर सुदेवरकी धृष्टता सखीको वचन सखीसों ॥ कवित्त ॥ देवरचपल चित उरमें कुभावधरि करत अनैसीबात यासों दिनरात है। कहैं कविकृष्ण यह परम सुशीलवाल सकुचि सकुचिमनमेंही अकुलातहै ॥ कहि न सकत काहू आनसों हियेको भेद कुलतिय कुटुंबके कलह डरातहै। निकट बिलावके परेरू पिंजराको जैसे तैसे यह बाल निशिदिन सूकीजात है ६३४॥ निकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३०॥

दो० मोहनमूरतिश्यामकी अतिअद्भुतगतिजोय ॥
बसतसुचितअंतरतऊ प्रतिबिंबितजगहोय६३५

यह अद्भुतरस भगवान्की व्यापकता वर्णन भक्तको वचन ॥ सवैया ॥ ऐसी न और तिहूंपुरमें छवि जैसी वा नंदकिशोरमें पेखी। ताहि बिलोकि मनोज की

मूरति को बरयौ अतिरूप विशेखी ॥ और कहाकहौं सुंदर श्यामकी अद्भुत रीतिखरी अवरेखी। अंतरराखि बसाय हिये केऊजगमें प्रतिबिंबित देखी ६३५॥ चारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० तियकतकमनैतीपढ़ी विनजिहभौंहकमान ॥
चलचितबेझोचुकतिनहिं बंकविलोकनिवान ६३६

यह अद्भुतरस सखी और नायकको वचन नायकासों सखीहूसों संभव है॥ कवित्त ॥ ऐसी तू कहांते अति अद्भुतगति यह तेरी कमनैती बरणत न बनति है। कहैं कविकृष्ण येतौ प्रगट विलोकियत भृकुटी कमान जिह बिनाई तनतिहै॥ विनेंकहू अडीठि कुटिल कटाक्ष शर चूकत न चलचितबेझेको हनति है। तेरी या बिलोकनिकी निरखी अनोखीरीति मेरीमति अति हित कौतुक सनतिहै ६३६॥ कच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४॥

दो० दृगउरझतटूटतकुटुंब जुरतचतुरचितप्रीति ॥
परतगांठदुरजनहिये दईनईयहरीति ६३७

यह अद्भुतरस दृष्टानुराग नायक अथवा नायकाको वचन सखीसों ॥ सवैया॥ लागी रहै मनमें दिखसाध दई यह रीति नई दुहुंयातो। लोचनप्रीतम की छविसों उरझे सबटूटे कुटुंबको नातो ॥ कृष्णकहै अति चोपके चाय जुरे हियेको हितु होत न हांतो। बैरिनके उरमें परै गांठि अनोखो निहारयो सनेहको नातो ६३७॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० तोलखिमोमनजोलही सोगतिकहीनजाति ॥
ठोड़ीगाड़गह्योतऊ उड़योरहैदिनराति ६३८

यह अद्भुतरस है दृष्टानुराग नायकको वचन नायकासों ॥ कवित्त ॥ तेरे तनराजै वृषभानुकी कुंवरि जैसे ऐसे छविपुंज तिहूंपुरमें नहत है। तामें और अद्भुतरीति अवरेखी ताही सुमिरि सुमिरि अचरज उमहत है ॥ एक रसनासों मोपै कहत बनै न क्योंहू तोहिंलखि मेरोमन जोगति लहत है। यद्यपि अगम ओड़ी ठोड़ी गाड़गह्यो मन तऊदेखो आठौयाम उड़योई रहत है ६३८॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० याअनुरागीचित्तकी गतिसमझैनहिंकोय ॥
ज्योंज्योंबूड़ेश्यामरँग त्योंत्योंउज्ज्वलहोय ६३९

यह अद्भुतरस भक्तको वचन सखी सखीहूसों कहै तो सम्भवहै ॥ सवैया ॥ नैनन मांझरही खुभिकै वह नंदकिशोरकी ऊठी सुहाई । माखन में तऊ सालतहै कवि कृष्णकहै सुधिआन भुलाई ॥ या अनुरागपगै चितकी कछु अद्भुतरीति कही नहिंजाई। बूड्योरहे रँग श्याम में ज्योंहीं ज्यों त्योंत्योंगहै अतिउज्ज्वलताई६३९॥ शार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६ ॥

दो० जमकरिमुंहतरहरपर्‍यो यहधरिहरिचितलाय ॥
विषयतृषापरिहरिअज्योंनरहरिकेगुणगाय६४०

यह शांतरस भक्तको वचन मनसों भयसंचारी ॥ कवित्त ॥ दशहू दिशान मांझ व्यापिरह्यो जाको धाकु कहौ वाके विक्रमको कहांलौं प्रभावरे । तिनूकालों तोरे तीनों लोकके सकलवलि कोऊपै न बच्यो बहुकीयेहू उपावरे ॥ ऐसे काल करिकै पर्‍यो तू मुंहतरहरि कृष्णकहै यह धरि हरि चित लावरे । हारिमानि विषय तृषान परिहरिमन नरहरि देवके समुझि गुणगावरे ६४० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कोऊ ओरिक संग्रहै कोऊ लाख हजार ॥
मोसम्पतियदुपतिसदा बिपतिबिडारनहार६४१

यह शांतरस भक्तको वचन ॥ सवैया ॥ संग्रह कोऊ करोरि करोरि भरौ कोऊ लाख के लक्ष भँडारो । कोऊ हजारक ज़ोरिधरो बहुभांतिलहौ मन में गुदुभारो ॥ कृष्ण कृपानिधि दीनके बंधु सुरद्रुमदानि प्रताप उज्यारो । संपति मेरेवही यदुपत्ति विपत्तिसदा जु विदारनवारो ६४१ ॥ मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० जातजातचितहोतहै ज्योंचितमेंसंतोष ॥
होतहोतज्योंहोयतो होयघरीमेंमोष६४२

यह परसभाव कविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ सुरतके अन्तसमै जैसो याको मन सब ठौरते सिमिटिरहै ज्ञानही की टेक में । ऐसो मनसदा जोपैरहै एकसर तोपै काहे को भ्रमत फिरै चौरासी अनेक में ॥ सम्पतिके जातुजात जैसो याको चित ढारि आवत है समुझि संतोष के विवेक में । कहै कविकृष्ण ऐसी होत होइ तौपै होय अनयाहीसही मुक्तिघरी एकएकमें ६४२ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु२२॥

दो० यहबिरयांनहिंऔरकी तूकरियावहिसोधि ॥
पाहननावचढ़ायजिह कीनेपारपयोधि६४३

यह शान्तरस भक्तको वचन मनसों ॥ कवित्त ॥ जहां काम क्रोध मद दारुण तिमिंगिलहैं सूझत न क्योंहूं पर परवेको दावरे । शोचभरयो सलिललहर तामें लोक की तृष्णा विकराल भारी भौंरनको भावरे ॥ कृष्णकहैं परयो तू विकट भवसागर में अब कछू और न उपाव चितलावरे । मेरो कह्यो मान याहि सुखही तरोगो पतवारीकरि माला हरिनावैंकरि नावरे ६४३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० हरिकीजततुमसोंयहै विनतीबारहजार ॥
जिहतिहभांतिडरयोरह्यो परयोरहौंदरबार ६४४

यह शांतरस भक्तको वचन भगवान् सों ॥ सवैया ॥ दीसत और न कोऊ दयानिधि तेरई एक भरोसोगहों । वेद पुराणन की सुनि साखि हिये धरि आस हुलास लहों ॥ दीन उधारण वारहींवार यहै विनती करजोर कहों । जैसेहूं तैसेहूं डरयोहूं परयो दरवार मुरारि तिहारे रहों ६४४ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० मनमोहनसोंमोहकरि तूघनश्यामनिहारि ॥
नेहबिहारीसोंबिहरि गिरिधारीउरधारि ६४५

यह भक्तको वचन मनसों अरु मानावती नायकासों सखीको वचन कहिये तो सम्भवहै ॥ कवित्त ॥ मेरो कह्यो मानि मनमोहनसों मोहकरि सुंदर रतन घनश्यामको सम्हारिलै । ब्रजवनकुञ्जके विहारसों विहारकरि गिरिवरधारी सुखकारी उरधारिलै ॥ भूलिकहूं चित्त वृथावादमें रचावैमति कहै कविकृष्ण यह सुमति विचारिलै थिर न रहत धन यौवन भवन तन जानि ब्रज जीवन सों सांचोपन पारिलै ६४५ ॥ मंडूक अक्षर ३७ गुरु १८ लघु १२ ॥

दो० जपमालाछापातिलक सरैनएकौकाम ॥
मनकाचैनाचैवृथा सांचेराचैराम ६४६ ॥

यह खरापरसतात्रीक जौलों मनमें कचाई है तौलों ऊपरको स्वांग काम नाहीं आवत ॥ सवैया ॥ टीके मनोहर भाल बनायकै मालधरो उरमें किन सोलौं । छापन सों तन मंडित कै अरु ध्यान लगाय कहो किनकोलौं ॥ नाचत नाचवृथा कविकृष्ण कचाईरही उरमें भरितोलौं । काज कछू यह भेष सरै नहिं सांचरची मति नाहिंन जोलौं ६४६ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० अपनेअपनेमतलगे बादमचावतशोर ॥
ज्योंत्योंसबकोसेयबो एकैनन्दकिशोर ६४७

यह भक्तको वचन अरु सबको अधीश्वर एक श्रीकृष्ण है यह सिद्धांत॥ सवैया॥ जगमें अपने अपने मतलागि करै बकवाद वृथा भरमें। सबको वह सेयबे नंदको नंदनु व्यापकहै जु चराचरमें॥ बरसौ नभते किन नीरकहूं सब आनि समातहै सागरमें। कविकृष्ण कहैं न करो चितखेद धरौ मुरलीधर को धरमें ६४७॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० दूरभजतप्रभुपीठिदै गुणबिसतारनकाल ॥
प्रगटतनिर्गुणनिकटही चंगरंगभूपाल ६४८

यह भक्तको वचन जब याको गुण अभिमान है तब याते प्रभु दूरि हैं अरु निर्गुण तत्त्वहै तहीं प्रगट हैं यहरीति कलिकाल के राजान की कहिये तो संभव है॥ सवैया॥ कृष्णकहै कवि एकसी रीति प्रभू अरचंग निबाहत सोऊ। पीठिदै दूरही दूर भजैं गुणको बिस्तार करैं जब कोऊ॥ नीकैही क्यौंन लखौ गुणमुक्त है शोचकैवाद पचौमतिकोऊ। निर्गुणता प्रगटै जबहीं अतिही निकटै प्रगटैं तब दोऊ ६४८॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० तोअनेकऔगुणभरी चाहैयाहिबलाय ॥
जोपतिसंपतिहूबिना यदुपतिराखैंजाय ६४९

यह परसतार्थीक संपति बिना पति नाहीं रहति यह व्यंग॥ सवैया॥ औगुण पुंजभरी अतिचंचल याहि कहाँ जियको अभिलाखैं। नंदकिशोर कृपा करिके वह संपतिहू बिन जो पतिराखै॥ या बिनकाज कछू न सरै सब कोऊ यहै निहचै मतभाखै। जानियहै चितचाहि तियाहि उपायनुके बहुताकरापाखै ६४९॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० याभवपारावारके उलँघिपारकोजाय ॥
तियछबिछायाग्राहणी गहैबीचहीआय ६५०

यह परसतार्थीक संसारसागरके पारहैबेको एकही अवरोध है॥ कवित्त॥ लोभमोह बासना भयावनो भवँर जहां असुर मनोज जाको विक्रम महतु है। ऐसो भवसागर अपार बिकराल महा कहैं कविकृष्ण को उलंघ निबहतु है॥ साहस हिये में धरि यतन अनेक करि सब कोऊ याहि तारि पारभौ चहतु है।

तरुणीकी छवि छाया ग्राहणी विकट गहि राखत प्रबल, ताते बीचही रहतु है॥ ६५० ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० जगतजनायोजिहिंसकल सोहरिजान्योनाहिं॥
ज्योंआंखिनसबदेखिये आंखिनदेखीजाहिं ६५१

यह शांतरस भक्तको बचन ॥ कवित्त ॥ ताहि तजि क्यौं तू भूल्यो भटक वहैरे मन जाते लहियत सब सुखन को गोत है। मानि अनरुच हरिभजन पियूष छांड्यो जानिबूझि विषय विषहि डरमोत है॥ जिन सब जगत जनायो भली भांति वह प्रभूपै न जान्यो ऐसो मोहको उदोत है। देखो जिन आंखिनही सब दरशायो तिन आंखिनको काहूभांति देखिबो न होत है ६५१॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० लोलगयामनसदनमें हरिआवेंकिहवाट॥
बिकटजटेजोलगनिपट खुलेनकपटकपाट ६५२

शांतरस भक्तको वचन निवेद स्थायी भाव॥ कवित्त ॥ सरल सुभावगहि संतन के संगरहि संग्रह धरम लागि भगत के थाटरे। छोड़खोटखाइ गुणगाय करुणामयके यह समझायवेसों कहै तू निराटरे॥ कहै कविकृष्ण तूही देखि धौं विचार मन मन्दिर में हरितोलौं आवै किहबाटरे। जड़े हैं विकट बृथा वादकी जँजीरन सों जोलौं ये खुलत नाहिं कपट कपाटरे ६५२॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० करौकुबतजगकुटिलता तजौनदीनदयाल॥
दुखीहोहुगेसरलहिय बसतत्रिभंगीलाल ६५३

यह भक्तको वचन भगवान्सों॥ सवैया॥ चाहतहौ अपने हिय मांझ बसायो तुम्हैं प्रभु जैसेहूतैसे। कौन कुवातकरो सिगरो जग मोचित एकहू आवे न वैसे॥ हौं कुटिलाई तजौं न कृपानिधि जानतहौ अपनो जिय ऐसे। दीनदयाल कहावतहो उरसूधो भये वसिहो तुमकैसे ६५३॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० कनदेबोसौंप्योससुर बहूथुरहथीजानि॥
रूपरहचटैंलगलग्यो मानतुसबजगआनि ६५४

यह परसतावीक सुमनै की रीति सा फाखखचर अधिक भयो कविकी उक्ति॥ कवित्त॥ सुंदर सहाई सुकुमारि शशिवदनीकी शोभा की निकाई कवि

कहै को वखानि कै ॥ ननँद जिठानी सासनिरखि सिहात समय आतिही सराहत हैं थाके वैसबानिकै ॥ ससुर ने सरफा विचार सुख मानि हिय कनदेवो सौंप्यो वहू थुरहथी जानिकै । कहै कविकृष्ण वाकोरूप अवलोकवेको लोभ लगि आंगन जगत लाग्यो आनिकै ६५४ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० सबैसुहायेईलगत बसैसुहायेठाम ॥
गोरेमुखबेंदीलसै अरुणपीतसितश्याम ६५५

यह अन्योक्ति आछी ठौर को प्रभाव जोआइ प्राप्तहोय सो आछोही लगै ॥ सवैया ॥ नीकेके संग अनीकोउ नीकोलगै यह बात प्रतच्छ निहारी। ठौर सुहाय लसैते सुहाय लगैं सबहीउमगे छविभारी ॥ कैसे बढ़ावत मोदहिये नवनागर के मुख व्याहमें गारी । गोरे लिलार लसै बिंदुली सितराती हरी पियरी अरु कारी ६५५ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० पाइलपायलगीरहै लगीअमोलिकलाल ॥
भोंरुरहूकीभासिहै बेंदीभामिनिभाल ६५६

यह अन्योक्ति नीचहै धन है पै वह नीचीही ठौर रहैगो अरु भलो मानसहै अरु निर्द्धनहै तऊ उँचाई रहैगो ॥ सवैया ॥ जो जिहठौरके लायक हैं तिहके वसुवासु तिही थल ह्वैहै। देखो निहारि शृंगार के भेद में देखिये बात प्रत्यक्ष यहै है ॥ यद्यपि लाल अमोल लग्यो तऊ पायल पाय नहीं लगरै है । है वह भोडर की बिंदुली तउ भामिनि भालही पै छवि पैहै ६५६ ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० जो चाहै चटकनघटै मैलोहोयनमित्त ॥
रजराजसुनिछुवाइतो नेहचीकनोचित्त ६५७

यह परसतावीक्ति मित्रतामें रजोगुण न लाजै तो सुघहै मित्रको वचन ॥ कवित्त ॥ जगत में सबहीते महँगी है प्रीति एक सांच विन कोऊ ताको लेशहू न दरसै । यही है यतन कविकृष्ण याके पालिवे को मानों मति दोष जो तू आंखिनहू दरसै ॥ जोपै नेहचीकनेहिये को एकरस राख्यो चाहत चटक उजराई अतिसरसै ॥ तोपै काहूभांति याहि मैलोमतिकरै मत ऐसे राखि जैसे रजराज मुनि परसै ६५७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २६ ॥

दो० अजौंतरोंनाहींरहत श्रुतिसेवतइकरंग ॥
नाकबासबेसरलह्यो बसिमुक्तनकेसंग ६५८

यह परसतावीक भक्तको वचन प्रयोजन यह कि इकरंग श्रुति सेवत रह्यो सुल रचोनाहीं अरु बेसर जो काहूके सम नाहीं तिनताकू वास पायो काहू ध्वनिके कहेतें वेदको दोष दूरहोय श्रुतिकानहू कहिये तो संभव है ॥ कवित्त ॥ संगलाग्यो एकरंग श्रुतिही को सेवत भरोसो धरिभारी जियऐसो नेम नब्यो है । कहैं कविकृष्ण तासों सब कोऊ करो हितहै अजहूं लों तरचोनाहिं तरचों रह्यो है ॥ प्रेमके प्रभाव की यहांलों अधिकाई जाके चितआई तिनहीं परम पदु गह्यो है । विमल सुढार मुक्तानि संग बसि लसि नाक को निवासु देखो बेसरिहू गह्यो है ६५८ ॥ वारन ३८ । १० लघु २८ ॥

दो० अनियारेदीरघदृगन कितीनतरुणिसमान ॥
वहचितवनऔरैकछू जिहवशहोतसुजान ६५९

यह परसतावीक अन्योक्तहू बनै कविकी उक्ति सखीकी वचन नायकासों ॥ कवित्त ॥ कीजिये जु हेतती निबाहिये जुहितकोसी हितमें कहाहै बड़ो हेत है हितैवे में । जानिये शृंगार तो शृंगारिये सबै सम्हारि जो शिरकिये बिनु भेदतो न कैवेमें ॥ बोलिये जू वैन मनलैनका समति हूजै बोलि रिसकीजै तौनबोलिवो बुलैवे में । दीरघभोज ये नैनातौरभये कहाभये पीतम के मोहिवे की चातुरी चितैवे में ६५९ ॥ त्रिकलअक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० जेशिरधरमहिमामही लहियतराजाराय ॥
प्रगटतजड़ताआपनियसुमुकुटपहिरतपाय ६६०

यह अन्योक्त जो आछयोमानसहै भले आदर लायक ताहि ताहि निरादरसों राखे तहां कहिये ॥ सवैया ॥ जो बहुभांति जवाहिर लै बहुभांति रच्यो अतिही छबिछाई । जाकी जगामग होत प्रभामति जाहि लखैं सबकी ललचाई ॥ जाहि धरै शिरभूपनकी महिमण्डल में प्रभुता सरसाई । ता मुकुटै पगमें पहिरै प्रगटै तब वाहिकी मूरखताई ॥ ६६० ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० चितदैदेखिचकोरत्यों तीजैभजैनभूष ॥
चिनगीचुगैअँगारकी चुगौकिचंदमयूष ६६१

यह अन्योक्त जाके एक आश्रय होय कै वाकी मिलेकेवहीं को अंगीकार करै तहां कहिये ॥ सवैया ॥ जाको जहां मन लागत ताहि सबै तजि वाहीको देखबोभावै । कृष्ण कहै बिनु देखे सहै सुवियोग व्यथा तऊ मोद बढ़ावै ॥ देचित

देखि चकोरकी ओरन तीजै उपाय सुधा बहरावै। कै चुगै पायकके कनका कै निशाकर की किरन्यो जब पावै ६६१॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० तूमतमानैमुकतई दियेंकपटबितकोटि॥
ज्योंगुणहीत्योंराखिये आंखिनमाहिंअँगोटि ६६२

यह परसतावीक राजनीति में संभव है अरु नायका भेद में सखी को वचन नायक सों कहियेतु याहिछांड़िदै मन आंखिन में राखि॥ कवित्त॥ मुकतईनमानिये निदेईजो कपटवितु कयिकरै तऊ छोड़िवो न अभिलाखिये। कीजिये हमारो कह्यो दीजिये न जानकहूं बार बार बात समझाय यह भाखिये॥ कहै कविकृष्ण यही कहतसयाने सब देखो राजनीतिहू के ग्रंथन में साखिये। जानिये जो गुणही तो आनिये न और उर नीकेही अँगोट करि आंखिन में राखिये ६६२॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० दुचितैचितहलतनचलत हँसतनभुकतबिचारि॥
लखतचित्रपीऊचितै रहीचित्रलौंनारि ६६३

यह नायकको चित्र देखि चकित है रही सो सखी सखीसों कहतिहै॥ सवैया॥ ठाढ़ी ठगीसी हलैनचलै जिय शोचगहै बहुभांति विचारति। मेरोइहै किधौं आन बधूको यहै निरधार हिये निरधारति॥ यौंचितमें दुचिताईगनै न हँसै न झुकै सुनिमेष न टारति। चित्र बिलोकति यों अवलोकि रही तिय चित्र लखीसी निहारति ६६३॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० देहलग्योढिगगेहपति तऊसनेहनिबाहि॥
नीचीअँखियनहींइतै गईकनखियनुचाहि ६६४

यह नायका परकीया की चेष्टा नायक सखी सों कहतु है॥ सवैया॥ मोपै कछू कहते न बनै चित चातुरी जैसी बिहार गई है। मैं जबते निरखी तबते उरमैन के शायक मार गई है॥ पास जऊपति देह लग्यो तऊ रीति सनेहकी पारगई है। नीचीये आंखिन सों यहि ओर कनोखी चितौन निहारगई है ६६४॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० कैसेछोटेनरनतें सरतबड़नकोकाम॥
मढ्योदमामोजातक्यों कहिचूहाकेचाम ६६५

यह परसतावीक छोटेतें बड़ेकी गरज न सरै कविकी उक्ति॥ सवैया॥ जाको

जितो जगदीश रच्यो बल ताके फवै शिर तेतोई भारो। बात विचार यहै अपने जिय कोऊ वृथा मत शोच विचारो॥ छोटे तें काम बड़े न सरैं वह केतोउ साहस कै पचिहारो। कोटि करो पै चूहा के चामसों क्योंहू मढ़्यो नहिं जात नगारो ६६५॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२॥

दो० सरूपतकेशसुदेशनर नवतदुहुनइकबानि॥
बिभवसतरकुचनीचनरनरमबिभौकीहानि ६६६

यह परसतावीक कविकी उक्ति॥ कवित्त॥ केश औ सुदेश नर रहैं सदाएक रस कहै कविकृष्ण गहै एकसी ये बानि हैं। ज्यों ज्यों बढ़िवार लहैं त्योंही त्यों नवत दोऊ सकल प्रवीण यह बात उर आनि हैं॥ और देखो कठिन उरोज अरु नीचनर अकरे रहत करैं काहूकी न कानि हैं। सम्पत लहत त्यों त्यों रहत तनेने फेर आपुही नरमहोत भये बिभौ हानिहैं ६६६॥ करभ अक्षर३२ गुरु१६ लघु१६॥

दो० शीतलतारसबासकी घटेनमहिमामूर॥
पीनसवारेज्योंतज्यो सोराजानिकपूर ६६७

यह अन्योक्ति कोऊ आछोगुणी है भलोमानस है कोऊ क्रूरने वाको सत्कार न कियो तहां कहिये॥ सवैया॥ जो सबभांति तज्योगरवी विधि ताको बड़ै जगते सोई तोरा। कृष्णकहै बिनजाने अजाने को पैवह आय लहै नहिंथोरा॥ पीनसरोगते काहू कपूतन छोड़यो कपूर जो जानिकै सोरा। शीतलताई सुगंध घटै यह कोऊ करै जियमें जिनभोरा ६६७॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० बड़ेनहूतेगुणनबिन बिरदबड़ाईपाय॥
कनकधतूरेसोंकहै गहनोगढ्योनजाय ६६८

यह परसतावीक कविकी उक्ति॥ कवित्त॥ बड़ो जो बनायो जगदीश सो बड़ोई है ताहि सब जग चाहै आदर बढ़ायकै। कहै कविकृष्ण वह तैसोई लहत मोल कंचनको देखो क्यों न कई बेरतायकै॥ छोटेजो पै बड़ेगुण बिनयोंही बड़ो होत नामकी बड़ाई महिमण्डलमें पायकै। तोपै वह कनक धतूरोऊ कहावत है क्यों न पहरत कोऊ गहनो गढ़ायकै ६६८॥ मरकटअक्षर ३५ गुरु १३ लघु२२॥

दो० वहैसदापशुनरनको प्रेमपयोधिपगार॥
गिरितेंऊंचेरसिकमन बूड़ेजहांहजार ६६९

यह परसनावीक प्रेमसमुद्रकी अधिकाई कबिकी उक्ति ॥ सवैया ॥ जाको प्रमाण कह्यो न परै कछु आजलों काहू न पार लह्यो है। कृष्णकहै सुअगाधयहै लगि कैसेहूं कोऊ न पावत थाहै ॥ मेहलें ऊंचे रसज्जन के मन बूड़े अनेक अचंभो महा है। सो पशु पामरलोगन को वह प्रेमसमुद्र पगार सदा है ६६९ ॥ मदकल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० संगतिदोषलगैसबनु कहियतसांचेबैन ॥
कुटिलबंकभ्रुवसंगभये कुटिलबंकगतिनैन ६७०

यह परसनावीक संगति दोपलगै दृष्टांत कबिकी उक्ति ॥ सवैया ॥ ओरत जैसेई संगरहै जुगहै सुभली विधि वानि वही है। संगति दोपलगै सबको बिधि है यह आदि अनादि सही है ॥ कृष्णकहै जग में यह बात प्रत्यक्ष प्रवीणन अच्छ चही है। बंक भृकुटीन को पायके संगम नैननहू गति बंक गही है ६७० ॥ मर्कट अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० संगतिसुमतिनपावई परेकुमतिकेधंध ॥
राखोमेलकपूरमें हींगनहोयसुगंध ६७१

यह परसनावीक जो दुर्बुद्धि की ढार में परयो ताको संगतिते सबुधनाहीं होत ताको दृष्टांत कबिकी उक्ति ॥ सवैया ॥ औरही ते जो कुपैंड़ेचलयो वह संगते क्योंहूं सुबुद्धि न पावै। संगबुरे के भलोऊरहै तो भलाई सबै ततकाल कहावै ॥ आपनी बानतजैई तजै वह संगतें क्योंहूं गहै न सुभावै। राख्यो बसाय कपूरके मध्यमें हींगही क्योंहूं सुगन्ध न आवै ६७१॥शार्दूल अक्षर४२गुरु६लघु३६॥

दो० बढ़तचढ़तसम्पतिसलिल मनसरोजबढ़जाय ॥
घटतघटतसुनिकरघटै बरसमूलकुंभिलाय ६७२

कबिकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ सदन सरोवरमें मुखकी हिलोरनसों संपति सलिल ज्योंहीं ज्योंहीं सरसात है। यह तो प्रगट सब जगत बखानत है मनहूं सरोज त्योंहीं त्योंहीं अधिकात है ॥ जब आनिपरै कोऊ आपदा अदिन तब जलको प्रमाण फिर निघटत जात है। घटत घटत फिर नाहिं घटै गति यह बरु वह सहित समूल कुंभिलातहै ६७२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० समैसमैसुंदरसबै रूपकुरूपनकोय ॥
मनकीरुचिजेतीजितै तिततेतीरुचिहोय ६७३

यह परसतावीक कविकी उक्ति नायकाभेद में सखीको वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ सुंदररूपकहो किहि कामहै जो अपनेचितमें नहिं आवै। जो चितमांझ कुरूप चुभ्यो तो वहै उरको अतिमोद बढ़ावै। होतसमैई समै सब सुंदर रूप कुरूप न कोई लखावै। जाकी जिती जिहि ठौर बढ़ै रुचि सो तिहिठौर तिती रुचिपावै ६७३ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० मूड़चढ़ायेहूंरहै पर्योपीठकचभार ॥
रहैगरेपरराखिबो तऊहियेपरहार ६७४

यह परसतावीक कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ काहूके मूड़चढ़्यो रहिये न यहै गहिये चितमें चतुराई। नीकोमतो रहिये जुगरेहू पै तो लहिये अरुकी गरबाई ॥ मूढ़चढ़ेहू परेरहै पाछेकी बंधनकी गति केशनपाई। देखो रह्यो जो गरेहूपरै औ बिहारकरै छतियां पहराई ६७४ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० भावआनभावरभरै करोकोटिबकवाद ॥
अपनीअपनीटेवको छुटैनसहजसुवाद ६७५

यह परसतावीक कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ काहूबुरोलगो काहूभलो लगो खोटी खरी जियमें धरो सोऊ। लाखन क्यों न करो बकवाद अलौकिक लोक जो होय सोहोऊ ॥ औरतें जाको पर्यो जु स्वभाव सुभाव वहै निवहै जग जोऊ। आपनी आपनी टेवको सिद्ध सवाद छुटै न कितौ करोकोऊ ६७५ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० जेतीसम्पतिकृपणके तेतीसूमतिजोर ॥
बढ़तजातज्योंज्योंउरज त्योंत्योंहोतकठोर ६७६

यह परसतावीक कृपण के जितनी सम्पति तितनीये कृपणता ताको दृष्टांत कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ कौनहूं भाग प्रभायके दायसों सूमने जो कहूं सम्पति पाई। त्यों वह होत खरोई कठोर विलोकिये तू मतिकी सरसाई ॥ ताहि निहारि कह्यो चहिये कछुबात यहै कविके जियआई। ज्यों ज्यों उरोज बढ़ै तियके उर त्यों त्यों गहै अतिही कठिनाई ६७६ ॥ वारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० पियबिछुरनकोदुसहदुख हरषजातप्योसार ॥
दुर्योधनलोंदेखियत तजैप्राणउहिबार ६७७

यह परसतावीक हरष दुखहोय एकत्र कविकी उक्ति नायकाभेदमें सखी को

वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ नेहलग्यो मनभावन सों बसिबो ससुरारिको जीय सुहानो । नैहरते कोऊ आयो चलावन ताहीसमै सुनि जिय अकुलानो ॥ यों बिछुरे दुखहोत महासुख नायके को चित शोच समानो । प्रातको पंकज भो तियको मुख फूल्यो कछूक कछू कुंभिलानो ६७७ ॥ वारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

लोभकी अधिकाईवर्णन ॥

दो० घरघरडोलतदीनकै जनजनयाचतजाय ॥
दियोलोभचस्मांचखनुलघुपुनिबड़ोलखाय६७८

यह लोभकी अधिकाई परसतावीक कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ ठौरहि ठौर पिपात फिरै लघुता जितही तित आप मकासै । यांचत है सबही परजाय बढ़ाय हिये बहुभांति दुरासै ॥ लोभको ऐसो धरैचसमांनर नैननमें अटकै चहुंपासै । यद्यपि है अतिसूक्षमहू वह याहि तऊ अति दीरघ भासै ६७८ ॥ मर्कट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० कालबूतदूतीबिना जुरैनआनउपाय ॥
फिरताकैटारै लसै याके प्रेमलगाय ६७९

यह परसतावीक नित्यप्रेमके करिबेको उपाय कविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ मंदिर लदावको बनायो चाहै कोऊसोतो बिनाकालबूत क्योंहूं बनत न बानि है । त्योंहीं प्रेममंदिरको कालबूत दूती ताहि बीचदिये बिनुकहौ कैसे ठिक ठानिहै ॥ कहै कविकृष्ण परिपक्वहोहिं दोऊ तब सकल प्रवीण यह बात उर आनिहै । कालबूत दूती बिच राखिये न एकआंक टारिये न जौलौं तौलौं सुलही कि हानि है ६७९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० बहकिनइहिबहिनापुली जबतबबीरबिनासु ॥
बचैनबड़ीसबीलहू चीलहघोंसवामासु ६८०

यह परसतावीक सखीको बचन नायकसों ॥ कवित्त ॥ अम्बरहो नितही लड़ाई ये करत कहा अरु सम्पत सोंजवारो जात जान्यो है । पातकर बीछू कोऊ आनत है पातपर राखरे सयाननु हमारे मतमान्यो है ॥ तेहीकरयो ऐसे जबै कोहरु बीपाउ बादि बहिनाप्योया परोसिनसों ठान्योहै । काहे होतमसी में न तबहीं कछु कहीही यहै सेहौ कोसों कांटौ वेही लावकाज आन्यो है ६८० ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पियमनरुचिह्वैबोकठिन तनरुचिहोतशृंगार ॥

लाखकरौआंखिनऋढ़ै बढ़ैबढ़ायेबार ६८१

यह परसत्रात्रीक नायकाको वचन सखीसों सौतिको शृंगार देखि याके गर्व भयो सो ईर्षासों कहतहै और सखीयाके चित्तको भ्रम निवारणकरै तो संभव है॥ कवित्त॥ बैठ्यो कुंजसदन बिलोकत है तुवमग तेरोनाम मोहन रटत बार बारही। उठि चलि हिलिमिलि मानि रंगरली मेरो कह्योमानि मानवती है कहांरही॥ पियमन बसिकरवोई है कठिनअरु तनद्युति सरसतिसाजै हूं शृंगारही। कहै कविकृष्णकीजै लाखनयतन तऊ लोचनबढ़ात न बढ़ाये बढ़ै बारही ६८१॥ मंडूक अक्षर ३० गुरु १८ लघु १२॥

दो० नीचहियेहुलस्योरहत गहेगेंदकोपोत॥
ज्योंज्योंमाथेमारियत त्योंत्योंऊंचोहोत ६८२

यह कविकी अन्योक्ति॥कवित्त॥ जनममें कबहूंभलाई सों न भेंटभई जगत में कोटिकधिक्कार धारियत है। सहजसुभाय परकाजलै बिगारडारै अवगुण गहै न गुणपुंजटारियतहै॥ नीचनरएते पै हियेमें हुलस्योई रहै गेंदके सुभाय गहै यों निहारियत है। जितही निचाईदेखि तितही दुरकिजाहि ऊंचेहोत त्योंत्योंज्योंज्यों माथेमारियत है ६८२॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० कोटियतनकोऊकरौ परैनप्रकृतिहिबीच॥
नलबलजलऊंचोचढ़ै अंतनीचकोनीच ६८३

यह अन्योक्ति कविकी उक्ति जाको स्वभाव नीचहोय ताकी बढवारी हू होय पै स्वभाव न छूटै॥ सवैया॥ ओरते जैसो सुभाव परचो वह और प्रकार न कैसेहू है है। कोटिक क्यों न उपायकरौ कविकृष्ण कहै निरधार यहै है॥ सोजगमें लखियेप्रत्यक्ष करो जलयंत्रन सो निहचै है। केतेऊ ऊंचो चढ़ै नलके बल नीरतऊ ढरि नीचोई ऐहै ६८३ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० जाकेयेकतहीकहूं जगव्यवसाय न कोय॥
सोनिदाघफूलैफलै आकडहडहोहोय ६८४

यह अन्योक्ति काहूके धनवढ़वार बहुत है और काहूकेकाम नाहीं आवै तहां कहिये॥ सवैया॥ छांह न काहू के बैठवे योग न क्षीर अचै कोऊ पेट भरै। फूलनते फलते दलते जगमें नहीं काहूको काजसरै॥ भौंर न भूलिभ्रमें उहि ओर पखेरू न कोऊ बिरामकरै। होतहरचो यह आकनिकाम निदाघसमै बहु फूलेफरै ६८४ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० गुनीगुनीसबकोउकहै निगुनीगुनीनहोत ॥
सुन्योकहूंतरुअर्कतें अर्कसमानउदोत६८५

यह परसतावीक है कछु गुणनाहीं अरु सब कोऊ वासों भले कहैं तहां कहिये ॥ कवित्त ॥ बिनकरतूत झूठी पदवीलहीतौ बनहीकी न लगत उपहास पेखियत है। गुनीगुनीसबकोऊ कहतपुकारि काहूगुनी गुनीन मांझ लेखेलेखियतहै ॥ जगत विदितजासोंमीठो कहियत सोई निपट बिषमविषअवरेखियतहै। जऊपेड़ आकको कहावत अरक तऊ अरक समान को उदोत देखियतहै६८५॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० मीतननीतगलीत ह्वै जोधरियेधनजोरि ॥
खायेखरचेजोजुरै तोजोरियेकरोरि६८६

यह परसतावीक जो सूमह्वैकैधन जो गिरै तो उचित नाहीं याते खायबो खराचिबो मुख्यहै ॥ सवैया ॥ जोपै गलित भयेही जुरैधन तो वह जोरिबो काहू न भावै। नामसुने सब भीत है भाजत क्यों जगमें अतिसूम कहावै ॥ मीत मनौ जियमें धरिके यह जोरिकरोरलों जो बनिआवै। खाये दिये खरचे जुजुरै कछु सो अतिमोद हिये उमगावै ६८६॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० यद्यपिसुन्दरसुघरऊ सगुनोदीपकदेह ॥
तउपरकाशकरैतितौ भरियेजितौसनेह ६८७

यह परसतावीक नायकाभेदमें अरु सखीको भेद नायक सों सखीकहै कि तेरी सुंदरतनहै गुनहसतहै पैनेहचाहियतुहै ऐसे नायकहू से सखीको वचन संभवहै ॥ सवैया ॥ यद्यपि चारुणहै चिकनाइ सुढार ढरयो सुघरो पुनिहोऊ। कृष्णकहैं, बहुमंडिनकै गुनजोत जगाय धरै किन सोऊ ॥ है यह बात प्रसिद्ध सबै जग एकही रीति निबाहत दोऊ। नेह भरयो बिनदीपक देह प्रकाश करै न कितोकरो कोऊ ६८७॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० अरेपरेखोकोकरै तुहीबिलोकिबिचारि ॥
किहनरकिहसररारिवये खरेबढ़ेपरपारि ६८८

यह परसतावीक संसार व्यवहार पै अतिबढ़े ते मर्याद छूटैही छूटै कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ केतेभये नर केतेभये सर जात कछू गणना नहिं माखी। जौलौंबढ़ै उनमानगहै मर्यादरहै तबहीं लग पाखी ॥ कौनको कौन परेखो करै

परमान कहा परनशको साखी। पै अति ही बड़वारभये अवनी परपारि कहो किनराखी ६८८ ॥ पयोधर अक्षर३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० जोन्हनहींयहतुमवहै कियेजुजगतनिकेतु ॥
होतउदयशशिकोभयो मानोशशिहरिसेतु ६८९

यह चन्द्रवर्णन वियोगी को वचन कविहूकी उक्ति ॥ सवैया ॥ पूरिरह्यो अंग ऊरधमें धर अम्बरलों जिनदेव ठयो है। जाहि विलोकि वियोगीडरै अनुरागन को मनमोद पियो है ॥ होय न जोन्ह वहै तमहै यह जानै सबै जगछाय लयोहै। होत उदोतलख्यो शशिको गहिसंक्रमको तनश्वेत भयो है ६८९ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० चटकनछोंड़तघटतहू सज्जननेहगँभीर ॥
फीकोपरैनबरफटै रँग्योचोलरँगचीर ६९०

यह परसतावीक कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ सज्जन जे जगदीश रचे तिन की इकबान दशानिवरै। शील सुभाव गहैं सहजे अनुराग समूह हियेउबरै ॥ नेहकरै सुखरोगहरो उनहूं तिपरै सुनश्योंहू टरै। चोलकेरंग निचोलरँग्यो सुन फीकोपरै फटेहूफटै ६९० ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० कनककनकतेसौगुनो मादकताअधिकाय ॥
वहखायेबौराइहै वहपायेबौराय ६९१

यह परसतावीक कविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ कनक धतूरो सोनो दोऊ ये कहावत हैं सोने को धतूरे ते प्रभाव सरसतु है। कहै कवि कृपण वाही चाहतु न कोई याहि निरखि निरखि जोइ सोइ तरसतु है॥ सोनेमाझ सौगुनो धतूर तें सरस मद यह तो प्रत्यक्ष सब कोऊ दरसतु है। वाहि जब खाय तब बौराय प्रकाश होत याबरो तुरत याहि जोई परसतु है ६९१ ॥ मदकल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० इकभीजेचहुलेपरे बूड़ेबहेहजार ॥
कितेनऔगुनजगतकर वैनेचढ़तीबार ६९२

यह परसतावीक कविकी उक्ति अन्योक्तिहू संभवहै॥ सवैया॥ एक परेत फँसे चहुले यक भीजिरहे यक बूड़िगये हैं। एक बहै तिनकी न लहीसुध एक न धीरज छोड़िदये हैं॥ वोरदई पहली मरयाद विलोकि किते भयभीतभये हैं। वैसनदी चढ़ती विरियां जग औगुनकीने कितेकनये हैं ६९२॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० सुखसोंबीतीसबनिशा मनुसोयेइकसाथ ॥
मूकामेलिगहेसुछिनु हाथनछोड़ेहाथ ६९३

यह परसतावीक कविकी उक्ति नायकाभेद में परकीया को हाथस्परो को सुमान्यों साहि सो रात्रि वैसेहीबीती सखी सखी सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ रैनव्यतीत भई सिगरी अति चायबड़े चित्तपैन अघूटै । दोउनके मन मोद बड़े अभिलाषनके दृढ़ बंधन खूटै॥सोयेमनो मिलिकै इकसाथही योंबहुभांति हिये सुखलूटै। मूकामें मेलहगहैं इकबार सुहाथतें हाथ छिनो नहिं छूटै ६९३ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० जोनयुगतपियमिलनकी दूरिमुक्तमुंहदीन ॥
जोलहियेतौसजनसुख धरकनरकहूलीन ६९४

यह परसतावीक अनुरागी को वचन ॥ कवित्त ॥ वहै ठौरनीको जहां मिलवोहै पीको मानयहै मनठीक मेरे जीको अवदात है । पायो जो मुकतपद दरस्यो न प्राणप्यारो सरस्यो अधिक दुख देख्यो न सुहात है ॥ कहत वनैन क्योंहूं यातना अनेकभांति जाते भांतिभांतिन को त्रास अधिकात है । रहिवो वनै जो मनभावन सों मिलि तौ पै नरक निवासहू तौ मननसकात है ६९४ ॥ चल अक्षर ॥ ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० गढ़रचनाबरनीअलक चितवनभौंहकमान ॥
आघबुकाईहीबढ़े तरुनितरंगमतान ६९५

यह परसतावीक कविकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ गढ़को बनाय बांको होयतो बड़ाई पावै ग्रंथनमें बातयहै बरनी प्रमानकी । अधिकाई देखिये निकाई की बँकाईहीतें अलक चितौन भौंह बरनी कमानकी ॥ कहै कविकृष्णरीति जानत मवीन त्योंही तरुनी की तुककी तुरंगम की तानकी । बांकीही तें पालकी के बांसको बड़त मोल बांकी रजपूती लहै कीरति कृपानकी ६९५ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० बसैबुराईजासुतन ताहीकोसनमान ॥
भलोभलोकरछांड़िये खोटेग्रहजपदान ६९६

यह परसतावीक कविकी उक्ति ॥ सवैया ॥ जातन मांझ बुराई बसै कछु सोजगमें सनमानहीं पावै । वाहीको जीमें सबै डरमानत देखो दुनी में मत्यक्ष प्रभावै ॥ ज्योतिषी जोग्रहभाषै भलो तो भलेही भलेकहिकै वहरावै । जोपैवहै ग्रह खोटोसुनै तवदानकरै अरुजापकरावै ६९६ ॥ वारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० पतिरूतुऔगुनगुनबढ़त मानमाहकोसीत॥
जातकठिनकैअतिमृदौ रवनीमनुनवनीत ६९७

यह परस्तावीक कविकी उक्ति नायकाभेद में सखी को वचन नायक को सखीसों कि नायक के औगुणते नायका को मनकठिन होतही है॥ कवित्त॥ ऐसेपति औगुणों बढ़तहै मानजैसे ऋतुगुण शिशिरको शीत सरसात है। मान के भयेते तियमन कठिनातत्योंही शीतके भयेते नवनीत कठिनात है। दोउन को जऊ अति मृदु है सुभाव तऊ और भांति प्रकृतिको भावदरसात है। कहै कविकृष्णरीति जानतप्रवीन यह विनयतताईसें तुरतपघिनात है ६९७॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० कहतसबैश्रुतिअस्मृतिहु सबैपुरातनलोग॥
तीनदबावेनीसकै पातकुराजारोग ६९८

यह परस्तावीक कविकी उक्ति॥ कवित्त॥ कहै यहै श्रुति अरु अस्मृति पुराने लोग सकल पुराननमें सुनेयेई हेत है। कहै कविकृष्ण यह जगत विदित बात जानत सकल जेते सुमतिनिकेत है॥ जहां देखे बलनहां करे न अमत जहांदेखे निबलाई ये तहांई दुखदेतहैं। पातकरु राजारोग दानमें विचारिये न करत बलाई करैं सबल अचेन है ६९८॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० ओछेबड़ेनह्वैसकैं लग्योसतरह्वैगैन॥
दीरघहोयँननेकहू फारिनिहारेनैन ६९९

यह परस्तावीक कवि की उक्ति॥ सवैया॥ जे जगदीश रचे जिहिभाय वे तैसेइदीसैं घटैं न बढ़ैना। धीरहियेधरि मंदगहौं गतिपै बगुहंसको मोललहैना॥ ओछेसोकैसेहू होत बड़ेनबेकाइ उँचाई गहौंकनिगैना। फारिनिहारो कितोकारिहारो पै दीरघ होहिं न कैसेहूनैना ६९९॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० मोमिसहीसोंयोंसमझ मुँहचूम्योढिगजाय॥
हँस्योखिसानीगलुगह्यो रहीगरेलपटाय ७००

यह प्रस्तावीक कविकी उक्ति नायका को वचन सखीसों॥ कवित्त॥ कुंवर कन्हाई सुखदाई चतुराई करि पौढ़िरह्यो मिसझूठी रिसको बनायके। हित अधिकाई की उमंग बढ़िआई जियमें तोसों यों जानि मुंह चूम्यौं ढिगजायके॥ आरसिमें हारतिनुरंचति उघरिनैन नाइदीनी बांहगरेउड़ि मुसुकायके। कहा

कहौंआलीहू तो हँसिहूं सिखाई तन औरनबसाय रही गरेलपटायके ७०० ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नयेबिससियेलखिनये दुरजनदुसहसुभाय ॥
आंटेपरिप्राननुहरत कांटेलौंगड़िजाय ७०१

यह प्रस्तावीक नायकको वचन सखीसों विरत नायका अधीरा खंडिता नायक राजनीतिके प्रसंगहू में संभवहै ॥ कबित्त ॥ ऊपर तो देखियत अधिक भलाई भरे अन्तरके दुसह बुराईके निकेतहै । कहै कवि कृष्ण बहुबातन बनाय कहै दाँउपरे जैसे बनै तैसे दुख देतहै ॥ देखत हैं नयेतऊ मानत विरोधीनये भूतल न क्योंहूं जे विचार में सुचेतहै । कांटेकीसी रीति दुरजनके सुभाइन की आंटे परैं पायनहूं लागि मानहेत है ७०१ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० तंत्रीनादकबित्तरस सरसरागरतिरंग ॥
अनबूड़ेबूड़ेतिरे जेबूड़ेसबअंग ७०२

यह प्रस्तावीक कबिकी उक्ति ॥ कवित्त ॥ तंत्रीकी मधुर धुनि तालके विविध भेद रागजामें सुरनकी विविधतरंग है । वचन बिलास चतुराई के प्रकाश चारु कविता सुदेश जहां विरसकी उमंग है ॥ बागकी बहार नवनागरीसों हिलमिल विहरत अन्तरित सुरत प्रसंग है । जगत में बूड़े जे न बूड़े इन बातनमें तिरेतेई जेई बूड़े इते अंगअंग है ७०२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० सबैहँसतकरतारिदै नागरिताकेनाउँ ॥
गयोगरबगुनरूपको बसेगँवारेगाउँ ७०३

यह अन्योक्ति प्रस्तावीकहू संभव है कबिकी उक्ति ॥ सवैया ॥ को समझै रसरीतिके भेदहि कौनसुनै नृपनीति उचारै । ज्ञानकी कौनकरै चरचा जहँ मूढ़ताके हितसों अतिप्यारै ॥ नागरताई को नाम सुनै सब दै करतार हँसै किलकारै । दूरगुमान गयो गुनरूपको बास भयो जब गांवगँवारै ७०३ ॥ वारण अक्षर ३२ गुरु १४ लघु १८ ॥

दो० दुसहदुराजप्रजानको क्योंनबढ़ैदुखदन्द ॥
अधिकअँधेरोजगकरत मिलिमावसरबिचन्द ७०४

यह प्रस्तावीक कविकी उक्ति ॥ सवैया॥ येकरजाई सबै प्रभु द्वै सुत योगुन को बहुभांति बढ़ावत। होत महादुखदुंद प्रजानको और सबैशुभ काज थकावत ॥ कृष्णकहै दिननाथ निरंकर एकही मंडल में जब आवत। देखो प्रत्यक्ष अमावसको अँधियारो कितौ जगमें सरसावत ७०४ ॥

दो० हूंबिनऊंसबकविनके चरणकमलशिरनाय ॥
प्रकटकरीतिहुंलोकमें कवितावहुजिनभाय ७०५
सोकविताद्वैभांतिके आरषपौरुषजानि ॥
आरषसुरअरुमुनिनकृत नरकृतपौरुषमान ७०६
पौरुषकविताविविधहै कविसबकहतबखानि ॥
प्रथमदेववाणीवहुरि प्राकृतभाषाजानि ७०७
देशभेदसेहोतसो भाषाबहुतप्रकार ॥
वरणतहैतिनसबनमें ग्वारपरीरससार ७०८
ब्रजभाषाभाषतसकल सुरबाणीसमतूल ॥
ताहिबखानतसकलकवि जानिमहारसमूल ७०९
ब्रजभाषाबरनीकबिन बहुबिधिबुद्धिबिलास ॥
सबकोभूषणसतसई करीबिहारीदास ७१०
जोकोऊरसरीतिको समभयोचाहैसार ॥
पढ़ैबिहारीसतसई कविताकोशृंगार ७११
उदयअस्तलौंअवनिये सबकोयाकीचाह ॥
सुनतविहारीसतसई सबहीकरतसराह ७१२
भांतिभांतिकेअरथबहु यामेंगूढ़अगूढ़ ॥
जाहिसुनेरसरीतिको मगसमभ्कतअतिमूढ़ ७१३
विविधनायकाभेदअरु अलंकारनृपनीति ॥
पढ़ैविहारीसतसई जानैकबिरसरीति ७१४
रघुबंशीराजाप्रगट उहिमेंधर्म्मअवतार ॥

बिक्रमबिधिजयशाहरिपु दंडबिहंडनहार ७१५
सुकबिबिहारीदाससों तिनकीनोअतिप्यार ॥
बहुतभांतिसनमानकरि दौलतदईअपार ७१६
राजाश्रीजयसिंहके प्रगट्योतेजसमाज ॥
रामसिंहगुनरामसम नृपतिगरीबनिवाज ७१७
कृष्णसिंहतिनकेभये केहरिराजकुमार ॥
बिष्णुसिंहतिनकेभये सूरजकोअवतार ७१८
महाराजाबिशनेशके धर्मधुरन्धरधीर ॥
प्रगटभयेजयशाहनृप सुमतिसवाईबीर ७१९
प्रगटसवाईभूपके मंत्रीमनिसुखसार ॥
सागरगुनसतशीलको नागरपरमउदार ७२०
आयामल्लअखण्डतप जगसोहतयशताहि ॥
राजाकीनोकरिकृपा महाराजजैशाहि ७२१
मनक्रमबचसांचोभगत हरिभक्तनकोदास ॥
बेदबचननिजधरमको जाकेदृढबिश्वास ७२२
क्षत्रीकुलक्षितिपैभये बैरीजगबिख्यात ॥
परदुखबैरीखण्डनो खण्डनगुनअवदात ७२३
लालदासअतिललितगुन प्रगटभयेतिहिबंश ॥
रामचन्द्रतिनकेभये निजकुलकेअवतंश ७२४
महाराजातिनकेभये जिनकोयशअवदात ॥
रायपंजाबसपूतमति उपजेतिनकेतात ७२५
तिनकेप्रगटेतीनसुत बिक्रमबुद्धिनिधान ॥
रक्षकब्राह्मणगायके निपुणदानकरबान ७२६
राजाआयामल्लजग बिदितरायशिवदास ॥

लसतनरायनदासयश पूरनपुहुमिप्रकास ७२७
लीलायुगलकिशोरकी रसकोहोयनिकेतु ॥
राजाआयामल्लको ताकवितासोंहेतु ७२८
माथुरबिप्रककोरकुल कह्योकृष्णकविनांव ॥
सेवकहौंसबकविनको बसतमधुपुरीगांव ७२९
राजामलकविकृष्णपरि ढरयोकृपाकेढार ॥
भांतिभांतिबिपताहरी दीनीलक्षिअपार ७३०
एकदिनाकविसोंनृपति कहीकहीकोजात ॥
दोहादोहाप्रतिकहौ कवितबुद्धिअवदात ७३१
पहिलेहूमेरेयहै हियमेंहुतोविचार ॥
करौंनायकाभेदको ग्रंथसुबुधिअनुसार ७३२
जेनीकेपूरबकविन सरसग्रंथसुखदाय ॥
तिनहिंछांड़मेरेकबित कोपढ़िहैमनलाय ७३३
जानियहैअपनेहिये कियोनग्रंथप्रकास ॥
नृपकोआयसुपाइकै हियमेंभयोहुलास ७३४
करेसातसैदोहरा सुकविबिहारीदास ॥
सबकोऊतिनकोपढ़ै गुनैसुनैसबिलास ७३५
बड़ोभरोसोजानिमैं गह्योआसरोआय ॥
यातेइनदोहानसँग दीनोंकवितलगाय ७३६
उक्तियुक्तिदोहानकी अक्षरजोरिनवीन ॥
करेसातसैकबितमैं पढ़ैसुकविप्रवीन ७३७
मैंअतिहीढीठ्योकरी कविकुलसरलसुभाय ॥
भूलचूककछुहोयसो लीजोसमुझिबनाय ७३८
इतिश्रीविहारीलालकविकृतसतसईसटीकउदाहरणसहितसमाप्ता ॥

कविकुलकल्पतरु की ०।)-॥

भूपणचिन्तामणिजी रचित जिसमें अति रुचिर छन्दों में नायकाभेदकी पूरी बातें लिखी हैं ॥

प्रेमरत्न की ०)=

राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्द की दादी रत्नकुवँरिरचित केवल श्रीकृष्ण और रामचंद्रजीकी भक्तिपक्षका विषय दोहा चौपाई में है ॥

जगद्विनोद की ०)=

पद्माकरकविकृत जिसमें नायकाभेदमें सर्वप्रकारके रसवर्णन कियेगये हैं ऐसीउत्तम सर्वलक्षणयुक्त काव्यकी पुस्तक कोईनहींहै ॥

रसचन्द्रोदय व रसवृष्टि की ०)≡

उदयनाथजी व शिवनाथजी रचित इसमें सब प्रकार की नायकाओं का भेद और उनके सर्व प्रकारके अलंकार रचित हैं ॥

अनुरागवर्द्धनी की ०)≡

मातादीनपांडेरचित जिसमें नयेप्रकारके दोहे चौपाई और कवित्त भक्तोंके अनुराग और प्रीतिके बढ़ाने के लिये वर्णन कियेगयेहैं ॥

प्रेमतरंगिणी की ०-)।

मुंशी हफ़ीजुल्लाहखांसंग्रहीत--प्रत्येक विपयके कवित्त व सवैया हैं ॥

कुमारसंभव की ०।)॥।

काव्य तो प्राचीन है-परन्तु तिलक निहायत उत्तम भाषा में किया गया है ॥

प्रेमरत्नाकर की ०)≡॥

लक्षीरामकविकृत-नायकाभेद में यह ग्रंथ अद्वितीय है ॥

बिचित्रोपदेश की० ।)॥

सामयिक कवित्त ऐसे उत्तम इसमें हैं जो बर्षों ढूंढ़ने से नहीं मिलते ॥

रसिकमोहन की० ≈)॥

कहांतक इसकी प्रशंसाकरैं रसिकों का मनमोहनही है ॥

विश्रामसागर बहुत मोटे अक्षर की० ३) पुख्ता

जिसको महन्त श्रीरघुनाथदास रामसनेही ने प्रेमियों के लिये बनाया जिसमें छहों शास्त्र और अठारहों पुराणों के मत और नवीनरीति से श्रीकृष्णचन्द्र व रामजी के सुरस चरित्र पद्य में रचे हुये हैं ॥ छोटे अक्षर की कीमत १)

नखशिखहजारा की० ॥)

जिसमें श्री राधिकाजी महारानी के नखशिखका वर्णन पद्माकर, पजनेस, परताप, प्रवीन, बेनी, बलदेव, बलभद्र, ब्रह्म, भूषण भगवंत, मतिराम, मुबारक, रघुराज, रघुनाथ, रसखानि, शम्भु, हठी दिवाकर, सेनापति, दूलह इत्यादि कवियों के बनाये हुये २३७ दोहा व १००० कवित्त और सवैया विद्यमानहैं ॥

कविप्रिया मूल की०)≡

श्रीकेशवदासजी रचित—जिसमें काव्यके सम्पूर्ण अङ्ग विधि सहित वर्णन कियेगये हैं ॥

कविप्रिया सटीक की० ॥−)

श्री महाराजाधिराज काशिराज की आज्ञानुसार बंदीजन ललितपुरनिवासी सरदार कविने एक २ वर्णका काव्यरीति पर तिलक किया है और गूढ़स्थलों को इसप्रकार सरल कर दिया है कि सूक्ष्म पढ़नेवाला भी अच्छी तरह समझ सक्ताहै ॥
